VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

इतिहास

वैल्यू एडेड मटेरियल 2025

मुख्य विशेषताएं:

इतिहास का तेजी से रिवीजन:
मुख्य परीक्षा 2025 के लिए GS पेपर 1 हेतु इतिहास के महत्वपूर्ण टॉपिक्स को केवल 110 पृष्ठों में समेटा गया है। इससे इन टॉपिक्स को बहुत कम समय में याद करना सरल होगा।

अत्यधिक प्रभावशाली वैल्यू एडिशन:
महत्वपूर्ण विश्लेषण और ज्ञानवर्धक उदाहरणों के साथ मौलिक अध्ययन से आगे बढ़ने में सहायक।

PYQ विश्लेषण पर आधारित विषय:
यह डॉक्यूमेंट विगत वर्षों (2013-24) में UPSC मुख्य परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर आधारित है।

परीक्षा के लिए तैयार अभ्यास प्रश्न:
विषयगत प्रश्नों और उत्तर लेखन के लिए विस्तृत संकेतों के साथ आपके ज्ञान का परीक्षण करने में सहायक।

ENGLISH MEDIUM
1 July | 5 PM

हिन्दी माध्यम
5 July | 5 PM

- द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, लाइवमिंट, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक टाइम्स, योजना, आर्थिक सर्वेक्षण, बजट, इंडिया ईयर बुक, RSTV आदि का समग्र कवरेज।
- मुख्य परीक्षा हेतु विशिष्ट लक्ष्योन्मुखी सामग्री।
- मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से एक वर्ष की समसामयिक घटनाओं की खंड–वार बुकलेटस (ऑनलाइन स्टूडेंटस के लिये मेटेरियल केवल सॉफ्ट कॉपी में ही उपलब्ध)
- लाइव और ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाएं जो दूरस्थ अभ्यार्थियों के लिए सहायक होंगी जो क्लास टाइमिंग मे लचीलापन चाहते हैं।

मुख्य परीक्षा
2025 के लिए 1 वर्ष का
समसामयिक घटनाक्रम
केवल 60 घंटे में

अभ्यास
मेन्स 2025

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा
(GS + निबंध + वैकल्पिक विषय)
मॉक टेस्ट (ऑफ़लाइन)

पेपर	GS - I & II	GS - III & IV	निबंध	वैकल्पिक विषय I & II
तिथि	26 जुलाई	27 जुलाई	2 अगस्त	3 अगस्त

पंजीकरण करें: www.visionias.in/abhyaas

वैकल्पिक विषय: नृविज्ञान | भूगोल | हिंदी | इतिहास | गणित | दर्शनशास्त्र | भौतिकी | राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध | लोक प्रशासन | समाजशास्त्र

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | BHUBANESWAR | CHANDIGARH | CHENNAI | CHHATARPUR (MP) | DEHRADUN | DELHI - KAROL BAGH | DELHI - MUKHERJEE NAGAR | GHAZIABAD | GORAKHPUR | GURUGRAM | GUWAHATI | HYDERABAD | INDORE | JABALPUR | JAIPUR | JAMMU | JODHPUR | KANPUR | KOLKATA | KOTA | LUCKNOW | MUMBAI | NAGPUR | NOIDA | ORAI | PATNA | PRAYAGRAJ | PUNE | RAIPUR | RANCHI | ROHTAK | SHIMLA | THIRUVANANTHAPURAM | VARANASI | VIJAYAWADA | VISAKHAPATNAM

इतिहास

विषय सूची

परिचय 5

1. भारत का प्राचीन इतिहास और कला एवं संस्कृति 7

1.1. भारत की संस्कृति और उसकी निरंतरता 7

1.1.1. भारत की जीवंत विरासत 7

1.1.2. इतिहास को स्वरूप देने में कला और संस्कृति की भूमिका 8

1.1.3. भारतीय कला और संस्कृति पर भूगोल का प्रभाव 9

1.1.4. भारतीय सभ्यता की निरंतरता 11

1.2. पाषाण काल 13

1.2.1 पाषाण युग के महत्वपूर्ण पहलू 13

1.2.2. प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने में गैर-साहित्यिक स्रोतों की भूमिका 14

1.2.2.1. शैलचित्र: प्रागैतिहासिक जीवन की एक झलक 15

1.2.2.2. मृदभांड: प्रौद्योगिकी और सामाजिक विकास का प्रतिबिंब 15

1.3. हड़प्पा सभ्यता 16

1.3.1. हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ 16

1.3.1.1. शहरी नियोजन और स्थापत्य 16

1.3.1.2. कृषि 17

1.3.1.3. सामाजिक संरचना 17

1.3.1.4. धार्मिक व्यवस्था 17

1.3.1.5. लेखन और लिपि 18

1.3.1.6. कला और स्थापत्य 18

1.3.2. हड़प्पा सभ्यता का उदय और पतन 19

1.4. वैदिक काल 21

1.4.1. पूर्व और उत्तर वैदिक काल के बीच अंतर 22

1.4.2. वैदिक परंपरा की स्थायी विरासत: प्रभाव और प्रासंगिकता 23

1.5. महाजनपद 23

1.5.1. मगध का उदय 25

1.5.2. भारत की दार्शनिक परंपराएं: आस्तिक और नास्तिक दर्शन 25

1.5.3. प्राचीन भारत में गिल्ड (श्रेणियां) 29

1.6. मौर्य साम्राज्य 30

1.6.1. सम्राट अशोक 31

1.6.2. मौर्य साम्राज्य की कला और स्थापत्य 32

1.6.3. मौर्यकालीन साहित्य 35

1.7. मौर्योत्तर काल और इंडो-ग्रीक 37

1.8. गुप्त काल 37
1.8.1. सम्राट समुद्रगुप्त 38
1.8.2. सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय 38
1.8.3. गुप्त काल में सामाजिक विकास: 39
1.8.4. "स्वर्ण युग" के रूप में गुप्त काल 40
1.8.5. संस्कृत साहित्य का स्वर्णिम काल 41
1.9 संगम युग 43
1.9.1. संगम युग के मुख्य विषय 43
1.10. प्राचीन भारतीय कला शैलियां 45
1.10.1. प्रमुख कला शैलियां 46
1.10.2. कला में अन्य महत्वपूर्ण विषय 47
1. 11. मंदिर स्थापत्य 48
1.12. प्राचीन इतिहास के विविध विषय-वस्तु 50
1.12.1. प्राचीन भारत में महिलाएं 50
1.12.2. भारत की शास्त्रीय भाषाएँ और लुप्तप्राय भाषाएँ 52
1.12.3. रेशम मार्ग (सिल्क रोड) और प्राचीन भारत 53
1.12.4. भारत की वैश्विक सांस्कृतिक विरासत 54
1.12.4.1. यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल की अस्थायी सूची 54
1.12.4.2. यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MoW) रजिस्टर 54
2. मध्यकालीन भारत का इतिहास और कला एवं संस्कृति 56
2.1. मध्यकालीन भारत की साहित्यिक परम्पराएं 56
2.1.1. फारसी साहित्य का विकास 56
2.2. भक्ति और सूफी आंदोलन 57
2.2.1. भक्ति आंदोलन 57
2.2.1.1. भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण विशेषताएं 58
2.2.1.2. भक्ति साहित्य 58
2.2.1.3. भक्ति का प्रभाव और असर 60
2.2.1.4. सुर्ख़ियों में रहे प्रमुख भक्ति संत 60
2.2.2. सूफी आंदोलन 62
2.2.2.1. अमीर खुसरो: फारसी साहित्य और संगीत के प्रवर्तक 62
2.3. सल्तनतकालीन स्थापत्यकला 63
2.3.1. तुर्कों द्वारा प्रस्तुत प्रमुख स्थापत्यकला संबंधी तत्व 64
2.4. मुगल स्थापत्यकला (हिंद-इस्लामिक स्थापत्यकला) 65
2.4.1. प्रमुख स्थापत्यकला विशेषताएं 66
2.4.2. मुगल काल के दौरान चरणबद्ध तरीके से स्थापत्य कला का विकास 67
2.5. क्षेत्रीय स्थापत्यकला 69
2.5.1. भारत में क्षेत्रीय स्थापत्यकला 69
2.6. चोल साम्राज्य 70
2.6.1. राजनीतिक और नौसैनिक वर्चस्व छात्र 70
2.6.2. चोल विरासत: कला और संस्कृति का स्वर्ण युग 71

2.7. विजयनगर काल 73
2.7.1. विजयनगर स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएं 73
2.7.2. विजयनगर साम्राज्य का साहित्य: यात्री वृत्तांत 74
2.8. मध्यकालीन काल में चित्रकला और कला 75
2.8.1. मुगल चित्रकला 75
2.8.2. क्षेत्रीय कला शैली 78
2.8.2.1. पहाड़ी चित्रकला शैली 78
2.8.2.2. राजपूत चित्रकला शैली 78
3. आधुनिक भारतीय इतिहास 80
3.1. 18वीं शताब्दी और ब्रिटिश सत्ता का उदय 80
3.1.1. 18वीं शताब्दी की खंडित भारतीय राजनीति और ईस्ट इंडिया कंपनी का उदय 80
3.1.2. ईस्ट इंडिया कंपनी के उत्थान के प्रमुख कारक 81
3.1.3. ब्रिटिश नीतियां और भारत में शक्ति का समेकन 82
3.1.3.1. सहायक संधि प्रणाली 82
3.1.3.2. व्यपगत का सिद्धांत 83
3.1.3.3. कुशासन का आरोप लगाकर विलय 83
3.1.3.4. आर्थिक और भू-राजस्व नीतियां 84
3.1.4. ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव और राष्ट्रवादी आलोचना 84
3.2. भारतीय प्रतिक्रिया - विद्रोह और सुधार 86
3.2.1. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन 86
3.2.2. 1857 का विद्रोह 88
3.2.3. राष्ट्रवाद का उदय 90
3.2.4. राष्ट्रीय आंदोलन में शिक्षा और प्रेस की भूमिका 90
3.3. संगठित आंदोलनों का युग 91
3.3.1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: "सुरक्षा वाल्व" का एक मिथक 91
3.3.2. उदारवादियों की भूमिका (1885-1905) 92
3.3.3. उदारवादियों के प्रति प्रतिक्रिया: उग्रवादी चरण (1905-1918) 92
3.3.4. कांग्रेस में वैचारिक विभाजन: स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव 94
3.3.5. क्रांतिकारी आंदोलनों का योगदान 95
3.4. गांधीवादी युग और जन आंदोलन 98
3.4.1. गांधीजी का उदय और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति उनका दृष्टिकोण 98
3.4.1.1. भारत छोड़ो आंदोलन (1942): अंतिम जन आन्दोलन 100
3.5. वामपंथ का उदय: 1930 के दशक में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप 101
3.6. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर: विचारधारा और विरासत 102
3.7. स्वतंत्रता और विभाजन की ओर 104
3.7.1. सांप्रदायिकता का उदय और विभाजन की प्रक्रिया 104
3.7.1.1. भारत का विभाजन: स्वीकृति के कारण और इसकी विरासत 105
4. आजादी के बाद का भारत 109
4.1. राष्ट्र निर्माण की परियोजना 109

4.1.1. रियासतों का एकीकरण 109
4.1.2. कश्मीर: भारत के साथ एकीकरण 110
4.1.3. राज्यों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन 111
4.1.4. भारत की जनजातीय (आदिवासी) समुदायों का एकीकरण 112
4.2. लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं और राजनीतिक परिस्थितियां 113
4.2.1. नेहरू युग (1947–1964): सहमति और चुनौतियां 113
4.2.2. विपक्षी पार्टियों का उदय 114
4.2.3. आपातकाल (1975-1977): भारतीय लोकतंत्र के लिए परीक्षा की घड़ी 115
4.2.4. क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय पार्टियों का उदय 116
4.2.5. दलित राजनीति: सामाजिक आंदोलन से राजनीतिक सत्ता तक 116
4.2.6. स्वतंत्रता के बाद भारत में अलगाववादी आंदोलन 118
4.2.6.1. पंजाब और खालिस्तान आंदोलन 118
4.3. विदेश नीति और बाहरी संबंध 119
4.3.1. गुटनिरपेक्षता और नेहरू की विदेश नीति 119
4.3.2. भारत-पाकिस्तान संबंध 120
4.3.3. भारत-पाक युद्ध (1971) और बांग्लादेश मुक्ति युद्ध 121
4.3.4. शीत युद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति में बदलाव 122
5. विश्व इतिहास 125
5.1. आधुनिक विश्व की नींव - क्रांतियां और उनका प्रभाव 125
5.1.1. अमेरिकी क्रांति (1776): आधुनिक लोकतंत्र की शुरुआत 125
5.1.2. फ्रांसीसी क्रांति (1789): स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व 126
5.2. विश्व युद्ध: वैश्विक व्यवस्था को नया आकार देना 127
5.2.1. प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) 127
5.2.2. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) 128
5.2.3. लीग ऑफ नेशंस 129
5.3. विचारधाराएं (Ideologies) 130
5.3.1. रूस में साम्यवाद (Communism in Russia) 130
5.3.2. चीनी साम्यवाद 131
5.4. विऔपनिवेशीकरण और उसकी विरासत 132
5.4.1. मध्य पूर्व में उपनिवेशवाद का उन्मूलन और संघर्षों का उदय 133
5.5. शीत युद्ध का दौर 135
5.5.1. प्रॉक्सी युद्ध: विचारधारा और प्रभाव के लिए एक वैश्विक लड़ाई 135
5.5.2. सोवियत संघ का विघटन 136
5.5.3. रूस-यूक्रेन संघर्ष: शीत युद्ध की विरासत 137
5.6. राष्ट्रीय सीमाओं का पुनर्निर्धारण: कारण और परिणाम 138

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

ऑप्शनल सब्जेक्ट
टेस्ट सीरीज़

- ✓ भूगोल
- ✓ समाजशास्त्र
- ✓ दर्शनशास्त्र
- ✓ हिंदी साहित्य
- ✓ राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

2025	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

2026	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

Lakshya

MAINS MENTORING PROGRAM 2025

30 Days Expert Intervention

A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims Examination

15 JULY 2025

- Highly experienced and qualified team of Mentors for continuous support and guidance
- A structured plan of revision for GS Prelims, CSAT, and Current Affairs
- Effective Utilization of learning resources, including PYQs, Quick Revision Modules (QRMs), and PT-365

Lakshya

PRELIMS & MAINS INTEGRATED MENTORING PROGRAM

Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Program 2026

(A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims and Mains Examination 2026)

VisionIAS introduces the Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Programme 2026, offering unified guidance for UPSC aspirants across both stages, ensuring comprehensive support and strategic preparation for success

2026	13.5 MONTHS	16 JULY

Highlights of the Program

- Coverage of the entire UPSC Prelims and Mains Syllabus
- Development of Advanced answer writing skills
- Highly experienced and qualified team of senior mentors
- Special emphasis to Essay & Ethics

परिचय (Preface)

मुख्य परीक्षा 2025 के समर्पित अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

सिविल सेवा परीक्षा के पहले चरण को सफलतापूर्वक पार करने पर आपको बधाई। प्रीलिम्स से मेन्स की यात्रा केवल ज्ञान का नहीं, बल्कि रणनीति, सहनशक्ति और समझदारी से की गई मेहनत का भी परीक्षण है। हम समझते हैं कि यह महत्वपूर्ण समय अक्सर उलझन और दबाव से भरा होता है।

इतने विशाल और बदलते हुए पाठ्यक्रम के बीच सीमित समय में तैयारी करते हुए आपके मन में यह प्रश्न आना स्वाभाविक है: क्या पढ़ें? क्या छोड़ा जा सकता है? तैयारी को इस तरह कैसे ढालें कि एक वास्तविक प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिल सके?

इन्हीं चुनौतियों की गहरी समझ के साथ हमने मुख्य परीक्षा 2025 के लिए यह इतिहास वैल्यू एडेड मैटेरियल (VAM) तैयार किया है। यह केवल एक और नोट्स संकलन नहीं है, बल्कि एक रणनीतिक उपकरण है, जो GS पेपर 1 के इतिहास खंड की जटिलताओं को पार करने में आपका विश्वसनीय साथी बनेगा।

दृष्टिकोण: PYQ विश्लेषण के माध्यम से सटीकता और प्रासंगिकता

इस डॉक्यूमेंट की नींव 2013 से 2024 तक UPSC मुख्य परीक्षा में इतिहास से पूछे गए प्रश्नों के सूक्ष्म और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर आधारित है। हमारा मानना है कि परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का गंभीर अध्ययन करना ही परीक्षक की अपेक्षाओं को समझने का सबसे सटीक तरीका है।

GS पेपर 1 में इतिहास से पूछे गए प्रश्न से संबंधित अंक वितरण

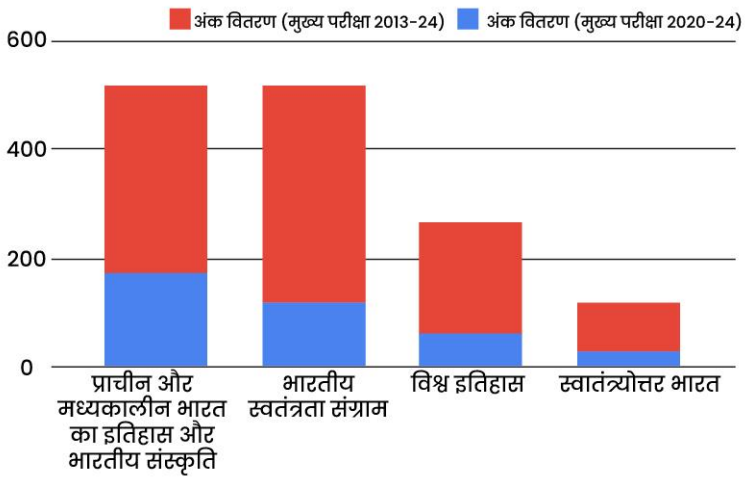

इसी कठोर विश्लेषण ने इस कंटेंट के हर पहलू को तैयार करने में मार्गदर्शक की भूमिका निभाई है।

यह डॉक्यूमेंट आपकी मुख्य परीक्षा की तैयारी को कैसे सशक्त करेगा?

हमारा मुख्य उद्देश्य आपको उच्च अंक प्राप्त करने वाले उत्तर लिखने के लिए आवश्यक कंटेंट और आत्मविश्वास प्रदान करना है। यह VAM तीन प्रमुख लक्ष्यों को पूरा करने के लिए तैयार किया गया है:

1. **मुख्य ऐतिहासिक अवधारणाओं को कुशलतापूर्वक रिवाइज करें:** यह कंटेंट इस प्रकार तैयार किया गया है कि आप पहले से पढ़ी हुई मुख्य ऐतिहासिक अवधारणाओं, घटनाओं और व्यक्तित्व की त्वरित और प्रभावी तरीके से रिवाइज कर सकें। यह सुनिश्चित करता है कि आपकी बुनियादी समझ मजबूत हो और आप उसे उत्तर लेखन में प्रभावी ढंग से लागू कर सकें।

2. **उच्च प्रभाव वाला वैल्यू एडिशन प्रदान करना:** सिर्फ मूल बातों तक सीमित न रहते हुए, यह डॉक्यूमेंट प्रत्येक थीम के लिए चयनित और समृद्ध कंटेंट प्रस्तुत करता है। इसमें समालोचनात्मक विश्लेषण, विविध व्याख्याएं, महत्वपूर्ण इतिहास लेखन दृष्टिकोण और प्रमुख उदाहरण शामिल हैं, जो आपके उत्तरों को गहराई और विशिष्टता प्रदान करेंगे।
3. **उच्च-संभावना वाली थीम्स को शामिल करना:** हम यह समझते हैं कि इतिहास एक स्टैटिक विषय होते हुए भी उसमें गहराई और परतें होती हैं। इसलिए, हमने उन प्रमुख थीम्स की पहचान की है और उन्हें व्यापक रूप से शामिल किया है, जो या तो सिलेबस के मूल सिद्धांतों से जुड़ी हैं या समकालीन शैक्षणिक विमर्श में महत्त्वपूर्ण मानी जा रही हैं।

आपकी सफलता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता

यह डॉक्यूमेंट एक समर्पित प्रयास का परिणाम है, जिसका उद्देश्य आपकी तैयारी को सरल बनाना और आपके प्रयास का अधिकतम लाभ सुनिश्चित करना है। लगभग 145 पन्नों में, यह कंटेंट इतिहास को आपके लिए सहज और स्पष्ट बना देता है। यह GS मेन्स 2025 के लिए इतिहास के रिवीजन के लिए आपका मुख्य टूल होगा।

हमारा मानना है कि एक स्पष्ट रणनीति और सही संसाधनों के साथ, आप अपनी कड़ी मेहनत को सफलता में बदल सकते हैं। इस प्रक्रिया पर भरोसा करें, इस कंटेंट का पूरी क्षमता से उपयोग करें और परीक्षा हॉल में इस विश्वास के साथ जाएं कि आपने स्मार्ट तरीके से तैयारी की है।

1. भारत का प्राचीन इतिहास और कला एवं संस्कृति (Ancient History and Art & Culture of India)

1.1. भारत की संस्कृति और उसकी निरंतरता (India's Culture and its Continuity)

1.1.1. भारत की जीवंत विरासत (The Living Heritage of India)

विरासत उन **सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक संपदाओं** को कहते हैं जो हमें अतीत से मिलती हैं और जिन्हें हम आने वाली पीढ़ियों को सौंप देते हैं। इनमें किसी समाज की **साझा स्मृतियां, प्रथाएं, परंपराएं और भौतिक संस्कृति** (वस्तुएं) शामिल होती हैं। **भारत** के मामले में, इसकी विरासत केवल पुरातन अवशेष ही नहीं हैं, बल्कि एक **परिवर्तनशील और जीवंत शक्ति** है, जो हमारी **पहचान** बनाती हैं, हमारे **वर्तमान** को आकार देती है और **भविष्य** को दिशा देती है।

भारतीय विरासत के तत्व

- **मूर्त विरासत:** इनमें स्थापत्य (जैसे, **एलोरा मंदिर, साँची स्तूप**), मूर्तियां (जैसे, **चोलकालीन कांस्य प्रतिमा), प्राचीन पांडुलिपियां** शामिल हैं।
- **अमूर्त विरासत:** इनमें गूढ़ दार्शनिक परम्पराएं (जैसे- **वेदांत**), साहित्यिक परंपराएँ (जैसे- **संस्कृत महाकाव्य, संगम साहित्य**), और जीवंत त्योहार शामिल हैं।
- **प्राकृतिक विरासत: जैव विविधता, पवित्र नदियां (जैसे- गंगा), पश्चिमी घाट** भारत की विरासत के अभिन्न अंग हैं।

इस विरासत की गहरी समझ बहुत ज़रूरी है, क्योंकि यह हमें **अतीत से जोड़ती** है, **गहरे सबक** सिखाती है, और **रचनात्मकता (क्रिएटिविटी) के लिए प्रेरित** करती रहती है।

भारतीय संस्कृति और उसकी विशेषताएं

दूसरी ओर, **संस्कृति** उन साझा विश्वासों, मूल्यों, रीति-रिवाजों, प्रथाओं, कलाओं और सामाजिक व्यवहारों को कहते हैं जो लोगों के एक समूह या एक समाज को परिभाषित करते हैं या उन्हें पहचान दिलाते हैं। इनमें **भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, कला, संगीत, साहित्य और पाक-परंपराएं (खानपान)** आदि शामिल हैं। ये सभी मिलकर किसी समाज को पहचान देते हैं।

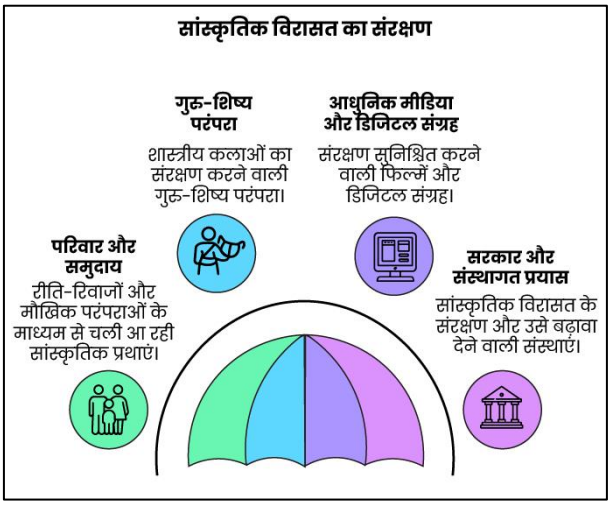

- **निरंतरता और अनुकूलनशीलता:** भारतीय संस्कृति समय के साथ बदलती रही है, लेकिन अपनी **प्राचीन जड़ों से जुड़ी** रही है। उदाहरण के लिए- आधुनिक समय में **शिव की पूजा** का संबंध सिंधु घाटी सभ्यता की **आद्य-शिव (पशुपति) वाली मुहर** से माना जाता है।
- **समन्वय और आत्मसात्करण:** भारतीय संस्कृति ने सदैव ही विदेशी तत्वों को आत्मसात किया है। उदाहरण के लिए- **इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला** और **उर्दू भाषा** की उत्पत्ति इत्यादि।
- **आध्यात्मिक और दार्शनिक गहनता: धर्म, कर्म और मोक्ष** भारतीय आध्यात्मिकता के मूल तत्व हैं।

- **विविधता में एकता:** भारतीय संस्कृति **भाषाई**, **क्षेत्रीय**, और **सामाजिक विविधता** को अपनी **एकीकृत सभ्यतागत ढांचे** में समाहित करती रही है।

संक्षेप हम कह सकते हैं कि, भारत की विरासत एक जीवंत धरोहर है, जो हमारे दैनिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। यह विरासत परंपराओं को सहेजते हुए आधुनिक परिवेश के अनुसार खुद को ढालती रहती है।

1.1.2. इतिहास को स्वरूप देने में कला और संस्कृति की भूमिका (The Role of Art and Culture in Shaping History)

कला और संस्कृति केवल इतिहास की उपज नहीं हैं; बल्कि वे उसे आकार या स्वरूप देने वाली सक्रिय शक्तियाँ हैं। वे इतिहास का दर्पण, उसका इंजन और उसका संचालक होती हैं — जो समाज को प्रतिबिंबित करती हैं, ऐतिहासिक परिवर्तन को प्रेरित करती हैं और साझा पहचान का निर्माण करती हैं।

- **ऐतिहासिक धरोहर के रूप में कला और संस्कृति:** कला और भौतिक संस्कृति प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचनाओं और विश्वासों के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। **उदाहरण:**
  - **भीमबेटका के शैलाश्रय कला:** इसके चित्र शिकार के तौर-तरीके, **जानवर और सामुदायिक अनुष्ठानों** को दर्शाते हैं।
  - **हड़प्पा की कलाकृतियां:** ये कलाकृतियां **धर्म, व्यापार संपर्क और केंद्रीकृत व्यवस्था/प्रशासन** का विवरण प्रदान करती हैं।
  - **मंदिर मूर्तिकला:** ये अलग-अलग मानव सभ्यताओं के **दरबारी जीवन, सैन्य व्यवस्था और आम लोगों के रहन-सहन की झांकी** प्रदान करती हैं।

सत्ता की वैधता और शक्ति प्रदर्शन के रूप में कला: शासकों ने अपनी सत्ता को मजबूत करने और अपने शासन को वैधता प्रदान करने के लिए कला और स्थापत्य का उपयोग किया। इस प्रकार कला वास्तव में सत्ता को वैधता प्रदान करने तथा शक्ति को प्रदर्शित और प्रसारित करने के साधन के रूप में कार्य किया है। **उदाहरण के लिए:**

- **मौर्यकालीन स्तंभ:** मौर्य सम्राट अशोक के स्तंभ उनके **साम्राज्य के विस्तार** और **नैतिक आदर्शों** का प्रतीक हैं।
- **गुप्तकालीन मंदिर और सिक्के: मंदिर स्थापत्य कला**, **राजाओं के चित्रों वाले सिक्कों** की वजह से स्वर्ण युग की अवधारणा।
- **चोलकालीन मंदिर:** बृहदेश्वर मंदिर राजा **राजराजा चोल** के निरंकुश शासन **और प्रभुत्व** का प्रतीक है।

पहचान और सामाजिक एकता का निर्माण: एक साझा सांस्कृतिक शब्दावली या भाषा अलग-अलग समुदायों के बीच एकता की भावना को बढ़ावा देती है। **उदाहरण के लिए:**

- **वैदिक साहित्य:** इंडो-आर्य (भारोपीय) समुदाय के लिए एक साझा धार्मिक और सामाजिक पहचान की स्थापना की।

- **महाकाव्य:** रामायण और महाभारत महाकाव्यों ने संपूर्ण भारत में सांस्कृतिक पहचान बनाने में अहम भूमिका निभाई है।
- **क्षेत्रीय मंदिर शैलियां:** नागर और द्रविड़ शैलियों ने क्षेत्रीय पहचान को मजबूत किया।

सामाजिक और धार्मिक परिवर्तन की प्रेरणा:

कला और संस्कृति परिवर्तन के माध्यम हैं, जो पुरानी व्यवस्था को चुनौती देती हैं और नए विचार पेश करती हैं। नए सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन विशिष्ट कलात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से पुरानी परंपराओं को चुनौतियां देते हैं। **उदाहरण के लिए:**

- **बौद्ध कला:** स्तूप ने **मोक्ष (निर्वाण) का एक नया मार्ग** दिखाया, जो सभी के लिए सुलभ था।
- **भक्ति आंदोलन:** इसने **स्थानीय भाषाओं** में कविताओं की रचना को प्रोत्साहित करके **ब्राह्मणवादी कर्मकांडों** को चुनौती दी और धर्म को व्यक्तिगत महत्व का विषय बनाया।

1.1.3. भारतीय कला और संस्कृति पर भूगोल का प्रभाव (Geography's Influence on Indian Art and Culture)

भूगोल ने भारत की कला और संस्कृति को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने कला के लिए उपलब्ध सामग्रियों को प्रभावित किया, भौगोलिक सीमाओं के माध्यम से विविध सांस्कृतिक क्षेत्रों का निर्माण किया, तथा गलियारों व समुद्री तटों के माध्यम से विविध संस्कृतियों के बीच संपर्क को संभव बनाया।

नदी घाटियां: सभ्यता और कला के पालने

सिंधु और गंगा नदी के मैदानों ने कृषि, शहरीकरण और कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- **सांस्कृतिक प्रभाव और उदाहरण:**
  - **हड़प्पा सभ्यता**: सिंधु घाटी में विकसित हुई इस सभ्यता के तत्वों में मृदभांड, मुहरें और कांस्य की प्रतिमाएं जैसी कलात्मक विशेषताएं शामिल थीं।
  - **गंगा नदी बेसिन के शहर**: पाटलिपुत्र जैसे नगरों ने मौर्य (अशोक) स्तंभों और बौद्ध स्तूपों जैसी कलाओं को संरक्षण व प्रोत्साहन दिया।

भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भूगोल की भूमिका

- **अभेद्य हिमालय:** हिमालय ने भारत को कई बाहरी आक्रांताओं से बचाया है। इस वजह से **हिंदू, बौद्ध और जैन जैसे देशज दर्शनों को निर्बाध रूप से विकसित** होने का मौका मिला, तथा **महाभारत और रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों को संरक्षित** रखने में अहम भूमिका निभाई।
- **आंतरिक सीमाएं: विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमाला, जंगल और थार मरुस्थल** जैसी स्थलाकृतियों ने **क्षेत्रीय विविधता का संरक्षण किया, भाषाई विरासत** (उदाहरण के लिए, तमिल) को बढ़ावा दिया और आदिवासी संस्कृतियों और लोक परंपराओं की रक्षा की।
- **उपजाऊ मैदान:** उपजाऊ कृषि मैदानों ने **मौर्य और गुप्त जैसे साम्राज्यों को फलने-फूलने का अवसर** प्रदान किया। इन राजवंशों ने संस्कृत साहित्य को बढ़ावा दिया, राजत्व, कानून, कला आदि पर संस्कृत में लिखित रचनाओं को संरक्षित किया।

पर्वत: प्राकृतिक अवरोध और संपर्क मार्ग का निर्माण

भारत के पर्वतों ने प्राकृतिक अवरोधक या सीमा बनाकर अलग-अलग सांस्कृतिक क्षेत्रों का निर्माण किया और गलियारों (मार्ग) के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भूमिका निभाई।

सांस्कृतिक प्रभाव और उदाहरण:

- **हिमालय**: इसने भारतीय बौद्ध विषयवस्तु और यूनानी-रोमन कला रूप के मिश्रण से गांधार कला शैली को जन्म और संरक्षण प्रदान किया।
- **विंध्याचल पर्वतमाला**: इसने उत्तर भारत की नागर और दक्षिण भारत की द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैलियों के बीच विभाजक रेखा का कार्य किया।

भारतीय संस्कृति पर हिंद महासागर का प्रभाव

- **व्यापार के माध्यम से आर्थिक संवृद्धि:** हिंद महासागर ने **मानसूनी पवनों के जरिए** व्यापार को सुगम बनाया। इससे भारत को **अफ्रीका, अरब देशों और रोमन साम्राज्य से व्यापारिक संबंध** बनाने में मदद मिली। चोल जैसे तटीय साम्राज्य इस आर्थिक समृद्धि के चलते विकसित हुए।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन:** समुद्री व्यापार के कारण तटीय शहरों में एक **समृद्ध व्यापारी वर्ग और विविध सांस्कृतिक समाजों का उदय** हुआ। भारतीय संस्कृति, विशेषकर हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म, पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में फैल गई।
- **रणनीतिक नौसैनिक शक्ति: चोलों के नौसैनिक अभियानों** ने हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के प्रभाव को मजबूत किया, समुद्री व्यापार मार्गों को सुरक्षित किया और श्रीविजय जैसे राज्यों के खिलाफ सैन्य अभियान चलाए।
- **तकनीकी और वैज्ञानिक आदान-प्रदान:** भारत ने **जहाज निर्माण की तकनीकों और शून्य जैसी गणितीय अवधारणाओं** को दुनिया में फैलाया। वहीं, ग्रीक-रोमन वैज्ञानिक ज्ञान को भारत ने अपने खगोलशास्त्र और ज्योतिष-विज्ञान में अपनाया।
- **भारतीय सभ्यता का प्रसार:** भारत के समुद्री संबंध ऑस्ट्रेलिया जैसे सुदूर देशों तक फैले हुए थे, सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने फारस को प्रभावित किया और दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय स्वरूप वाले साम्राज्यों की स्थापना हुई।

प्राकृतिक संसाधन: कला के माध्यम का निर्धारक

स्थानीय सामग्रियों की उपलब्धता ने भारतीय कला की शैली और स्थायित्व को प्रभावित किया।

- **सांस्कृतिक प्रभाव और उदाहरण:**
  - **प्रस्तर (पाषाण) स्थापत्य कला:** मध्य भारत में बलुआ पत्थर की उपलब्धता के कारण साँची जैसे स्तूपों का निर्माण संभव हुआ।
  - **शैलकृत (रॉक-कट) स्थापत्य कला:** दक्कन के पठार ने अजंता और एलोरा की गुफाओं के निर्माण को सुगम बनाया।
  - **कांस्य मूर्तिकला:** चोल काल की कांस्य प्रतिमाएं, विशेष रूप से नटराज की मूर्ति, उन्नत धात्विक कला के प्रमाण हैं।

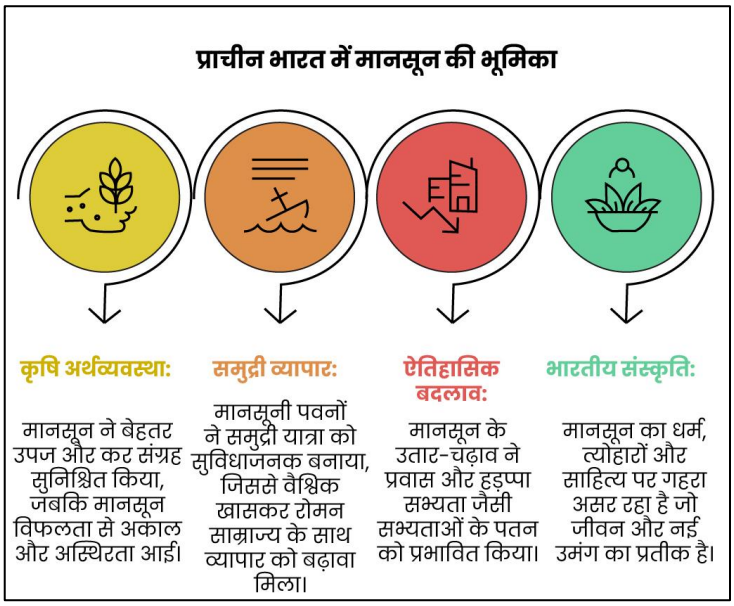

समुद्री तट: व्यापार और सांस्कृतिक प्रसार का द्वार

भारत के समुद्री तट ने व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में अहम योगदान दिया है। इसने भारतीय कला को प्रभावित किया और उसे विदेशों तक पहुंचाने में मदद की।

सांस्कृतिक प्रभाव और उदाहरण:

- **रोमन व्यापार:** अरिकामेडु जैसे बंदरगाहों से रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार के प्रमाण मिले हैं। रोमन व्यापार से कई नई कलात्मक शैलियां भारत में आईं।
- **दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रसार:** भारतीय सांस्कृतिक तत्व जैसे धर्म और स्थापत्य शैलियों का प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया में हुआ जो अंगकोरवाट व बोरोबुदुर जैसे स्मारकों में परिलक्षित होता है।

विविधता में एकता

भारत की **"विविधता में एकता"** की ऐतिहासिक पहचान उस प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें एक ओर **अलग-अलग क्षेत्रीय पहचानें बनीं**, तो दूसरी ओर **सभी को एक साझा सभ्यता के सूत्र में पिरो गया**।

विविधता को बढ़ावा देने वाले कारक

- **भौगोलिक (प्राकृतिक) अवरोध:** देश के भीतर के पर्वतमाला (जैसे विंध्याचल), जंगल और मरुस्थल ने प्राकृतिक अवरोधक का कार्य किया, जिससे **अलग-अलग भाषाएँ, रीति-रिवाज और पहचान विकसित** हुईं।
- **प्रवासन और आक्रमण:** निरंतर प्रवासन और आक्रमणों (जैसे **इंडो-आर्य, शक, कुषाण, हूण)** ने सांस्कृतिक विविधता में नए तत्व शामिल किए।
- **राजनीतिक विखंडन:** प्राचीन भारत में क्षेत्रीय साम्राज्य स्वायत रूप से शासन करते थे। इस वजह से विशिष्ट **राजनीतिक संस्कृतियों को स्वतंत्र रूप से फलने-फूलने** का मौका मिला।
- **जाति व्यवस्था:** हजारों जातियों पर आधारित भारत की **जाति व्यवस्था** ने विशिष्ट परंपराओं और रीति-रिवाजों के साथ बहुरंगी सामाजिक विविधता पैदा करने में अहम भूमिका निभाई।
- **स्थानीय लोक परंपराएं: गांवों के देवी-देवता (ग्रामदेवता),** लोक नायक और **प्रकृति-आधारित मान्यताएं** (जैसे वृक्ष, जानवरों की पूजा) भारत की जीवंत और रंग-बिरंगी स्थानीय विविधता की आधारशिला हैं।

एकता को बढ़ावा देने वाले कारक

- **एकीकृत भौगोलिक इकाई:** हिमालय और हिन्द महासागर ने **भारतवर्ष** को एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई बनाया, जिससे एक साझा मातृभूमि की भावना उत्पन्न हुई।
- **सार्वभौमिक साम्राज्य का आदर्श:** प्राचीन भारत के मौर्य और गुप्त जैसे अखिल भारतीय साम्राज्यों की स्मृति ने राजनीतिक एकता का आदर्श प्रस्तुत किया।
- **तीर्थयात्रा और पवित्र भौगोलिक स्थल:** भारत भर में फैले तीर्थस्थलों की यात्राओं (तीर्थयात्रा) ने विभिन्न क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ने में मदद की।
- **महाकाव्यों और पुराणों के साझा आख्यान:** इन महाकाव्यों ने पूरे भारत में साझा नायकों, मिथकों और मूल्यों के जरिए सांस्कृतिक एकता स्थापित की।
- **मठों के आदेश पूरे भारत में लागू:** बौद्ध और जैन मठों ने पूरे भारत के लिए समान सिद्धांतों, कला रूपों और शिक्षा प्रणालियों का प्रसार किया।
- **व्यापार मार्गों के माध्यम से एकीकरण:** उत्तरापथ और दक्षिणापथ जैसे प्रमुख व्यापार मार्गों ने वस्तुओं, विचारों और सांस्कृतिक परंपराओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाया।
    - **साझा कलात्मक व्याकरण:** साझा काव्य सिद्धांत **(रस)** और **स्थापत्य सिद्धांत (शिल्पशास्त्र)** ने पूरे भारत में एकीकृत कलात्मक भाषा-स्वरुप प्रदान की।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
SANDHAN
Vision IAS की ओर से पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज

1.1.4. भारतीय सभ्यता की निरंतरता (Continuity of Indian Civilization)

भारतीय संस्कृति ने जो अनूठी निरंतरता दिखाई है, वह अन्य कई प्राचीन सभ्यताओं से अलग है। जहां अन्य सभ्यताओं में धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएं समाप्त हो गई है, वहीं भारत में वे लगातार बनी रहीं। इस निरंतरता के पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारक रहे हैं जिन्होंने हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति को बचाए रखने और विकसित होने में अहम भूमिका निभाई है।

- **भूगोल: अलगाव और विविधता की ढाल**: भारत के भूगोल (स्थलाकृति) ने बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करके भारत की संस्कृति को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
    - **हिमालय-प्राकृतिक किला के रूप में:** हिमालय पर्वत ने **भारत को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान की**, जिससे भारतीय संस्कृति बाहरी प्रभावों से अछूती रही और बिना रुकावट के विकसित होती रही।
    - **आंतरिक आश्रय स्थल: विंध्याचल जैसे पर्वत, घने जंगल और मरुस्थल** आदि ने भारत के भीतर अलग-अलग क्षेत्रों को सुरक्षित और अलग-थलग बनाए रखा। इससे यह हुआ कि जब साम्राज्य बदले, तब भी इन जगहों पर पुरानी परंपराएं और जनजातीय संस्कृतियाँ सुरक्षित बनी रहीं।
- **भारतीय धर्मों की आत्मसातकरण और समन्वयकारी प्रकृति:** भारतीय धर्म, विशेष रूप से **हिंदू धर्म** की प्रकृति पश्चिमी और मध्य-पूर्व के धर्मों से अलग है, जिससे वह समय के साथ ढलती रही है।
    - **कोई केंद्रीकृत नियम या एक ही पवित्र ग्रंथ नहीं:** हिंदू धर्म का कोई एक संस्थापक या **कोई एक पवित्र ग्रंथ नहीं** है। ये विशेषताएं इसे लचीला बनाती हैं और बाहरी खतरों को भी झेलने में सक्षम बनाती है।
    - **नए प्रभावों को आत्मसात करने की प्रक्रिया:** भारतीय धर्मों ने समय के साथ नए प्रभावों को अपनाया। उदाहरण के लिए- स्थानीय देवी-देवताओं को पौराणिक देवी-देवताओं में शामिल कर लिया गया। **गौतम बुद्ध को विष्णु के एक अवतार** के रूप में स्वीकार कर लिया गया।
    - **अन्य सभ्यताओं से भिन्नता:** जहाँ **अब्राहमिक धर्म** (जैसे ईसाई, यहूदी, इस्लाम) पुराने पंथों/विश्वासों को **हटाकर** नए धर्म को स्थापित किया, वहीं **भारतीय धर्मों ने अन्य पंथों या विश्वासों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उन्हें अपने अंदर समाहित कर लिया**।
- **वर्ण/जाति व्यवस्था का लचीलापन:** जाति व्यवस्था ने जहाँ **एक ओर सख्त सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया तो दूसरी ओर इसने असमानता को भी जन्म दिया।**
    - **राज्य से परे व्यवस्था:** जाति व्यवस्था ने एक ऐसा सामाजिक ढांचा प्रदान किया जो **साम्राज्य के उत्थान-पतन यानी राजनीतिक बदलावों से स्वतंत्र** था। इसने विभिन्न राजाओं और साम्राज्यों के उत्थान-पतन के बावजूद भारतीय संस्कृति की निरंतरता सुनिश्चित की।
    - **संस्कृति का वंशानुगत संरक्षण:** हर जाति (जैसे कुम्हार, सुनार, बढ़ई आदि) में **कला, कौशल, अनुष्ठान और ज्ञान** माता-पिता से बच्चों को सौंपा जाता था। इससे परंपराएं और रीति-रिवाज़ पीढ़ियों तक सुरक्षित रहीं।
- **आक्रमण और आत्मसात्करण का स्वरूप:** भारत में विदेशी आक्रमणों का स्वरूप कुछ ऐसा रहा है कि आक्रमणकारी यहां की संस्कृति को नष्ट करने की बजाय उसमें मिल गए।
    - **संस्कृति को नष्ट नहीं, बल्कि आत्मसात किया:** यूनानी, शक, और कुषाण जैसे विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत आने के बाद **भारतीय धर्मों और भाषाओं को अपनाया**, और धीरे-धीरे भारतीय संस्कृति में घुल-मिल गए।
    - **इंडो-इस्लामिक मिश्रण:** तुर्क-अफगान और मुगल आक्रमण के बाद भी, भारत में सांस्कृतिक मिश्रण की प्रक्रिया देखी गई। इसके तहत **इंडो-इस्लामिक संस्कृति की उत्पत्ति** हुई, जिसमें स्थापत्य कला, भाषा और संगीत में भारतीय और इस्लामी परंपराओं का मिश्रण देखने को मिला।

INSV कौंडिन्य

भारतीय नौसेना के पोत (INSV) कौंडिन्य का कारवार नौसैनिक अड्डे पर शामिल होना भारत की प्राचीन जहाज निर्माण परंपरा की विशिष्टताओं को उजागर करता है। इसका निर्माण **2,000 वर्ष पुरानी टंकाई पद्धति से किया** गया है।

- इस तकनीक में लकड़ी की तख्तों को **नारियल की रस्सी और प्राकृतिक रेज़िन से सिलाई करके** जोड़ा जाता है, जिससे जहाजों को अद्भुत लचीलापन और मजबूती मिलती थी। इससे जहाज उथले जल में आसानी से यात्रा कर पाते है।
- INSV कौंडिन्य का डिज़ाइन **अजंता गुफाओं (5वीं शताब्दी ई.)** में दिखाए गए एक प्राचीन जहाज से प्रेरित है, जिससे यह भारत के **समृद्ध समुद्री व्यापार के अतीत** से जुड़ता है।

- इस पोत का नाम **कौंडिन्य** के नाम पर रखा गया है। वे दक्षिण-पूर्व एशिया तक समुद्री यात्रा करने वाले **प्रसिद्ध नाविक** थे। यह पोत महासागरों की यात्रा की प्राचीन भारतीय परंपरा का गवाह है।
- **INSV कौंडिन्य**, **जहाज निर्माण की** भारत की समृद्ध परंपरा **और सामुद्रिक क्षेत्र में प्रभाव** का प्रतीक है।

1.2. पाषाण काल (Stone Age)

पाषाण काल भारत का सबसे प्रारंभिक प्रागैतिहासिक काल है। इस काल में जीवन मुख्य रूप से पत्थर के औजारों के उपयोग पर आधारित था। प्रागैतिहासिक काल की शुरुआत **पुरापाषाण काल** से हुई। इस काल में लोग खानाबदोश आखेटक-खाद्य-संग्रहकर्ता थे और कठोर, बिना घिसे औजारों का उपयोग करते थे। पुरापाषाण काल के बाद आया **मध्यपाषाण काल आया**, जो एक संक्रमणकाल था। इस काल में लोगों ने सटीकता से शिकार करने के लिए छोटे, नुकीले पत्थर के औजार बनाए जिन्हें माइक्रोलिथ यानी **सूक्ष्म औजार** कहते हैं। इस काल की समाप्ति के बाद **नवपाषाण काल** आया। इस काल में मानव के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव आया। इसी काल में सर्वप्रथम **कृषि की शुरुआत हुई**, पहली बार **घिसे-पॉलिशदार औजारों** का उपयोग शुरू हुआ, और **पहली स्थायी बस्तियों** की स्थापना हुई।

1.2.1 पाषाण युग के महत्वपूर्ण पहलू (Important Aspects of the Stone Age)

अवधि	**पुरापाषाण काल (Paleolithic)**	**मध्यपाषाण काल (Mesolithic)**	**नवपाषाण काल (Neolithic)**
समय अवधि	लगभग **25 लाख साल पूर्व से 10,000 ईसा** पूर्व तक	**लगभग 10,000 ई. पू. से 4,000 ई. पू. तक**	**लगभग 4,000 ई. पू. से 2,000 ई. पू. तक**
विभिन्न काल-खंड में जीवनशैली में	• लोग छोटे, **घुमंतू समूहों** में रहते थे। • उनका जीवन बड़े **जानवरों के शिकार, कंद,**	• **आखेटक-खाद्य संग्राहक से अधिक स्थायी जीवन में परिवर्तन; प्रारंभिक कृषि के साक्ष्य**	.यह काल (अवधि) आमतौर पर **"नवपाषाण क्रांति"** के नाम से जाना जाता है। • लोगों ने **कृषि कार्य**

परिवर्तन क्षेत्र	**फल-फूल** पर निर्भर था। • वे सुरक्षा के लिए **प्राकृतिक गुफाओं और शैलाश्रय** का उपयोग करते थे।	• औजारों की तकनीक के विकास (माइक्रोलिथ) के कारण **शिकार के तरीके अधिक उन्नत** हो गए। • जानवरों को **पालतू बनाने की दिशा में पहला कदम** इसी काल में देखे गए।	**(गेहूं, जौ और चावल जैसी फसलें उगाना)** करना शुरू कर दिया और गाँवों में **स्थायी जीवन जीना** शुरू कर दिया।
क्षेत्र	**प्रमुख स्थल:** भीमबेटका (मध्य प्रदेश), अत्तिरमपक्कम (तमिलनाडु)।	**प्रमुख स्थल:** बागोर (राजस्थान), आदमगढ़ (मध्य प्रदेश)।	**प्रमुख स्थल:** मेहरगढ़ (पाकिस्तान), बुर्जहोम (कश्मीर), चिरांद (बिहार)।
उपकरण प्रौद्योगिकी का विकास	**पत्थर के बने हस्त-कुठार, चॉपर, क्लीवर आदि।** 	**माइक्रोलिथ अर्थात सूक्ष्म औजार** (छोटे व नुकीले औजार), तीरों के सिरे और खुरचनी आदि। 	**पॉलिशदार पत्थर के औजार, कुल्हाड़ी, बसूला (एडज़) आदि।**
कला और संस्कृति	• इस काल में ही **शैलचित्र कला (रॉक आर्ट)** की सबसे प्रारंभिक शुरुआत हुई। **भीमबेटका** जैसे स्थलों पर जानवरों के बड़े-बड़े चित्र पाए गए हैं। • ये शैलचित्र प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये हमें **उस समय की आर्थिक गतिविधियों (जैसे शिकार), सामाजिक संगठन (सामुदायिक जीवन), विश्वासों और अनुष्ठानों (आध्यात्मिक उद्देश्य, तांत्रिक क्रियाएं, शमनवाद/ओझा) की प्रमाणिक जानकारी** देते हैं। साथ ही, समय के साथ पर्यावरण और प्रौद्योगिकी में परिवर्तनों की भी तस्वीर पेश करते हैं। • इन चित्रों के अलावा, **मृदभांड भी इस काल में कला और संस्कृति का अहम** हिस्सा थे। हालांकि शुरुआत में इनकी डिजाइन बहुत साधारण थी। 		

1.2.2. प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने में गैर-साहित्यिक स्रोतों की भूमिका (The Role of Non-Literary Sources in Understanding Ancient Indian History)

शैलचित्र और मृदभांड जैसे गैर-साहित्यिक स्रोत हमें प्राचीन भारत के जीवन, संस्कृति और प्रौद्योगिकी ज्ञान के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करते हैं। ये स्रोत लिखित दस्तावेजों से परे प्रारंभिक समाजों को समझने में हमारी मदद करते हैं।

1.2.2.1. शैलचित्र: प्रागैतिहासिक जीवन की एक झलक (Rock Paintings: A Glimpse into Prehistoric Life)

शैलचित्र, जैसे कि **भीमबेटका** की गुफाओं में पाए गए चित्र, प्रारंभिक मानव जीवन के प्रत्यक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

- ये चित्र **शिकार, सामुदायिक गतिविधियों और अनुष्ठानों की झलक** प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, प्रारंभिक आर्थिक गतिविधियों, सामाजिक जीवन और आध्यात्मिक विश्वासों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- कुछ चित्रों में **शैमैनिक (ओझा/तांत्रिक) परंपराएं** और **सहानुभूतिक जादू** (Sympathetic magic) दिखाया गया है, जो उनके धार्मिक दृष्टिकोण का संकेत देते हैं।
- शैली में बदलाव पर्यावरण और तकनीक में आए परिवर्तनों को भी दर्शाते हैं।

1.2.2.2. मृदभांड: प्रौद्योगिकी और सामाजिक विकास का प्रतिबिंब (Pottery: Reflecting Technological and Social Evolution)

पाषाण युगीन मृदभांड हस्तनिर्मित से लेकर चाक-निर्मित मृदभांड की विकास यात्रा है, जो समाज और प्रौद्योगिकी में बदलाव का संकेत देता है:

- नवपाषाण कालीन मृदभांड **कृषि की शुरुआत** का संकेत देते हैं।
- **हड़प्पाकालीन मृदभांड** अत्यधिक संगठित समाज की तस्वीर पेश करते हैं। **उत्तरी काले चमकदार मृदभांड (NBPW) मौर्यकालीन समृद्ध समाज** की झलक प्रदान करते है।
- **गैरिक मृदभांड (OCP), चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) आदि** से सांस्कृतिक काल-खंडों की पहचान और समय निर्धारण में मदद मिलती है।
- मृदभांड व्यापार संबंधों का भी उल्लेख करते हैं। **मेसोपोटामिया में हड़प्पाकालीन मृदभांड और भारत में रोमन मृदभांड** पाए गए हैं, जो **सांस्कृतिक आदान-प्रदान** का संकेत देते हैं।

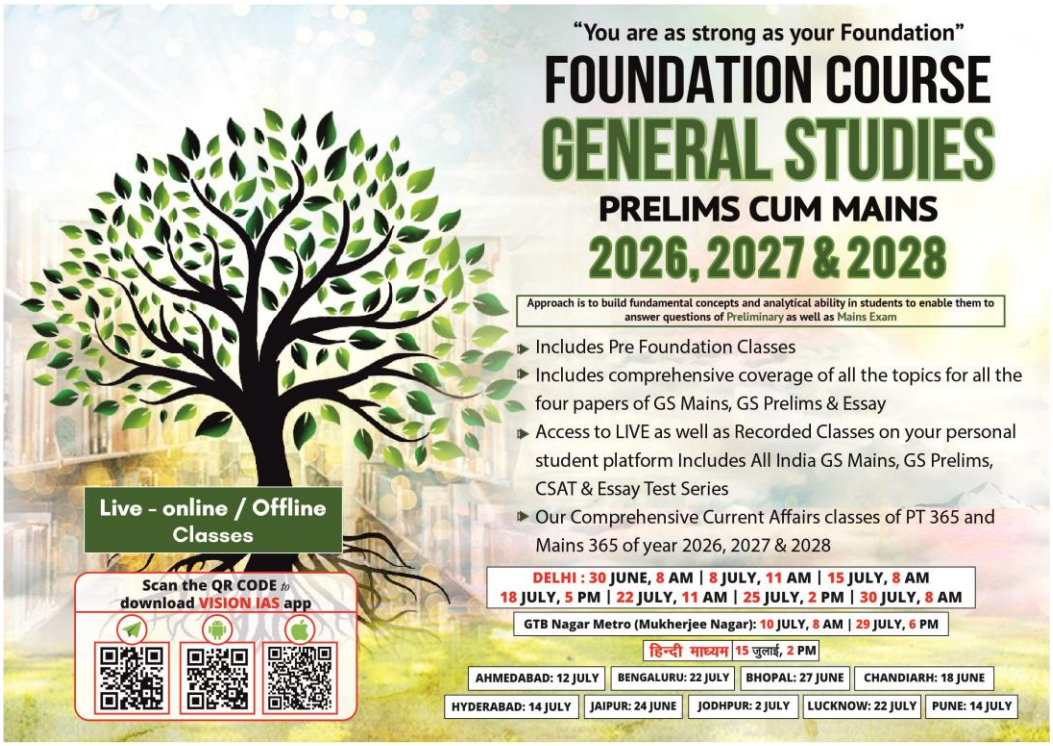

1.3. हड़प्पा सभ्यता (Harappan Civilization)

सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) कांस्य युगीन सभ्यता थी जो भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भागों में **3300 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व** के बीच विकसित हुई। यह प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ, तीन प्रारंभिक नदी घाटी सभ्यताओं में से एक थी। सिंधु घाटी सभ्यता इनमें सबसे बड़ी थी, जो लगभग **800,000 वर्ग किलोमीटर** के क्षेत्र में फैली हुई थी। इस विशाल क्षेत्र में आधुनिक पाकिस्तान, उत्तरी भारत और उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान के कुछ हिस्से शामिल थे।

1.3.1. हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ (Key Features of Harappan Civilisation)

1.3.1.1. शहरी नियोजन और स्थापत्य (Urban Planning and Architecture)

घटक	चित्र	विवरण
शहरों का वर्गीकरण		एक आम हड़प्पा शहर **दो भागों** में विभाजित था: • **दुर्ग:** जहां संभवतः **शासक वर्ग** रहता था। इसमें सामुदायिक भवन और अन्नागार भी थे। • **निचला शहर:** यहां **आम लोग** रहते थे और कार्य करते थे • कुछ नगरों (जैसे **धोलावीरा**) में एक **तीसरा भाग** भी पाया गया है। विद्वानों के अनुसार **दुर्ग और निचले शहर के बीच स्थित** इस क्षेत्र में कुशल कारीगर एवं व्यापारी रहते थे।
निर्माण सामग्री		• **धूप में सुखाई गई व पकी हुई ईंटें और मिट्टी की ईंटें** प्राथमिक निर्माण सामग्री थीं। **ईंट का मानक आकार 1:2:4 अनुपात में था।** • कभी-कभी गाँवों में मकानों की नींव डालने और नालियां बनाने के लिए **पत्थर** का उपयोग भी किया जाता था।
जल निकासी व्यवस्था		• सभी नगरों, छोटे कस्बों और गांवों में **उन्नत जल निकासी प्रणाली** थी। • नालियां मुख्य सड़कों पर स्थित **बड़ी नालियों से जुड़ी** होती थीं, जो नगर के बाहर तक जाती थीं। • **मुख्य नालियों में ईंट या पत्थर के घुमावदार मेहराब** थे, जिनमें अंतराल पर ठोस अपशिष्ट संग्रह के लिए आयताकार सोख-गड्ढे बनाए गए थे। • सीवेज पाइप **वर्षा जल निकासी वाली नालियों से अलग थीं।**

आवास		• हड़प्पा सभ्यता के मकानों के मध्य में एक **प्रांगण** होता था। • हड़प्पाई **घरों के दरवाजे और खिड़कियां** आमतौर पर मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते थे। • हड़प्पा के घरों में अक्सर **सीढ़ियाँ** होती थीं, जो इनके कई मंजिलें होने का संकेत देती हैं। • हड़प्पा के घरों में **स्नान के लिए और शौचालय के लिए अलग व्यवस्थाएं होती थीं**

1.3.1.2. कृषि (Agriculture)

- हड़प्पाई शहरों में कृषि कार्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी **अधिशेष उत्पादन क्षमता** थी, जो गैर-कृषि कार्य पर निर्भर बड़ी शहरी आबादी की खाद्य मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक थी।
- यह कृषि विकास की **विकसित अवस्था** को दर्शाता है, जो नवपाषाण काल में रखी गई नींव पर आधारित था, और जिससे **इतने जटिल व समृद्ध शहरी केंद्रों का विकास संभव** हुआ।
- फसलों की **विविधता** ने इस मजबूत **आर्थिक आधार** को और अधिक समर्थन दिया।

1.3.1.3. सामाजिक संरचना (Social Structure)

- हड़प्पा सभ्यता की सामाजिक संरचना में **अलग-अलग पेशा में विशेषज्ञता** और **संगठित सामाजिक व्यवस्था** देखने को मिलती है।
- हड़प्पा की प्रायः बस्तियों में **कीमती धातुओं और मुहरों** की मौजूदगी यह संकेत देती है कि समाज में **संपत्ति प्राप्ति में समानता** मौजूद थी।
- अन्य क्षेत्रों **और दूरदराज के क्षेत्रों के साथ व्यापार संबंध अलग व्यापारी वर्ग** की मौजूदगी का संकेत देता है। हालांकि हड़प्पा सभ्यता के **परिवारिक ढांचे या रिश्तेदारी प्रणालियों** के बारे में स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है।

1.3.1.4. धार्मिक व्यवस्था (Religious System)

- पुरातात्विक साक्ष्यों के अध्ययन से यह पता चला है कि हड़प्पाई लोगों का धर्म, **मातृदेवी की पूजा** पर केंद्रित था। इस बात का प्रमाण अधिकतर हड़प्पाई स्थलों पर मिली टेराकोटा की मृण्मूर्तियां हैं।
- एक **सींग वाली आकृति**, जिसे संभवतः **"आद्य शिव" या "पशुपति" के रूप में वर्णित किया गया है, कई** मुहरों पर दिखाई देती है, जो इनके धार्मिक महत्व को रेखांकित करती है।
- वृक्षों, खासकर **पीपल** का बार-बार चित्रण, प्रकृति पूजा का संकेत देता है। हालांकि हड़प्पा स्थलों पर **मंदिरों के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिले हैं**, लेकिन **कालीबंगा** जैसे स्थलों पर '**अग्निवेदियों**' की उपस्थिति संभावित **अनुष्ठानिक प्रथाओं** का संकेत देती हैं।

1.3.1.5. लेखन और लिपि (Writing and Script)

- हड़प्पा लिपि का उपयोग बड़े पैमाने पर होता था। यह **मुहरों, मिट्टी के बर्तनों**, और **धोलावीरा** में मिले एक बड़े **"साइन बोर्ड"** पर भी पाई गई है, जो **उन्नत और एकरूपता वाली लेखन प्रणाली** को दर्शाती है।
- यह एक **चित्रात्मक लिपि** है जिसे अब तक नहीं पढ़ा जा सका है। इसे **दाएं से बाएं** लिखा जाता था। यह लिपि हड़प्पा सभ्यता के **शहरी विकास** और **सांस्कृतिक एकता** को दर्शाती है। इसका उपयोग **व्यापार और संपदा के स्वामित्व की पहचान** में किया जाता था।

1.3.1.6. कला और स्थापत्य (Art and Architecture)

घटक	इमेज	विवरण
मृदभांड, मुहरें, टेराकोटा और धातु शिल्प	 	• सिंधु सभ्यता में बड़ी संख्या में **मृदभांडों का निर्माण** किया जाता था। **मृदभांड चाक (Wheel) पर बनाए** जाते थे। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे प्रमुख नगरों मिले **भट्टे पड़े पैमाने पर उत्पादन की पुष्टि** करते हैं। • मृदभांडों पर विशिष्ट मानकीकृत चमकदार **लाल पट्टियां और काले रंग के डिजाइन** हैं। • सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) अपनी **सुन्दर मुहरों** के लिए जानी जाती है, जो मुख्य रूप से सेलखड़ी **(स्टीएटाइट) पत्थर** से बनी थीं। माना जाता है कि अब तक **3,700** से ज़्यादा मुहरें मिल चुकी हैं। • कुछ मुहरों पर **लघु अभिलेख** हैं और इन पर कई जानवरों के चित्र बनाए गए हैं, जैसे- **बैल, हाथी और बाघ; साथ में मनुष्य और पौराणिक जीव (जैसे एक सींग वाला जानवर)** आदि। • बैल, भैंस, बंदर और कुत्ते जैसे जानवरों की **टेराकोटा (पक्की मिट्टी की)** मूर्तियां बहुत लोकप्रिय थीं, साथ ही **पहियों वाली खिलौना गाड़ियां** भी मिली है। • सिंधु सभ्यता से विभिन्न **धातुओं- तांबा, कांस्य और यहाँ तक कि सोने-चांदी की कलाकृतियों से धातु उपयोग** की पुष्टि होती है। धातु से कई तरह के औजार, हथियार, आभूषण और बर्तन बनाए जाते थे। • तांबा से बने **तीर के सिरे**, **कुल्हाड़ी**, चाकू और सजावटी वस्तुओं की प्राप्ति उनके दैनिक जीवन में धातु के महत्व को दर्शाती है। • अफगानिस्तान से **लाजवर्द** के उपयोग की पुष्टि **शोर्तुगई** जैसे स्थलों से हुई है।

		• मनके बनाना सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के उन्नत शिल्प का उदाहरण है। **चन्हुदड़ो और लोथल** जैसे स्थलों पर मनके बनाने के कारखाने मिले हैं। • सिंधु घाटी सभ्यता के कारीगरों को **शंख के इस्तेमाल** में महारत हासिल थी, जिससे विभिन्न प्रकार की सजावटी और उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती थीं।

1.3.2. हड़प्पा सभ्यता का उदय और पतन (The Rise and Fall of the Harappan Civilization)

हड़प्पा सभ्यता का उदय

हड़प्पा सभ्यता भारत में शहरीकरण का पहला उदाहरण है, जो निम्नलिखित प्रमुख कारकों से प्रेरित था:

- **कृषि अधिशेष:** सिंधु नदी के उपजाऊ मैदानी इलाकों में बड़े पैमाने में गेहूं और जौ की खेती होती थी। इससे **अधिशेष कृषि उत्पादन** संभव हुआ।
  - **उदाहरण:** मोहनजोदड़ो में मिले बड़े-बड़े अन्नागार इस बात की पुष्टि करते है कि अधिशेष अनाज का उत्पादन होता था। इस अधिशेष कृषि उत्पादन से शहरी आबादी जैसे कारीगरों और व्यापारियों का पोषण संभव हुआ।
- **तकनीकी उन्नति और शिल्प में महारत:** तकनीकी प्रवीणता ने अर्थव्यवस्था को मजबूत किया और मूल्यवान वस्तुओं के उत्पादन में योगदान दिया।
  - **उदाहरण:** काँसे की धातु बनाना, चन्हुदड़ो में मनके बनाना, और कुम्हार के चाक का उपयोग करके बड़ी संख्या में मृदभांड बनाना।
- **फलते-फूलते व्यापारिक संपर्क:** आंतरिक और बाहरी व्यापार ने सभ्यता को समृद्धि प्रदान की और दूरदराज के क्षेत्रों से इसका संपर्क स्थापित हुआ।
  - **उदाहरण:** लोथल में बंदरगाह, एक जैसी मुहरें और मानकीकृत बाट, और मेसोपोटामिया में हड़प्पा की कलाकृतियों का मिलना।
- **संगठित राजनीतिक और सामाजिक संरचना:** एक मजबूत शासन व्यवस्था ने शहरीकरण को प्रशासित किया।
  - **उदाहरण:** एक जैसी ईंटें, ग्रिड-पैटर्न वाले शहर, विशाल स्नानागार, और उन्नत जल निकासी प्रणालियाँ।

हड़प्पा सभ्यता का पतन

इस सभ्यता के पतन (लगभग 1900 ईसा पूर्व) का मतलब क्रमिक रूप से शहरीकरण से ग्रामीण जीवन में परिवर्तन से है, जो जलवायु परिवर्तन जैसे कई कारणों से प्रभावित था।

- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु शुष्क हो गई और मानसून कमजोर पड़ गया, जिससे कृषि प्रभावित हुई।
  - **उदाहरण:** घग्गर-हकरा नदी तंत्र (प्राचीन सरस्वती) के सूखने से वहां की बस्तियाँ उजड़ गईं।
- **पारिस्थितिक आपदाएं:** भूवैज्ञानिक और जल संबंधी घटनाओं ने संकट को और बढ़ा दिया।
  - **उदाहरण:** मोहनजोदड़ो में बाढ़ और भूकंपीय हलचलों के कारण नदियों का मार्ग बदल गया, जिससे और जीवन प्रभावित हुआ।
- **अर्थव्यवस्था में गिरावट:** पर्यावरणीय संकटों ने अर्थव्यवस्था को बाधित किया।
  - **उदाहरण:** कृषि अधिशेष में गिरावट और मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में कमी।
- **प्रवासन और ग्रामीण बस्तियों का उदय:** संकट के कारण लोग कम संकट वाले क्षेत्रों में चले गए।
  - **उदाहरण:** लोग गंगा के मैदानों और गुजरात की ओर प्रवास कर गए चले गए, जिससे उत्तर-हड़प्पाई काल में ग्रामीण और बिखरी हुई बस्तियों का विकास हुआ।

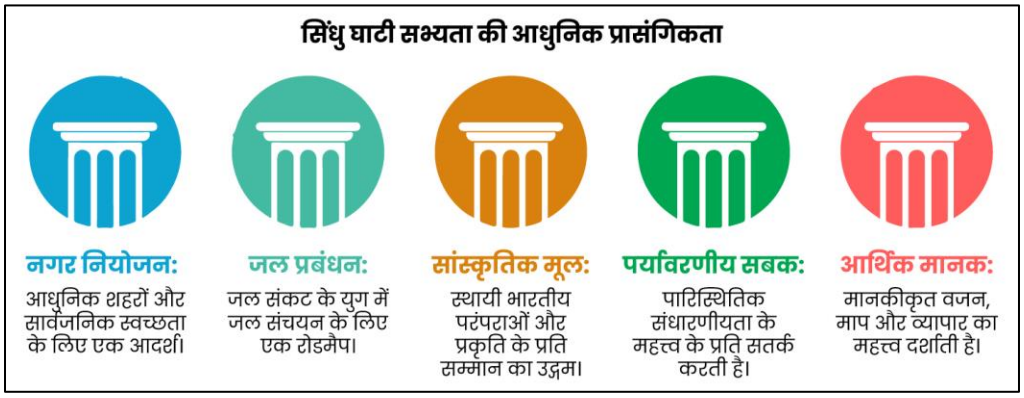

अभ्यास प्रश्न

1. "हड़प्पा सभ्यता का शहरी नियोजन अत्यधिक संगठित और अनुशासित समाज का सुझाव देती है।" चर्चा कीजिए।
2. हड़प्पा काल के दौरान व्यापार और वाणिज्य के फलने-फूलने में किन कारकों का योगदान रहा? इस व्यापार संबंध ने उनकी शहरी अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित किया?
3. हड़प्पा के लोगों की कलाकृतियां, जैसे कि उनकी मुहरें और मूर्तियां, हमें उनके सौंदर्य-बोध, धार्मिक विश्वासों और दैनिक जीवन के बारे में क्या बताती हैं?
4. लिखित अभिलेखों के पढ़े न जा सकने के कारण, इतिहासकार हड़प्पा की सामाजिक और राजनीतिक संरचना के पुनर्निर्माण के लिए किस पुरातात्विक साक्ष्य का उपयोग करते हैं? इस साक्ष्य की सीमाएं क्या हैं?

प्रश्नोत्तर के लिए संकेत

- **शहरी नियोजन पर:**
  - मानकीकरण (ईंटें, लेआउट), वर्ग विभाजन (दुर्ग बनाम निचला शहर), नगरपालिका पर ध्यान (जल निकासी व्यवस्था)।
  - एक मजबूत केंद्रीय प्राधिकरण, सिविक अनुशासन, सामाजिक स्तरीकरण, स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करने जैसे संकेत प्राप्त होते हैं।
- **व्यापार और अर्थव्यवस्था पर:**
  - कारक: कृषि अधिशेष, उन्नत शिल्प (धातु विज्ञान, मनके), मानकीकृत माप-तौल, परिवहन (लोथल डॉकयार्ड)।
  - प्रभाव: संसाधनों की खरीद (धातुएं), व्यापारी वर्ग का उदय, शहरी समृद्धि, अन्य संस्कृतियों के साथ संपर्क (मेसोपोटामिया)।
- **कला और उनकी अभिव्यक्तियों पर:**
  - मुहरें (आर्थिक/धार्मिक कार्य), टेराकोटा की मूर्तियां (अनुष्ठान/लोक कला), कांस्य की मूर्तियां (कलात्मक कौशल, यथार्थवाद)।
  - **अभिव्यक्तियां**: धार्मिक मान्यताएं (पशुपति, मातृ देवी), सामाजिक जीवन (खिलौने), सौंदर्य बोध कौशल ("नृत्य करती लड़की")।
- **समाज/ शासन का पुनर्निर्माण करने पर:**
  - साक्ष्य: बस्ती विन्यास (वर्ग विभाजन), वस्तुओं के साथ शवाधान (स्तरीकरण), मानकीकृत कलाकृतियां (केंद्रित व्यवस्था)।
  - सीमाएं: लिपि नहीं पढ़ा जाना (कोई नाम/शीर्षक नहीं), राजनीतिक संरचना के बारे में स्पस्टता नहीं होना (धर्मतंत्र बनाम कुलीनतंत्र?)।

1.4. वैदिक काल (Vedic Period)

वैदिक काल (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद प्राचीन भारतीय इतिहास की निरंतरता की शुरुआत का युग है। इस काल के बारे में जानकारी के प्राथमिक स्रोत **वेद** नामक पवित्र ग्रन्थ हैं। यह **इंडो-आर्यन (भारोपीय)** भाषी लोगों से जुड़ा हुआ है। इसका पूर्व-वैदिक चरण यानी **ऋग्वैदिक** काल **सप्तसैंधव प्रदेश** में एक अर्ध-खानाबदोश, पशुपालक समाज के रूप में विकसित हुआ जो 'जन' में संगठित था। पूर्व-वैदिक काल ने **उत्तर वैदिक** काल के लिए सांस्कृतिक आधार तैयार किया। उत्तर वैदिक काल में आर्य लोग पूर्व में **गंगा के मैदानी भू-भाग** तक पहुंच गए। इस काल में **स्थाई कृषि** बस्तियों का उदय हुआ, तथा ब्राह्मण और उपनिषद जैसे उत्तर वैदिक ग्रंथों की रचना हुई।

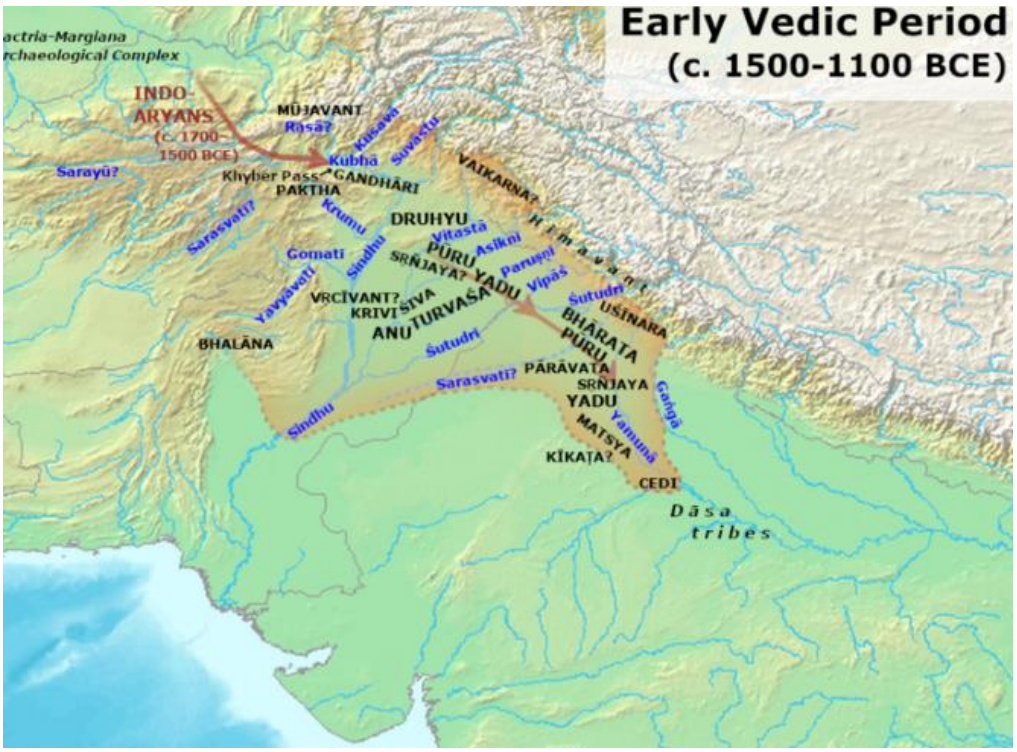

1.4.1. पूर्व और उत्तर वैदिक काल के बीच अंतर (Differences Between Early and Later Vedic Era)

पहलू	पूर्व वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल
राजनीतिक संगठन	• समाज **प्राथमिक रूप से पशुपालक** था जहां आर्य **लघु जनजातीय इकाइयों** में संगठित थे। • ये जनजातियां अक्सर एक जगह से दूसरी जगह प्रवास कर जाते थे। इनके बीच मुख्य रूप से मवेशी जैसे संसाधनों को लेकर संघर्ष होता था।	• समाज अधिक व्यवस्थित कृषि जीवन शैली में परिवर्तित हो गया। **लौह प्रौद्योगिकी** का उपयोग शुरू हुआ। • लघु जनजातीय इकाइयों की जगह बड़े जनपदों का उदय हुआ। • अब इनके बीच संघर्ष मवेशियों के लिए नहीं बल्कि **क्षेत्रीय विस्तार** के लिए होने लगे, और **"राष्ट्र"** की अवधारणा विकसित हुई जो एक बड़ी प्रादेशिक इकाई थी।
सामाजिक संरचना	• समाज में पेशे और लैंगिक आधार पर सामाजिक स्तरीकरण था, लेकिन **जाति व्यवस्था, जो आगे चलकर विकसित हुई, की तरह इसमें कठोरता नहीं थी।** • महिलाओं को अपेक्षाकृत **उच्च सामाजिक दर्जा** प्राप्त था, वे सभाओं में भाग लेती थीं, शिक्षा प्राप्त करती थीं और अपने जीवन साथी चुनने का अधिकार रखती थीं। • बाल विवाह, सती या पर्दा प्रथा के कोई उदाहरण नहीं मिलते हैं।	• उत्तर वैदिक काल में **वर्ण व्यवस्था** अधिक स्पष्ट और कठोर हो गई, जिसने समाज को चार वर्गों में विभाजित किया: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। • **महिलाओं की स्थिति में गिरावट** आई, सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी पर प्रतिबंध लग गए तथा बाल विवाह और सती जैसी प्रथाओं का उदय हुआ। • **गोत्र** (वंश) की अवधारणा भी उभरी, जिसने सामाजिक बंधनों को और मजबूत किया।
आर्थिक गतिविधियां	• अर्थव्यवस्था प्राथमिक रूप से **पशुधन-आधारित** थी, जिसमें **पशुपालन** प्रमुख आर्थिक गतिविधि थी। • कृषि कार्य सीमित था, और संसाधनों का वितरण **स्वैच्छिक उपहार** पर आधारित था, व्यवस्थित कर प्रणाली नहीं थी।	• **लौह प्रौद्योगिकी** के आगमन ने कृषि में क्रांति ला दी, जिससे यह अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन गई। • खेती के लिए जंगलों को साफ किया गया, हल का उपयोग किया गया और मिश्रित खेती आम हो गई। • **कराधान की अधिक औपचारिक प्रणाली** का उदय हुआ, जिसमें **'संग्रहित्री'** "उपहार या भेंट" को एकत्र करने के लिए जिम्मेदार था। • इस काल में **नगरीय केंद्रों** का उदय भी हुआ, जो अधिक संरचनात्मक अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव का संकेत देता है।
धार्मिक मान्यताएं और प्रथाएं	• पूर्व वैदिक काल की धार्मिक विशेषताओं में प्राकृतिक शक्तियों की उपासना प्रमुख थी। **इंद्र और**	• उत्तर वैदिक काल में, अनुष्ठानिक प्रथाएं **बलि (यज्ञ के दौरान) पर आधारित** हो

	अग्नि प्रमुख देवता थे। • **अनुष्ठान सरल थे**, जिसमें मंत्रोच्चारण और उपहार देना शामिल थे, बलि अनुष्ठान को अधिक महत्ता प्राप्त नहीं थी।	गईं, जो अधिक कर्मकाण्डीय और निरंतर होती गईं। • **पुरोहित वर्ग** (ब्राह्मणों) का उदय और इन अनुष्ठानों के आयोजन में उनका प्रभाव सामाजिक संघर्षों का कारण बना। • **प्रजापति, विष्णु** और **रुद्र** जैसे देवताओं को प्रमुखता मिली, जबकि इंद्र और अग्नि जैसे देवताओं ने अपना पहले का महत्व खो दिया।

1.4.2. वैदिक परंपरा की स्थायी विरासत: प्रभाव और प्रासंगिकता (The Enduring Legacy of the Vedic Tradition: Impact and Relevance)

वैदिक साहित्य (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) आधारित वैदिक परंपरा ने अधिकांश भारतीय सभ्यता की नींव रखी। इस सभ्यता का प्रभाव गहरा रहा है। इसने धर्म, दर्शन और समाज को स्वरूप प्रदान किया। वैदिक सभ्यता की प्रासंगिकता समकालीन भारत में भी है।

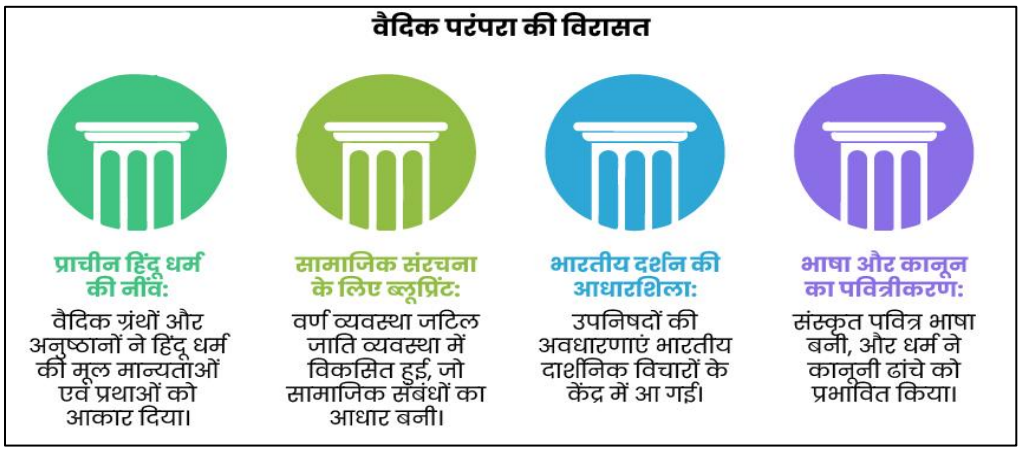

1.5. महाजनपद (The Mahajanapadas)

महाजनपद प्राचीन भारतीय राज्य थे जो **छठी शताब्दी ईसा पूर्व** के आस-पास **"द्वितीय नगरीकरण"** के दौरान अस्तित्व में आए थे। इन राजनीतिक इकाइयों ने प्रारंभिक प्राचीन इतिहास के विकासक्रम में प्रमुख भूमिका निभाई तथा प्राचीन भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महाजनपदों की प्रमुख विशेषताएं

- **राजनीतिक संगठन: लघु जनजातीय इकाइयों से केंद्रीकृत शासन वाले बड़े राज्यों के रूप में महाजनपदों का उदय हुआ।** राजा और इनके मंत्रिपरिषद ने इन राजनीतिक संस्थाओं में केंद्रीय भूमिका निभाई। **महाजनपद** दो प्रकार के थे:
  - **राजतंत्र (राज्य):** केंद्रीकृत शासन वाले राजाओं द्वारा शासित।
  - **गणसंघ (गणराज्य):** कुलीन तंत्र आधारित राज्य जहां सभाएं (संथागार) चर्चाओं और मतदान के माध्यम से निर्णय लेती थीं।
- **आर्थिक गतिविधियां:** व्यापार और वाणिज्य फला-फूला, **उत्तरापथ** और **दक्षिणापथ** जैसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग वस्तुओं के परिवहन को सुगम बनाते थे। कृषि क्षेत्र में काफी प्रगति दर्ज की गई, जो उनकी अर्थव्यवस्था का आधार थी। इस प्रगति में **लौह तकनीक** की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

द्वितीय नगरीकरण क्या था?

द्वितीय नगरीकरण **छठी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास गंगा के मैदानों में** नगरों और शहरों का पुनः उदय था, जो हड़प्पा (प्रथम) नगरीकरण के पतन के लगभग एक हजार वर्ष बाद हुआ।

द्वितीय नगरीकरण के उदय के कारण

- **लौह तकनीक (लोहे की** कुल्हाड़ी और हल के फाल) का व्यापक उपयोग हुआ। इससे घने जंगलों को साफ किया जा सकेगा और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।
- गंगा की उपजाऊ मिट्टी से पर्याप्त खाद्यान्न का उत्पादन हुआ जो कारीगरों, व्यापारियों और गैर-खेतीहर आबादी का भरण-पोषण किया और शासकों को साम्राज्य विस्तार में मदद की।
- **शिल्पकारी** का पुनरुत्थान हुआ तथा आंतरिक तथा लंबी दूरी के **व्यापार,** दोनों में वृद्धि हुई।

इस युग की विशेषताएं

- बड़े क्षेत्रीय राज्यों और प्रथम प्रमुख नगरों का उदय हुआ, जिन्हें **महाजनपद** के नाम से जाना जाता है।
- धातु के **सिक्कों** (पंचमार्क सिक्के/आहत सिक्के) की शुरुआत हुई, जिसने व्यापार को सुगम बनाया।
- गहन बौद्धिक और धार्मिक उथल-पुथल हुआ , जिससे **बौद्ध धर्म** और **जैन धर्म** जैसे नए **गैर-धार्मिक संप्रदायों** का उदय हुआ।
- **उत्तरी काले पॉलिश मृदभांड (NBPW)** वाले विशिष्ट, समृद्धि के सूचक मृदभांड का उपयोग।

- **सामाजिक संरचना:** समाज अलग-अलग वर्गों में विभाजित था, और **जाति व्यवस्था** उभर रही थी। जटिल कर्मकांडों के कारण **ब्राह्मणों** की सामाजिक स्थिति में वृद्धि देखी गई।
- **धार्मिक विश्वास और प्रथाएं:** महाजनपद काल में धार्मिक विविधता देखी गई, जिसमें **बौद्ध** और **जैन धर्मों के उदय से ब्राह्मणवादी व्यवस्था** को चुनौती मिली। इससे सामाजिक और आर्थिक स्थिति में व्यापक परिवर्तन आए।
- **महत्व और प्रभाव:** महाजनपदों ने **मौर्य साम्राज्य** जैसे शक्तिशाली शासन की नींव रखी। उन्होंने संसाधनों और व्यापार संबंधों पर नियंत्रण के माध्यम से कला, संस्कृति और आर्थिक समृद्धि के उत्कर्ष में योगदान दिया।

भारत 600 ईसा पूर्व
महाजनपद और उनकी राजधानियां

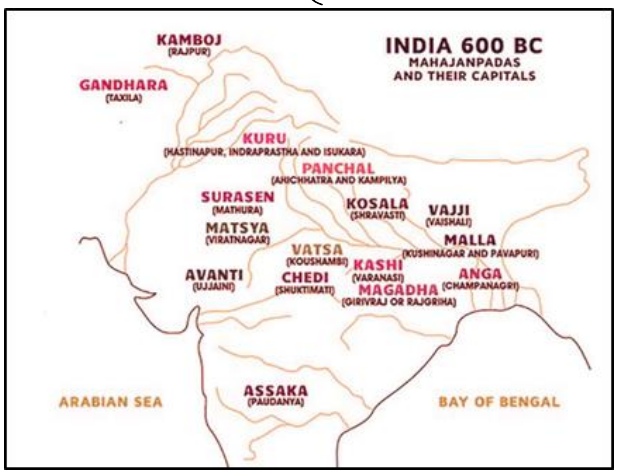

1.5.1. मगध का उदय (Rise of Magadha)

बौद्ध ग्रंथों में वर्णित **16 महाजनपदों** में **मगध**, जो गंगा बेसिन के उपजाऊ मैदानों में स्थित था, सबसे विशाल साम्राज्य बनकर उभरा।

- **भौगोलिक लाभ:** गंगा के मैदानी क्षेत्र में मगध की रणनीतिक अवस्थिति से उसे कई लाभ प्राप्त हुए:
  - **उपजाऊ मृदा और वर्षा:** इस क्षेत्र की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और अधिक वर्षा के परिणामस्वरूप कृषि अधिशेष प्राप्त हुआ, जिससे बड़ी सेना का गठन किया जा सका।
  - **राजधानियों की रणनीतिक अवस्थिति:** मगध की राजधानियों; **राजगृह** और बाद में **पाटलिपुत्र** के लिए क्रमशः पहाड़ और गंगा नदी प्राकृतिक किले के रूप में कार्य करते थे। ये दुश्मनों से सुरक्षा प्रदान करते थे।
  - **प्राकृतिक संसाधन:** इस क्षेत्र में **लोहे के प्रचुर भंडार** से बेहतर अस्त्र-शस्त्र बनाना संभव हुआ। इसके अतिरिक्त, जंगलों में **लकड़ी और हाथियों** की उपलब्धता ने मगध की सैन्य शक्ति को बढ़ाया, जिससे इसे उन अन्य महाजनपदों पर बढ़त मिली जो मुख्य रूप से घोड़ों और रथों पर निर्भर थे।
- **कूटनीतिक उपाय और प्रभावी प्रशासन:** महत्वाकांक्षी और सक्षम शासकों ने मगध के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई:
  - **बिम्बिसार, अजातशत्रु** और **महापद्म नंद** जैसे शासकों ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए वैवाहिक गठबंधन, राजनीतिक दांव पेच और सैन्य विजय जैसी रणनीतियों का इस्तेमाल किया।
- **आर्थिक विकास: व्यापार** के उदय और **धातु की मुद्रा के उपयोग** ने मगध की संपदा वृद्धि में योगदान दिया। इससे शासकों को बड़ी सेना रखने और एक विशाल साम्राज्य को नियंत्रित करने में मदद मिली।

प्राचीन भारत की लोकतांत्रिक परंपराएं: गण और संघ

प्राचीन भारत, विशेष रूप से महाजनपद काल (लगभग 600 ईसा पूर्व) के दौरान, **गणों और संघों** के नाम से **गैर-राजशाही राज्य भी मौजूद थे**।

- इन राज्यों ने सभाओं के माध्यम से **सामूहिक शासन** पद्धति को अपनाया जहां बहस, चर्चा के बाद **बहुमत** से निर्णय लिए जाते थे, जो स्वशासन के प्रारंभिक रूपों को प्रदर्शित करता है।
- **कुल के लोगों को ही सदस्य बनने की अनुमति** (केवल कुलीन क्षत्रिय कबीले के पुरुष प्रधान को) और सभी को अधिकार नहीं मिलने के कारण इन्हें आधुनिक अर्थों में "लोकतंत्र" नहीं कहा जा सकता है। फिर भी ये गणतांत्रिक परंपराएं **भारत में लोकतांत्रिक सिद्धांतों की मजबूत जड़ों** की उपस्थिति का संकेत देती हैं।
- यह एक ऐसी विरासत है, जिसे भारत की G-20 अध्यक्षता के दौरान रेखांकित किया गया था।

1.5.2. भारत की दार्शनिक परंपराएं: आस्तिक और नास्तिक दर्शन (The Philosophical Traditions of India: Orthodox and Heterodox Schools)

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में एक परिवर्तनकारी युग था, जिसमें **नए नगरों, राज्यों (महाजनपदों)** और **व्यापार** का उदय और विकास हुआ। इस युग में विभिन्न दार्शनिक और धार्मिक आंदोलनों का उदय हुआ, जिन्हें दो धाराओं में वर्गीकृत किया गया: **आस्तिक (Orthodox)** दर्शन, जिन्होंने वेदों की सत्ता को स्वीकार किया, और **नास्तिक (Heterodox)** दर्शन, जिन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया।

नए विचारों के उद्भव के कारण

- **जटिल कर्मकांडों के खिलाफ प्रतिक्रिया:** उत्तर वैदिक काल में जटिल कर्मकांडों और बलि प्रथा **(यज्ञों)** पर जोर दिया जाने लगा, जो **ब्राह्मण पुरोहितों** द्वारा नियंत्रित थे। ये प्रथाएं आम लोगों की पहुंच से दूर होती चली गई, जिससे लोगों के मन में **मोक्ष** के सरल, नैतिक मार्गों की खोज की इच्छा पैदा हुई।
- **सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन:** एक नए **व्यापारी और शिल्पकारी वर्ग (वैश्यों)** का उदय हुआ, जो आर्थिक रूप से शक्तिशाली थे लेकिन सामाजिक रूप से निम्न थे। अतः वे बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे दर्शनों की ओर आकर्षित हुए, जिन्होंने अधिक सम्मान और समानता पर जोर दिया।
- **नई कृषि अर्थव्यवस्था: गंगा के मैदानी क्षेत्रों** में कृषि की ओर लोगों के झुकाव के कारण हल चलाने के लिए पशुओं की आवश्यकता थी। इससे बड़े पैमाने पर पशु बलि की वैदिक प्रथा आर्थिक रूप से हानिकारक हो गई। **नास्तिक** दर्शनों में **अहिंसा पर जोर** इस नई कृषि आवश्यकता के अनुकूल था।
- **बौद्धिक जिज्ञासा: उत्तर वैदिक काल में लिखे गए उपनिषदों** ने पहले से ही प्रश्न पूछने की जिज्ञासा को बढ़ावा दिया था। **ब्राह्मण, आत्मा** और **कर्म** जैसी अवधारणाओं ने नए विचारकों के लिए पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने के लिए मंच तैयार किया।

दोनों दार्शनिक धाराओं के बीच मुख्य अंतर

दोनों धाराओं के बीच मुख्य अंतर **वेदों** के प्रति उनके दृष्टिकोण में निहित है:

आस्तिक (Orthodox) दर्शन:	नास्तिक (Heterodox) दर्शन:
• **मूल विश्वास:** वेदों की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार किया। • **लक्ष्य:** वैदिक परंपरा, विशेष रूप से **उपनिषदों से दार्शनिक विचारों** की व्याख्या करना और स्वरूप देना। • **उदाहरण:** छह प्रमुख आस्तिक दर्शन (षड्-दर्शन) में **सांख्य** (पदार्थ और चेतना का द्वैत), **योग** (मन-शरीर अनुशासन), **न्याय** (तर्क), **वैशेषिक** (परमाणुवाद), **मीमांसा** (वैदिक कर्मकांडों की व्याख्या), और **वेदांत** (उपनिषद आधारित दर्शन) शामिल हैं।	• **मूल विश्वास:** वेदों और **ब्राह्मण की सत्ता** को अस्वीकार करना। इन दर्शनों ने **वैदिक अनुष्ठानों** की प्रभावशीलता को नकारा। • **लक्ष्य: मुक्ति (मोक्ष)** के वैकल्पिक मार्ग प्रदान करना, जो अक्सर सभी सामाजिक वर्गों के लिए अधिक सुलभ हों। • **उदाहरण: बौद्ध धर्म** और **जैन धर्म** सबसे प्रमुख थे। उन्होंने जाति व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया, **नैतिक आचरण (शील)**, **अहिंसा** और **निर्वाण** प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत प्रयास पर जोर दिया गया। उन्होंने अपनी शिक्षाएं **पाली** और **प्राकृत** भाषाओं में दी, जिससे वे जनता के लिए अधिक सुलभ हो गईं।

भारतीय दर्शन की शाखाएं

आस्तिक दर्शन: इस दर्शन परंपरा का विश्वास था कि **वेद ही परम पवित्र ग्रंथ** हैं, जिनमें मोक्ष प्राप्ति के रहस्य निहित हैं। उन्होंने **वेदों की प्रामाणिकता पर कभी संदेह नहीं** किया। इनकी **छह उप-शाखाएं** थीं, जिन्हें **षड्दर्शन (छह दर्शन)** कहा जाता है।

दर्शन का नाम	मुख्य दर्शन और आज के समय में उनकी प्रासंगिकता
न्याय	• न्याय दर्शन की स्थापना **गौतम** द्वारा की गई थी, जो **तर्क और बौद्धिकता** पर जोर देता है। इसमें ज्ञान के लिए चार प्रमुख स्रोत (प्रमाण) हैं: **प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान** और **शब्द।** • इसका उद्देश्य सही ज्ञान के माध्यम से मानव पीड़ा को दूर करना है। • **समालोचनात्मक तार्किक क्षमता** को बढ़ावा देने का इसका महत्व आज **समस्या-समाधान और परिचर्चा** के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है, और इसके सिद्धांतों को अभी भी तार्किक विश्लेषण के माध्यम से सत्य को प्रमाणित करने के लिए **कानूनी प्रणालियों में लागू** किया जाता है।
वैशेषिक	• **कणाद** वैशेषिक दर्शन के प्रतिपादक थे। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्मांड अविभाज्य परमाणुओं से मिलकर बना हुआ है। • यह सम्पूर्ण जगत के अनुभवों को केवल छह मूल तत्वों (पदार्थों) में विभाजित किया है: **द्रव्य (substance), गुण (quality), कर्म (activity), सामान्य (generality), विशेष (particularity), और समवाय (inherence)**। • यह दर्शन **ब्रह्मांड के चक्रीय निर्माण और विनाश** में विश्वास करता है। • इसके परमाणु सिद्धांत का प्रारंभिक स्वरूप **आधुनिक विज्ञान के साथ मेल खाता है।** इसने **अनुभवजन्य अवलोकन** और वर्गीकरण पर बल दिया तथा समकालीन वैज्ञानिक पद्धतियों में प्रासंगिक बना हुआ है।
सांख्य	• इसके प्रवर्तक **कपिल मुनि** थे। सांख्य दर्शन द्वैतवाद पर आधारित है, अर्थात यह दो तत्वों को अनादि और नित्य मानता है; **पुरुष (आत्मा)** और **प्रकृति (पदार्थ)**। • माना जाता है कि ब्रह्मांड उनके संपर्क के माध्यम से विकसित होता है। यह दर्शन ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है लेकिन **ज्ञान** के माध्यम से प्राप्त **पुनर्जन्म** और **मुक्ति के चक्र** को मान्यता देता है। • मन और शरीर के संबंध पर सांख्य दर्शन द्वारा जोर देना, आज के समय में, आधुनिक मनोविज्ञान और समग्र स्वास्थ्य पद्धतियों को प्रभावित करता रहा है, जबकि **आत्म-जागरूकता** और **आत्मनिरीक्षण** पर इसका बल **ध्यान** और **आत्म-सुधार पद्धतियों** के लिए मूल्यवान बना हुआ है।
योग	• **पतंजलि** द्वारा प्रस्तुत योग का सिद्धांत, **शारीरिक, मानसिक** और **आध्यात्मिक विकास** के लिए एक व्यावहारिक अनुशासन है। • इसमें कुल आठ अंग शामिल हैं: यम (नैतिक आचरण), नियम (आत्म-अनुशासन), आसन (मुद्राएं), प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), प्रत्याहार (इंद्रियों का संयम), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (चिंतन), और समाधि (तन्मयता)। • आज के समय में, योग **तनाव से राहत पाने, मानसिक शुद्धता** और **शारीरिक सेहतमंदी** के लिए विश्व स्तर पर व्यापक रूप से प्रचलित है, और इसकी तकनीक अक्सर आधुनिक सेहतमंदी और मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में शामिल की जाती हैं, जिसमें **माइंडफुलनेस** और **तनाव प्रबंधन पाठ्यक्रम** भी शामिल हैं।
पूर्व मीमांसा	• **जैमिनी** द्वारा प्रतिपादित मीमांसा दर्शन, वेदों के **कर्मकांडों** और **कर्तव्यों** पर केंद्रित है। • यह धर्म (कर्तव्य) और मंत्रों की शक्ति पर जोर देता है, कर्म में विश्वास करता है और मुक्ति के लिए अनुष्ठान करने में विश्वास करता है। • यह **नैतिक आचरण** और **सामाजिक जिम्मेदारी** के महत्व पर बल देता है, जो आज **सामुदायिक सेवा** और **नैतिक शिक्षा** में प्रासंगिक बना हुआ है, और आधुनिक **हिंदू**

	अनुष्ठानों और **परंपराओं** को व्यापक रूप से प्रभावित करता है, जिससे **सांस्कृतिक परंपरा** को बढ़ावा मिलता है।
वेदांत (उत्तर मीमांसा)	• वेदांत दर्शन, जो **शंकराचार्य** और **रामानुज** जैसे महान दार्शनिकों से जुड़ा है, उपनिषदों और ब्रह्मसूत्र पर आधारित है। • यह सत्य की प्रकृति पर चर्चा करता है, जिसका केंद्र **ब्रह्म (परम सत्य)** और **आत्मा (जीवात्मा)** है, और **कर्म और पुनर्जन्म** के सिद्धांत में विश्वास करता है। • आज, वेदांत कई आधुनिक आध्यात्मिक आंदोलनों के लिए दार्शनिक आधार के रूप में कार्य करता है, जो भारतीय आध्यात्मिकता में वैश्विक रुचि को बढ़ावा देता है। • यह **आत्म-ज्ञान** और **अस्तित्व की प्रकृति को समझने** को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे समकालीन दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक विचार प्रभावित होते हैं।

नास्तिक दर्शन: ये बुद्ध के समय प्रमुख विचारधाराएँ थीं, जिन्होंने वेदों की सत्ता को अस्वीकार कर दिया और स्वतंत्र विचारधाराओं को विकसित किया।

दर्शन के नाम	वर्तमान औचित्य
जैन धर्म	• जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने इसे एक लोकप्रिय धर्म के रूप में स्थापित किया, जिसके मूल में **त्रिरत्न** हैं: सम्यक् विश्वास, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण। सम्यक् आचरण **पांच महाव्रतों** के माध्यम से प्राप्त किया जाता है: अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, और ब्रह्मचर्य। • इसका परम आधार **चरम अहिंसा** है, जो हर तत्व में जीवन शक्ति को पहचानता है। **अनेकांतवाद** का सिद्धांत सिखाता है कि सत्य बहुआयामी है। इस दर्शन में ब्रह्मांड को अनादि और शाश्वत माना जाता है, और मोक्ष की प्राप्ति कठोर नैतिक और तपस्वी अनुशासन के माध्यम से होती है। • आज, जैन धर्म भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, अहिंसा और पर्यावरणीय संधारणीयता के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। • अनेकांतवाद के तहत सत्य के कई आयामों पर जोर देना वास्तव में हमारे विविधतापूर्ण विश्व में **सहिष्णुता और सम्मान** जैसे तत्वों को बढ़ावा देना है।
बौद्ध धर्म	• **गौतम बुद्ध** द्वारा स्थापित **बौद्ध धर्म**, नैतिक आचरण, **मानसिक अनुशासन** और **चार आर्य सत्यों** के माध्यम से आत्मज्ञान की प्राप्ति पर जोर देता है। **चार आर्य सत्य** हैं; **दुःख**, दुःख का कारण (**इच्छा**), दुःख का **निरोध**, और इसे प्राप्त करने का **अष्टांगिक मार्ग**। • यह इच्छा और **आसक्ति** को समाप्त करके दुख से मुक्ति के लिए **विलासिता** और कठोर तपस्या के बीच के **"मध्यम मार्ग"** का समर्थन करता है। • एशिया भर में व्यापक रूप से प्रसारित होकर विभिन्न परंपराओं में विकसित हुआ बौद्ध धर्म आज की **आधुनिक सचेतनता और ध्यान साधना पद्धतियों पर गहरा प्रभाव** डालता है। इसने वैश्विक दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक चिंतन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म-सामाजिक आंदोलनों के रूप में

- **जैन धर्म** और **बौद्ध धर्म,** दोनों ही **सामाजिक** और **धार्मिक अशांति** के दौर में **ब्राह्मणवादी व्यवस्था** और **जाति व्यवस्था** को चुनौती देते हुए उभरे।
- उन्होंने **सामाजिक समानता** का समर्थन किया, **वर्ण व्यवस्था** का विरोध किया और सभी **जातियों** के लोगों और **महिलाओं** को अपने साथ जोड़ा।

- विशेष रूप से, **बौद्ध संघ** में अलग-अलग जातियों के लोग शामिल किए गए थे।
- इन धर्मों का उद्देश्य **अहिंसा, दान** और **सादगीपूर्ण जीवन** को बढ़ावा देकर **हिंसा, असमानता और कष्ट** जैसी **सामाजिक बुराइयों** को दूर करना था।
- इन धर्मों को अपने सादगीपूर्ण जीवन, नैतिक शिक्षाओं पर बल देने और **जटिल कर्मकांडों** को अस्वीकार करने के कारण आम लोगों, विशेषकर निम्न वर्गों के बीच व्यापक समर्थन मिला।
- उदाहरण के लिए, **जैन धर्म** को **पश्चिमी भारत** में और **व्यापारी समुदायों** से समर्थन मिला।
- उनके सिद्धांतों ने **भक्ति आंदोलन** को प्रभावित किया, जिसने **समानता** को भी बढ़ावा दिया और **सामाजिक विभाजन** को चुनौती दी। इससे **क्षेत्रीय भाषाओं** और **संस्कृति का प्रसार हुआ**।

हालांकि, इन धर्मों की कुछ कमियां भी थीं:

- **जाति व्यवस्था** की आलोचना करने के बावजूद, उपर्युक्त दोनों धर्मों का मूल उद्देश्य मौजूदा **सामाजिक संरचनाओं** को तोड़ना नहीं था।
- उन्होंने व्यापक **सामाजिक परिवर्तन** का समर्थन करने की बजाय एक वैकल्पिक आध्यात्मिक मार्ग प्रदान किया।
- दोनों धर्मों ने अपने युग में समाज में व्याप्त भेदभाव से खुद को पूरी तरह दूर नहीं रख पाए; उदाहरण के लिए, **बौद्ध मठ के नियम** कुछ समूहों को प्रतिबंधित करते थे, और **जैन धर्म** में **क्षत्रिय के पक्ष में पूर्वाग्रह** दिखाई दिया।
- उनका मुख्य बल **व्यक्तिगत मोक्ष** और **आध्यात्मिक मुक्ति** पर रहा, न कि व्यापक **सामाजिक सुधारों** पर। आज उनके अध्ययन को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है।

1.5.3. प्राचीन भारत में गिल्ड (श्रेणियां) (Guilds in Ancient India)

गिल्ड, जिन्हें **श्रेणी** के नाम से भी जाना जाता था, **कारीगरों, व्यापारियों और शिल्पकारों** के अपने-अपने व्यापारिक संघ थे। इन्होंने **महाजनपद काल** में **प्रमुखता** प्राप्त की। ये श्रेणियां मुख्य नगरों में मौजूद थीं, जिनमें बुनकर से लेकर व्यापारी पेशे के लोग शामिल थे। प्रत्येक गिल्ड का नेतृत्व एक **"ज्येष्ठक"** (मुखिया) करता था, जो अक्सर वंशानुगत होता था, और वरिष्ठ सदस्यों की एक परिषद इन मामलों का प्रबंधन करती थी।

- **कार्य और नियम:** श्रेणियाँ (Guilds) उद्योगों को नियंत्रित करती थीं, जिसमें कार्य, मजदूरी, गुणवत्ता मानक और मूल्य निर्धारण के लिए नियम बनाए जाते थे, जिन्हें राजा द्वारा अनुमोदन प्राप्त होता था।
  - ये श्रेणियाँ **विवादों का निपटारा** करती थीं और अनुशासनहीन सदस्यों को निष्कासित भी कर सकती थीं। श्रेणियाँ सामाजिक सुरक्षा तंत्र की तरह भी कार्य करती थीं, जैसे विधवाओं, अनाथों और बीमारों को सहायता प्रदान करना।
- **आर्थिक और सामाजिक महत्व:** गिल्ड ने अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, व्यापार को बढ़ावा दिया, उद्योगों को विनियमित किया और वित्तीय संस्थानों के रूप में कार्य किया।
  - वे **जमा स्वीकार** करते थे, **ऋण देते** थे और **धार्मिक गतिविधियों का प्रबंधन** करते थे। कुछ श्रेणियों ने **दरबारी सेना की सहायता** के लिए सैन्य टुकड़ी भी तैयार की।
- **राज्य के साथ संबंध:** गिल्ड ने **शासक वर्ग के साथ घनिष्ठ संबंध** बनाए रखे। गिल्ड के प्रमुखों ने **राजा को सलाह दी** और प्रशासनिक भूमिकाएं निभाईं।

- **राज्य ने गिल्ड के अधिकारों को मान्यता** दी और तो दूसरी ओर वह गिल्ड के आर्थिक योगदान पर निर्भर था, जिससे उनके मध्य एक सहजीवी संबंध बना।

प्राचीन भारत में गिल्ड आर्थिक परिदृश्य को आकार देने, सामाजिक मानदंडों को प्रभावित करने और शासक वर्ग के साथ निकटता से संवाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे पूर्व-आधुनिक संदर्भ में संगठित श्रम और आर्थिक विनियमन का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. चर्चा कीजिए कि गंगा के मैदानों **(द्वितीय नागरीकरण)** में नगरों के उदय ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसे नए धार्मिक आंदोलनों के विकास के लिए परिस्थितियां कैसे बनाई, और उनकी प्रारंभिक कला और वास्तुकला को कैसे प्रभावित किया।
2. प्रमुख **महाजनपदों**; जैसे- **मगध, गांधार** और **मथुरा** का महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र की भूमिका पर चर्चा कीजिए, जिन्होंने भारतीय कला और संस्कृति के भविष्य के विकास को आकार दिया।

उत्तर देने के लिए संकेत

1. **नागरीकरण और नए धर्मों पर:**
   - नए सामाजिक वर्गों (व्यापारी, कारीगर) के उदय का उल्लेख कीजिए।
   - नगरीय केंद्रों में पुराने वैदिक अनुष्ठानों के लिए चुनौती की व्याख्या कीजिए।
   - नए संप्रदायों (बौद्ध धर्म/ जैन धर्म) को दरबारी और व्यापारिक संरक्षण पर चर्चा कीजिए।
   - इसे **स्तूपों, विहारों** और मूर्ति कला जैसे नए कला रूपों से जोड़िए।
2. **सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में महाजनपदों पर:**
   - **मगध:** राजनीतिक शक्ति के केंद्र जिसके कारण बड़े पैमाने पर मौर्य कला को संरक्षण (उदाहरण के लिए, स्तंभ) प्राप्त हुआ।
   - **गांधार:** विभिन्न संस्कृतियों (भारतीय, फारसी, ग्रीक) के मिलन बिंदु जिसने विशिष्ट गांधार कला-शैली को जन्म दिया।
   - **मथुरा:** एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र जो बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिंदू धर्म से प्रेरित एक स्वदेशी कला परंपरा थी।

1.6. मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)

मौर्य साम्राज्य की स्थापना **चंद्रगुप्त मौर्य ने 322 ईसा पूर्व** में की थी। यह **प्राचीन भारत का सबसे बड़ा** और सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था। **सम्राट अशोक** के शासन में, मौर्य साम्राज्य का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों से लेकर **ईरान तथा अफगानिस्तान के कुछ भागों तक** था। यह साम्राज्य अपनी मजबूत सैन्य शक्ति, प्रभावी शासन और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है। मौर्य साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी, जो आधुनिक पटना के निकट स्थित है।

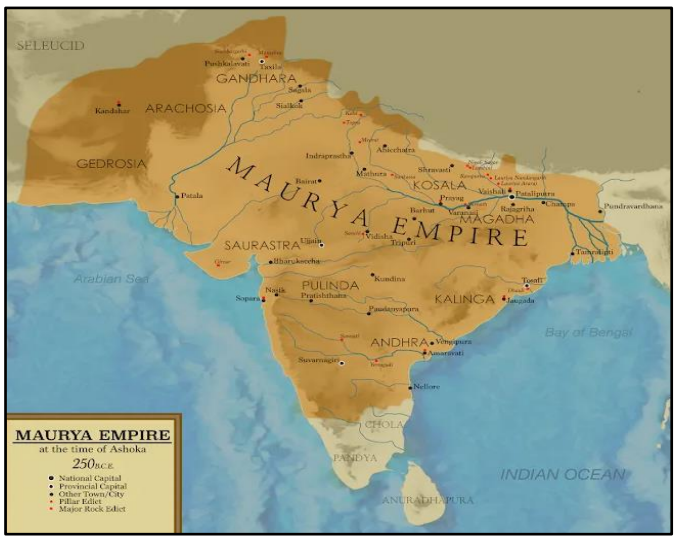

- **अर्थशास्त्र** के शाब्दिक पाठ पर आधारित पारंपरिक दृष्टिकोण एक समान व ऊपर से नीचे तक नियंत्रण वाले एक अत्यधिक केंद्रीकृत साम्राज्य का विवरण देते हैं।
- हालांकि, आधुनिक विद्वान एक अधिक सूक्ष्म मॉडल की वकालत करते हैं, जिसमें **मगध के आसपास एक मजबूत साम्राज्यवादी केंद्र और दूरस्थ परिधीय क्षेत्रों पर बहुत हद तक शिथिल व अधिक अप्रत्यक्ष नियंत्रण हो।**

1.6.1. सम्राट अशोक (Emperor Ashoka)

विशेषता	विवरण	इमेज
शक्तिशाली सम्राट	• एक राजतंत्रात्मक प्रणाली में अशोक के पास **केंद्रीय सत्ता** थी। • यह तथ्य **स्तंभों एवं शिलाओं पर उत्कीर्ण अशोक के अभिलेखों** से स्पष्ट है।	 **अशोक कालीन प्रस्तर प्रतिमा**
धम्म का प्रसारक	• अशोक ने **धम्म को बढ़ावा देने** पर ध्यान केंद्रित किया। यह नीति उसके साम्राज्य में व्याप्त विविधता में एकता स्थापित करने पर केंद्रित थी। • धम्म के तहत **धर्म के अनुसार आचरण करने और शासन के सिद्धांतों का पालन करने पर बल** दिया गया था। • इसमें **अहिंसा, सभी संप्रदायों के प्रति सहिष्णुता और वृद्धजनों के प्रति सम्मान** जैसे तत्व शामिल थे। • यद्यपि यह **बौद्ध धर्म** से प्रेरित था, फिर भी इसका प्राथमिक लक्ष्य संभवतः एक **राजनीतिक विचारधारा** थी। जिसका उद्देश्य **सामाजिक एकजुटता** स्थापित करना तथा एक विशाल एवं विविध साम्राज्य को एक सामान्य नैतिक ढांचे के तहत एकीकृत करना था।	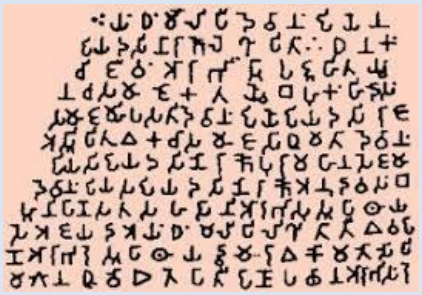 **धम्म के सिद्धांत को प्रदर्शित करने वाला अभिलेख**
दिग्विजय की बजाये धम्म-विजय	• कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने **धम्म-विजय** (धर्म के माध्यम से विजय) का उद्घोष किया। इसमें युद्ध द्वारा हुए विनाश पर अशोक ने खेद प्रकट किया था। • धम्म-विजय में **धम्म सिद्धांतों को सक्रिय रूप से बढ़ावा** देना शामिल था।	 **धम्म के निर्देशों वाला शिलालेख**

	• धम्म नीति को बढ़ावा देने के लिए **धम्म महामात्रों** की नियुक्ति की गई थी। अशोक के पुत्र और पुत्री ने भी इन अभियानों में भाग लिया।	
बौद्ध धर्म के साथ संबंध	• **पाली ग्रंथों** के अनुसार अशोक बौद्ध धर्म का एक **निष्ठावान अनुयायी (उपासक)** था। • उसे कई **विहारों और चैत्यों** के निर्माण के माध्यम से बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने का श्रेय दिया जाता है। • अशोक ने कई **स्तूप** भी बनवाए थे और प्रमुख बौद्ध स्थलों पर **स्तंभ** भी स्थापित करवाए थे।	 **लुम्बिनी में अशोक स्तंभ**

1.6.2. मौर्य साम्राज्य की कला और स्थापत्य (Art and Architecture of Mauryan Period)

मौर्य स्तंभ: शाही संरचनाएं

- ये **स्वतंत्र रूप से खड़े स्तंभ** हैं और मौर्य कला चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **उद्देश्य:** बौद्ध शिक्षाओं, अशोक के धम्म और अन्य शासन संबंधी निर्देशों को अभिलेखों के माध्यम से प्रसारित करने के लिए निर्मित किए गए थे। कुछ स्तंभों ने स्मारकीय भूमिका भी निभाई है।

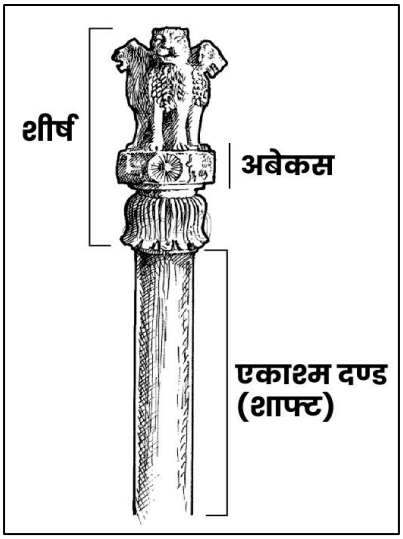

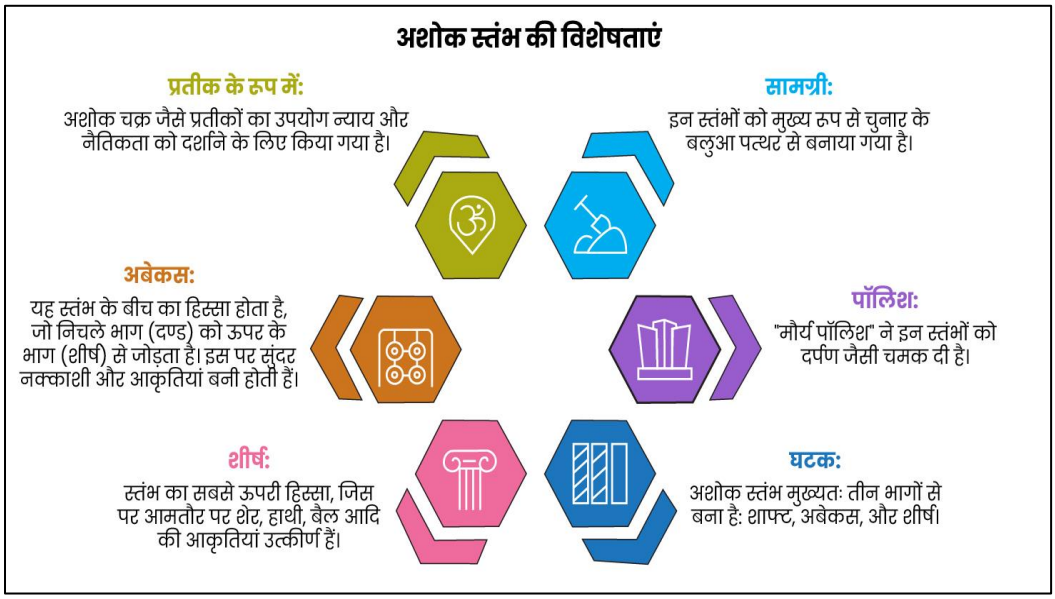

- **महत्वपूर्ण स्तंभ:**

अवस्थिति/ इमेज	विवरण
दिल्ली-टोपरा 	• अशोक का दिल्ली-टोपरा स्तंभ **धम्म को बढ़ावा** देता है। • इसमें **कराधान, प्रशासनिक उपायों और वृक्षारोपण जैसे कल्याणकारी प्रयासों** का विशिष्ट विवरण दिया गया है। साथ ही, **जैनियों** का भी उल्लेख किया गया है। • **14वीं शताब्दी में फिरोज शाह तुगलक** ने इसे टोपारा से दिल्ली स्थानांतरित किया था।
प्रयागराज (इलाहाबाद) 	• यह **गंगा व यमुना के संगम** पर स्थित है। इस स्तंभ का **ऐतिहासिक महत्त्व** है। • इस पर **शासन व धम्म से संबंधित अभिलेख** उत्कीर्ण हैं। इसके अलावा, सम्राट अशोक की पत्नी **कारुवाकी** और उसके धम्म संबंधी योगदानों का भी विवरण मिलता है।

स्तूप स्थापत्य कला

- **उत्पत्ति:** वैदिक काल के साधारण शवाधान टीलों (तुमुली) से विकसित।
- **परिवर्तन:** अशोक के शासनकाल में स्तूप पवित्र बौद्ध स्मारक बन गए थे। इनमें बुद्ध के अवशेष रखे गए हैं। अशोक को 84,000 स्तूपों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
- **उद्देश्य:** उपासना, आराधना और तीर्थयात्रा के केंद्र बिंदु।
- **मुख्य विशेषताएं:**
  - **अण्ड (गुंबद की तरह):** अर्धगोलाकार गुंबद, ब्रह्मांड या स्वर्ग के गुंबद का प्रतीक।
  - **मेढ़ी (आधार):** स्तूप के लिए गोल मंच, अक्सर वर्गाकार या आयताकार।
  - **हर्मिका:** अण्ड के ऊपर वर्गाकार मंच, जिसमें छत्र (छतरी) लगा होता है। अक्ष मुंडी का प्रतीक।

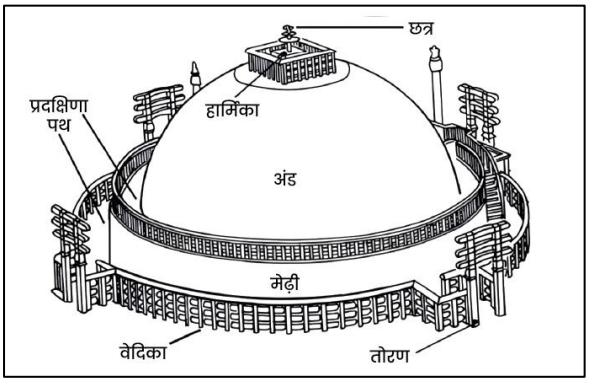

भारत में उल्लेखनीय स्तूप

साँची का महान स्तूप:
अशोक द्वारा निर्मित, बाद में इसका विस्तार कराया गया। इसका अलंकृत तोरण द्वार विशेष है।

धमेख स्तूप सारनाथ:
अशोक द्वारा बनवाया गया। नक्काशीदार प्रस्तर पट्टिका के साथ बेलनाकार है।

भरहुत स्तूप:
मौर्य काल में निर्मित। शुंग काल में रेलिंग का निर्माण कराया गया।

- **वेदिका (रेलिंग):** स्तूप के चारों ओर पवित्र स्थान को अलग करती है। शुरुआत में बांस से व बाद में पत्थर से निर्मित।
- **तोरण (प्रवेश द्वार):** चार दिशाओं में स्थित द्वार, जिन पर अक्सर विस्तृत नक्काशी की गई है। शुरुआत में लकड़ी से व बाद में पत्थर से निर्मित।
- **सोपान (सीढ़ियां):** सीढ़ियां स्तूप के चबूतरे तक पहुंचने का मार्ग प्रदान करती हैं।

शैल-कृतित संरचनाएं

- **उद्भव:** शैलकृत स्थापत्य कला का विकास मौर्य काल के दौरान हुआ था।
- **उद्देश्य:** ये संरचनाएं धार्मिक व भिक्षु जीवन और ध्यान आदि के लिए पवित्र स्थल होती थीं।
- **मुख्य विशेषताएं:**
  - सीधे कठोर चट्टानों को काट कर बनाई जाती थीं।
  - आंतरिक भाग अक्सर अत्यधिक पॉलिश की हुई सतह (मौर्य पॉलिश) वाले होते हैं।
  - लकड़ी और चिनाई से बनी इमारतों (मेहराब, स्तंभ व छत) की नकल की गई है।
  - चैत्य मेहराब बाद की शैलकृत स्थापत्य कला के लिए मानक बन गए।
- **प्रमुख संरचनाएं: बाराबर गुफाएं** (बिहार) और **नागार्जुनी गुफाएं** (बिहार)।

बराबर गुफाएं

नागार्जुनी गुफाएं

अन्य महत्वपूर्ण मौर्य कला शैलियां:

श्रेणी	विवरण	उदाहरण
वृहद प्रस्तर प्रतिमाएं	**विशाल मूर्तियां** मौर्यकालीन कला का एक महत्वपूर्ण पहलू थीं। इसमें **पटना और मथुरा** के निकट मिली **यक्ष व यक्षिणी** का प्रतिनिधित्व करने वाली मानव आकृतियां प्रमुख थीं। प्रारंभ में इन मूर्तियों को **मौर्यकाल** का माना गया था। यद्यपि, हालिया वर्षों में इन मूर्तियों की फिर से जांच की गई और विशेषज्ञों ने माना कि मौर्य काल के बाद भी **प्रारंभिक ईसवी सदी में "मौर्यकालीन पॉलिश"** का उपयोग जारी रहा था।	**यक्षी की मूर्ति**
नगर नियोजन व स्थापत्य	• मौर्य साम्राज्य के संदर्भ में, **कुमराहर** में **स्तंभ युक्त सभाकक्ष** के कुछ ही अवशेष मिलते हैं। • **मेगस्थनीज** के वृत्तांत में भव्य राजप्रासादों और स्थापत्य कला का विवरण मिलता है। हालांकि, अभी तक कोई बड़ा राजप्रासाद नहीं मिला है। • इसलिए, ऐसा माना जाता है कि मौर्य राजप्रासाद ज्यादातर **लकड़ी** के बने थे और नहीं बचे।	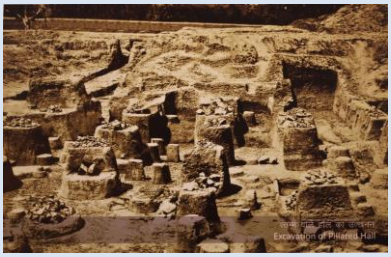 **कुमराहर स्थल पर स्तंभ युक्त सभाकक्ष**

	• यह मगध के उदय के बाद से जारी **शहरीकरण का प्रमाण** है।	

1.6.3. मौर्यकालीन साहित्य (Literature under Mauryas)

मौर्य काल में महत्वपूर्ण साहित्यिक गतिविधियां हुई थीं, जो उस युग के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक विकास से गहराई से प्रभावित थीं। इनमें राजकीय कला और धार्मिक सिद्धांतों पर मौलिक रचनाएं शामिल हैं।

भाषा और लिपि:

- **प्राकृत,** विशेष रूप से अशोक के अभिलेखों के रूप में, एक प्रमुख भाषा थी। इसके लिए अक्सर **ब्राह्मी लिपि** का उपयोग होता था।
- **पाली,** बौद्ध धर्म के प्रामाणिक ग्रंथों जैसे **त्रिपिटकों** की भाषा थी। **संस्कृत** का भी प्रयोग किया जाता था, जिसका **अर्थशास्त्र** जैसी कृतियों में उपयोग देखा जा सकता है।

अशोक के अभिलेख

- ये अशोक के आदेश हैं, जो चट्टानों और स्तंभों पर उत्कीर्ण हैं तथा प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। **इनका बहुआयामी महत्त्व है:**
  - **प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत:** ये किसी व्यक्ति की लिखित रूप में पहली पाषाणों पर उत्कीर्ण घोषणाएं हैं। इनमें सम्राट अशोक के विचारों व नीतियों, **कलिंग युद्ध** के बाद उनके पश्चाताप, उनकी धम्म नीति आदि का विवरण मिलता है।
  - **राजनीतिक और प्रशासनिक महत्त्व:** भारत भर में इनका व्यापक वितरण विशाल **मौर्य साम्राज्य** का प्रमाण देता है। ये अभिलेख अशोक की **धम्म नीति** और प्रशासनिक नवाचारों जैसे धम्म प्रचार के लिए **धम्म महामात्रों** की नियुक्ति तथा **अकाल के दौरान कर में छूट** का विवरण देते हैं।
  - **नीतिशास्त्रीय और नैतिक महत्त्व:** ये **धम्म** के सिद्धांतों, जैसे **अहिंसा**, धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व को रेखांकित करते हैं। इससे अशोक के **नैतिकता और करुणा** के साथ शासन करने के प्रयास का प्रमाण मिलता है।
  - **भाषाई और पुरालेखीय महत्त्व: ब्राह्मी** आदि लिपि में लिखे गए, ये सबसे प्रारंभिक प्रमुख तिथि-योग्य अभिलेख हैं। 1830 के दशक में **जेम्स प्रिंसेप** द्वारा इनका गूढ़-पठन प्राचीन भारतीय इतिहास को उजागर करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ था।

प्रमुख उदाहरण

श्रेणी	कृतियां/ स्रोत	विवरण
पाली साहित्य	**त्रिपिटक**	प्रामाणिक बौद्ध ग्रंथ (विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्मपिटक) मौर्य काल में संकलित किए गए थे। इनमें बुद्ध की शिक्षाओं और मठीय नियमों को संरक्षित किया गया है।
	अशोक के अभिलेख	अशोक के अभिलेख प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण हैं, जो पाली में लिखित बौद्ध सिद्धांतों के अनुरूप हैं। ये धम्म (नैतिक कानून), सामाजिक कल्याण और अशोक के शासन सुधारों पर बल देते हैं।
संस्कृत साहित्य	**अर्थशास्त्र**	कौटिल्य द्वारा रचित यह ग्रंथ शासन कला, अर्थशास्त्र और सैन्य रणनीति पर आधारित है। इसकी रचना संभवतः मौर्य काल में हुई थी। इसमें प्रशासनिक प्रणालियों, गुप्तचर व्यवस्था और शासन के सिद्धांतों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

विदेशी वृतांत	**इंडिका और अन्य यूनानी वृतांत**	मौर्य दरबार में एक यूनानी राजदूत, मेगस्थनीज ने "इंडिका" लिखी थी। इसमें मौर्य प्रशासन और तत्कालीन संस्कृति की प्रत्यक्ष जानकारी दी गई है। अन्य यूनानी विवरण इंडिका का संदर्भ लेकर मौर्यों के बारे में अतिरिक्त जानकारी प्रदान करते हैं।
	चीनी यात्रियों के वृतांत (फाह्यान)	चौथी-सातवीं शताब्दी के यात्रियों ने मौखिक परंपराओं एवं मंदिर संबंधी किंवदंतियों पर विश्वास करके अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रसार और स्तूपों के निर्माण के प्रयासों की प्रशंसा की है।

मौर्य साम्राज्य पर अभ्यास प्रश्न

- क्या विशाल मौर्य साम्राज्य का उदय एक आकस्मिक राजनीतिक क्रांति थी, या यह **महाजनपदों** के साथ ही शुरू हो चुकी राजनीतिक और प्रशासनिक प्रवृत्तियों की तार्किक परिणति थी?
- अशोक की **धम्म नीति** वास्तव में साम्राज्य को एकीकृत करने और समाज को बदलने में कितनी सफल रही?
- मौर्य **अर्थव्यवस्था** की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए। संसाधनों को नियंत्रित करने में राज्य की क्या भूमिका थी, तथा निजी व्यापारियों और श्रेणियों की क्या भूमिका थी?
- मौर्य दरबारी कला, जैसे **विशाल पाषाण स्तंभ,** का केवल कलात्मक कृतियों से परे **राजनीतिक उद्देश्य** क्या था?
- मौर्य साम्राज्य के **पतन** के प्रमुख कारणों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्नों के उत्तर के लिए संकेत

- **निरंतरता बनाम क्रांति पर:**
  - **मगध** की नींव (स्थायी सेना व प्रशासन) पर निर्मित।
  - लेकिन, मौर्यकालीन **पैमाना** और **नौकरशाही** का स्तर नया था।
- **धम्म की सफलता पर:**
  - सफलताएं: प्रमुख युद्धों का अंत, **सहिष्णुता** का प्रसार आदि।
  - असफलताएं: अशोक के तुरंत बाद साम्राज्य का **पतन** हो गया; उसके अभिलेखों में इस संबंध में चिंता व्यक्त की गई है।
- **अर्थव्यवस्था पर:**
  - राज्य की भूमिका: भारी **कराधान,** खदानों और जंगलों पर नियंत्रण।
  - निजी भूमिका: शक्तिशाली **व्यापारी संघ (श्रेणियां), सिक्कों** का उपयोग।
- **कला के उद्देश्य पर:**
  - राज्य और **धम्म के प्रचार** के रूप में कार्य किया।
  - साम्राज्यवादी शक्ति और पहुंच की **शक्तिशाली** प्रतीक थी।
- **पतन पर:**
  - **एक से अधिक कारकों** की व्याख्या महत्वपूर्ण है; इसका केवल एक कारण नहीं था।
  - मुख्य कारक: **कमजोर उत्तराधिकारी, आर्थिक तनाव और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय।**

1.7. मौर्योत्तर काल और इंडो-ग्रीक (Post Mauryan and Indo-Greeks)

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, **बैक्ट्रियन यूनानियों** ने उत्तर-पश्चिमी भारत पर **सैन्य आक्रमण** किया। इसके परिणामस्वरूप कई **इंडो-ग्रीक राज्यों** की स्थापना हुई। इस राजनीतिक संपर्क से गहरा **सांस्कृतिक और दार्शनिक आदान-प्रदान** हुआ, जहां यूनानी शासकों ने **बौद्ध धर्म और वैष्णव धर्म** के शुरुआती रूपों के साथ सीधे तौर पर जुड़ना शुरू किया।

इस अंतःक्रिया का महत्त्व

- **सिक्कों में क्रांति:** उन्होंने भारत में **उन्नत सिक्का ढलाई प्रणाली** पेश की। वे ऐसे पहले शासक थे, जिन्होंने **राजाओं के यथार्थवादी चित्रों** वाले सिक्के जारी किए। उनके **द्विभाषी सिक्के खरोष्ठी** जैसी प्राचीन भारतीय लिपियों को समझने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए।
- **गांधार कला शैली:** इस सांस्कृतिक मिश्रण से गांधार कला शैली का उदय हुआ, जो **हेलेनिस्टिक (यूनानी) कला शैलियों और भारतीय बौद्ध विषयों** का एक अनूठा संगम थी। इसने **बुद्ध के पहले मानवीय चित्रणों** को बहुत प्रभावित किया।
- **धार्मिक और दार्शनिक संवाद:** इस अंतःक्रिया के कारण महत्वपूर्ण दार्शनिक जुड़ाव हुआ, जो प्रसिद्ध बौद्ध ग्रंथ **मिलिंद-पन्हों (राजा मिलिंद के प्रश्न)** में दर्ज है। यह ग्रंथ इंडो-ग्रीक राजा **मिनांडर** और एक बौद्ध संत के बीच हुई चर्चाओं का विस्तृत विवरण देता है।
- **वैज्ञानिक आदान-प्रदान:** उन्होंने भारत में **हेलेनिस्टिक खगोल विज्ञान और ज्योतिष** के तत्वों को पेश किया, जिसने इन क्षेत्रों में बाद के भारतीय वैज्ञानिक विचारों को प्रभावित किया।

1.8. गुप्त काल (Gupta Period)

चौथी शताब्दी ई. में, भारतीय उपमहाद्वीप में कुषाणों के पतन के बाद गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ। **श्री गुप्त ने गुप्त साम्राज्य की स्थापना** की थी। इस साम्राज्य का सबसे अधिक विकास **चंद्रगुप्त प्रथम** (319-335/ 336 ई.) के शासनकाल में हुआ था। 319-320 ई. के समय को ही गुप्त काल की वास्तविक शुरुआत मानी जाती है। गुप्त काल को **भारत का "स्वर्ण युग"** भी माना जाता है। गुप्त साम्राज्य में भारतीय उपमहाद्वीप का अधिकांश हिस्सा शामिल था। यह काल **विज्ञान, साहित्य, कला और प्रौद्योगिकी** के क्षेत्र में विकास की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। लगभग 160 वर्ष तक शासन में रहे इस राजवंश के बारे में अधिकांश जानकारी सिक्कों और अभिलेखों से मिलती है।

1.8.1. सम्राट समुद्रगुप्त (Emperor Samudragupta)

पहलू	विवरण
विस्तारवादी और सैन्य रणनीतिकार	• अपनी सैन्य विजयों और रणनीतिक योजना के कारण **"महानतम गुप्त शासक"** के रूप में विख्यात है। • **इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख (प्रयाग प्रशस्ति)** में इसके सैन्य अभियानों का विस्तृत विवरण दिया गया है। • इसके अभियानों में **उत्तरी भारत (आर्यावर्त) की विजय; गंगा के हृदय स्थल पर नियंत्रण मजबूत करना और 9 नाग शासकों को अधीन** करना शामिल था
कला व संस्कृति का संरक्षक	• **कुशल कवि, संगीतकार और ललित कलाओं** का प्रशंसक, जैसा कि इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख में वर्णित है। • संस्कृत रचनाओं के लिए **"कविराज" (कवियों के राजा)** की उपाधि धारण की। • उसके सिक्कों पर उसे **वीणा बजाते** हुए दर्शाया गया है। • **हरिषेण** सहित कवियों और विद्वानों का संरक्षण किया। • **संस्कृत साहित्य और विद्या के उत्कर्ष** को बढ़ावा दिया।

1.8.2. सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय (Emperor Chandragupta II)

पहलू	विवरण
साम्राज्य का चरमोत्कर्ष और सुदृढ़ीकरण	• साम्राज्य के विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए **विक्रमादित्य** के नाम से प्रसिद्ध। • विशेष रूप से **पश्चिमी और मध्य भारत** में साम्राज्य विस्तार। • उसका शासनकाल **गुप्त शक्ति और प्रभाव** का चरमोत्कर्ष था।
सैन्य अभियान और प्रादेशिक विस्तार	• चंद्रगुप्त द्वितीय ने विशेष रूप से **अंतिम शक शासक रुद्रसिंह तृतीय** को हराकर तथा **मालवा और काठियावाड़ प्रायद्वीप** पर कब्जा करके **पश्चिमी भारत** को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। • उसके प्रादेशिक नियंत्रण में उल्लेखनीय विस्तार हुआ, जो **पश्चिम में मालवा और गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल** तक फैला हुआ था। **नर्मदा** नदी इसके साम्राज्य की **दक्षिणी सीमा** बनाती थी। साक्ष्यों के अनुसार **कुषाणों को हराने** के बाद उत्तर-पश्चिमी भारत और **बैक्ट्रिया** भी इसमें शामिल थे। • ये विजय आर्थिक रूप से रणनीतिक थीं, क्योंकि इन विजयों ने **अरब सागर पर महत्वपूर्ण बंदरगाहों (भड़ौच, सोपारा, खंभात आदि) को सुरक्षित** किया था। इससे पश्चिमी देशों के साथ व्यापार को बहुत बढ़ावा मिला। • **उज्जैन** नगर उसकी **दूसरी राजधानी** बन गया, जो एक प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र था और साथ ही, उसके शासन के तहत पोषित आर्थिक समृद्धि का प्रमाण था।
स्वर्ण काल: कला, संस्कृति और शिक्षा का संरक्षण	• उसके शासनकाल में **कला, साहित्य और शिक्षा** के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। • **संस्कृत** दरबारी कला और लेखन की **प्राथमिक** भाषा बन गई। साथ ही, वह **कालिदास** सहित कई **विद्वानों और कलाकारों का एक उल्लेखनीय संरक्षक** भी था। • इस काल में **पत्थर के मंदिरों** का निर्माण शुरू हुआ और **गुफा स्थापत्य कला** में

	उन्नति हुई। इसमें विशेष रूप से **अजंता गुफाओं** में आगे का विकास देखा गया। • उसके युग में **खगोल विज्ञान और गणित** का विकास हुआ, जिसमें **आर्यभट्ट** जैसे विद्वानों का योगदान रहा।

1.8.3. गुप्त काल में सामाजिक विकास: (Social Developments of the Gupta Period)

श्रेणी	विवरण
परिवार की संरचना	• **धर्मशास्त्रीय ग्रंथों** के आधार पर इतिहासकार तर्क देते हैं कि गुप्त काल के दौरान **पितृसत्तात्मक सत्ता मजबूत** हुई थी। • विविध स्रोतों से पता चलता है कि इस काल में **महिलाओं की स्वतंत्रता या सामाजिक स्थिति में गिरावट** आई थी। उनकी सार्वजनिक जीवन में भागीदारी कम हो गई थी, पुत्रियों की तुलना में पुत्रों को अधिक प्राथमिकता दी जाने लगी थी, लड़कियों का कम आयु में विवाह होने लगा था आदि।
महिलाओं की संपत्ति (स्त्रीधन)	• स्त्रीधन से तात्पर्य **उस चल संपत्ति से है, जो एक महिला अपने जीवनकाल में अर्जित** करती है, जैसे **आभूषण, कपड़े और मातृपक्ष से मिले उपहार।** यह संपत्ति **माता से पुत्री को दी** जाती है। स्त्रीधन में **विरासत में मिली संपत्ति या महिला द्वारा अपनी मेहनत से अर्जित संपत्ति शामिल नहीं** होती है। • **कात्यायन स्मृति में छः प्रकार के स्त्रीधन का उल्लेख है:** विवाह से पहले मिले उपहार; दुल्हन के रूप में मिले उपहार; ससुराल वालों से मिले उपहार; दूल्हे के परिवार द्वारा दुल्हन के परिवार को दिया गया धन या संपत्ति की राशि; परिवार के सदस्यों से मिली संपत्ति; तथा विवाहित/ अविवाहित अवस्था में प्राप्त कोई भी वस्तु।
समाज में महिलाएं	• इतिहासकारों के अनुसार गुप्त काल में **महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट** आई थी और वे और पराधीन हो गई थीं। • **पारिवारिक वंशावली** और पैतृक संस्कारों को करने के लिए पुत्रों को महत्त्व दिया जाता था। • महिलाओं पर **घरेलू काम-काज में सहयोग करने और ससुराल के सदस्यों की सेवा** करने का उत्तरदायित्व आरोपित कर दिया था। • उनकी **आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भरता बढ़** गई थी तथा व्यक्तिगत संपत्ति के नाम पर उनके पास केवल **स्त्रीधन** ही था। • **बाल विवाह या कम उम्र में विवाह का प्रचालन बढ़ा तथा सती प्रथा का उदय हुआ।** सती प्रथा का पहला पुरातात्विक साक्ष्य **510 ई. के एरण अभिलेख** से मिलता है। • उच्च वर्ण की महिलाओं की तुलना में निम्न वर्ण की महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में अधिक सक्रियता से भाग लेती थीं।
जाति व्यवस्था (वर्ण और जातियां)	• चतुर्वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) व्यवस्था **मजबूत** हुई। • गुप्त शासकों द्वारा ब्राह्मणों को दिए जाने वाले कर मुक्त भूमि अनुदान **(ब्रह्मदेय)** से ब्राह्मणों की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि हुई।

	• **वर्णसंकर** (वर्णों का मिश्रण) द्वारा **अलग-अलग जातियों का जन्म** हुआ। • **विदेशियों और जनजातीय समुदायों को जाति व्यवस्था में शामिल** कर लिया गया था। • समाज में विशेष रूप से **'चांडाल'** कहे जाने वाले अस्पृश्यों के प्रति **अस्पृश्यता में वृद्धि** हुई। • **फाह्यान** के अनुसार चांडाल गांव के बाहर रहते थे और उच्च जातियों के संपर्क से बचने के लिए गांव में प्रवेश करते समय सचेत करते थे।
धार्मिक सहिष्णुता	• गुप्त राजा **कट्टर ब्राह्मणवादी थे, लेकिन अन्य धर्मों, जैसे- बौद्ध धर्म का भी सम्मान** करते थे। • **बौद्ध धर्म** को पहले की तरह राजकीय संरक्षण **नहीं** मिला।

1.8.4. "स्वर्ण युग" के रूप में गुप्त काल (Gupta Period as Golden Age)

पहलू	विवरण
कला	• इस काल में **पत्थरों को तराश कर मूर्तियों के निर्माण की कला का विकास** हुआ। उदाहरण के लिए: **विष्णु के वराह अवतार की मूर्तियां।** • गुप्त काल में ही **बौद्ध कला का उत्कर्ष रूप दिखाई** देता है, विशेष रूप से **अजंता गुफाओं** में की गई चित्रकारी में। इसमें **बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं** को बहुत ही सुंदर रूप में दर्शाया गया है। • गुफा चित्रों में **जीवंत रंगों और जटिल विषय-वस्तुओं** का स्पष्ट उपयोग देखने को मिलता है। 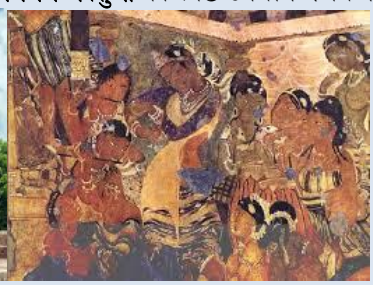
स्थापत्य	• गुप्त काल में **स्वतंत्र रूप से पत्थर से बने सबसे प्राचीन मंदिरों के साक्ष्य** प्राप्त होते हैं। • गुप्त शासकों ने **मंदिर स्थापत्य की नागर शैली के विकास** में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसका प्रमाण हमें **देवगढ़ के दशावतार मंदिर तथा तिगवा, भूमरा और खोह के मंदिरों** में देखने को मिलता। • **मंदिर स्थापत्य की पंचायतन शैली** का संबंध भी गुप्त काल से है। इस शैली में **केंद्रीय मंदिर के चारों ओर चार सहायक मंदिर** होते हैं। केंद्रीय मंदिर में मुख्य देवता की प्रतिमा होती है, जबकि लघु मंदिरों में अन्य देवताओं या गौण देवताओं की मूर्तियां होती हैं। यह शैली **पांच मंदिरों का समूह** बनाती है।

साहित्य	• इस कला में **कालिदास और विशाखदत्त** जैसे संस्कृत के विद्वान कवियों एवं नाटककारों का उदय हुआ था। • वैदिक ग्रंथों, धर्मशास्त्र ग्रंथों तथा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों का अंतिम रूप में **संकलन** गुप्त काल में ही हुआ माना जाता है। • **कालिदास** की कृतियां- जैसे **मेघदूत, रघुवंशम और कुमारसंभवम** दरबारी जीवन पर आधारित हैं। ये रचनाएं सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश पर अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।	कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः शापेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः । यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥१॥ तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी नीत्वा मासान् कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः । आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श ॥२॥ तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतोः अन्तर्बाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ । मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्ति चेतः कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे ॥३॥ प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन् प्रवृत्तिम् । स प्रत्यग्रैः कुटजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार ॥४॥ धूमज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः । इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ॥५॥

गुप्त काल राजनीतिक समेकन, संस्कृत साहित्य, कला और विज्ञान में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए जाना जाता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक रूप से "स्वर्ण युग" नहीं माना जाता। आलोचक ऐसे मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं, जैसे- भूमि अनुदान में वृद्धि के कारण प्रशासनिक चुनौतियाँ; व्यापार और मुद्रा की गुणवत्ता में गिरावट, और केंद्रीय सत्ता का कमज़ोर होना। साथ ही, सामाजिक पदानुक्रम का मजबूत होना, जिसने महिलाओं को अधीनस्थ बना दिया।

1.8.5. संस्कृत साहित्य का स्वर्णिम काल (Golden Period of Sanskrit Literature)

गुप्त काल (लगभग 300-600 ई.) के दौरान, **पाणिनि के व्याकरण 'अष्टाध्यायी'** के कारण संस्कृत अपने **शास्त्रीय रूप** में पहुंच गई। इसने **प्राकृत भाषा को पीछे छोड़** दिया। **गुप्त शासकों ने संस्कृत को संरक्षण प्रदान किया, जिससे यह प्रशासन एवं कुलीन वर्ग की भाषा बन गई।** इस अवधि के दौरान, संस्कृत साहित्य का काफी विकास हुआ।

- **रामायण** और **महाभारत**- बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक वाले इन महाकाव्यों का अंतिम संकलन हुआ।
- **संस्कृत काव्य शैली** का उद्भव हुआ और पुराणों का संकलन हुआ। **लौकिक लेखन** भी फला-फूला, जिसमें शासन कला से लेकर कहानी संग्रह तक जैसे विषय शामिल थे।
- प्रमुख कृतियों में **कामंदक का नीतिसार** (जो राज-काज पर आधारित है) और **विष्णु शर्मा का पंचतंत्र** (एक लोकप्रिय कहानियों का संग्रह) शामिल हैं।
- **कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम्** जैसी नाट्य कृतियां इस युग की साहित्यिक उत्कृष्टता का बेहतरीन उदाहरण हैं।

इस जीवंत साहित्यिक गतिविधि ने संस्कृत की प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया तथा भारतीय बौद्धिक विरासत को समृद्ध किया।

गुप्त साम्राज्य पर अभ्यास प्रश्न

1. इस मत का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए कि गुप्त काल प्राचीन भारतीय इतिहास में एक "स्वर्ण युग" था। यह किसका "स्वर्ण युग" था?
2. गुप्त साम्राज्य और मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना की तुलना कीजिए और उनके बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। इन अंतरों से प्रत्येक काल में राज्य की प्रकृति के बारे में क्या पता चलता है?

3. गुप्त काल को शास्त्रीय पौराणिक हिंदू धर्म के लिए एक प्रारंभिक चरण माना जाता है। इस युग के दौरान धर्म में प्रमुख विकास और संरचनात्मक मंदिर स्थापत्य कला की शुरुआत पर चर्चा कीजिए।
4. गुप्त काल के दौरान समाज और अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। भूमि अनुदान की व्यापक प्रथा का सामाजिक और आर्थिक संरचना पर क्या प्रभाव पड़ा?
5. विज्ञान, गणित और साहित्य के क्षेत्र में गुप्त काल की प्रमुख उपलब्धियों का आकलन कीजिए और प्रमुख उदाहरणों का उल्लेख कीजिए।
6. शक्तिशाली सामंतों की भूमिका और गुप्त राजव्यवस्था के विकेन्द्रीकृत स्वरूप का विश्लेषण कीजिए। इस प्रणाली ने साम्राज्य के प्रशासन और अंततः उसके पतन दोनों में किस प्रकार योगदान दिया?

प्रश्नों के उत्तर देने के लिए संकेत

1. "स्वर्ण युग" पर:
    - **पक्ष में तर्क:** इस काल में संस्कृत साहित्य (कालिदास की रचनाएं), कला (सारनाथ शैली), विज्ञान और गणित (आर्यभट्ट) का अभूतपूर्व विकास हुआ।
    - **विपक्ष में तर्क:** इसी दौरान जाति व्यवस्था कठोर हुई, अस्पृश्यता का उदय हुआ, महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई और सती प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ।
2. गुप्त बनाम मौर्य प्रशासन पर:
    - **मौर्य प्रशासन:** यह अत्यधिक केंद्रीकृत था, जिसमें एक बड़ा वेतनभोगी नौकरशाही वर्ग था और प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित था।
    - **गुप्त प्रशासन:** यह अधिक विकेन्द्रीकृत था, सामंतों (स्थानीय शासकों) पर निर्भर था, और शक्ति का विभाजन था।
3. धर्म और मंदिर पर:
    - वैदिक कर्मकांडों से हटकर पौराणिक देवताओं (वैष्णव धर्म व शैव धर्म) की भक्ति और मूर्तियों के माध्यम से पूजा की ओर बदलाव आया।
    - यह स्वतंत्र पत्थर के मंदिरों के निर्माण की शुरुआत हुई (उदाहरण के लिए, देवगढ़ का दशावतार मंदिर)।
4. समाज और अर्थव्यवस्था पर:
    - भूमि अनुदान (अग्रहार, ब्रह्मदेय आदि) ने भूमि-संपन्न मध्यस्थों के एक नए वर्ग को जन्म दिया।
    - इससे सामंतवाद का उदय हुआ, एक अधिक स्थानीय कृषि अर्थव्यवस्था विकसित हुई, और मौर्योत्तर काल की तुलना में लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट आई।
5. विज्ञान और साहित्य पर:
    - **साहित्य:** कालिदास की कृतियां (अभिज्ञानशाकुंतलम्) इस काल की प्रमुख साहित्यिक उपलब्धियां थीं।
    - **विज्ञान/ गणित:** आर्यभट्ट का योगदान (शून्य, पाई का मान, ग्रहणों पर सिद्धांत आदि); चिकित्सा और धातु विज्ञान (दिल्ली का लौह स्तंभ) में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई।
6. सामंत और पतन पर:
    - **प्रशासन:** सामंत स्थानीय प्रशासकों के रूप में कार्य करते थे, राजस्व एकत्र करते थे और सैन्य सहायता प्रदान करते थे।
    - **पतन:** जैसे-जैसे केंद्रीय गुप्त शक्ति कमजोर हुई, इन्हीं शक्तिशाली सामंतों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया, जिससे साम्राज्य के विखंडन में योगदान मिला।

1.9 संगम युग (Sangam Period)

संगम युग लगभग **300 ईसा पूर्व से 300 ईसवी की अवधि को कहा जाता है।** संगम युग अपने **महान साहित्यिक कृतियों के लिए** जाना जाता है। ये साहित्य **प्राचीन दक्षिण भारत** के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। यह **युग आदिवासी समाज से अधिक संगठित समाज में बदलाव का प्रतीक है,** जिसमें सामाजिक व्यवस्था और व्यापक व्यापार संपर्क में शुरुआती प्रगति हुई।

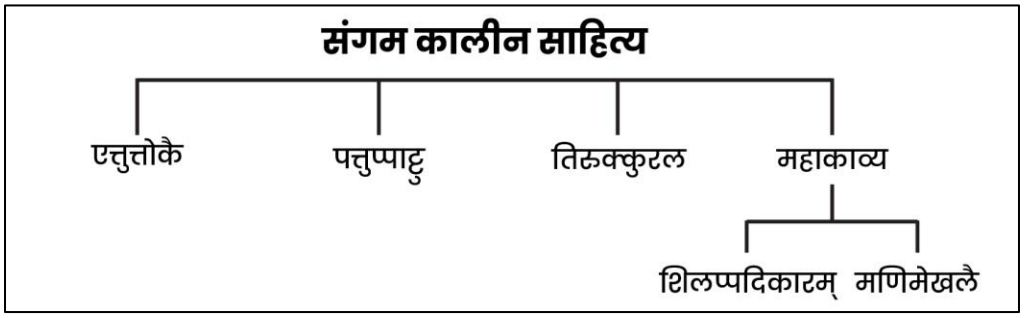

1.9.1. संगम युग के मुख्य विषय (Key Themes of Sangam Age)

भाषा एवं लिपि

- **प्रारंभिक तमिल भाषा:** संगम साहित्य की रचना प्राचीन तमिल में हुई थी, जिसमें **समृद्ध शब्दावली और जटिल व्याकरण था। यह भाषाई मानकता को दर्शाता है।**
- **संस्कृत का बहुत कम प्रभाव:** प्रारंभिक तमिल साहित्य पर **संस्कृत का बहुत कम प्रभाव दिखाई देता है।** इस तरह यह विशेषता इसे एक विशिष्ट भाषाई पहचान देती है।
- **तमिल-ब्राह्मी लिपि:** यह तमिल लिखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली **ब्राह्मी लिपी का एक रूपांतरण है।** मुख्य रूप से मदुरई क्षेत्र में शैलाश्रय और गुफाओं में उत्कीर्ण यह लिपि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और प्रारंभिक ईसवी शताब्दी की है।

व्याकरण

- **तोल्काप्पियम्:** यह तोलकाप्पियर द्वारा लिखित **सबसे प्राचीन तमिल व्याकरण है।**
  - यह संगम काल की **राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियों** की भी जानकारी प्रदान करता है।

अकम (प्रेम कविता)

- **विषय और शैली:** इसमें **प्राकृतिक** कल्पना का उपयोग करते हुए **प्रेम** और व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विभिन्न क्षेत्र प्रेम के चरणों का प्रतीक हैं:
  - **कुरिंजी:** गुप्त प्रेम के लिए,
  - **नीथल:** विरह और विलगाव का प्रतीक है ।
- **सामाजिक संदर्भ:** ये सामाजिक मानदंडों और रीति-रिवाजों को प्रतिबिंबित करते हैं तथा **निजी और भावनात्मक जीवन की झलक** प्रदान करते हैं।

- **सांस्कृतिक महत्व:** यह संगम काल के लोगों के भावनात्मक और सांस्कृतिक आयामों पर प्रकाश डालता है।

पुरम (युद्ध और सार्वजनिक जीवन की कविता)

- **विषय और शैली:** ये कविताएं युद्ध, वीरता और सार्वजनिक जीवन पर ध्यान केंद्रित करती हैं, योद्धाओं की बहादुरी, राजाओं की जिम्मेदारियों और वफादारी बखान करती है। युद्धों और आचार संहिताओं का विस्तृत विवरण प्रदान करती है।
- **राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ: चेर, चोल और पांड्यों के संघर्ष और गठबंधन** *पुरम* साहित्य की युद्ध कविताओं में अच्छी तरह से दर्ज किए गए हैं।
- **ऐतिहासिक प्रासंगिकता:** यह प्रारंभिक तमिल इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक, घटनाओं, व्यक्तित्वों और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का शुरुआती विवरण प्रस्तुत करता है।

समाज और संस्कृति

पहलू	विवरण
सामाजिक संरचना	• संगम काल के समाज का गठन **तिणै की अवधारणा के आधार पर किया गया था।** इसके तहत भूमि को **पांच पारिस्थितिकी क्षेत्रों में विभाजित किया गया था:** *कुरिंजी* (पहाड़), *मुलै* (चारागाह भूमि), *मरुदम* (आर्द्रभूमि), *नेयतल* (तटीय क्षेत्र) और *पालै* (शुष्क क्षेत्र)। • *कुरिंजी क्षेत्र के* लोग शिकार और खाद्य संग्रहण में लगे रहते थे, जबकि *मुलै लोग* पशुपालन करते थे। • मरुदम *ने* कृषि को बढ़ावा दिया, *नेयतल ने* मछली पकड़ने और नमक बनाने को बढ़ावा दिया तथा *पालै कठिनाई का प्रतीक है और निवासियों को* लूटपाट के लिए मजबूर होना पड़ा।
जाति और वर्ग	• यद्यपि चतुर्वर्ण व्यवस्था ज्ञात थी, फिर *भी* यह संगम समाज की स्पष्ट विशेषता नहीं बन पाई थी। • सामाजिक विभाजन अधिक **परिवर्तनशील थे,** जिसमें सामाजिक स्थिति व्यवसाय और कुल (***कुटी***) संबद्धता द्वारा निर्धारित होती थी। • संगम काल की **कुटी प्रणाली** गोत्र-आधारित सामाजिक संगठन था, जहां सामाजिक स्थिति और पहचान सख्त जाति पदानुक्रम के बजाय गोत्र संबद्धता द्वारा निर्धारित की जाती थी।
महिलाओं की भूमिका	• महिलाओं को समाज में महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त था, वे साहित्य और शिक्षा में निपुण थीं, तथा धान की खेती और पशुपालन जैसी आर्थिक गतिविधियों में योगदान देती थीं। • प्रमुख कवयित्रियों में **अव्वैयार, नच्चेलियर और काकईपाडिन्यार शामिल हैं।** • प्रेम विवाह आम थे, लेकिन सती (*टिप्पयादल*) जैसी कुप्रथाएं और विधवाओं के लिए मुश्किल जीवन मौजूद थीं।
धार्मिक विश्वास	• समाज **स्थानीय देवी-देवताओं और प्रकृति की आत्माओं की पूजा करता था।** कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रारंभिक जैन धर्म और बौद्ध धर्म ने स्थानीय प्रथाओं को प्रभावित किया था। • धार्मिक विश्वास पर्यावरण और दैनिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए थे।

कला और स्थापत्य	• इस काल में **मंदिर स्थापत्य और महापाषाण संरचनाओं की शुरुआत देखी गई।** • प्रारंभिक मंदिर सामान्य लेकिन महत्वपूर्ण थे, और शवाधान प्रथाओं में बड़े पत्थर के स्मारकों का निर्माण शामिल था, जो उन्नत निर्माण तकनीकों का संकेत देता है।

अर्थव्यवस्था

पहलू	विवरण
कृषि	• कृषि **संगम अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी,** जिसमें **धान** (चावल) और बाजरा मुख्य फसलें थीं। • **टैंकों और बांधों** सहित उन्नत सिंचाई तकनीकों ने क्षेत्र की गैर-बारहमासी नदी प्रणाली में कृषि को बढ़ावा दिया।
व्यापार	• अच्छी तरह से बनाए गए सड़कों और सुरक्षित बाजारों के माध्यम से वस्तु परिवहन से **आंतरिक व्यापार फल-फूल रहा था।** • पेरिप्लस ***ऑफ द एरिथ्रियन सी में*** मसालों, कपड़ों, कीमती पत्थरों और मोतियों जैसे भारतीय निर्यातों का उल्लेख है। दक्षिण भारत में पाए गए **रोमन स्वर्ण सिक्के** इस व्यापार की पुष्टि करते हैं।
शिल्प और उद्योग	• **बुनाई** एक प्रमुख उद्योग था, जिससे उत्तम वस्त्रों का उत्पादन होता था, जिसका उल्लेख संगम साहित्य में बार-बार मिलता है। • **धातुकर्म** महत्वपूर्ण उद्योग था, औजारों और हथियारों के निर्माण के लिए उन्नत लौह और इस्पात का उत्पादन होता था। • **मनका बनाना** एक सुविकसित शिल्प था, जिसका प्रयोग अक्सर व्यापार में किया जाता था।
शहरी केंद्र	• विकसित होते व्यापार ने **पुहार** (चोल), **मुशिरी** (चेर) और **मदुरै** (पांड्या) जैसे **शहरी केंद्रों** के विकास को बढ़ावा दिया। • पुरातात्विक साक्ष्य इन जीवंत शहरी केंद्रों के साहित्यिक विवरणों का समर्थन करते हैं। हालांकि कभी-कभी निरंतर बस्तियों के निर्माण के कारण ये साक्ष्य सीमित प्रतीत होते हैं।

1.10. प्राचीन भारतीय कला शैलियां (Ancient Indian Schools of Art)

भारत में कला की प्राचीनतम शैलियां धर्म से प्रेरित थीं। **गांधार** और **मथुरा** मूर्तिकला शैलियां महायान बौद्ध धर्म से संबंधित थीं। इन शैलियों के तहत **महात्मा बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियां** बनाई जाती थीं। **अमरावती शैली** को सातवाहन शासकों ने संरक्षण दिया था। इसके तहत बनाई गई मूर्तियों में बुद्ध के जीवन दृश्यों को दर्शाया गया है।

1.10.1. प्रमुख कला शैलियां (The Key Schools of Art)

पहलू	गांधार शैली	मथुरा शैली	अमरावती शैली
विकास काल	**पहली शताब्दी** ई. के उत्तरार्द्ध से **तीसरी शताब्दी** ई.	**पहली शताब्दी** ई.	**150** ई.पू. से **350** ई.
संबंधित क्षेत्र	**अफगानिस्तान-गांधार** क्षेत्र	वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य का **मथुरा नगरी**	**आंध्र प्रदेश**
कला पर प्रभाव	**कुषाण साम्राज्य** के दौरान भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के संपर्क में आने के कारण **भारतीय और यूनानी-रोमन शैलियों** का मिश्रण।	यह मूलतः स्वदेशी शैली है, जो पहले की भारतीय कलात्मक परंपराओं से ही विकसित हुई	**सातवाहन** और **इक्ष्वाकु** शासकों के संरक्षण में विकसित, कथात्मक कला पर ध्यान केंद्रित किया गया।
प्रयुक्त सामग्री	**नीले-ग्रे शीस्ट चट्टान**	काले धब्बों वाला **लाल बलुआ** पत्थर	**सफेद संगमरमर**
मुख्य विशेषताएं	• **शैलियों का मिश्रण:** इसमें वस्त्रों पर सिलवटें और घुंघराले बाल जैसी हेलेनिस्टिक विशेषताएं शामिल हैं। • **यूनानी-बौद्ध शैली:** इसमें पश्चिमी कलात्मक परंपराओं को बौद्ध विषयों के साथ जोड़ा गया है। • **मूर्तिकला की विशेषताएं:** प्रायः बुद्ध को **यथार्थवादी, मानवीय विशेषताओं** और अधिक पोशाक के साथ दर्शाया गया है जो रोमन शैलियों का अनुसरण करती है। • **मूर्ति के विषय: यूनानी-रोमन देवताओं और प्रतीकों से प्रभावित,** प्रकृतिवाद और मानव शरीर अंगों को वास्तविकता में प्रस्तुत किया गया है। • **स्थापत्य संदर्भ:** मूर्तियों को अक्सर स्तूपों, मठों और मंदिरों में स्थापित किया जाता था, जो धार्मिक और सांस्कृतिक सौंदर्य को बढ़ाते थे।	• **स्वदेशी चरित्र:** इसमें स्थानीय कलात्मक परंपराओं पर जोर दिया गया है, बाह्य संस्कृतियों का कम प्रभाव है। • **हृष्ट-पुष्ट:** मूर्तियों को सुंदर और हृष्ट-पुष्ट दिखाने का प्रयास किया गया है (वास्तविक जीवन के आकार का) और इनमें विषयासक्ति प्रदर्शित होती है। • **विविध विषय:** बौद्ध, जैन और हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां बनाई गईं। • **महिला आकृतियां: यह शैली** यक्षिणी और अप्सरा जैसी खूबसूरती से उकेरी गई महिला आकृतियों के लिए उल्लेखनीय है, जो मानव रूप का अधिक अभिव्यंजक प्रतिनिधित्व दर्शाती हैं। • **निर्माण सामग्री:** मूर्तियों का निर्माण मुख्य रूप से स्थानीय तौर पर उपलब्ध काले धब्बों से युक्त लाल बलुआ पत्थर से किया जाता था, जो एक विशिष्ट सौंदर्यबोध दर्शाता है।	• **कथात्मक शैली:** बुद्ध के जीवन की कहानियों को दर्शाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। • **गतिशील सज्जा:** मूर्तियां गतिशील शैली में बनाई गई, जो बौद्ध कथाओं के सार को समेटे हुई हैं। • **प्राकृतिक:** मूर्तियां प्राकृतिक तरीके से प्रस्तुत की गई हैं, जिससे दर्शकों को लगता है कि ये दृश्य कोई कहानी कह रहे हैं। • **स्थापत्य तत्व:** मूर्तियों को मुख्य रूप से रेलिंग, चबूतरे और स्तूपों जैसी कई अन्य स्थापत्य संरचनाओं में दर्शाया गया है। • **निर्माण सामग्री:** मूर्तियों को बनाने के लिए सफेद संगमरमर जैसे पत्थर का उपयोग किया गया है, जो नक्काशी को जीवंत, आकर्षक और गूढ़ बनाता है।

महत्वपूर्ण योगदान	**भारतीय कला के साथ यूनानी-रोमन तत्वों का एकीकरण**, साथ ही भौगोलिक सीमाओं से परे क्षेत्रों को प्रभावित करती है।	इसने भारत में परवर्ती काल के कलात्मक विकास को प्रभावित किया, जिसमें **गुप्त मूर्तिकला शैली** भी शामिल है जो अपनी सुंदर और आध्यात्मिक मूर्तियों के लिए जानी जाती है	इस शैली ने **श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया** में कलात्मक परंपराओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा, क्षेत्रीय कलात्मक परंपराओं को आकार देने में सांस्कृतिक आदान-प्रदान की भूमिका पर भी प्रकाश डाला
उल्लेखनीय उदाहरण	**बुद्ध को हेलेनिस्टिक विशेषताओं के साथ** दर्शाने वाली मूर्तियां।	इनमें अक्सर बुद्ध को मानवीय और प्रतीकात्मक, दोनों रूपों में दिखाया जाता है, तथा **यक्षिणी** और **अप्सरा** जैसी महिला आकृतियां भी दिखती हैं।	**बौद्ध आख्यानों** को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।
कला शैलियों के उदाहरण			

1.10.2. कला में अन्य महत्वपूर्ण विषय (Other Important Themes in Art)

बौद्ध स्तूप और समकालीन विषय

साँची स्तूप पर विभिन्न लोक आकृतियां

- प्रारंभिक **बौद्ध स्तूप कला** में बौद्ध आदर्शों को दर्शाने के लिए लोक रूपांकनों और कथाओं को प्रभावी ढंग से आपस में जोड़ा गया गया है, जिससे ये शिक्षाएं सभी पृष्ठभूमि के लोगों के लिए सुलभ हो गईं।
- **जातक कथाएं तथा** चक्र, खाली सिंहासन, पदचिह्न जैसे **प्रतीकों** को शामिल किया गया जिसमें बुद्ध को मानव रूप में सीधे दर्शाने से बचा गया।
- स्तूप कला में पहले से मौजूद भारतीय परंपराओं के तत्व शामिल किए गए। इनमें **यक्ष, यक्षिणी, नाग** जैसी आकृतियां, साथ ही शेर, हाथी, घोड़े और बैल जैसे **पशु** शामिल थे। इन रूपांकनों को धम्म की शिक्षाओं के साथ प्रतिध्वनित करने के लिए सावधानी से चुना गया था।

कला में भारतीय दर्शन और परंपरा

- भारतीय कला आध्यात्मिकता और **दर्शन** को दर्शाती है, जिसमें अक्सर धार्मिक विषय इसके रूपों और अभिव्यक्तियों का मार्गदर्शन करते हैं।
- मंदिर, जैसे कि **एलोरा का कैलाश मंदिर**, सांसारिक और ब्रह्मांडीय जगत के बीच संबंध के प्रतीक हैं, और ये संसार के सूक्ष्म रूप (सूक्ष्म ब्रह्मांड) के रूप में कार्य करते हैं।
- साथ ही, कला **"एन्द्रीय जीवन शक्ति"** तथा प्राकृतिक विश्व के सौंदर्य और दैनिक जीवन के भी प्रतीक हैं जैसे कि **भरहुत, सांची और अमरावती** की शिल्पाकृतियों में परिलक्षित होते हैं।
- **ब्रह्मांडीय प्रतीकवाद;** जैसे कि **कोणार्क का सूर्य मंदिर,** अनुष्ठान और ब्रह्मांड की संरचना के परस्पर संबंध को दर्शाता है।

साँची स्तूप के पूर्वी द्वार पर यक्षिणी कला

1. 11. मंदिर स्थापत्य (Temple Architecture)

शैली, भौगोलिक विस्तार और उदाहरण	मंदिर योजना	मुख्य विशेषताएं
नागर शैली **उत्तरी भारत** **उदाहरण:** नचना कुठार का **महादेव मंदिर** (7वीं शताब्दी) और सिरपुर में ईंट से बना **लक्ष्मण मंदिर** (दोनों मध्य प्रदेश में)। **खजुराहो मंदिर समूह**	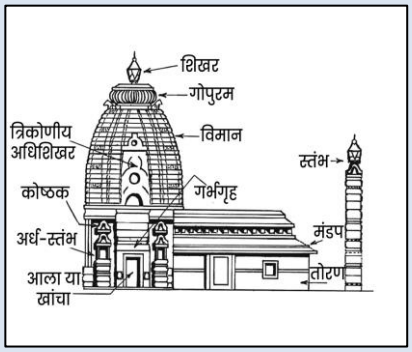	**सामान्य विशेषताएं:** • मंदिर पत्थर के चबूतरे पर बने होते हैं, जिसपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां होती हैं। • इसमें आमतौर पर विस्तृत चारदीवारी या प्रवेश द्वार नहीं होते। • आरंभिक मंदिरों में एक ही **शिखर** होते थे। • बाद के मंदिरों में **कई शिखर** बनने लगे। • **गर्भगृह (पवित्र मूर्ति कक्ष)** हमेशा सबसे ऊँचे शिखर के ठीक नीचे स्थित होता है। **मंदिर के भाग:** • **लैटिना या रेखा-प्रसाद:** यह सबसे आम प्रकार है, जिसमें आधार में वर्गाकार है और जिसकी दीवारें ऊपर की ओर एक बिंदु पर वक्र या ढलान वाली होती हैं। • **फमसाना:** यह **लैटिना की तुलना में चौड़ा और छोटा** होता है। इसमें छतें कई स्लैब से बनी होती हैं। फमसाना की छतें भीतर की ओर नहीं मुड़ी होती

		बल्कि वे सीधे ऊपर की ओर ढलवां होती हैं। • **वल्लभी:** आयताकार संरचना जिनकी छतें एक गुंबददार कक्ष के रूप में उठी होती हैं।
द्रविड़ शैली दक्षिणी भारत, विशेष रूप से **तमिलनाडु।** **उदाहरण:** तंजावुर का **बृहदेश्वर मंदिर**, मदुरै का **मीनाक्षी मंदिर।**	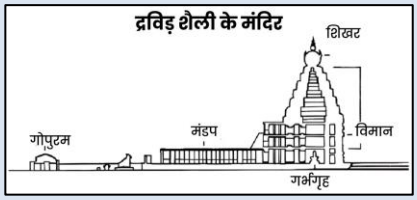	• **विमान:** गर्भगृह के ऊपर पिरामिडनुमा शिखर। • **गोपुरम:** बड़े और अलंकृत प्रवेश द्वार। • **संलग्न परिसर:** चारदीवारी के भीतर मंदिर, बाहरी दीवार गोपुरम से जुड़ती है। • **स्तंभ युक्त हॉल:** विभिन्न प्रयोजनों के लिए मंडप का निर्माण। • **तालाब:** आमतौर पर इनका निर्माण अनुष्ठानों के लिए मंदिर परिसर के भीतर किया जाता था।
वेसर शैली कर्नाटक उदाहरण: बेलूर का **चेन्नाकेशव मंदिर**, हलेबिड का **होयसलेश्वर मंदिर**	इसमें चालुक्य, राष्ट्रकूट, होयसल और विजयनगर वास्तुकला के विभिन्न उप-शैलियां शामिल हैं।	• **शैलियों का मिश्रण: नागर और द्रविड़ शैलियों का मिश्रण**, अक्सर सितारों के आकार के मंच का निर्माण किया जाता था। • **सजावटी तत्व:** मंदिर को अधिक मूर्तियों और नक्काशीदार पट्टिकाओं से सजाया जाता था। • **गोलाकार स्तंभ:** स्तंभ गूढ़ नक्काशी से युक्त होते थे। • **मंदिर के छत:** छत पर विस्तृत नक्काशी की जाती थी।
मंदिर स्थापत्य की क्षेत्रीय शैलियां		
चालुक्य स्थापत्य कर्नाटक **उदाहरण: विरुपाक्ष मंदिर, पापनाथ मंदिर, लाड खान मंदिर**	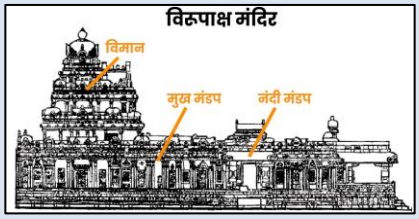 **विरुपाक्ष मंदिर**	• यह **वेसर शैली का ही एक उप प्रकार**/ नागर और द्रविड़ शैलियों का संयोजन है। • इसमें आधार को सितारों के आकार बनाया गया है जिसमें कई कोण शामिल हैं।

विजयनगर स्थापत्य कर्नाटक **उदाहरण:** हम्पी का **विरुपाक्ष मंदिर**, **हजारा राम मंदिर**	 **हजारा राम मंदिर**	• इस शैली में **चोल, होयसल, पांड्य और चालुक्य** शैलियों का संयोजन देखने को मिलता है। इसमें **इंडो-इस्लामिक प्रभाव** भी दिखता है। • ज्यामितीय पैटर्न और नक्काशी से स्थापत्य को अत्यधिक सजाया गया है। • मिथकीय जानवरों की आकृतियों से युक्त ऊंची दीवारें और स्तंभों का निर्माण किया गया है।
कलिंग शैली ओडिशा **उदाहरण:** पुरी का **जगन्नाथ मंदिर,** भुवनेश्वर का **लिंगराज मंदिर**	 **जगन्नाथ मंदिर**	• तीन मुख्य भाग: **देउल** (गर्भगृह), जगमोहन (सभा भवन), नटमंदिर (उत्सव हॉल)। • **रेखा देउल:** ऊंचा, घुमावदार शिखर। • **पीढ़ा देउल:** चरणबद्ध पिरामिड जैसी पिरामिडनुमा छतों का निर्माण। • **खाखरा देउल:** देवी मंदिरों के लिए बैरलनुमा छतों का निर्माण।

1.12. प्राचीन इतिहास के विविध विषय-वस्तु (Miscellaneous Themes in Ancient India)

1.12.1. प्राचीन भारत में महिलाएं(Women in Ancient India)

प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका का विकास: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति एक जैसी नहीं थी; बल्कि इसमें हजारों वर्षों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित हुए। **यह माना जाता है कि आरंभिक समाजों में महिला और पुरुष के बीच समानता की स्थिति थी**, लेकिन उत्तरोत्तर **महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट दर्ज की गई।** परिवार पितृसत्तात्मक होता गया और महिलाएं पुरुषों के अधीन होती चली गईं और उनकी गतिविधियां परिवार तक सीमित रह गईं। वैसे महिला की स्थिति अक्सर उसके सामाजिक वर्ग (वर्ण) और क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होती थी।

1. हड़प्पा और पूर्व वैदिक काल: सम्मान और भागीदारी का युग

भारत के प्रथम शहरीकरण और आर्यों के शुरुआती पशुपालक समाज में, महिलाओं को अधिक सम्मानित दर्जा प्राप्त था।

- **हड़प्पा सभ्यता (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व)**
  - **धार्मिक प्रतीक:** हड़प्पा काल में मातृदेवी की मृण्मूर्तियां (टेराकोटा) मिलना इस बात का प्रमाण है कि तत्समय लोगों के धार्मिक जीवन में प्रजनन शक्ति और मातृदेवी की उपासना का अधिक महत्व था।

- **आर्थिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी:** महिलाएं घर तक ही सीमित नहीं थीं। आर्थिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी बुनाई (तकली के सिरे मिलना) और मृदभांड बनाने से संबंधित कलाकृतियों से स्पष्ट है।
- **सामाजिक स्थिति:** पुरुष और महिला, दोनों की कब्रों में समान प्रकार की वस्तुएं प्राप्त हुईं हैं जो यह दर्शाती है कि अंतिम संस्कार में लैंगिक भेदभाव मौजूद नहीं था। यह समाज में महिलाओं की सम्मानजनक स्थिति को दर्शाता है।

- **पूर्व वैदिक काल (ऋग्वैदिक काल)**
  - **शिक्षा प्राप्ति:** इस काल में महिलाओं को पवित्र ज्ञान और बौद्धिक कार्यों तक पहुंच प्राप्त थी। **गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाएं** इस काल में नारी शिक्षा के महत्त्व को उजागर करती हैं।
  - **सार्वजनिक जीवन में भागीदारी**: महिला **सभा और विदथ** जैसी सार्वजनिक सभाओं में भाग ले सकती थीं, जो समुदाय के नागरिक और सामाजिक संवाद में भाग लेने के उनके अधिकार का प्रतीक था।
  - **विवाह और धर्म-संस्कारों में भूमिका:** महिलाओं का विवाह आमतौर पर अधिक उम्र में होता था और उन्हें अपने पति का चयन का अधिकार प्राप्त होता था, कभी-कभी **स्वयंवर** नामक समारोह के माध्यम से। **धार्मिक अनुष्ठानों (यज्ञों) में पत्नी की उपस्थिति** आवश्यक मानी जाती थी।

2. उत्तर वैदिक और वैदिकोत्तर युग (लगभग 1000-300 ईसा पूर्व): महिलाओं की स्थिति में गिरावट की शुरुआत

यह काल एक स्पष्ट परिवर्तन को दर्शाता है, जब समाज के अधिक स्थिर, जटिल और कठोर स्वरूप धारण करने के साथ-साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी।

- **पितृसत्ता की मजबूती**: गृहस्वामी (**पितृसत्तात्मक**) के रूप में परिवार के पुरुष मुखिया का अधिकार अत्यधिक बढ़ गया। महिलाओं की प्राथमिक भूमिका को उनके पुरुष संबंधियों (पिता, पति, पुत्र) के संदर्भ में देखा जाने लगा।
- **अधिकार कम होना**: महिलाओं की सार्वजनिक सभाओं और प्रमुख धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदारी सीमित कर दी गई। वैदिक शिक्षा तक उनकी पहुँच भी धीरे-धीरे सीमित हो गई। अब यह शिक्षा मुख्यतः उच्च वर्गों तक सीमित रह गई।
- **अधीनता की पुष्टि:** प्रारंभिक धार्मिक और कानूनी ग्रंथों (धर्मसूत्रों) में ऐसे नियम बनाए जाने लगे जिन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित किया। इन ग्रंथों ने पुरुष आश्रितों पर महिलाओं की निर्भरता पर बल दिया और समाज की सार्वजनिक भूमिकाओं की तुलना में उनके घरेलू कार्यों को अधिक महत्व देने की बात कही।

3. मौर्य से गुप्त काल तक (लगभग 300 ई. पू. - 600 ई.): महिलाओं पर प्रतिबंधों की सख्ती

राजत्व नीतियां और मनुस्मृति जैसे प्रभावशाली कानूनी ग्रंथों के माध्यम से पितृसत्तात्मक व्यवस्था को मजबूत संस्थागत स्वरूप प्रदान कर दिया गया।

- **घर की चारदीवारी तक सीमित होना**: एक स्त्री की दुनिया मुख्यतः घर तक सीमित कर दी गई थी। उसका प्रमुख धर्म अपने पति और उसके परिवार की सेवा करना माना जाने लगा।
- **विवाह प्रथाओं में गिरावट: बाल विवाह की परंपरा** स्थापित हो गई, विशेषकर उच्च जाति की लड़कियों के लिए, ताकि उनका सतीत्व और पराधीन स्थिति सुरक्षित की जा सके। दहेज प्रथा का महत्व भी बढ़ने लगा, जिससे बेटियाँ परिवारों के लिए आर्थिक बोझ बन गईं।
- **सीमित आर्थिक और संपत्ति अधिकार:** स्त्रियों का संपत्ति पर अधिकार बहुत सीमित था और केवल **स्त्रीधन** (विवाह के समय प्राप्त व्यक्तिगत उपहार) तक सीमित कर दिया गया। पैतृक संपत्ति में उनका कोई अधिकार नहीं रहा, जिससे पुरुषों पर उनकी आर्थिक निर्भरता पर बनी रही।
- **सती प्रथा का उदय**: सती (पति की चिता पर विधवा द्वारा आत्मदाह) का पहला अभिलेखीय प्रमाण गुप्त काल (510 ई. – एरण अभिलेख) से मिलता है। यद्यपि यह व्यापक प्रथा नहीं थी, लेकिन इसका उदय महिलाओं के विवाहेत्तर जीवन मूल्य में गिरावट को दर्शाता है।
- **वर्ण व्यवस्था का प्रभाव:** एक स्त्री की सामाजिक स्थिति उसकी जाति पर अत्यधिक निर्भर थी। निम्न वर्णों की स्त्रियाँ, जिन्हें आर्थिक कारणों से घर के बाहर कार्य करना पड़ता था, उन्हें शारीरिक रूप से अधिक स्वतंत्रता तो मिलती थी, परंतु उन्हें सामाजिक भेदभाव का अधिक सामना भी करना पड़ता था।

- राज-दरबार की स्त्रियाँ, जैसे वाकाटक साम्राज्य की रानी-**शासिका प्रभावती गुप्ता,** राजनीतिक रूप से अधिक शक्तिशाली थीं, किंतु ऐसे उदाहरण आमतौर पर स्त्रियों के सार्वजनिक जीवन में सीमित भागीदारी संबंधी नियम के अपवाद थे।

1.12.2. भारत की शास्त्रीय भाषाएँ और लुप्तप्राय भाषाएँ (Classical Languages of India and Endangered language)

शास्त्रीय भाषा दर्जा के मानदंडों को समय-समय पर अद्यतन किया गया है ताकि भाषाओं की भाषाई विरासत और विशिष्टता को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित किया जा सके:

वर्ष	मानदंड
2024	• संबंधित भाषा के प्रारंभिक ग्रन्थ अति-प्राचीन होने चाहिए। इस भाषा का 1500-2000 वर्षों का अभिलेखित इतिहास होना चाहिए। • संबंधित भाषा का प्राचीन साहित्य/ ग्रंथों का अपना संग्रह होना चाहिए। साथ ही, इस भाषा को बोलने वाली कई पीढ़ियां इन प्राचीन साहित्य/ ग्रंथों को अपनी विरासत मानती हों। • अपने ज्ञान ग्रंथ, विशेष रूप से गद्य संग्रह के साथ-साथ काव्य संग्रह होने चाहिए, अभिलेखीय तथा शिलालेखीय प्रमाण होना चाहिए। • शास्त्रीय भाषाएं और इनके साहित्य अपने वर्तमान स्वरूप से अलग हो सकते हैं। इसका अर्थ है कि मूल भाषा-साहित्य, अपने से उत्पन्न शाखाओं से अलग स्वरूप वाले हो सकते हैं।

हाल ही में, भारत सरकार ने निम्नलिखित **पांच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा** प्रदान किया:

- मराठी
- पालि
- प्राकृत
- असमिया
- बंगाली

भारत में संकटग्रस्त भाषाएं और सरकारी प्रयास

भारत भाषाई विविधता से समृद्ध देश है। यूनेस्को ने भारत की 197 भाषाओं को संकटग्रस्त भाषा के रूप में सूचीबद्ध किया है। इन भाषाओं को वल्नरेबल (सुभेद्य), एंडेंजर्ड (लुप्तप्राय), या एक्सटिंक्ट (विलुप्त) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इनमें से कुछ भाषाएं जैसे- ग्रेट अंडमानीज़, टोडा, असुर और कोरो जैसी भाषाएं गंभीर रूप से या अत्यधिक गंभीर रूप से लुप्तप्राय हैं।

सरकारी पहलें

- **संकटग्रस्त भाषाओं के संरक्षण और परिरक्षण की योजना (SPPEL):** यह योजना **10,000 से कम** लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं का दस्तावेजीकरण और प्रचार करती है। पहले चरण में **117 भाषाओं** को प्राथमिकता दी गई थी।
- **UGC योजनाएं:**
  - देशी भाषाओं पर शोध के लिए वित्तीय **सहायता।**
  - **केंद्रीय विश्वविद्यालयों** में संकटग्रस्त भाषाओं के लिए **केंद्र की स्थापना।**
- **प्रशिक्षण और दस्तावेजीकरण:** भाषाविदों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, भाषा के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए **शब्दकोश, व्याकरण की किताबें** और **ऑडियो-विजुअल दस्तावेजीकरण** जैसे प्रयास।

शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने के प्रभाव

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलने के निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं:

- **रोजगार के कई अवसर** पैदा कर सकती है, विशेषकर **शैक्षिक क्षेत्र और शोध कार्यों में।**
- इन भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, दस्तावेज़ीकरण और डिजिटलीकरण के कार्यों से संग्रह, अनुवाद, प्रकाशन और डिजिटल मीडिया में भी रोजगार के अवसर पैदा होंगे।

1.12.3. रेशम मार्ग (सिल्क रोड) और प्राचीन भारत (The Silk Road and Ancient India)

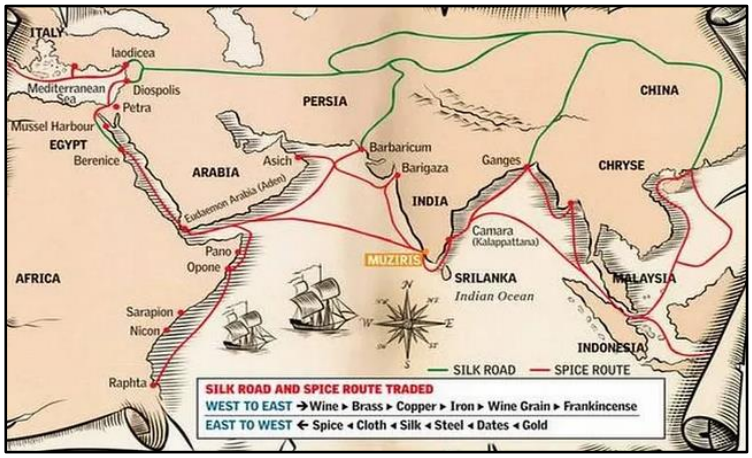

रेशम मार्ग एक विशाल व्यापार मार्गों का नेटवर्क था, जो **चीन को रोमन साम्राज्य से जोड़ता था** और मध्य एशिया से होकर गुजरता था। प्राचीन भारत के लिए यह केवल एक व्यापार मार्ग नहीं था, बल्कि विशेषकर **कुषाण साम्राज्य (प्रथम से तृतीय शताब्दी ईस्वी) के दौरान आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान का एक प्रमुख माध्यम** था।

रेशम मार्ग से भारत का संबंध

भारत अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा से होकर गुजरने वाले उप-मार्गों के माध्यम से रेशम मार्ग से जुड़ा था। कुषाण साम्राज्य ने व्यापार को सुगम बनाने और वस्तुओं के परिवहन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भारत में अधिक मात्रा में धन-संपदा का आगमन हुआ।

भारत के लिए महत्व

- **आर्थिक समृद्धि**: कुषाणों ने व्यापार से लाभ कमाया, स्वर्ण मुद्राएं जारी कीं और मसाले, वस्त्र एवं हाथीदांत का निर्यात किया।
- **सांस्कृतिक एकीकरण**: **गांधार कला शैली का विकास** हुआ, जिसमें **यूनानी-रोमन** तकनीकों और **बौद्ध विषयों** का समिश्रण था।
- **बौद्ध धर्म का प्रसार:** भारतीय **बौद्ध भिक्षुओं** ने रेशम मार्ग का उपयोग करके **बौद्ध धर्म को मध्य एशिया और चीन तक** पहुँचाया।

इस प्रकार रेशम मार्ग ने भारत के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसे विश्व से जोड़ने में योगदान दिया।

गोल्डन रोड: प्राचीन वैश्विक व्यापार और संस्कृति में भारत की केंद्रीय भूमिका

विलियम डेलरिम्पल ने रेशम मार्ग को व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रमुख मार्ग मानने की आम धारणा को चुनौती दी है। वे बताते हैं कि "रेशम मार्ग" शब्दावली केवल 19वीं शताब्दी में गढ़ा गया था और 13वीं शताब्दी में मंगोल आक्रमणों से पहले चीन और भूमध्यसागर के बीच कोई सतत स्थलमार्ग नहीं था। इसके विपरीत, डेलरिम्पल का तर्क है कि:

- मुख्य व्यापार मार्ग समुद्री और स्थलमार्ग थे, जो भारत को एशिया के अन्य भागों, मध्य पूर्व और यूरोप से जोड़ते थे, जिन्हें वे **"स्वर्णिम मार्ग"** (Golden Road) कहते हैं।
- ये मार्ग अधिक तेज़ गति और अधिक भरोसेमंद थे और स्थलमार्गी कारवाँ मार्गों की तुलना में इनसे होकर अधिक मात्रा में वस्तुओं को ले जाया जाता था।

- भारत का पश्चिमी तट इंडो-रोमन व्यापार का केंद्र था, जहाँ भारतीय व्यापारी रोमन साम्राज्य की वित्तीय व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते थे।
- जैसे-जैसे रोमन साम्राज्य का पतन हुआ, भारतीय व्यापारियों ने अपना ध्यान पूर्व की ओर केंद्रित किया, जिससे **दक्षिण-पूर्व एशिया का "भारतीयकरण" (Indianization)** हुआ।
- 7वीं शताब्दी तक भारतीय बौद्ध धर्म चीन पहुँच गया, और विशेष रूप से सम्राज्ञी वू ज़ेटियन के शासनकाल में चीनी शाही दरबार पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

1.12.4. भारत की वैश्विक सांस्कृतिक विरासत (India's Global Cultural Heritage)

1.12.4.1. यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल की अस्थायी सूची (Tentative List of UNESCO World Heritage Site)

विश्व विरासत स्थलों की अस्थायी सूची (Tentative List) **यूनेस्को विश्व विरासत कन्वेंशन** की अभिपुष्टि करने वाले देशों द्वारा बनाए रखी जाने वाली एक आधिकारिक सूची है। इसमें वे स्थल शामिल होते हैं जिनके बारे में देशों का मानना है कि उनका **उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य** है और वे भविष्य में उन्हें **विश्व विरासत सूची** में शामिल करने के लिए नामांकित कर सकते हैं।

भारत के लिए संभावित सूची में शामिल छह स्थल/ स्मारक

कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान	• **अवस्थिति:** बस्तर जिला (छत्तीसगढ़)। • इसका नाम **कांगेर नदी** के नाम पर रखा गया है। • यह **चूना पत्थर की गुफाओं** और **तीरथगढ़ जलप्रपातों** के साथ **कार्स्ट स्थलाकृति** के लिए प्रसिद्ध है।
मुदुमल महापाषाण मेन्हिर	• **महापाषाण (मेगालिथिक) खगोलीय वेधशाला तेलंगाना में कृष्णा नदी** के तट के निकट स्थित है। • मेन्हिर मानव निर्मित लंबवत रूप में स्थित **पत्थर है,** जो शीर्ष की ओर हल्का शंक्वाकार होता जाता है। • **ये लगभग** 3,500 से 4,000 वर्ष पुराने हैं।
मौर्य मार्गों में आने वाले अशोक के अभिलेख स्थल	• इनमें **वृहत शिलालेख, लघु शिलालेख, स्तंभ अभिलेख तथा अन्य अभिलेख और गुहा-अभिलेख** शामिल हैं। • इन्हें मौर्य सम्राट अशोक द्वारा **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में उत्कीर्ण** कराया गया था।
चौसठ योगिनी मंदिर	• **अवस्थिति:** मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और ओडिशा। • इनमें **64 योगिनियों की प्रतिमाएं** हैं और ये **तांत्रिक पूजा-अर्चना** से संबंधित हैं। • **खजुराहो, बडोह और रिखियां में बने मंदिर आयताकार हैं, शेष सभी मंदिर गोलाकार हैं।**
उत्तर भारत में गुप्त मंदिर	• इनमें **नागर और द्रविड़** स्थापत्य शैली तथा **बौद्ध और हिंदू स्थापत्य** शैलियों के **तत्वों** का मिश्रण है। • मंदिरों की योजना मौलिक रूप से **वर्गाकार है।** इसमें परिक्रमा पथ के साथ **सपाट छत तथा शिखर कम ऊंचाई** के होते हैं। • इनका निर्माण **धूप में सुखाई गई ईंटों, टेराकोटा और बलुआ पत्थर** से किया गया है।
बुंदेलों के महल-किले	• इनमें **गढ़कुंडार किला, राजा महल, जहांगीर महल, दतिया महल, झाँसी का किला और धुबेला महल** सहित छह किले शामिल हैं। • ये **राजपूत और मुगल** स्थापत्य शैली का मिश्रण हैं।

1.12.4.2. यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MoW) रजिस्टर (UNESCO Memory of the World (MoW) Register)

यह यूनेस्को द्वारा 1992 में शुरू की गई एक अंतर्राष्ट्रीय पहल है। इसका उद्देश्य मानव सभ्यता की मूल्यवान दस्तावेजी विरासत को संरक्षित करना और उसे सार्वभौमिक रूप से सुलभ बनाना है।

- इनमें **पांडुलिपियाँ, अभिलेखागार (आर्काइव), दुर्लभ पुस्तकें** और **ऑडियो-विजुअल** सामग्रियां शामिल हैं।
- इस रजिस्टर का प्राथमिक लक्ष्य दस्तावेज के रूप में संरक्षित दुनिया की विरासतों को नष्ट या उपेक्षित होने या जानबूझकर नष्ट करने से बचाना है, और इस विरासत के महत्व के बारे में **विश्व में जागरूकता** फैलाना है।

यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड (MoW) रजिस्टर में भारत की **14 प्रविष्टियां** शामिल हैं। इनमें दो संयुक्त प्रविष्टियां भी शामिल हैं। हाल ही में इस सूची में **भगवद्गीता और नाट्यशास्त्र पाण्डुलियों को** शामिल किया गया है। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने इस मान्यता को भारत की शाश्वत ज्ञान परंपरा और कलात्मक प्रतिभा को समर्पित श्रद्धांजलि के रूप में मनाया। मंत्रालय ने **भगवद् गीता** और **नाट्यशास्त्र** को **"दर्शन और सौंदर्यशास्त्र की ऐसी आधारशिलाएँ"** बताया, जिन्होंने भारत की विश्व-दृष्टि को आकार दिया है और हमारी सोच, अनुभूति, जीवन-शैली और अभिव्यक्ति को प्रभावित किया है।

भगवद्गीता: सार्वभौमिक मार्गदर्शिका

- भगवद्गीता, जो भारत के प्रमुख आध्यात्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में से एक है, को वैश्विक चिंतन पर इसके गहन प्रभाव के लिए यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड में शामिल किया गया है।
- **धर्म और अध्यात्म के सार्वभौमिक मार्गदर्शक** ग्रंथ के रूप में पूजनीय, भगवद्गीता विश्व की **सबसे अधिक अनूदित** कृतियों में से एक है।
- इसके उपदेश, जो नैतिक और दार्शनिक ज्ञान से परिपूर्ण हैं, न केवल भारतीय समाज को दिशा प्रदान करने में सहायक रहे हैं, बल्कि वैश्विक अध्यात्म और विचारधारा पर भी स्थायी प्रभाव डाला है।

नाट्यशास्त्र: शास्त्रीय भारतीय कलाओं का आधार

- नाट्यशास्त्र, जो **प्राचीन नाट्य, रंगमंच और प्रदर्शन कलाओं (परफॉरमेंस आर्ट्स) पर आधारित एक ग्रंथ** है, शास्त्रीय भारतीय नृत्य और नाटक के विकास में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
- यह प्रदर्शन कलाओं पर एक व्यापक ग्रंथ है, जिसमें **अभिनय, संगीत, नृत्य, मंच-सज्जा और सौंदर्यशास्त्र** जैसे विभिन्न पक्षों का विस्तार से वर्णन किया गया है। इसकी शिक्षाओं के केंद्र में प्रसिद्ध **रस-सिद्धांत** स्थित है।
- नाट्यशास्त्र का प्रभाव भारत की कलात्मक अभिव्यक्ति और प्रदर्शन कला परंपराओं की आधारशिला में निहित है।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़

देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं

- ✓ सामान्य अध्ययन
- ✓ निबंध
- ✓ दर्शनशास्त्र

2025	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

Scan the QR CODE to download VISION IAS app

ऑप्शनल सब्जेक्ट टेस्ट सीरीज़

- ✓ भूगोल
- ✓ समाजशास्त्र
- ✓ दर्शनशास्त्र
- ✓ हिंदी साहित्य
- ✓ राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

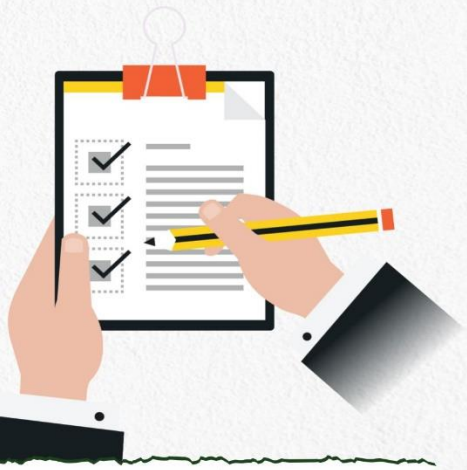

2025	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

2. मध्यकालीन भारत का इतिहास और कला एवं संस्कृति (Medieval History and Art & Culture)

2.1. मध्यकालीन भारत की साहित्यिक परम्पराएं (Literary Traditions of Medieval India)

2.1.1. फारसी साहित्य का विकास (Development of Persian Literature)

भारत में फारसी साहित्य का विकास **प्रशासनिक उपयोग से सांस्कृतिक विनिमय और कलात्मक अभिव्यक्ति के एक माध्यम** के रूप में हुआ था।

प्रारंभिक शुरुआत (11वीं से 13वीं सदी ईस्वी)

- **गजनी राजवंश:** गजनी शासनकाल में **फारस साहित्य व प्रशासन का प्रमुख केंद्र** बन गया था, जिसका अति विख्यात शहर **लाहौर** था। फारस ने **फिरदौसी** जैसे कवियों को आकर्षित किया था।

महत्वपूर्ण फारसी अनुवाद

पुस्तक का नाम	सिर्र-ए-अकबर	मज्म-उल-बहरैन	भगवत गीता
मुख्य विषय	52 उपनिषद	हिन्दू व इस्लामिक दर्शन	भगवत गीता
मुख्य फोकस	अंतरधर्मीय दार्शनिक संवाद	अंतरधर्मीय संवाद और एकता	सांस्कृतिक व दार्शनिक विनिमय

- **गौरी राजवंश:** 1192 ई. में दिल्ली में सल्तनत की स्थापना के बाद **फारसी गद्य (वंशावली, इतिहास आदि)** की परंपरा शुरू हुई।
- **दिल्ली सल्तनत: फारसी** शासन की एक **आधिकारिक भाषा** बन गई तथा बहुत से फारसी विद्वान दिल्ली आने लगे।

विस्तार (14वीं से 16वीं सदी ईस्वी)

- **तैमूर का आक्रमण और उसके बाद का विकास:** फारसी पर **स्थानीय प्रभाव** पड़ने लगा और इसमें **क्षेत्रीय शैलियों के तत्व शामिल** होने लगे।
- **क्षेत्रीय राजवंश:** फारसी साहित्य **कश्मीर, गुजरात व मालवा** जैसे राज्यों में फला-फूला।
- **अनुवाद:** संस्कृत ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद हुआ। इन ग्रंथों में महाकाव्य आदि शामिल थे। **जिया नक्शबी** प्रख्यात अनुवादक थे।

मुगल काल (16वीं से 18वीं सदी)

- **अकबर का संरक्षण:** फारसी **शाही भाषा** बन गई। इससे इसके सांस्कृतिक दर्जे में वृद्धि हुई।
- **साहित्यिक वृद्धि:** जहांगीर द्वारा रचित **"तुजुक-ए-जहांगीरी"** की रचना संस्कृत भाषा में हुई।
- **संस्कृत अनुवाद: दारा शिकोह** ने प्रमुख संस्कृत ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया। इस प्रकार उसने हिन्दू व इस्लामिक परम्पराओं का विलय किया।

उर्दू भाषा और साहित्य का विकास

- **उद्भव:** उर्दू का विकास **12वीं शताब्दी के आसपास दिल्ली क्षेत्र** में हुआ। यह स्थानीय बोलियों और मुस्लिम विजेताओं की भाषाओं, मुख्य रूप से **फारसी, अरबी और तुर्की** से विकसित हुई थी। शुरू में इसे **"हिंदवी" या "रेख़्ता"** कहा जाता था। यह संचार के लिए एक लोक भाषा के रूप में कार्य करती थी।
- **भाषाई जड़ें:** उर्दू की **व्याकरणिक संरचना हिंदी** के समान है, लेकिन शब्दावली में भिन्नता है, उर्दू में **फारसी और अरबी शब्द** अधिक शामिल हैं, जबकि हिंदी में संस्कृत के शब्द अधिक हैं।

उर्दू का साहित्यिक विकास

- **सूफी प्रभाव: निजामुद्दीन औलिया** जैसे सूफी संत और **अमीर खुसरो** जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में विभिन्न भाषाओं का मिश्रण इस्तेमाल किया था। इससे उर्दू को **आध्यात्मिक अभिव्यक्ति की भाषा** के रूप में बढ़ावा मिला।
- **प्रारंभिक रचनाएं:** 14वीं और 15वीं शताब्दी में **अमीर खुसरो, मुल्ला वजही** जैसे कवियों ने रहस्यवाद एवं प्रेम के विषयों पर ध्यान केंद्रित किया था। इससे उर्दू की साहित्यिक उपस्थिति स्थापित करने में मदद मिली।
- **मुगल दरबार का संरक्षण:** मुगलों के अधीन **ग़ालिब, मीर तकी मीर और ज़ौक़** जैसे कवियों के साथ उर्दू का विकास हुआ। इन कवियों को शाही संरक्षण प्राप्त था।
- **स्वर्ण युग: 18वीं और 19वीं शताब्दी** में उर्दू कविता का स्वर्ण युग था। इसमें **गालिब** जैसे **कवि और प्रेमचंद** जैसे गद्य लेखकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

2.2. भक्ति और सूफी आंदोलन (Bhakti and Sufi Movements)

2.2.1. भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement)

भक्ति आंदोलन की शुरुआत **7वीं और 10वीं शताब्दी** के बीच **दक्षिण भारत** में हुई थी। यह एक महत्वपूर्ण **सामाजिक-धार्मिक विकास** था। इसने कठोर अनुष्ठानों और जातिगत भेदों से दूर, चुने हुए आराध्यों के प्रति प्रत्यक्ष और भावनात्मक **व्यक्तिगत भक्ति** पर जोर दिया। इस आंदोलन में **शुरुआती मध्यकाल के दौरान सबसे महत्वपूर्ण वृद्धि** हुई थी।

भक्ति आंदोलन का उदय और प्रसार

दक्षिण भारत में उद्भव
यह आंदोलन 7वीं और 10वीं शताब्दी के बीच तमिल भाषी क्षेत्रों में शुरू हुआ था।

आरंभिक प्रतिपादक
अलवार और नयनार क्रमशः विष्णु व शिव के आरंभिक भक्त थे।

कर्नाटक में प्रसार
12वीं और 13वीं शताब्दी तक यह आंदोलन कर्नाटक तक फैल गया था।

महाराष्ट्र में प्रसार
इसी अवधि में यह आंदोलन महाराष्ट्र तक भी पहुंच गया था।

उत्तर भारत में प्रसार
15वीं शताब्दी तक यह आंदोलन उत्तर भारत तक फैल गया था।

संतों का योगदान
रामानंद, कबीर और गुरु नानक जैसे संतों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

2.2.1.1. भक्ति आंदोलन की महत्वपूर्ण विशेषताएं (Key Features of Bhakti Movement)

पहलू	विवरण
व्यक्तिगत भक्ति और मोक्ष	• भक्ति आंदोलन ने **आध्यात्मिकता के प्रति एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण** प्रस्तुत किया था। इसमें भक्त और ईश्वर के बीच व्यक्तिगत एवं प्रत्यक्ष संबंध पर ध्यान केंद्रित किया गया। • इस संबंध ने सामाजिक और जातिगत बाधाओं को पार कर एक समावेशी और समतावादी आध्यात्मिक अभ्यास को बढ़ावा दिया।
ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष संबंध	• यह सिद्धांत **पारंपरिक हिंदू प्रथाओं का एक क्रांतिकारी त्याग** था। ये पारंपरिक प्रथाएं अक्सर आध्यात्मिक ज्ञान और रीतियों को वर्ण आधारित व्यवस्था तक सीमित कर देती थी। • कबीर, गुरु नानक, चैतन्य महाप्रभु जैसे भक्ति संतों ने उपदेश दिया कि ईश्वर उन सभी के लिए सुलभ है, जो सच्ची भक्ति के साथ खोज करते हैं। इस प्रकार **आध्यात्मिक अभ्यास को लोकतांत्रिक** बनाया गया।
कर्मकांडों और पुरोहित मध्यस्थों की अस्वीकृति	• भक्ति आंदोलन का मुख्य उद्देश्य **विस्तृत अनुष्ठानों और पुजारियों की मध्यस्थता को अस्वीकार** करना था। • भक्ति संतों का मानना था कि **सच्ची भक्ति और व्यक्तिगत भक्ति ही ईश्वरीय संबंध का सच्चा मार्ग** है। • कर्मकांडों की इस अस्वीकृति ने **आध्यात्मिक प्रथाओं को आम लोगों के लिए अधिक सुलभ बनाने** में मदद की।
मोक्ष के माध्यम के रूप में प्रेम व भक्ति पर बल	• भक्ति आंदोलन ने व्यक्तिगत प्रार्थना, भजन गायन और सामुदायिक पूजा में संलग्न होकर मोक्ष प्राप्त करने के प्राथमिक साधन के रूप में **प्रेम व भक्ति** पर बहुत जोर दिया। • भक्ति आंदोलन का साहित्य **ईश्वर के प्रति प्रेम की काव्यात्मक अभिव्यक्तियों** से भरा पड़ा है, जो इस मूल सिद्धांत (प्रेम) को दर्शाता है।

2.2.1.2. भक्ति साहित्य (Bhakti Literature)

भक्ति साहित्य, भक्ति आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता है। इसे मुख्य रूप से स्थानीय भाषाओं में लिखा गया था। इस विशेषता ने इसे व्यापक रूप से अपनाए जाने और प्रभाव को बहुत सुविधाजनक बनाया। इस आंदोलन से निकले कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रीय साहित्य में निम्नलिखित शामिल हैं:

क्षेत्र	लेखक/ संत	विवरण	छवि
तमिल	अलवार और नयनार।	• **विष्णु** के भक्त संत **अलवारों** ने भजनों के एक विशाल संग्रह की रचना की थी। इस संग्रह को **"नालयिर दिव्य प्रबंधम"** कहा गया है। यह इस क्षेत्र में वैष्णव धर्म के लिए एक आधारभूत ग्रंथ के रूप में कार्य करता है। • **शिव** के भक्त संत **नयनारों** ने **"तेवरम"** के नाम से भजनों का अपना संग्रह बनाया था। यह संग्रह	 अलवार संत

		शैव भक्ति परंपरा का केंद्र बन गया। • महत्वपूर्ण रूप से, अलवार और नयनार दोनों ने **अपनी रचनाओं में रोजमर्रा की तमिल भाषा एवं संबंधित कल्पना** का उपयोग किया। • भाषा के इस जानबूझकर चयन ने **आध्यात्मिक ज्ञान को लोकतांत्रिक** बनाया, जिससे जटिल धार्मिक अवधारणाएं व्यापक आबादी के लिए सुलभ हो गई।	 नयनार संत
मराठी	संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम आदि।	• **ज्ञानेश्वर की "ज्ञानेश्वरी" भगवद्गीता पर एक गहन मराठी टीका** है। इससे इसकी जटिल दार्शनिक और आध्यात्मिक शिक्षाएं संस्कृत विद्वानों से परे एक व्यापक क्षेत्रीय पाठकों के लिए सुलभ हो गई। • मराठी में **नामदेव के अभंगों ने विठोबा** के प्रति गहरी व्यक्तिगत भक्ति को व्यक्त करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य किया। जिसने **वारकरी परंपरा** को लोकप्रिय बनाने और आम लोगों के बीच एक जीवंत भक्ति संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। • **तुकाराम के अभंगों** में सरल मराठी का उपयोग किया गया है। इनमें भगवान के प्रति शुद्ध व विशुद्ध भक्ति और प्रेम पर जोर दिया गया है।	 संत नामदेव
हिंदी	कबीर, तुलसीदास, सूरदास, रविदास आदि।	• **कबीर** के दोहों में हिंदू और इस्लामी विचारों का विश्लेषणात्मक मिश्रण है। इन दोहों में अक्सर धार्मिक रूढ़िवादिता को चुनौती देने और समन्वयवादी मार्ग को बढ़ावा देने के लिए **"उलट बांसी" (उल्टा कथन)** सहित प्रत्यक्ष व रहस्यपूर्ण भाषा का प्रयोग किया जाता है। • **तुलसीदास के "रामचरितमानस" ने सुलभ अवधी बोली** में रामायण के एक स्मारकीय पुनर्कथन के रूप में कार्य किया, जिसने महाकाव्य कथा को लौकिक बनाया। • **सूरदास के "सूरसागर"** ने कृष्ण के जीवन की एक समृद्ध भक्तिपूर्ण खोज प्रदान की थी, जिसमें गहन आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करने के लिए स्थानीय कविता का उपयोग किया गया। • **रविदास** के भजन सामाजिक मुद्दों से गंभीरता से जुड़े थे। इनमें गहन व्यक्तिगत भक्ति के साथ-साथ उग्र सुधारवादी सामाजिक समानता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया था।	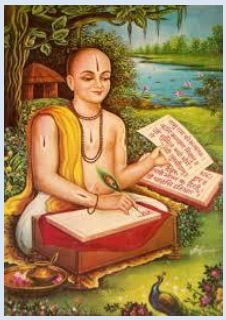 तुलसीदास

2.2.1.3. भक्ति का प्रभाव और असर (Impact and Influence of Bhakti)

- **ईश्वर के समक्ष समानता:** भक्ति संतों ने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। भक्ति आंदोलन के इस मूल सिद्धांत ने जाति व्यवस्था की पदानुक्रमिक संरचना को प्रत्यक्ष चुनौती दी। उदाहरण के लिए-
  - **कबीर:** एक प्रमुख भक्ति कवि, कबीर ने **जातिगत भेदभाव का मुखर विरोध** किया। उन्होंने घोषणा की कि **ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति जातिगत भेद को मान्यता नहीं** देती।
  - **रविदास:** निचली जाति में जन्मे रविदास ने अपने भक्ति गीतों का उपयोग **सामाजिक समानता की वकालत करने और जाति-आधारित भेदभाव की आलोचना** करने के लिए किया। उनकी कविताओं में अक्सर इस विचार पर प्रकाश डाला जाता था कि आध्यात्मिक शुद्धता और भक्ति किसी की जाति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
- **कर्मकांडों और पुरोहित मध्यस्थों की अस्वीकृति:** भक्ति आंदोलन द्वारा विस्तृत कर्मकांडों एवं पुरोहित मध्यस्थता की अस्वीकृति सामाजिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
  - **गुरु नानक:** सिख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक ने ईश्वर की एकता और बंधुत्व पर जोर दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था और कर्मकांडों के खिलाफ प्रचार किया तथा ईश्वर के साथ सीधे एवं व्यक्तिगत सरोकार को बढ़ावा दिया।
- **समावेशी सामुदायिक प्रथाएं:** भक्ति **सभाएं और प्रथाएं स्वाभाविक रूप से समावेशी** थीं। ये विविध जातियों और पृष्ठभूमियों के लोगों को सामुदायिक पूजा एवं भक्ति भजनों के गायन में भाग लेने के लिए एक साथ लाती थीं।
  - **रामानंद:** ये एक भक्ति संत थे, जिन्होंने **उत्तर और दक्षिण भारतीय भक्ति परंपराओं के बीच मौजूद अंतर को समाप्त करने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने निचली जातियों सहित सभी जातियों के शिष्यों को स्वीकार किया। इस प्रकार एक **समावेशी आध्यात्मिक समुदाय** को बढ़ावा दिया।
- **स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा:** भक्ति साहित्य में स्थानीय भाषाओं के उपयोग ने **आध्यात्मिक शिक्षाओं को व्यापक जन तक पहुंचाया,** जिनमें वे लोग भी शामिल थे जो संस्कृत नहीं बोल सकते थे। ज्ञातव्य है कि उस समय संस्कृत अभिजात वर्ग की भाषा थी।
- **विरासत और प्रभाव:** भक्ति आंदोलन के **समतावादी सिद्धांतों** ने बाद के सामाजिक और धार्मिक सुधारों को प्रभावित किया। समानता और प्रत्यक्ष भक्ति पर आंदोलन के जोर ने सिख धर्म जैसी नई धार्मिक परंपराओं के निर्माण में योगदान दिया। सिख धर्म ने जाति-आधारित भेदभाव को चुनौती देना जारी रखा।

2.2.1.4. सुर्ख़ियों में रहे प्रमुख भक्ति संत (Prominent Bhakti Saints in News)

संत	जन्म व प्रारंभिक जीवन	शिक्षाएं एवं योगदान	विरासत और वर्तमान प्रासंगिकता
रामानुज	• इनका जन्म **तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर** में लगभग **1017 ईस्वी** में हुआ था। • उन्होंने धार्मिक कुशाग्रता के प्रारंभिक लक्षण प्रदर्शित किए थे। • उन्होंने **अद्वैत वेदांत** के अंतर्गत अध्ययन	• वेदांत के **विशिष्टाद्वैत (योग्य अद्वैतवाद)** दर्शन की स्थापना की। • प्रमुख कृतियों में **वेदार्थ-संग्रह, श्री भाष्य और भगवद गीता भाष्य** शामिल हैं। • **मोक्ष प्राप्ति** के साधन के रूप में	रामानुज ने **विशिष्टाद्वैत (योग्य अद्वैतवाद)** का समर्थन किया था, जिसमें सभी जातियों के लिए भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक मुक्ति के लिए एक सीधे व समावेशी मार्ग पर जोर दिया गया है। उनकी शिक्षाएं आधुनिक भारत में **सामाजिक न्याय, धार्मिक**

	किया, लेकिन अपनी स्वयं की दार्शनिक प्रणाली विकसित की।	भक्ति का प्रचार किया।	**सद्भाव और समतावादी आंदोलनों** को प्रेरित करती रहती हैं।
शंकराचार्य 	• इनका जन्म **केरल के कलाडी** में लगभग **788 ई.** में हुआ था। • वे काफी कम उम्र में ही वेदों में पारंगत हो गए थे। • उन्होंने जल्द ही सांसारिक जीवन त्याग दिया और **गोविंद भगवत्पाद** के अधीन अध्ययन किया।	• **अद्वैत वेदांत (गैर-द्वैतवाद)** के सिद्धांत को मजबूत किया। • प्रमुख कृतियों में **उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद गीता पर टिकाएं** शामिल हैं। • उन्होंने **आत्मा और ब्रह्म के एकाकार** पर बल दिया।	उनका दर्शन **आध्यात्मिक सद्भाव को बढ़ावा देता है, आत्म-जांच का मार्गदर्शन करता है, और भौतिकवाद के बीच आधुनिक अस्तित्वगत दुविधाओं का समाधान करने के लिए एक कालातीत ढांचा** बना हुआ है।
एकनाथ 	• इनका जन्म **1533 ई. में महाराष्ट्र के पैठण** में हुआ था। • ये एक प्रमुख मराठी संत, विद्वान और कवि थे, जो मराठी साहित्य में अपनी गहन भक्ति और योगदान के लिए विख्यात हैं।	• उन्होंने **रामायण पर मराठी टीका भावार्थ रामायण** की रचना की थी। साथ ही, **विठोबा** की भक्ति पर जोर देते हुए कई **अभंगों** की रचना भी की थी।	उन्होंने **हार्दिक भक्ति को बढ़ावा दिया, सामाजिक समावेशिता का समर्थन** किया और मराठी साहित्य को समृद्ध किया। प्रेम और समानता का उनका संदेश आज भी सामाजिक सद्भाव एवं आध्यात्मिक उत्थान को प्रेरित करता है।
तुलसीदास 	• इनका जन्म **1511 ईस्वी में वर्तमान उत्तर प्रदेश** में हुआ था। • उन्हें **अवधी भाषा में रामायण का पुनर्कथन करने वाले 'रामचरितमानस' के लेखक** के रूप में जाना जाता है।	• तुलसीदास की कृतियां हिंदू दर्शन के विविध पहलुओं को एकीकृत करती हैं, जिनमें **भक्ति, कर्म (धर्म) और कर्मयोग** शामिल हैं। • रामचरितमानस के अलावा उन्होंने **हनुमान चालीसा, गीतावली, कवितावली** जैसी प्रसिद्ध कृतियों की भी रचना की थी।	**भगवान राम के प्रति समर्पण, नैतिक जीवन और आस्था की परिवर्तनकारी शक्ति** पर उनके जोर ने लोकप्रिय हिंदू प्रथाओं को गहराई से आकार दिया था तथा समकालीन भारत में नैतिक मार्गदर्शन प्रदान किया था।

2.2.2. सूफी आंदोलन (Sufi Movement)

मध्ययुगीन भारत में सूफी आंदोलन का उदय **इस्लामी विस्तार के सांस्कृतिक संदर्भ और स्थानीय परंपराओं के साथ इसके एकीकरण** से गहराई से जुड़ा हुआ था।

- 7वीं शताब्दी के बाद से व्यापार और अंतर्क्रियाओं के माध्यम से इस्लाम का प्रसार हुआ। 13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने सूफी संतों की प्रसिद्धि के लिए एक स्थिर परिवेश निर्मित किया।
- सूफीवाद ने **रहस्यवाद और आध्यात्मिकता** पर जोर दिया, जो हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म जैसी मौजूदा भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के अनुरूप था।

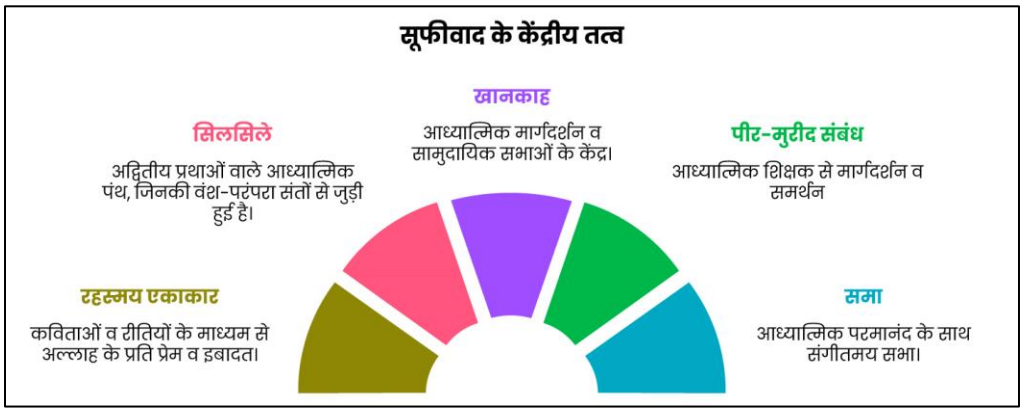

समाज व संस्कृति पर सूफीवाद का प्रभाव

विशेषताएं	अंतर्धार्मिक संवाद	सांस्कृतिक समन्वय	साहित्य व काव्य
प्रभाव	आध्यात्मिक विचारों का मिश्रण	समानता व बंधुत्व को बढ़ावा दिया	इबादतपूर्ण कृतियों के साथ साहित्य का विकास हुआ
प्रमुख संत	निजामुद्दीन औलिया आदि	निजामुद्दीन औलिया, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती आदि	अमीर खुसरो

2.2.2.1. अमीर खुसरो: फारसी साहित्य और संगीत के प्रवर्तक (Amir Khusrau: Innovator of Persian Literature and Music)

भारत में जन्मे तुर्क **अमीर खुसरो (1253-1325)** को भारतीय संदर्भ में फारसी साहित्य को आकार देने में उनकी अग्रणी भूमिका के लिए **"तूती-ए-हिंद" या "भारत का तोता"** भी कहा जाता है। उन्होंने **पारंपरिक फारसी विषयों को भारतीय तत्वों के साथ मिश्रित** किया था, जिससे एक अद्भुत सांस्कृतिक संश्लेषण हुआ।

- **काव्य नवाचार:** खुसरो ने **इहाम (द्विअर्थी/ श्लेष) और ख़याल (काव्यात्मक कल्पना)** जैसी साहित्यिक शैलियों के साथ प्रयोग किया। उन्होंने ऐतिहासिक आख्यानों को गढ़ने के लिए **मसनवी प्रारूप** का उपयोग किया और फारसी साहित्य में अद्वितीय योगदान देते हुए **पत्र-लेखन की एक नई शैली** विकसित की।
- **हिंदवी काव्य:** खुसरो को हिंदवी काव्य को आगे बढ़ाने का श्रेय दिया जाता है। हिंदवी **हिंदी और उर्दू** भाषा की अग्रदूत है। उन्होंने हिंदी की मिश्रित शैली में लेखन कार्य किया। यह मिश्रित शैली **खड़ी बोली (हिंदुस्तानी)** के रूप में विकसित हुई। फारसी और हिंदी के बीच बारी-बारी से उनके **रेख़्ता काव्य ने उर्दू के विकास को प्रभावित** किया।

- **खुसरो की प्रमुख कृतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
    - **नूह सिपिहर:** इसमें भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत की प्रशंसा की गई है।
    - **मिफताहुल फुतूह: जलालुद्दीन खिलजी** के सैन्य अभियानों का वर्णन है।
    - **किरान उस स'दैन:** एक ऐतिहासिक रोमांस।
    - **तुगलकनामा: गयासुद्दीन तुगलक** की विजय का वृत्तांत।

खुसरो ने फारसी और भारतीय संगीत शैलियों को मिलाकर **कव्वाली व तराना** जैसे सूफी भक्ति संगीत के विकास में भी योगदान दिया था। उनके नवाचारों ने **आधुनिक दक्षिण एशियाई संगीत** की नींव रखी थी।

खुसरो के लेखन में **दिल्ली सल्तनत** के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलती है। इसमें **दरबारी जीवन, राजनीतिक घटनाओं और सूफी प्रथाओं** का वर्णन है। इस प्रकार, उनका लेखन भारतीय साहित्य एवं संगीत में एक प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में उनकी विरासत को सुदृढ़ करता है।

जहान-ए-खुसरो महोत्सव: सूफ़ी विरासत का एक उत्सव

हाल ही में, सूफी विरासत के उत्सव **जहान-ए-खुसरो महोत्सव का 25वां संस्करण** मनाया गया था। इस संस्करण में **सूफी संगीत और भारत की बहुलवादी संस्कृति में इसकी भूमिका** का जश्न मनाया गया था। **हजरत अमीर खुसरो** की स्मृति में आयोजित इस महोत्सव में **सूफी परंपराओं और भारत की विविध आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत के एकीकरण** पर प्रकाश डाला गया था।

- महोत्सव का उद्घाटन करते हुए **देश के प्रधान मंत्री** ने जोर दिया कि सूफी संगीत एक साझा विरासत है, जो धार्मिक सीमाओं से परे है।
    - **खुसरो, रूमी और निजामुद्दीन औलिया** जैसे प्रसिद्ध सूफी कवियों को उद्धृत करते हुए उन्होंने इस्लामी एवं हिंदू दोनों परंपराओं में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।
    - प्रधान मंत्री ने **सूफी जिक्रों (Chants) और उपनिषदिक विचारों के बीच समानताओं** की भी बात की तथा इस पर जोर दिया कि दोनों आध्यात्मिक प्रेम को बढ़ावा देते हैं। इस महोत्सव में **नज़र-ए-कृष्णा** जैसे प्रदर्शनों के माध्यम से भारतीय एवं सूफी संगीत परंपराओं का गहरा मिश्रण प्रदर्शित किया गया।

2.3. सल्तनतकालीन स्थापत्यकला (Sultanate Period Architecture)

भारत में **सल्तनत काल** के दौरान, 13वीं से 16वीं शताब्दी तक, स्थापत्यकला में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

- **तुर्कों के आगमन** से नई शैलियों और तकनीकों की शुरुआत हुई, जैसे **मेहराब एवं गुंबदों** का उपयोग।
- वे एक विशिष्ट सजावटी शैली लेकर आए, जिसमें **मानव और पशु आकृतियों से परहेज** किया गया। इसकी बजाय **ज्यामितीय और पुष्प डिजाइनों** का उपयोग किया गया।

इस अवधि के स्थापत्यकला संबंधी नवाचारों ने बाद की मुगल स्थापत्यकला के लिए मंच तैयार किया और भारत की स्थापत्य विरासत पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

2.3.1. तुर्कों द्वारा प्रस्तुत प्रमुख स्थापत्यकला संबंधी तत्व (Key Architectural Elements Introduced by the Turks)

मेहराब और गुंबद

विशेषताएं	विवरण
मेहराबों का परिचय और विस्तृत उपयोग	• **तुर्कों** के कारण भारतीय स्थापत्यकला में वास्तविक **मेहराबों और गुंबदों** का शामिल होना एक क्रांतिकारी बदलाव था। इनसे स्थापत्यकला में **कई स्तंभों के बिना बड़े व खुले अंदरूनी भाग बनाने** की सुविधा प्राप्त हुई। 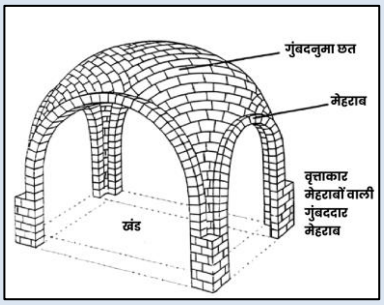 • **मेहराबों** ने निर्माण योजना में **लचीलापन** प्रदान किया, जबकि **गुंबदों** ने संरचनात्मक **स्थिरता और सौंदर्य** अपील को जोड़ा। 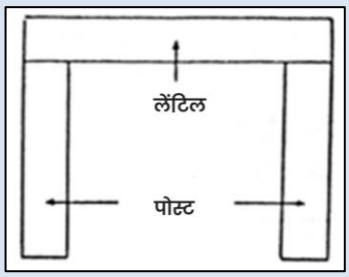 • तुर्कों से पहले, भारतीय स्थापत्यकला में **पोस्ट और लिंटेल निर्माण** का उपयोग किया जाता था। इनसे संरचनात्मक आकार और दायरा सीमित हो जाता था।
चूना-गारे का उपयोग	• तुर्कों ने **मेहराबों और गुंबदों के निर्माण के लिए चूने के गारे** का इस्तेमाल शुरू किया था। इससे जटिल संरचनाओं के लिए **आवश्यक मजबूती एवं स्थायित्व** मिला। • इस नवाचार ने **बड़ी और अधिक जटिल इमारतों** के निर्माण को सक्षम बनाया।

अलंकरण शैली

विशेषताएं	विवरण
मानव व पशु आकृतियों का	• सल्तनत काल के दौरान इस्लामी कला ने धार्मिक मान्यताओं के कारण **संवेदनशील प्राणियों को चित्रित करने से परहेज** किया।

अस्वीकरण	• इसकी बजाय, कलाकारों ने **ज्यामितीय पैटर्न, पुष्प डिजाइन और सुलेख** पर ध्यान केंद्रित किया। इससे बिना आकृतिपूर्ण प्रतिनिधित्व के सुंदर सजावट करने की सुविधा मिली।
अरबेस्क तकनीक का उपयोग	• **पुष्प रूपांकनों या "अरबेस्क"** में आपस में जुड़े हुए **तने, पत्ते और फूल** शामिल थे, जिनका उपयोग सल्तनतकालीन स्थापत्यकला और अन्य कला शैलियों में व्यापक रूप से किया जाता था। • **सुलेख** का उपयोग स्थापत्यकला संबंधी तत्वों और वस्तुओं को **कुरान की आयतों** से सजाने के लिए किया जाता था। • **अरबी लिपि** एक धार्मिक अभिव्यक्ति और एक सजावटी तत्व दोनों के रूप में काम करती थी, जिसे **ज्यामितीय और पुष्प रचनाओं** में एकीकृत किया जाता था। • इस्लामी शैली में अक्सर **बेल, स्वस्तिक और कमल** जैसे हिंदू रूपांकनों को भी शामिल किया जाता था। यह **इस्लामी और हिंदू परंपराओं** के मिश्रण को प्रदर्शित करता है।

शेर शाह सूरी की विरासत

शेर शाह सूरी के शासनकाल (1540-1545) ने **भारतीय प्रशासन, अर्थव्यवस्था और अवसंरचना** पर एक गहरी विरासत छोड़ी है।

- **प्रशासनिक सुधार: प्रांतों (सरकारों) और जिलों (परगना)** की एक पदानुक्रमित संरचना के साथ एक **केंद्रीकृत प्रशासन** की शुरुआत की। इसने बाद के **मुगल शासन को भी प्रभावित** किया था।
- **राजस्व प्रणाली: भूमि माप और उर्वरता** के आधार पर एक **निष्पक्ष भू-राजस्व प्रणाली** लागू की, बिचौलियों को खत्म किया तथा **किसानों के साथ सीधा संपर्क** सुनिश्चित किया। इस प्रणाली ने **अकबर के राजस्व सुधारों को प्रभावित** किया था।
- **मुद्रा और अर्थव्यवस्था: चांदी का रुपया और एक त्रिधातु सिक्का** प्रणाली शुरू करके मुद्रा को मानकीकृत किया, जिससे **व्यापार एवं कराधान स्थिर** हुआ।
- **अवसंरचना:** सड़कों का निर्माण और सुधार किया, विशेष रूप से **बंगाल से काबुल तक ग्रैंड ट्रंक रोड**। साथ ही व्यापार, यात्रा व संचार को बढ़ावा देने के लिए **सरायों (विश्राम गृहों)** की स्थापना की।
- **न्याय और कानून: निष्पक्ष न्याय, सख्त कानून और व्यवस्था** लागू की तथा गरीबों के लिए **वजीफा** उपलब्ध कराया, जिससे निष्पक्षता की प्रतिष्ठा अर्जित हुई।
- **सैन्य संगठन:** एक मजबूत व **केंद्रीय रूप से नियंत्रित** सेना बनाए रखी और रक्षा के लिए **किले** बनवाए, जिससे **सामंतों पर निर्भरता कम** हुई।
- **किसान कल्याण: सेना की ज्यादतियों से किसानों की रक्षा** की, **अकाल** के दौरान **राहत** प्रदान की और **कृषि विकास** को प्रोत्साहित किया।
- **विरासत:** शेरशाह के सुधारों ने **विशेषकर अकबर के अधीन मुगल प्रशासन की नींव** रखी तथा भारतीय शासन और अर्थव्यवस्था पर इसका स्थायी प्रभाव पड़ा।

2.4. मुगल स्थापत्यकला (हिंद-इस्लामिक स्थापत्यकला) (Mughal Architecture (Indo-Islamic Architecture))

मुगल स्थापत्यकला अपनी **सुंदरता और जटिल विवरणों** के लिए प्रसिद्ध है। इसमें **फारसी, भारतीय और इस्लामी शैलियों के तत्वों का संयोजन** किया गया है, जिससे एक अनूठी शैली का निर्माण हुआ। यह

स्थापत्य शैली **16वीं शताब्दी** में मुगल साम्राज्य के साथ शुरू हुई। इसने नई निर्माण तकनीकों और डिज़ाइनों को पेश किया, जिसमें **समरूपता और लालित्य** पर जोर दिया गया।

2.4.1. प्रमुख स्थापत्यकला विशेषताएं (Key Architectural Features)

विशेषताएं	संक्षिप्त विवरण
एकरूपता और संतुलन पर जोर	• मुगल स्थापत्य कला में अक्सर **ज्यामितीय संरचनाओं का उपयोग** का करते हुए पारस्परिक एकरूपता और संतुलन पर जोर दिया जाता था। • बगीचों, महलों और मकबरों की योजना में **अनुपात का ध्यान रखते हुए** सावधानीपूर्वक निर्माण किया जाता था। इससे सामंजस्य और मानकयुक्त संरचना का प्रदर्शन होता था। **ताजमहल** इस संपूर्ण सममितता का बेहतर उदाहरण है।
चारबाग शैली में निर्माण	• इस शैली में **वर्गाकार उद्यान को पैदल मार्गों या कृत्रिम नहरों द्वारा चार छोटे हिस्सों में बांटा** गया है, जो इस्लामी परंपरा में **स्वर्ग का प्रतीक** है। चार बराबर भागों में बंटे होने के कारण ये चार बाग कहलाते हैं। • यह शैली **मुगल उद्यानों की एक पहचान** है, जिसे हुमायूं के मकबरे और ताजमहल के आस-पास के उद्यानों में देखा जा सकता है। मुगल उद्यान और महल सुन्दर जल सुविधाओं से सुसज्जित हैं, जिनमें **फव्वारे, भवनों को प्रतिबिंबित करने वाले तालाब और नहरों का निर्माण शामिल** है। ये तत्व स्थानों की सुंदरता को बढ़ाते थे और एक **शीतलन प्रभाव** उत्पन्न करते थे। **उदाहरण के लिए:** शालीमार बाग।
संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर का उपयोग	• मुगल स्थापत्य कला में **सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग** संरचनाओं को **आकर्षक बनाते हैं और आकर्षक दृश्य** प्रभाव उत्पन्न करते हैं।
सजावटी पच्चीकारी का कार्य (पिएत्रा दयुरा)	• पिएत्रा दयुरा के तहत **संगमरमर में कीमती पत्थरों को जड़कर पुष्पों और ज्यामिति** के जटिल डिजाइन तैयार किए जाते हैं। ताजमहल नक्काशी के लिए किया गया पच्चीकारी का काम अपनी खूबसूरती और सटीकता के लिए मशहूर है। • **विस्तृत नक्काशी और कुरान की आयतों से युक्त जटिल नक्काशी एवं सुन्दर लेख** प्रमुख मुगल इमारतों की शोभा बढ़ाते हैं। इससे भवनों में आध्यात्मिक और सौंदर्यात्मक गहराई को बढ़ावा मिलता है।
मेहराब और गुंबद का प्रयोग	• मुगल स्थापत्य कला में **बड़े व बल्बनुमा गुंबद और मेहराब का निर्माण** प्रमुख है, जो भवनों की विशालता एवं भव्यता को बढ़ाने में सहायता करते थे। • **हुमायूं के मकबरे** से शुरू होने वाले **बल्बनुमा दोहरे गुंबद** का निर्माण मुगल स्थापत्य कला में बार-बार प्रयोग होने वाली विशेषता है।
छतरियां और झरोखों का निर्माण	• मुगल स्थापत्य कला में **छतरियां या गुम्बदनुमा मंडप और झरोखे, बाहर निकली हुई बालकनियां** आदि सजावट की खूबसूरती बढ़ाती हैं। **आगरा के किले और फतेहपुर सीकरी** जैसी संरचनाओं में निर्मित ये विशेषताएं **भारतीय स्थापत्य शैलियों के मुगल स्थापत्य में मिश्रण को दर्शाती हैं।**
भव्य प्रवेश द्वार और दरवाजों का निर्माण	• **स्मारकीय प्रवेशद्वार** शाही शक्ति का प्रतीक हैं, साथ ही ये भव्य प्रवेश द्वार के निर्माण को संभव बनाते थे। **फतेहपुर सीकरी का बुलंद दरवाज़ा** इसका एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसे विशाल आकार और अलंकरणों के साथ लोगों को प्रभावित करने व उनमें आश्चर्य पैदा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

2.4.2. मुगल काल के दौरान चरणबद्ध तरीके से स्थापत्य कला का विकास (Phase wise Architectural Developments)

शासक	उनके द्वारा बनवाई गई स्थापत्य संबंधी संरचनाएं	इमेज
बाबर	• बाबर को **फ़ारसी शैली के उद्यानों की शुरुआत** का श्रेय दिया जाता है, जिन्हें **चारबाग शैली** के नाम से जाना जाता है। • **आगरा का आराम बाग,** चारबाग शैली में मुगल उद्यानों के शुरुआती उदाहरणों में से एक है, जो **कृत्रिम नहरों** द्वारा बराबर भागों में विभाजित है।	
हुमायूँ	• **हालांकि, हुमायूँ के मकबरे का निर्माण उसके द्वारा नहीं** करवाया गया था, लेकिन इसकी स्थापत्य कला की विशिष्टता ने बाद के मकबरों की स्थापत्य कला के लिए एक आधार प्रदान किया था। • इसमें **दोहरे गुंबद, सफ़ेद संगमरमर की जड़ाई के साथ लाल बलुआ पत्थर और प्रमुख रूप से चारबाग शैली का पहली बार प्रयोग** किया गया था।	
अकबर	• सम्राट अकबर ने **फतेहपुर सीकरी को एक नियोजित शहर** के रूप में विकसित किया था। • फतेहपुर सीकरी में **बुलंद दरवाजा, जामा मस्जिद और पंच महल** जैसी प्रमुख संरचनाएं अकबर की सांस्कृतिक संश्लेषण से युक्त विचारधारा को दर्शाती हैं। इस विचारधारा में हिंदू तत्वों जैसे कि अनुप्रस्थ टोडा निर्माण (Trabeate) और छतरियों को इस्लामी मेहराबों एवं गुंबदों के साथ एकीकृत गया है। अकबर ने लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करके **आगरा के किले** का निर्माण भी शुरू किया था।	
जहांगीर	• जहांगीर ने **बगीचे से युक्त स्थापत्य कला** पर जोर दिया था। इसमें **कश्मीर में शालीमार बाग और निशात बाग** में सीढ़ीदार संरचना एवं जल सुविधाएं शामिल हैं। • **आगरा में इतिमाद-उद-दौला का मकबरा** उसके काल का एक प्रमुख स्मारक है। जिसमें **पिएत्रा ड्यूरा के तहत नक्काशी का कार्य और सफेद संगमरमर** का व्यापक उपयोग किया गया है।	

शाहजहां	• शाहजहां ने **आगरा में ताजमहल** का निर्माण करवाया था, जो कि **मुगल स्थापत्य कला के तहत बनी सर्वोत्कृष्ट संरचना** है तथा अपनी **परिपूर्ण सममितता, संगमरमर के उपयोग और पिएत्रा द्यूरा की जटिल पच्चीकारी** के लिए विख्यात है। • उसने **दिल्ली में लाल किले** का निर्माण करवाया था। इसमें लाल बलुआ पत्थर की विशाल दीवारें और संगमरमर के महल हैं। साथ ही, उसने दिल्ली में **जामा मस्जिद** का भी निर्माण करवाया था, जो भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है।	
औरंगजेब	• औरंगजेब के समय की स्थापत्य शैली में **सादगी और सरलता पर जोर** दिया गया था, जो उसके **रूढ़िवादी विश्वासों से प्रभावित** थी। उसने भव्य महलों की बजाय **धार्मिक संरचनाओं के निर्माण पर जोर** दिया था। • **दिल्ली में मोती मस्जिद, लाहौर में बादशाही मस्जिद और औरंगाबाद में बीबी का मकबरा** उसके काल के मुख्य स्मारक हैं।	

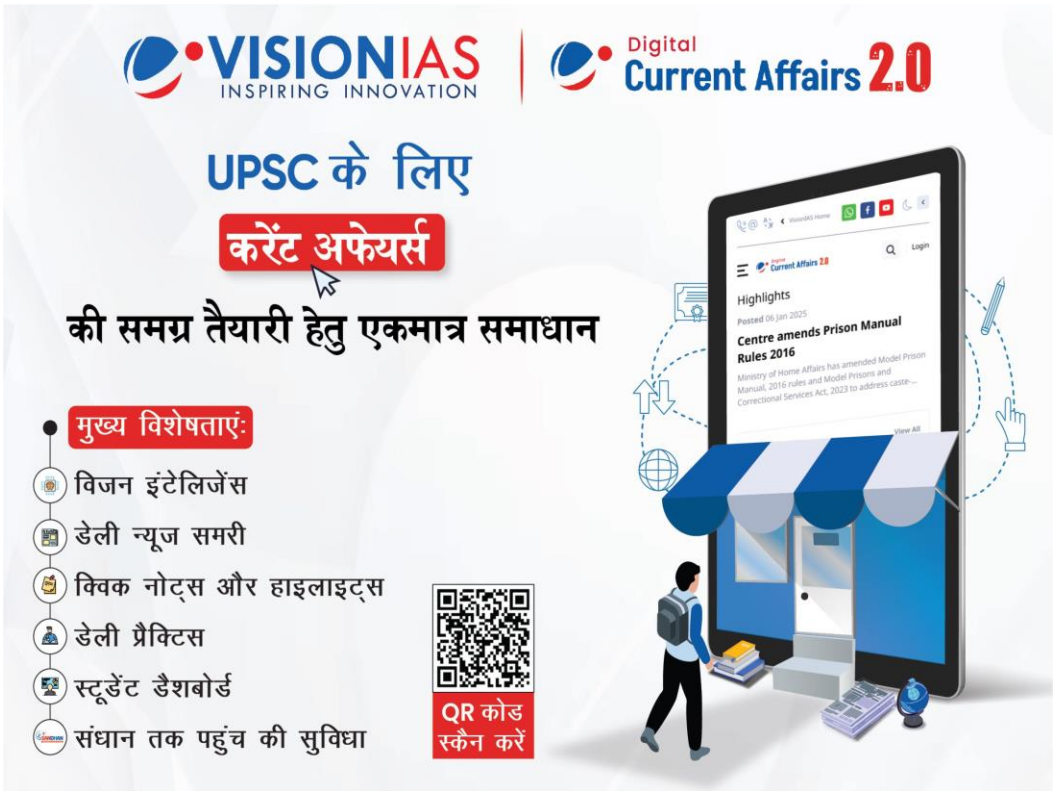

2.5. क्षेत्रीय स्थापत्यकला (Regional Architecture)

2.5.1. भारत में क्षेत्रीय स्थापत्यकला (Regional Architecture in India)

बंगाल

1352 से 1576 तक बंगाल की स्थापत्य कला में **तुर्की स्थापत्य कला और स्थानीय परम्पराओं का सम्मिश्रण** देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में **मिट्टी की प्रचुरता** के कारण ईंट और गारा भवन निर्माण की **प्राथमिक सामग्री** थे।

- बंगाल स्थापत्य कला की महत्वपूर्ण विशेषताएं चौड़ी व ढलान युक्त मेहराबें (जिन्हें **'ड्रॉप' मेहराब** कहा जाता है), और **वक्ररेखीय छतें** थीं। बंगाल की मस्जिदों में आमतौर पर एक **गुम्बद** होता था। **पांडुआ में अदीना मस्जिद** इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

गुजरात

सल्तनत काल के दौरान गुजरात की स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषता **इस्लामी स्थापत्य कला के तत्वों और स्वदेशी मारू-गुर्जर (सोलंकी) शैली का मिश्रण** थी। इसके परिणामस्वरूप, विविध स्मारकों में **भव्य नक्काशी, सजावटी स्तंभ और जालियों** का उपयोग किया गया था। ये **जालियां** निजता बनाए रखते हुए प्रकाश और हवा को अंदर आने देती थीं।

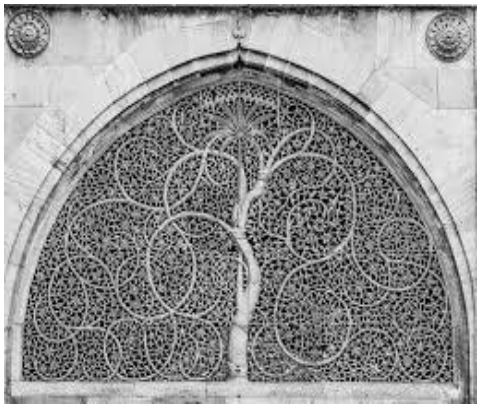

- **अहमदाबाद में बनी जामा मस्जिद और सिदी सैय्यद मस्जिद** इस स्थापत्य शैली के बेहतरीन उदाहरण हैं। भवनों के साथ बनी **बावड़ियां** उपयोगी होने के साथ-साथ विस्तृत वास्तुशिल्पीय सुंदरता को भी बढ़ावा देती हैं। **जैन मंदिर संगमरमर** से बने हैं। ये संरचनाएं कार्यात्मक सौंदर्य को प्रकट करती हैं।

मालवा

मालवा की स्थापत्य कला अपने **विशाल आकारों** के लिए विख्यात थी। इस कला में संरचनाओं को सामान्यतः असाधारण रूप से ऊंचे चबूतरे पर बनाया जाता था। उदाहरण के लिए, **होशंगशाह का मकबरा** अपनी भव्यता के लिए जाना जाता है।

- मालवा की स्थापत्य कला में **रंगीन और चमकदार टाइलों** का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया है। मालवा की इमारतें **मध्य एशिया की तैमूर स्थापत्य कला से प्रभावित** हैं। यह प्रभाव **जामा मस्जिद और जहाज महल** के स्मारकीय डिज़ाइनों में देखा जा सकता है। **बलुआ पत्थर** जैसी निर्माण सामग्री की प्रचुर उपलब्धता ने निर्माण तकनीकों और शैलियों को आकार दिया है। उदाहरण के लिए- अपने नवाचारी योजना निर्माण के साथ **हिंडोला महल।**

दक्कनी राज्य

दक्कन की स्थापत्य कलाएं अपनी **भव्य संरचनाओं और अभिनव इंजीनियरिंग** के लिए जानी जाती हैं, जो कि विशेष रूप से **गुंबद निर्माण** के लिए प्रसिद्ध हैं। उदाहरण के लिए- **बीजापुर का गोल गुम्बद।**

- **फारसी स्थापत्य शैली** ने दक्कन की स्थापत्य कला को अत्यधिक प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए- **बीदर का महमूद गवां का मदरसा।** दक्कन के राज्यों ने सैन्य स्थापत्य कला में उत्कृष्टता को बढ़ावा दिया, जैसे **गोलकोंडा किला और बीजापुर किला।** दक्कन सल्तनत काल की कई इमारतों में **विस्तृत अलंकरण और जटिल नक्काशी** देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए- **बीजापुर में इब्राहिम रौज़ा।**

यह क्षेत्रीय स्थापत्य कला स्थानीय परंपराओं, बाह्य प्रभावों और संसाधनों का उचित मिश्रण दर्शाती है, जो भारत की विविध स्थापत्य कला विरासत को आकार देती है।

2.6. चोल साम्राज्य (Imperial Cholas)

कावेरी डेल्टा में उभरे साम्राज्यवादी चोलों (लगभग 9वीं-13वीं शताब्दी ई.) ने **राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम** जैसे शासकों के अधीन एक एकीकृत एवं शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। इस साम्राज्य ने दक्षिण भारत के लिए **"स्वर्ण युग"** को चिह्नित किया। उनकी विरासत उनकी राजनीतिक शक्ति से भी आगे तक फैली हुई है। यह विरासत एक **अद्वितीय प्रशासनिक प्रणाली और अद्वितीय सांस्कृतिक योगदान** में गहराई से निहित है।

2.6.1. राजनीतिक और नौसैनिक वर्चस्व छात्र (Political and Naval Supremacy)

- चोल एक **दुर्जेय सैन्य और समुद्री शक्ति** थे।
- राजराज प्रथम ने **चेर, पांड्य और श्रीलंका के कुछ हिस्सों पर विजय** प्राप्त करके साम्राज्य को मजबूत किया था।
- राजेंद्र प्रथम ने **गंगा विजय के लिए उत्तरी अभियान और श्रीविजय के खिलाफ एक महत्वपूर्ण नौसैनिक अभियान** के माध्यम से चोल प्रभाव का और विस्तार किया था।
- विशिष्ट रूप से, चोलों ने एक **शक्तिशाली विशाल नौसेना** विकसित की थी। यह नौसेना **दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन को जोड़ने वाले आकर्षक हिंद महासागर व्यापार मार्गों पर विजय एवं नियंत्रण** दोनों के लिए एक सामरिक साधन थी।

चोल स्थानीय शासन: ग्राम स्वायत्तता की एक प्रणाली

चोल साम्राज्य में स्थानीय स्वशासन की एक सुव्यवस्थित प्रणाली थी, जो गांवों को महत्वपूर्ण स्वायत्तता प्रदान करती थी। इस प्रणाली का उदाहरण **उर और सभा** जैसी सभाओं के माध्यम से मिलता है:

- **उर:** यह **सामान्य गांवों** में आम सभा होती थी। यह **कर देने वाले भूस्वामियों** से बनी होती थी और बुनियादी प्रशासन संभालती थी।
- **सभा:** यह **ब्रह्मदेय गांवों** में एक अधिक संरचित सभा होती थी। इसमें **ब्राह्मण** शामिल होते थे, जिन्हें व्यापक शक्तियां प्राप्त होती थी। गांव के मामलों का प्रबंधन करने के लिए **समितियों की एक प्रणाली** होती थी।

उत्तरमेरुर अभिलेख सभा के कार्यों का विवरण देता है। इससे पता चलता है कि गाँव का शासन समितियों (या वरियम) और **कुदावोलाई** नामक एक **चुनाव पद्धति** के माध्यम से होता था। समिति के सदस्यों का चयन **लॉटरी प्रणाली** के माध्यम से किया जाता था।

पात्रता मानदंडों में **आयु, संपत्ति का स्वामित्व और वैदिक ग्रंथों का ज्ञान** शामिल था। अयोग्यता के लिए सख्त नियम थे। यह प्रणाली स्थानीय शासन के लिए चोलों के अभिनव दृष्टिकोण को दर्शाती है।

2.6.2. चोल विरासत: कला और संस्कृति का स्वर्ण युग (The Chola Legacy: A Golden Age of Art and Culture)

चोलों का सबसे स्थायी योगदान उनके द्वारा कला के व्यापक संरक्षण में निहित है, जो शाही धन और स्थिरता से प्रेरित था।

- **स्मारकीय मंदिर स्थापत्य कला:** चोल मंदिर मौजूदा **द्रविड़ शैली के चरमोत्कर्ष** का उदाहरण हैं। ये संरचनाएं केंद्रीय संस्थाएं थीं, जो केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि *भू-स्वामी, बैंक, नियोक्ता और शिक्षा एवं प्रदर्शन कला* के केंद्रों के रूप में भी काम करती थीं।
    - **राजराज प्रथम** द्वारा निर्मित **तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर** एक उत्कृष्ट संरचना है। इसमें विशाल खोखला विमान और जटिल मूर्तियां शाही शक्ति एवं धर्मनिष्ठता का प्रतीक हैं।
- **कांस्य मूर्तिकला का चरमोत्कर्ष:** चोल काल अपनी उत्कृष्ट कांस्य मूर्तियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जिन्हें परिष्कृत **लॉस्ट वैक्स तकनीक (सिर पर्ड्यू)** का उपयोग करके तैयार किया गया था।
    - मंदिर के जुलूसों के लिए डिज़ाइन की गई इन बारीक नक्काशियों वाली मूर्तियों में सबसे प्रतिष्ठित **नटराज शिव की मूर्ति** है। यह मूर्ती अपने **गतिशील प्रतीकवाद के माध्यम से ब्रह्मांडीय कार्यों को मूर्त रूप** देने वाली एक उत्कृष्ट कृति है।

चोल नटराज कांस्य मूर्तिकला

नटराज प्रतिमा विशेष रूप से **9वीं-11वीं शताब्दी ईस्वी** की चोल कला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है। यह एक ऐसी अवधि थी, जिसमें **चोलों ने शिव पूजा** के सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

- **निर्माण विधि:** इस मूर्ति को लॉस्ट वैक्स तकनीक का उपयोग करके तैयार किया गया था, जो धातु की मूर्तियों में जटिल विवरण के लिए एक पारंपरिक प्रक्रिया है।

लॉस्ट वैक्स तकनीक

- इस तकनीक में मूर्ति निर्माण से पहले **मोम का एक विस्तृत मॉडल** बनाया जाता है, फिर उस पर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती है। मोम को पिघलाने के लिए गर्म किया जाता है और मोम निकलने के बाद खाली सांचे को पिघली हुई धातु से भरा जाता है। चोल काल के दौरान **बारीक मूर्तियों को बनाने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल किया गया था।**
- **मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर्तकी की कांस्य मूर्ति** और अन्य प्राचीन कलाकृतियों में भी इसी तकनीक का उपयोग किया गया था। यह इस तकनीक के ऐतिहासिक महत्त्व और तकनीकी उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है।

- **प्रयुक्त सामग्री:** मूर्ति **पाँच** धातुओं यानी **तांबा, चांदी, सोना, टिन और सीसे** की मिश्रधातु से बनी है, जो दक्षिण भारतीय मूर्तियों की एक विशिष्ट विशेषता है। इस प्रकार बनी मूर्तियां उत्तर भारत में पाई जाने वाली खोखली धातु की मूर्तियों की तुलना में **ठोस** होती हैं।

कलात्मक विवरण और प्रतीकवाद

- **अग्नि का ब्रह्मांडीय चक्र:** शिव को अग्नि के ब्रह्मांडीय चक्र के भीतर नृत्य करते हुए दर्शाया गया है। यह **सृष्टि की उत्पत्ति और विनाश के निरंतर चक्र का प्रतीक** है। यह चक्र ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें **द्रव्यमान, दिक् और काल** शामिल हैं। यह प्रकृति के **सार्वभौमिक नियमों** का प्रतीक है।
- **शरीर की स्थिति और मुद्राएं:**
    - नटराज प्रतिमा में शिव को **ब्रह्मांडीय नर्तक** के रूप में दर्शाया गया है, जो **सृजन और विनाश** का प्रतीक है। शिव के ऊपरी दायें हाथ में डमरू है, जिसकी ध्वनि **सृष्टि के सृजन का प्रतीक है** और काल के बीतने का संकेत देता है। **ऊपरी बाएं हाथ में अग्नि** धारण की हुई है, जो **विनाश का प्रतीक** है।

- **निचला दायाँ हाथ अभय मुद्रा** में है, जो सत्य का पालन करने वाले लोगों को आशीर्वाद और सुरक्षा प्रदान करता है।
- **निचला बायां हाथ** उनके उठे हुए बाएं पैर की ओर फैला हुआ है, जो आध्यात्मिक अनुग्रह का प्रतीक है।
- नटराज शिव के **दाहिना पैर** के नीचे कुचला हुआ दानव **अपस्मार** है, जो **अज्ञानता** का प्रतीक है।
- **शिव के बाल** लहराते हुए दिखाए गए हैं, जो एक **योगी** की विशेषता है।
- शिव के **चेहरे के भाव को शांत** दिखाया गया है। यह **ब्रह्मांडीय उथल-पुथल के बीच दिव्य शांति** को दर्शाता है।

चोलकालीन कांस्य कला और उनका महत्त्व

- चोलकालीन **कांस्य कला** भारतीय कला का महत्वपूर्ण चरण है, जो परिष्कृत लॉस्ट वैक्स तकनीक और जटिल व सजीव मूर्तियों के लिए **पंचलौह मिश्र धातु** के उपयोग को दर्शाता है।
- ये **कांस्य मूर्तियां** प्रतिष्ठित **नटराज शिव** की तरह, **भक्ति आंदोलन** से प्रभावित **धार्मिक अनुष्ठानों और मंदिर पूजा** में गहराई से एकीकृत थीं।
- चोल शासकों ने इन कलाओं को **शक्ति और सांस्कृतिक मिश्रण** के प्रतीक के रूप में संरक्षण दिया, जिससे कुशल शिल्प कौशल को बढ़ावा मिला।
- चोल कांस्य कला के सौंदर्य और तकनीकी नवाचारों ने नए मानक स्थापित किए, जिसने बाद के भारतीय राजवंशों एवं दक्षिण-पूर्व एशिया को प्रभावित किया।
- वर्तमान में, ये कांस्य मूर्तियां विश्व स्तर पर पूजनीय हैं तथा इनके कालातीत धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व के लिए विख्यात हैं।

- **तमिल साहित्य का संरक्षण:** चोल दरबार ने तमिल साहित्य के उत्कर्ष को बढ़ावा दिया था। उन्होंने **धर्म-वैधानिक शैव (तिरुमुराई) और वैष्णव (नालयिर दिव्य प्रबंधम) ग्रंथों** के संकलन को संरक्षण दिया था तथा समृद्ध भक्ति कविता को संरक्षित किया था। इस युग में महान महाकाव्य भी रचे गए थे। इनमें सबसे उल्लेखनीय है **कंबन का रामावतारम।** यह रामायण का एक लोकप्रिय तमिल पुनर्कथन है, जो एक क्लासिक बन गया।

2.7. विजयनगर काल (Vijayanagara Period)

विजयनगर की स्थापत्य शैली एक विशेष प्रकार की द्रविड़ शैली है और इसका विकास विजयनगर साम्राज्य के तहत **1336 और 1672 ई. के बीच** हुआ। इस स्थापत्य परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण हमें विजयनगर शासकों के शासन काल में निर्मित भव्य मंदिरों में दिखाई पड़ते हैं, जो ऊंचे **गोपुरम** (प्रवेश द्वार), विशाल **मंडप** (स्तंभों वाले हॉल) और **सुंदर नक्काशी** से युक्त हैं। इस युग के स्थापत्य में **भव्य शहरी नियोजन** भी शामिल है, जिसमें शाही शोभायात्रा और सार्वजनिक समारोहों के आयोजन के लिए व्यवस्थाएं भी शामिल थीं। ये सभी संरचनाएं विजयनगर शासकों की सत्ता और स्वीकार्यता पर जोर देती थीं।

2.7.1. विजयनगर स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएं (Key Features of Vijayanagara Architecture)

विशेषताएं	विवरण
द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का चरमोत्कर्ष	• हम्पी के **विरुपाक्ष मंदिर और विट्ठल मंदिर विजयनगर** के सबसे बड़े हिंदू मंदिरों में शामिल हैं। इस काल के मंदिरों में **ऊंचे गोपुरम** (प्रवेश द्वार), **मंडप** (स्तंभों की सहायता से निर्मित बड़े हॉल) और सुंदर नक्काशी ये युक्त विशाल **मूर्तियों की स्थापना जैसी विशेषताएं** देखी जाती हैं। • यहां के गोपुरम अपनी ऊंचाई, देवताओं और पौराणिक दृश्यों की सुंदर और जटिल नक्काशी के लिए जाने जाते हैं।
शैलियों का मिश्रण	• कुछ इतिहासकारों ने दावा किया है कि विजयनगर स्थापत्य ने द्रविड़ स्थापत्य शैलियों को **फारसी विशेषताओं के साथ मिश्रित** किया, जिसमें **मेहराब, गुंबद और पत्थरों से उभरी हुई आकृतियों का निर्माण** जैसी विशेषताएं शामिल थीं। • यह मिश्रण **हम्पी के कमल महल** में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है, जो मेहराबदार प्रवेश द्वार और सजावटी प्लास्टर कला सहित अपने अद्वितीय डिजाइन के माध्यम से हिंद-इस्लामिक स्थापत्य को प्रदर्शित करता है।
नायकों का प्रभाव	• नायकों ने एक विशिष्ट स्थापत्य शैली विकसित की। इसमें **स्तंभों से निर्मित विशाल परिसर/ हॉल, कई मंजिलों वाले सुडौल गोपुरम तथा देवताओं और ऐतिहासिक व्यक्तियों को दर्शाती सुंदर नक्काशी पर जोर** दिया गया। • इस शैली के उदाहरण हैं: **श्रीरंगम में रंगनाथस्वामी मंदिर और मदुरै में मीनाक्षी मंदिर।** इनमें नायक शासकों ने हॉल और लम्बे स्तम्भों जैसी महत्वपूर्ण संरचनाएं शामिल की, जिससे मंदिरों की भव्यता व विशिष्टता और बढ़ गई।
भव्य शहरी नियोजन	• विजयनगर स्थापत्य कला में **विशाल शोभायात्रा हेतु सड़कें** बनाई गई। साथ ही, **शहरों में बड़े टैंक (जलाशय), बहु-स्तंभ युक्त सभागार और शाही समारोहों के लिए स्तम्भों पर टिके बड़े सभागार** बनाए गए थे। • विजयनगर की राजधानी **हम्पी शहर** में रथ ले जाने के लिए हम्पी बाजार मार्ग जैसी लंबी सड़कें भी बनाई गई थी।

कल्याण मंडपम	• कल्याण मंडपम **विजयनगर स्थापत्य की एक प्रमुख विशेषता** थी। ये मंडपम **मंदिर परिसरों के भीतर देवताओं के विवाह संबंधी अनुष्ठानों के लिए एक औपचारिक हॉल के रूप में** कार्य करते थे। • उत्कृष्ट नक्काशीदार स्तंभों और विस्तृत डिजाइन से युक्त ये मंडपम अधिक संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की व्यवस्था को ध्यान में रखकर बनाए जाते थे। हम्पी का **विट्ठल मंदिर** इस प्रकार की कलात्मक और स्थापत्य उत्कृष्टता का एक प्रमुख उदाहरण है।
एकाश्म मूर्तियां	• विजयनगर स्थापत्य कला विशाल एकाश्म (एक ही पत्थर से बनी) मूर्तियों के लिए जाना जाता है, जैसे कि **हम्पी में लक्ष्मी नरसिंह और बदाविलिंगा मंदिर की मूर्तियां।** इन मूर्तियों को **एक ही ग्रेनाइट पत्थर से तराश कर** मंदिर परिसरों में स्थापित किया गया है।
स्थापत्य में प्रयोग की गई सामग्रियां	• विजयनगर स्थापत्य में **मजबूती के लिए ग्रेनाइट और गहन नक्काशी के लिए सोपस्टोन (सेलखड़ी) का उपयोग** किया गया था। ये विशेषताएं स्थापत्य से जुड़े कलाकारों और कारीगरों के तकनीकी कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। • **हम्पी के विट्ठल मंदिर में ग्रेनाइट से बने पत्थर का रथ** इस तरह के शिल्प कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

2.7.2. विजयनगर साम्राज्य का साहित्य: यात्री वृत्तांत (Literature of Vijaynagara Empire: Traveller's Accounts)

यात्री	प्रस्थिति	विवरण
निकोलो डी कोंटी	यह एक **इतालवी व्यापारी** और यात्री था।	इसने विजयनगर शहर की किलेबंदी और **देव राय प्रथम** द्वारा गठित विशाल सेना का वर्णन किया है। इसके लेखन में बहुमूल्य पत्थरों और विलासितापूर्ण वस्तुओं से भरे बाजारों में भीड़-भाड़ एवं धन-संपदा आदि का उल्लेख मिलता है।
अब्दुर रज्जाक	यह **तिमुरीद शासक शाहरुख** के दरबार से आने वाला फारसी राजनयिक था।	इसने विजयनगर शहर की संकेन्द्रित दीवारों, महलों और मंदिरों का विशद वर्णन किया है। इसने **महानवमी उत्सव** में भी भाग लिया था। साथ ही, इस दौरान किए जाने वाले धन एवं शक्ति के प्रदर्शन तथा समारोहों का विवरण भी दिया है।
डोमिंगो पायस	यह **पुर्तगाली** यात्री था।	इसने **कृष्णदेव राय** के शासन काल के दौरान विजयनगर साम्राज्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। इसने अपने लेखन में शहर की अवसंरचना, बाजारों और **विरुपाक्ष मंदिर** आदि का उल्लेख किया है।

फर्नाओ नूनिज	यह **पुर्तगाल** का घोड़ों का व्यापारी था।	इसके लेखन में **विजयनगर साम्राज्य के इतिहास और शासन, इसकी स्थापना, राजवंशीय परिवर्तन तथा संघर्षों** का वर्णन मिलता है।

2.8. मध्यकालीन काल में चित्रकला और कला (Painting and Art During Medieval Period)

2.8.1. मुगल चित्रकला (Mughal Painting)

मुगल चित्रकला का विकास **16वीं और 18वीं शताब्दी** के बीच हुआ। चित्रकला की यह शैली **फारसी, भारतीय और यूरोपीय चित्रकला** की विशेषताओं का मिश्रण है।

- सामान्यतः **मिनिएचर (लघु चित्रकला)** रूप में प्रदर्शित यह कला शैली अपने **उत्कृष्ट विषयों और जीवंत रंगों** के लिए विख्यात है।
- बादशाह **हुमायूं ने फारसी चित्रकारों** को भारत लाकर और भविष्य में मुग़ल चित्रकला के विकास के लिए आधार तैयार करके मुगल चित्रकला की स्थापना की थी।
- इस कला शैली ने **भारतीय कला** पर एक अमिट छाप छोड़ी, जिसने **राजपूत और पहाड़ी** चित्रकला जैसी परवर्ती शैलियों को प्रभावित किया तथा **भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक विरासत को भी समृद्ध** किया।

मुगल चित्रकला की प्रमुख विशेषताएं

प्रमुख विशेषताएं	संक्षिप्त विवरण	इमेज
लघु (मिनिएचर) चित्रकारी	मुगल चित्रकला में मुख्य रूप से **लघु और विस्तृत कलाकृतियां बनाई गई,** जो अक्सर पांडुलिपियों के रूप में या एकल स्वतंत्र चित्रण के रूप में प्राप्त होते हैं। लघुचित्रों में **दरबार के दृश्य, युद्ध और सामाजिक जीवन** को दर्शाया गया है, जिनकी विशेषता **बहुत सारे रंगों का प्रयोग** करते हुए सावधानीपूर्वक चित्रण है।	
कथात्मक और ऐतिहासिक विषयों का चित्रण	इसमें **भारतीय महाकाव्यों,** ऐतिहासिक घटनाओं और दरबारी जीवन **के चित्र** शामिल हैं। **अकबरनामा और जहाँगीरनामा** जैसे उल्लेखनीय चित्रों में मुगल बादशाहों के शासनकाल और महत्वपूर्ण घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया गया है।	

छवि- चित्रण (Portraiture)	यह व्यक्तियों का **अधिक बारीक और यथार्थवादी चित्रण** है, जिसमें अक्सर बादशाहों, दरबारियों और मुगल दरबार के महत्वपूर्ण व्यक्तियों का चित्रण किया जाता था। इसमें **यथार्थवाद और सूक्ष्म विवरण पर जोर** दिया गया और बादशाहों एवं दरबारियों को प्रायः विशिष्ट विशेषताओं व सुंदर पोशाक के साथ चित्रित किया जाता था।	
रंगाई और अलंकरण	मुगल चित्रकारी प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करके बनाए गए **जीवंत रंगों** के लिए जानी जाती है। इसमें **सजावट के लिए अक्सर सोने और चांदी** का इस्तेमाल किया जाता था, जिससे चित्र की सुंदरता बढ़ जाती थी।	

मुग़ल चित्रकला की उत्पत्ति, विकास एवं संरक्षण

काल	प्रमुख घटनाक्रम	संक्षिप्त विवरण	प्रमुख चित्रकार और उनके चित्र
हुमायूं (1530–1556 ई.)	मुगल दरबार में **फारसी चित्रकारों** का आगमन हुआ और मुग़ल चित्रकला शैली की शुरुआत हुई।	**बारीक़ प्रस्तुति जैसी फारसी विशेषताओं ने** मुगल चित्रकला शैली को समृद्ध किया, जबकि **प्राकृतिक दुनिया और यथार्थवाद के चित्रण जैसे भारतीय प्रभावों ने एक ऐसे सम्मिश्रण** में योगदान दिया जिसने मुगल शैली को अद्वितीय बना दिया।	**फ़ारसी चित्रकारों; मीर सैय्यद अली और अब्द अल-समद** मुगल दरबार में मिश्रित शैली की शुरुआत करने वाले प्रमुख कलाकार थे।
अकबर (1556–1605 ई.)	**तस्वीर खाना (शाही चित्रशाला या विभाग)** का विस्तार	अकबर ने **शाही चित्रशाला का विस्तार** किया और भारतीय तत्वों को मुगल चित्रकला शैली में शामिल किया। इससे विभिन्न शैलियों का मिश्रण हुआ। इस काल में **कई सचित्र पांडुलिपियों तथा दरबारी जीवन, युद्ध और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाने वाले चित्र बनाए गए।**	इस समय की उल्लेखनीय चित्रकारियों में **हम्जानामा, तूतीनामा और अकबरनामा** शामिल हैं तथा इस समय के **प्रमुख चित्रकारों में बसावन, दसवंत और केशव दास शामिल** थे।
जहांगीर (1605–1627 ई.)	उसने **यथार्थवाद, छवि चित्रण और प्रकृति चित्रण पर जोर** दिया	जहाँगीर ने यथार्थवाद और **छवि चित्रण** पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें **छायांकन एवं परिप्रेक्ष्य तकनीक जैसी यूरोपीय तकनीकों को शामिल** किया	इस समय के चित्रकार **उस्ताद मंसूर वनस्पतियों और जानवरों** को चित्रित करने में माहिर थे।

		गया। जहांगीर को **वनस्पतियों और जीव-जंतुओं** में गहरी रुचि थी, इसलिए चित्रकारों ने इन विषयों को अधिक प्रमुखता दी।	जहांगीर के शासनकाल में **प्रतीकात्मक और छवि चित्रों का भी विकास** हुआ।
शाहजहां (1628–1658 ई.)	इस काल में चित्रकला में **विलासिता, रोमांस और स्थापत्य** पर ध्यान दिया गया।	शाहजहां के काल में विलासिता और रोमांस के चित्रण पर जोर दिया गया था, जिसमें **सोने से युक्त सजावट और बारीक़ विवरण वाली चित्रकारी** शामिल थी। शाहजहां के शासनकाल के दौरान, मुगल चित्रकारों ने **चित्रों में गहराई और यथार्थवाद के लिए परिप्रेक्ष्य (पर्सपेक्टिव) एवं छायांकन जैसी यूरोपीय तकनीकों को अपनाया।** इस दौरान चित्रकारों ने **प्रभामंडल** जैसे यूरोपीय तत्वों को भी शामिल किया।	इस समय के उत्कृष्ट चित्रों में **पादशाहनामा** शामिल है। इस समय के चित्रकारों में **चित्रामन, गोवर्धन, मंसूर** आदि शामिल थे।
औरंगजेब (1658–1707)	वह **धार्मिक रूढ़िवादी** शासक था और उसके शासनकाल में **कलाओं को संरक्षण मिलना कम** हो गया।	औरंगजेब के रूढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण **चित्रकला को शाही संरक्षण मिलना कम** हो गया। कई कलाकार क्षेत्रीय शासकों के दरबारों में चले गए, जहां उन्होंने **स्थानीय शैलियों के विकास** में योगदान दिया।	मुगल शाही संरक्षण के अभाव के कारण **राजपूत और पहाड़ी चित्रकला** जैसी क्षेत्रीय शैलियों के विकास को बढ़ावा मिला।

2.8.2. क्षेत्रीय कला शैली (Regional Schools of Art)

बसोहली शैली

औरंगजेब के शासनकाल के बाद क्षेत्रीय चित्रकला का उदय हुआ। **औरंगजेब की** रूढ़िवादी नीतियों और कलाओं को कम संरक्षण देने की वजह से **केंद्रीकृत मुगल चित्रशालाओं का पतन** हुआ। कई **चित्रकार जो प्रश्रय के लिए मुग़ल दरबार पर निर्भर थे, उन्होंने क्षेत्रीय शासकों के दरबारों में अवसर तलाशे**, जहाँ कलाकारों को विविध सांस्कृतिक प्रभावों का लाभ मिला तथा **फारसी, मुगल और स्वदेशी भारतीय तत्वों** का मिश्रण हुआ। **क्षेत्रीय शासकों ने स्थानीय रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाने वाली चित्रकला को बढ़ावा** दिया।

2.8.2.1. पहाड़ी चित्रकला शैली (Pahari Schools of Painting)

कांगड़ा शैली

- **बसोहली शैली:** यह अपने **जीवंत, चटकदार रंगों और अभिव्यक्ति पूर्ण चेहरों** के लिए प्रसिद्ध है। चित्रकला की इस शैली में ज्यामितीय पैटर्न और लयबद्धता का प्रयोग एक अनोखी विशेषता थी। साथ ही, इसमें **रामायण और महाभारत** जैसे महाकाव्यों के दृश्यों तथा **राधा-कृष्ण** की प्रेम कहानियों का भी सुंदर चित्रण किया जाता है। इसमें चमकीले रंगों और **भृंग या भौंरा (beetle) के पंखों को लगाने जैसी अनूठी तकनीकों का उपयोग करके झिलमिल प्रभाव पैदा किया जाता है।** उदाहरण: **रसमंजरी और गीत-गोविंद श्रृंखला** का चित्रण।
- **कांगड़ा शैली:** इसमें **ब्रश से प्रकृति** को बहुत ही सूक्ष्मता और धैर्य से चित्रित किया जाता है। यह गीत-**गोविंद जैसे ग्रंथों में दिए गए प्रेम और भक्ति के विषयों पर केंद्रित** है। यह **सौम्य परिदृश्य और भावनात्मक चित्रण** के लिए मशहूर है। कांगड़ा **चित्रकला** अपनी **काव्यात्मक सुंदरता** के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें कोमल चेहरे की विशेषताओं और सुंदर मुद्राओं के साथ महिला आकृतियों को दर्शाया गया है।

2.8.2.2. राजपूत चित्रकला शैली (Rajput Schools of Painting)

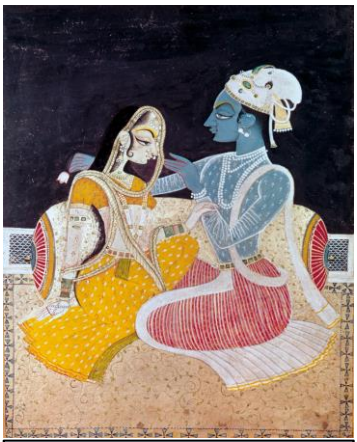

किशनगढ़ शैली

- **मेवाड़ शैली:** इस शैली में **मोटी रेखाओं, चमकीले रंग तथा कथात्मक स्पष्टता** के साथ **अभिव्यक्तिपूर्ण कहानी और सांस्कृतिक विषयों** के चित्रण पर जोर दिया गया है।
  - इसमें धार्मिक विषयों, विशेषकर **कृष्ण के जीवन** की कहानियों, स्थानीय त्योहारों और पारंपरिक राजस्थानी संस्कृति को दर्शाया गया है।
  - उदाहरण: **रागमाला** चित्रकला शैली और **अमरू शतक** चित्रकला।
- **मारवाड़ शैली:** यह अपनी **ऊर्जावान रचनाओं और विविध रंगों के समृद्ध उपयोग** के लिए प्रसिद्ध है तथा इसमें गत्यात्मक गतिविधि और जीवंत कहानी चित्रण पर जोर दिया जाता है।
  - इसमें सामान्य रूप से **दरबार के दृश्य, शिकार अभियान और स्थानीय कहानियों को चित्रित** किया गया है।

- उदाहरण: **मारवाड़ रामायण और महाराजा मान सिंह के शिकार** के दृश्य।

- **किशनगढ़ शैली:** यह अपनी **गीतात्मक और रोमांटिक शैली** के लिए प्रसिद्ध है। इसमें रमणीय भूदृश्यों में **राधा और कृष्ण के दिव्य प्रेम के चित्रण** पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
  - यह शैली **विस्तृत चित्रण और स्वप्निल भावों की अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध** है।
  - इस शैली के प्रमुख चित्रकार **निहालचंद** थे। इस शैली के चित्रों में **बनी-ठनी** और **राधा-कृष्ण के विविध चित्र** शामिल हैं।

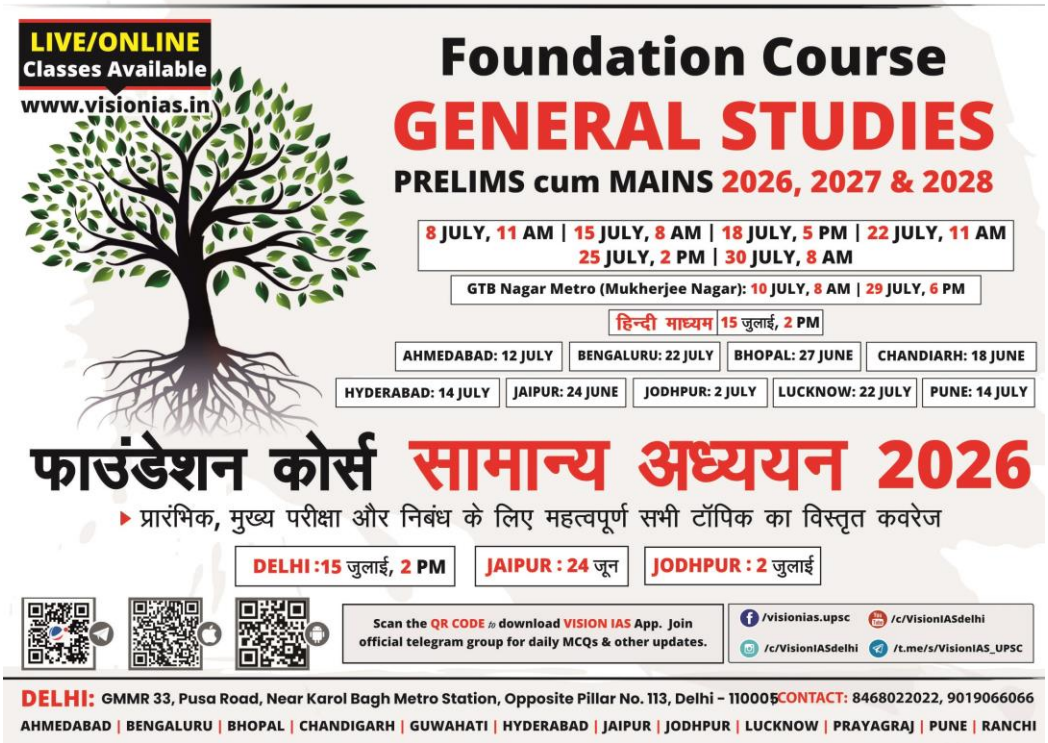

3. आधुनिक भारतीय इतिहास (Modern Indian History)

3.1. 18वीं शताब्दी और ब्रिटिश सत्ता का उदय (The 18th Century and the Rise of British Power)

3.1.1. 18वीं शताब्दी की खंडित भारतीय राजनीति और ईस्ट इंडिया कंपनी का उदय (Fragmented Indian Polity of 18th Century & Rise of EIC)

18वीं शताब्दी में भारत में कई महत्वपूर्ण **राजनीतिक बदलाव** देखने को मिलते है। जहां एक तरफ **मुगल साम्राज्य** का पतन हो रहा था, वहीं दूसरी तरफ कई **क्षेत्रीय शक्तियां** उभर रही थी। हालांकि, अभी भी केंद्रीय सत्ता पूरी तरह **से समाप्त नहीं हुई थी**, परन्तु इस कमजोर राजनीतिक परिदृश्य ने भारत में **ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार** का मार्ग प्रशस्त किया।

क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

इस दौर में जब मुगल शक्ति कमजोर हो रही थी, **क्षेत्रीय शासकों** ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया। इन नए राज्यों की अपनी अलग पहचान थी, जो दिखाती है कि अब सत्ता किसी एक जगह से नहीं बल्कि कई जगहों से चल रही थी। इस अवधि में भारत की क्षेत्रीय राजनीति में काफी विविधता आ गई थी।

यह बड़ी अजीब बात है कि इस **राजनीतिक विखंडन ने विविधतापूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन को समृद्ध** बनाने का काम किया। इसका मतलब है कि 18वीं सदी सिर्फ ठहराव का दौर नहीं थी। हालांकि, **इस विखंडन ने मुख्य रूप से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को भारत में अपने प्रभुत्व का विस्तार करने का अवसर प्रदान किया।**

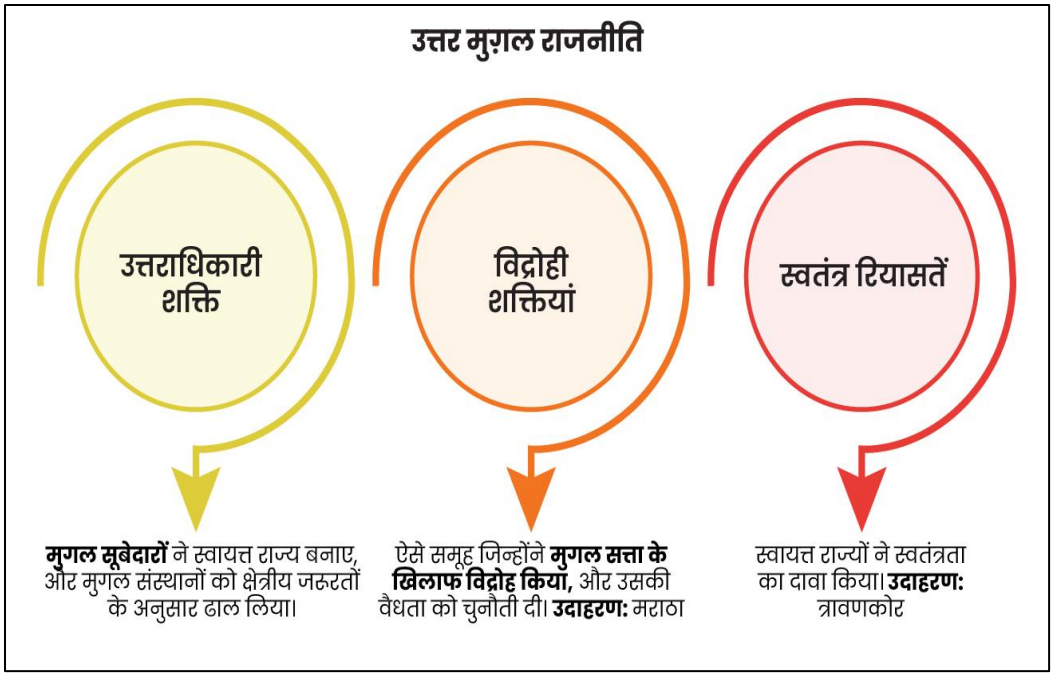

3.1.2. ईस्ट इंडिया कंपनी के उत्थान के प्रमुख कारक (Key Factors in Ascendancy of EIC)

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) भारत में एक प्रमुख यूरोपीय शक्ति के रूप में इसलिए उभरी पाई क्योंकि उसे अपने प्रतिद्वंद्वियों खासकर पुर्तगालियों, डच और फ्रांसीसियों की तुलना में कई रणनीतिक लाभ प्राप्त थे।

- **श्रेष्ठ व्यापारिक संगठन:** ईस्ट इंडिया कंपनी एक **निजी कंपनी** थी, जिसे एक **स्वतंत्र बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स** (निदेशक मंडल) द्वारा कुशलतापूर्वक संचालित किया जाता था। इससे **तेज़ निर्णय लेने**, और **प्रभावी वित्तीय प्रबंधन** में मदद मिली।
    - इसके विपरीत, **फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी** एक **राज्य-नियंत्रित कंपनी** थी, जो अत्यधिक **ब्यूरोक्रेटिक (नौकरशाही)** थी, और बदलती परिस्थितियों के अनुसार **तेज़ी से निर्णय नहीं ले पाती थी।**

मराठा सर्वोच्च शक्ति क्यों नहीं बन सके

मराठा, अपनी क्षमता के बावजूद, कई अन्तर्निहित कमजोरियों के कारण **अखिल भारतीय साम्राज्य** स्थापित करने में विफल रहे:

- **संघीय संरचना:** मराठा साम्राज्य एक **संघ** के रूप में संचालित होता था। इसमें सत्ता **भोंसले, गायकवाड़, होल्कर** और **सिंधिया** जैसे प्रमुखों के बीच विभाजित थी। इस शक्ति विभाजन की वजह से गुटबाजी होती थी और **पेशवा** के अधीन केंद्रीकृत सैन्य नियंत्रण बाधित होता था।
- **प्रशासनिक सीमाएं:** मराठा साम्राज्य की विजयों ने प्रभावी **नागरिक प्रशासन** पर **लूटपाट** और **कराधान** (चौथ और सरदेशमुखी) को प्राथमिकता दी, जिससे क्षेत्रों पर **दीर्घकालिक नियंत्रण** बाधित हुआ।
- **निर्णायक सैन्य झटके: अहमद शाह अब्दाली** के खिलाफ **पानीपत का तीसरा युद्ध** (1761) मराठों के लिए घातक साबित हुआ। इसने मराठों की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं और प्रतिष्ठा को गंभीर नुकसान पहुंचाया। **आंतरिक प्रतिद्वंद्विता** ने उन्हें और कमजोर बना दिया। यहीं वजह है कि आगे वे **ब्रिटिश** का मुकाबला नहीं कर पाए।

- **नौ सैनिक बढ़त:** ब्रिटेन की शक्तिशाली **रॉयल नेवी** ने EIC को **नौसैनिक श्रेष्ठता** प्रदान की, जिससे वे ये करने में सक्षम हुए:
- **ब्रिटेन की शक्तिशाली रॉयल नेवी** ने ईस्ट इंडिया कंपनी को समुद्री क्षेत्र में वर्चस्व प्रदान किया, जिससे कंपनी को कई लाभ मिले जैसे-:
    - **समुद्री मार्गों** को नियंत्रित करना और आपूर्ति तथा व्यापार के प्रवाह को सुनिश्चित करना।
    - विशेष रूप से **कर्नाटक युद्धों** के दौरान होने वाले संघर्षों में फ्रांसीसी और यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों को रोकना।
- **ब्रिटेन में स्थिर सरकार और उसका समर्थन:** 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड की **राजनीतिक स्थिरता** और **सरकार द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को लगातार समर्थन** मिलने से कंपनी को एक मजबूत आधार मिला।
    - इसके विपरीत, **फ्रांस की सरकार का समर्थन** अपनी कंपनी के लिए **अस्थिर और कमजोर** था, क्योंकि उसका ध्यान ज्यादातर यूरोप की राजनीति पर केंद्रित था।
- **मजबूत आर्थिक आधार और औद्योगिक क्रांति: औद्योगिक क्रांति** की मदद से मजबूत ब्रिटिश अर्थव्यवस्था ने EIC को वित्तीय समर्थन प्रदान किया।
    - कंपनी के पास अधिक **पूंजी** थी और वह कम कीमतों पर **उच्च गुणवत्ता वाली वस्तुओं** का उत्पादन कर सकती थी। इस वजह से वह अपनी सैन्य अभियानों के लिए बेहतर ढंग से पैसा लगा पाई और अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में **ज़्यादा व्यापार** कर सकी।
- **भारत में श्रेष्ठ सैन्य रणनीति और नेतृत्व:** ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के पास **रॉबर्ट क्लाइव** और **स्ट्रिंगर लॉरेंस** जैसे **कुशल सैन्य नेता** थे। इन्होने बेहतर **कूटनीति का इस्तेमाल किया** और **भारतीय शासकों के आपसी संघर्ष का लाभ उठाया।**

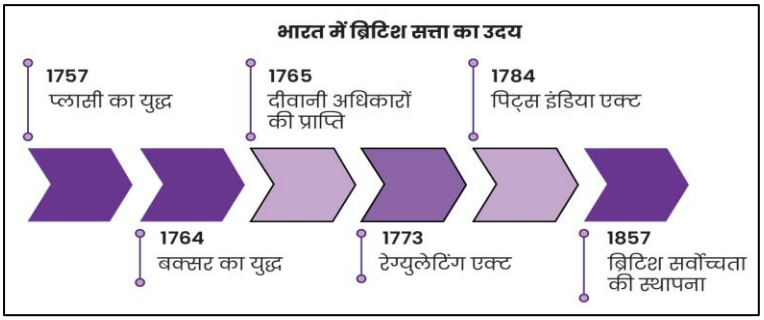

    - **प्लासी के युद्ध (1757)** के बाद, ECI ने **बंगाल** पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया। बंगाल विजय ने कंपनी के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण **वित्तीय आधार प्रदान** किया। इसके विपरीत **डच** केवल **मसाला द्वीपों** पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, और **फ्रांसीसी** को अपनी सरकार से **अस्थिर और कमजोर समर्थन** मिल रहा था।

3.1.3. ब्रिटिश नीतियां और भारत में शक्ति का समेकन (British Policies and the Consolidation of Power in India)

अंग्रेजों ने भारत पर अपना नियंत्रण केवल सीधे युद्ध के माध्यम से ही नहीं, बल्कि एक योजनाबद्ध तरीके से आक्रामक और चालाक राजनीतिक व प्रशासनिक नीतियों के ज़रिए स्थापित किया था। ये नीतियां भारतीय रियासतों को अधीन लाने, उनके संसाधनों पर अधिकार करने, और उन्हें सीधे या परोक्ष रूप से ब्रिटिश प्रभुत्व के अधीन लाने के लिए बनाई गई थी।

3.1.3.1. सहायक संधि प्रणाली (The Subsidiary Alliance System)

यह एक बेहद प्रभावशाली राजनीतिक नीति थी, जिसे **लॉर्ड वेलेजली** ने शुरू किया था।

- **सहायक संधि नीति:** अगर कोई भारतीय शासक ब्रिटिशों के साथ सहायक संधि करता था, तो उसे **ब्रिटिश सेना को अपने राज्य में स्थायी रूप से तैनात करने की अनुमति** देनी होती थी, और उस **सेना के खर्च का भुगतान भी खुद करना पड़ता था। साथ ही, उसे अपने राज्य से अन्य सभी यूरोपीय लोगों को बाहर निकालना** पड़ता था, और अपनी विदेश नीति का पूरा नियंत्रण ब्रिटिश को सौंपना पड़ता था।

- **प्रभाव:** वास्तव में, इस नीति ने भारतीय रियासतों को उसकी संप्रभुता से वंचित कर दिया। **शासक** अपनी रक्षा के लिए **ब्रिटिश पर निर्भर** हो गए, और **सैनिकों के रखरखाव** की भारी लागत ने राज्यों को दिवालिया बना दिया। इससे ब्रिटिश को उसके क्षेत्र के कुछ हिस्सों पर कब्जा करने का बहाना मिल जाता था।

3.1.3.2. व्यपगत का सिद्धांत (The Doctrine of Lapse)

लॉर्ड डलहौजी द्वारा पेश इस नीति का मुख्य उद्देश्य कुछ ख़ास राज्यों का **विलय नीति** थी, जो सबसे प्रसिद्ध रूप से **लॉर्ड डलहौजी** से जुड़ी थी।

- **नीति:** इस सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी आश्रित रियासत के शासक की मृत्यु बिना किसी **प्राकृतिक उत्तराधिकारी** के हो जाती है, तो उनकी रियासत का "व्यपगत" हो जाएगा और अंग्रेजों द्वारा हड़प लिया जाएगा। इसके तहत, शासक द्वारा उत्तराधिकारी को गोद लेने के पारंपरिक भारतीय अधिकार को नजरअंदाज कर दिया गया था।
- **प्रभाव:** इस नीति को व्यापक रूप से अवैध माना गया और इसका उपयोग **सतारा, नागपुर** और **झांसी** सहित कई रियासतों को हड़पने के लिए किया गया। इसने भारतीय शासक वर्ग के बीच भारी नाराजगी पैदा की और **1857 के विद्रोह** का एक प्रमुख कारण था।

भारत में ब्रिटिश अधीनता के चरण

चरण 1: वाणिज्यीकरण और समान स्थिति (लगभग 1600-1757)

- **लक्ष्य:** व्यापारिक रियायतों को सुरक्षा प्रदान करना और **पुर्तगाली, डच** और **फ्रांसीसी** जैसे प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ एक वाणिज्यिक एकाधिकार स्थापित करना।
- **विधि: इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी** एक **व्यापारिक निगम** के रूप में संचालित हुई, जिसने **सूरत, मद्रास** और **कलकत्ता** जैसे शहरों में किलेबंद व्यापारिक चौकियां स्थापित कीं, और भारतीय शासकों से **फरमान** मांगे।

चरण 2: रिंग-फेंस की नीति और अप्रत्यक्ष शासन (लगभग 1757-1813)

- **लक्ष्य: बंगाल** पर नियंत्रण मजबूत करना और **बफर राज्य** बनाना।
- **विधि: लॉर्ड वेलेजली** द्वारा विकसित **सहायक संधि प्रणाली** ने भारतीय शासकों को ब्रिटिश सैनिकों को स्वीकार करने, सब्सिडी का भुगतान करने, अन्य यूरोपीय लोगों को निष्कासित करने और विदेश नीति को ब्रिटिशों को सौंपने के लिए मजबूर किया।

चरण 3: अधीनस्थ अलगाव और प्रत्यक्ष विलय (लगभग 1813-1857)

- **लक्ष्य:** भारत पर प्रत्यक्ष **ब्रिटिश राजनीतिक सर्वोच्चता** स्थापित करना।
- **विधि: विजय के युद्धों** (जैसे **मराठा, पंजाब**) के माध्यम से आक्रामक विस्तार, **व्यपगत के सिद्धांत** (जैसे- **सतारा, नागपुर, झांसी**) के माध्यम से विलय, और सभी भारतीय राज्यों पर **सर्वोच्चता का दावा।**

यह चरण **1857 के विद्रोह** के साथ समाप्त हुआ, जिसके बाद **प्रत्यक्ष ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासन** स्थापित किया गया।

3.1.3.3. कुशासन का आरोप लगाकर विलय (Annexation on the Pretext of Misgovernance)

यह अधिग्रहण को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक और प्रमुख रणनीति थी।

- **नीति:** इस नीति के तहत, अंग्रेज एकतरफा यह घोषणा कर देते थे कि किसी देशी रियासत में शासन ठीक से नहीं चल (कुप्रबंधन का आरोप लगाकर) रहा है या **वहाँ का शासक अयोग्य और भ्रष्ट है। इसके बाद वे यह कहकर उस रियासत पर कब्जा** कर लेते थे कि वे वहाँ के लोगों को अच्छा शासन (सुशासन) देना चाहते हैं।
- **प्रभाव:** इस नीति से भारतीय शासकों की सत्ता और उनके अधिकार कमजोर हो गए। इसका **सबसे प्रसिद्ध उदाहरण 1856 में अवध रियासत का ब्रिटिश साम्राज्य** में विलय था। इससे लोगों में भारी

नाराज़गी फैली और वहाँ के सिपाही खुद को अलग-थलग महसूस करने लगे, जो सीधे तौर पर 1857 के विद्रोह का एक बड़ा कारण बना।

3.1.3.4. आर्थिक और भू-राजस्व नीतियां (Economic and Land Revenue Policies)

ब्रिटिश आर्थिक नीतियों को अधिकतम **राजस्व प्राप्त करने** और भारत को ब्रिटिश वस्तुओं के लिए एक औपनिवेशिक बाजार बनाने के लिए बनाया किया गया था।

- **नीति:** ब्रिटिशों ने **स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी जैसी भू-राजस्व प्रणालियां लागू** कीं। भले ही इन सभी की प्रक्रिया अलग-अलग थी, लेकिन इनका मुख्य उद्देश्य कंपनी के लिए ज्यादा से ज्यादा जमीन कर (भू-राजस्व) वसूलना था। इसका असर भारतीय किसानों पर बहुत बुरा पड़ा।
- **प्रभाव:** इन नीतियों के कारण किसान बहुत गरीब हो गए, **पारंपरिक भूमि संबंध टूट गए, और जब इन नीतियों को भारतीय उद्योगों को नुकसान पहुंचाने** वाली नीतियों के साथ जोड़ा गया, तो पूरी भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटिश हितों के अधीन हो गई।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- उन प्रमुख सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक कारकों का विश्लेषण कीजिए जिन्होंने अन्य यूरोपीय शक्तियों की तुलना में अपेक्षाकृत देर से प्रवेश करने के बावजूद, भारत पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सफलता में योगदान दिया। (15 अंक, 250 शब्द)
- 18वीं शताब्दी की शुरुआत में व्यापार पर केंद्रित एक विशुद्ध वाणिज्यिक इकाई से लेकर 19वीं शताब्दी के मध्य तक भारत में सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति में इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के परिवर्तन का पता लगाइए। इस संक्रमण को चिह्नित करने वाली प्रमुख घटनाओं और नीतिगत बदलावों पर प्रकाश डालिए। (15 अंक, 250 शब्द)

3.1.4. ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव और राष्ट्रवादी आलोचना (Economic Impact of British Rule and the Nationalist Critique)

ब्रिटिशों की आर्थिक और राजस्व नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया और उसे ब्रिटेन की औद्योगिक जरूरतों को पूरा करने वाला एक उपनिवेश बना दिया। इन नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारत को **सस्ते कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता** और **ब्रिटिश सामानों के लिए एक मजबूर बाजार** बनाना था। इसके कारण **भारतीय किसान गरीब होते गए** और **स्थानीय उद्योग धीरे-धीरे खत्म हो गए।**

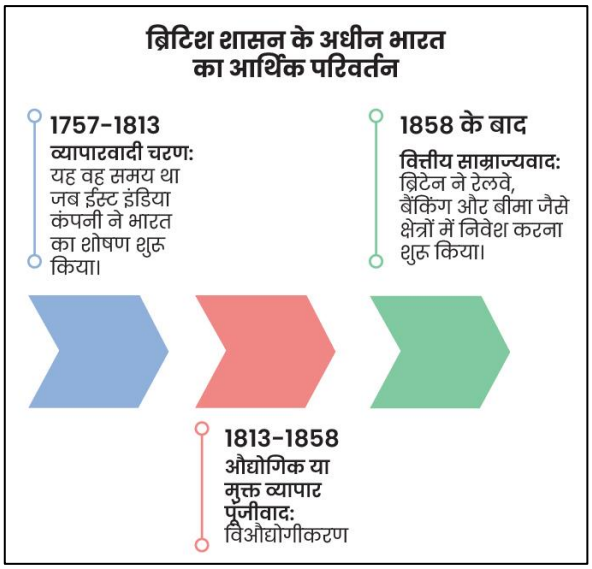

प्रमुख राजस्व नीतियां और उनका प्रभाव:

- **स्थायी बंदोबस्त (1793):** बंगाल, बिहार और उड़ीसा में शुरू की गई इस प्रणाली के तहत **भू-राजस्व को स्थायी रूप से एक उच्च स्तर पर** तय कर दिया गया। इसने **जमींदारों को स्वामी के रूप में स्थापित** किया, जिससे उन्हें भूमि बेचने या गिरवी रखने की अनुमति मिल गई। हालांकि, राजस्व का भुगतान न करने पर उन्हें ज़ब्ती का सामना करना पड़ता था। इससे अक्सर किसानों का शोषण होता था और यह नीति कृषि में सुधार करने में विफल रही।
- **रैयतवाड़ी बंदोबस्त (19वीं सदी की शुरुआत):** मद्रास और बंबई में लागू की गई इस प्रणाली में सीधे किसानों (रैयतों) से राजस्व एकत्र किया जाता था। इसमें **राजस्व का बोझ कम करने के दावों**

के बावजूद, राजस्व दरें असाधारण रूप से उच्च और मनमानी बनी रहीं, जिससे किसानों की निर्धनता और कर्ज में वृद्धि हुई।

- **महालवाड़ी बंदोबस्त (19वीं सदी की शुरुआत):** उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भारत में, ग्राम **समुदायों (महाल)** या ताल्लुकदारों के साथ बंदोबस्त किए गए थे। राजस्व का प्रारंभिक आकलन **असामान्य रूप से उच्च** रहता था, जिससे किसान बड़े पैमाने पर साहूकारों से कर्ज लेने और उन्हें भूमि की बिक्री करने के लिए विवश हुए। इसने 1857 के विद्रोह में योगदान दिया।

दूरगामी आर्थिक और सामाजिक प्रभाव:

- **किसानों का निर्धनीकरण और कर्ज:** सभी राजस्व प्रणालियों ने **राजस्व को अधिकतम** करने को प्राथमिकता दी। इससे ब्रिटिश को अत्यधिक कराधान प्राप्त हुआ किंतु किसानों को मजबूरन या यातना के कारण स्थायी कर्ज में धकेल दिया गया।
- **विऔद्योगीकरण:** ब्रिटिश नीतियों ने ब्रिटेन में निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए भारतीय हस्तशिल्पों को सक्रिय रूप से हतोत्साहित किया। इससे स्वदेशी उद्योगों का विनाश हुआ और भूमि पर दबाव बढ़ गया।
- **धन की निकासी:** राजस्व, व्यापार लाभ और "गृह शुल्क" के माध्यम से लगातार बड़े पैमाने पर धन ब्रिटेन में स्थानांतरित किया गया। इससे भारत में पूंजी निर्माण बाधित हुआ और यह **"भारत की गरीबी का एक मूल कारण"** बन गया।
- **अल्प विकास:** औपनिवेशिक शासन नें कृषि, सिंचाई, शिक्षा या स्वास्थ्य सेवा में सीमित **सार्वजनिक निवेश** किया। लाभप्रदता और सैन्य-राजकोषीय आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी गई। रेलवे मुख्य रूप से शाही आर्थिक हितों की सेवा करता था, न कि भारतीय औद्योगिक विकास की।

राष्ट्रवादी आलोचना और "धन निकासी" का सिद्धांत

- **दादाभाई नौरोजी, एम.जी. रानाडे** और **आर.सी. दत्त** उन शुरुआती राष्ट्रवादी नेताओं में से थे जिन्होंने औपनिवेशिक शासन के **आर्थिक प्रभाव** का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण किया।
- **नौरोजी** द्वारा प्रतिपादित **"धन निकासी" के सिद्धांत** ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत की **राष्ट्रीय संपदा** का एक बड़ा हिस्सा **इंग्लैंड** में कैसे स्थानांतरित किया गया। मुख्य रूप से **वेतन, पेंशन, सैन्य व्यय** और **ब्रिटिश पूंजीपतियों** के लिए लाभ के माध्यम से।
- राष्ट्रवादियों ने तर्क दिया है,कि यह **आर्थिक निकासी** भारत की गरीबी का प्राथमिक कारण था और उन्होंने **अधिक भू-राजस्व की मांगों की ओर इशारा** किया, जिससे **अकाल** पड़ा और लाखों लोगों की मौत हुई।
- इस आलोचना ने ब्रिटिश शासन के **शोषणकारी स्वरूप** को उजागर किया और **उपनिवेशवाद** की वास्तविक लागतों के बारे में जनता को शिक्षित करने के लिए एक शक्तिशाली साधन बन गया, जिसने **स्वतंत्रता** आंदोलन के **जन-आधारित चरण** की नींव रखी।

आधुनिक भारत में इसके अन्य प्रभाव:

- **गरीबी और अल्प विकास: "धन निकासी का सिद्धांत"** और औपनिवेशिक शासन की आलोचना स्वतंत्रता के बाद आत्मनिर्भर आर्थिक विकास और औद्योगीकरण के लिए आधारभूत बन गई। हालांकि, व्यापक गरीबी और क्षेत्रीय असंतुलन बने हुए हैं।
- **कृषि संरचना और कर्ज:** औपनिवेशिक भूमि सुधारों ने भूमि असमानता और ग्रामीण कर्ज के गहरे मुद्दों को जन्म दिया, जो स्वतंत्रता के बाद के **भूमि सुधारों के बावजूद कृषि क्षेत्र** को प्रभावित करते रहते हैं।
- **अर्थव्यवस्था में राज्य की भूमिका:** "भेदभावपूर्ण हस्तक्षेप" के अनुभव ने स्वतंत्र भारत को आर्थिक योजना में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया, जिसमें स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए संरक्षणवादी नीतियां और सार्वजनिक क्षेत्र का निवेश शामिल था।

यह शोषण एक **राष्ट्रवादी आर्थिक आलोचना** का कारण बना, जो **स्वतंत्रता संग्राम** में एक केंद्रीय विषय बन गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- "धन की निकासी" की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। यह सिद्धांत उपनिवेशवाद की आर्थिक आलोचना का एक मूलभूत तत्व कैसे बना? (250 शब्द)
- इस तर्क का गहन परीक्षण कीजिए कि ब्रिटिश भू राजस्व प्रणालियों ने भारत में पारंपरिक कृषि संबंधों और भूमि स्वामित्व पैटर्न को मौलिक रूप से बदल दिया, जिससे स्वतंत्रता के बाद के भूमि सुधारों के लिए एक जटिल विरासत छोड़ दी गई। (250 शब्द)
- ब्रिटिश भू राजस्व बंदोबस्त की प्रकृति ने भारत में कृषि के व्यवसायीकरण को कैसे प्रभावित किया? पारंपरिक फसल पैटर्न और किसानों की अकाल के प्रति भेद्यता पर प्रभाव पर चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

3.2. भारतीय प्रतिक्रिया - विद्रोह और सुधार (The Indian Response - Uprisings and Reforms)

3.2.1. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (Socio-Religious Reform Movements)

19वीं सदी भारत में गहन बौद्धिक और सामाजिक परिवर्तन का काल था, जो प्रभावशाली **सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों** के उदय से चिह्नित होता है। इन आंदोलनों का उद्देश्य उन पुराने रीति-रिवाजों और धार्मिक प्रथाओं को चुनौती देकर भारतीय समाज को बदलना था, जिन्हें वे पिछड़ा हुआ और पतनोन्मुख मानते थे।

उत्पत्ति: सुधार की शुरुआत

सुधार की प्रेरणा औपनिवेशिक शासन के तहत कई कारकों के एक साथ आने से मिली:

- **पश्चिमी विचारों का प्रभाव: पश्चिमी शिक्षा** और औपनिवेशिक संस्थाओं के माध्यम से **तर्कवाद, मानवतावाद** और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे विचारों की शुरुआत ने एक नए, शिक्षित भारतीय वर्ग को अपने समाज का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया।
- **एक नया मध्यम वर्ग:** एक आधुनिक, शहरी और शिक्षित **भारतीय मध्यम वर्ग** उभरा। यह वर्ग अपने समाज की सामाजिक कमजोरियों के प्रति अत्यधिक जागरूक था और आधुनिक समाज की चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्हें सुधारने की तत्काल आवश्यकता महसूस करता था।
- **भारत के अतीत की पुनर्खोज:** सुधारकों ने अक्सर अपने विचारों के लिए औचित्य पश्चिम से नहीं, बल्कि भारत के अपने प्राचीन अतीत में खोजने का प्रयास किया। उन्होंने तर्क दिया कि मूर्ति पूजा, जाति व्यवस्था और महिलाओं की खराब स्थिति जैसी प्रथाएं बाद के "भ्रष्ट आचरण" थे। प्राचीन **वेदों और उपनिषदों** का "शुद्ध" धर्म तर्कसंगत और एकेश्वरवादी था।

प्रकृति: विशेषताएं और दृष्टिकोण

यद्यपि ये आंदोलन विविधतापूर्ण थे, किंतु उनमें कुछ सामान विशेषताएं और दृष्टिकोण मौजूद थे:

- **सामाजिक बुराइयों पर ध्यान देना:** उनका प्राथमिक लक्ष्य गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक बुराइयां थीं। सुधारकों ने सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह निषेध के खिलाफ अभियान चलाकर महिलाओं की स्थिति में सुधार पर अपना ध्यान केंद्रित किया। साथ ही उन्होंने महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया और जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के अन्याय पर भी हमला किया।

- **दो व्यापक धाराएं:** आंदोलनों को मोटे तौर पर दो धाराओं में समझा जा सकता है:
    - **सुधारवादी:** इन आंदोलनों ने आधुनिक, तर्कसंगत विचार के प्रकाश में अपने मूल सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या करके हिंदू धर्म में सुधार की मांग की। इसका प्रमुख उदाहरण **राजा राम मोहन राय** द्वारा स्थापित **ब्रह्म समाज** है, जिसने एकेश्वरवाद पर ध्यान केंद्रित किया और मूर्तिपूजा और सती प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
    - **पुनरुत्थानवादी:** इन आंदोलनों ने हिंदू धर्म के शुद्ध, मूल रूप को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जिसे वे मानते थे। **दयानंद सरस्वती** द्वारा स्थापित **आर्य समाज** ने "वेदों की ओर लौटो" का आह्वान किया। इसी तरह, रामकृष्ण से प्रेरित और **स्वामी विवेकानंद** के नेतृत्व में **रामकृष्ण मिशन** ने वेदांत को पुनर्जीवित और पुनर्व्याख्या करने की मांग की। यद्यपि, इन "पुनरुत्थानवादी" आंदोलनों में भी अक्सर एक मजबूत, आधुनिक सुधारवादी एजेंडा होता था, जैसे- आर्य समाज का जातिगत कठोरता के विरुद्ध आन्दोलन करना।

सुधार आंदोलनों का समग्र प्रभाव और महत्व

सुधार आंदोलनों का आधुनिक भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम पर स्थायी प्रभाव पड़ा:

- **राष्ट्रवाद का मार्ग प्रशस्त किया:** सामाजिक विभाजनों की आलोचना करके और सांस्कृतिक आत्म-सम्मान की भावना को बढ़ावा देकर, इन आंदोलनों ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए बौद्धिक और सामाजिक आधार तैयार करने में मदद की। कई शुरुआती राष्ट्रवादी नेता इन सुधार आंदोलनों की उपज थे।
- **सामाजिक विधान का नेतृत्व किया:** राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों के लगातार अभियानों ने ब्रिटिश सरकार को महत्वपूर्ण कानून पारित करने के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से **सती प्रथा का उन्मूलन (1829)** और **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)**।
- **आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया:** सुधारक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के प्रसार में अग्रणी थे और महिलाओं के लिए स्कूल और कॉलेज स्थापित करने वाले आरंभिक नेताओं में से एक थे।
- **सीमित सामाजिक आधार:** इन आंदोलनों की एक महत्वपूर्ण सीमा यह थी कि इन आंदोलनों का सीधा प्रभाव काफी हद तक शिक्षित, शहरी उच्च और मध्यम वर्गों तक ही सीमित था। उनके विचारों को विस्तृत ग्रामीण आबादी तक पहुंचने में कठिनाई हुई।
- **सांस्कृतिक आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया:** अपने स्वयं के अतीत की एक आधुनिक और प्रगतिशील पुनर्व्याख्या करके एक नवीन अंतर्दृष्टि प्रदान की। सुधारकों ने उभरते भारतीय बुद्धिजीवियों को औपनिवेशिक आलोचनाओं के सामने सांस्कृतिक आत्मविश्वास की भावना को फिर से हासिल करने में मदद की।

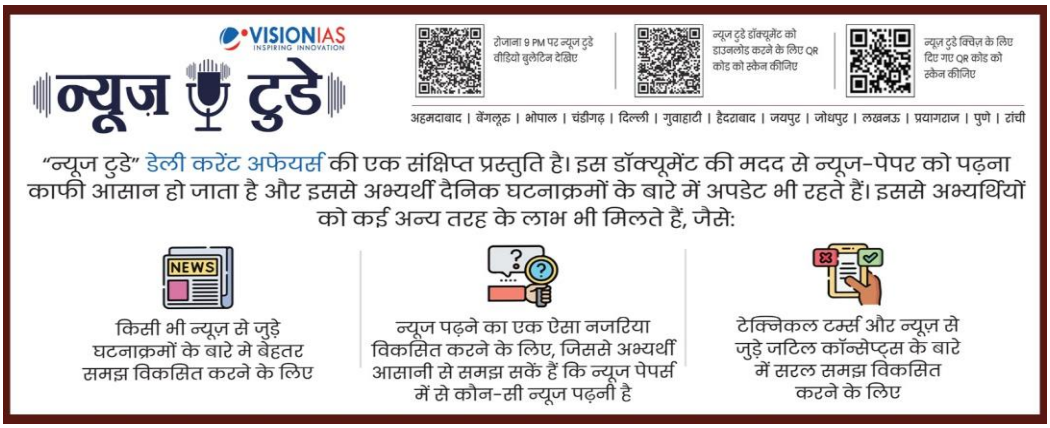

3.2.2. 1857 का विद्रोह (The Revolt of 1857)

जैसा कि शुरुआती ब्रिटिश अध्ययनों में कहा गया था, 1857 का विद्रोह एक साधारण "सिपाही विद्रोह" से कहीं अधिक था। यह कई शिकायतों के **सामूहिक एकत्रीकरण** से उपजा एक जटिल विद्रोह था। इसने एक गहरा राजनीतिक परिवर्तन प्रस्तुत किया, जिसने ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी और भारत के भविष्य को आकार दिया।

विद्रोह का मूल:

- **राजनीतिक शिकायतें:** लॉर्ड डलहौजी ने **डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स** की नीति लागू करके मनमाने ढंग से भारतीय राज्यों पर कब्जा कर लिया। इसने शासक और अभिजात वर्ग के बीच व्यापक आक्रोश पैदा किया।
- **आर्थिक कारक:** ब्रिटिश नीतियों से पारंपरिक भारतीय उद्योगों का विनाश हुआ। कृषि पर भरी कर लगाया गया, और जमींदारों का विस्थापन हुआ, जिससे विशाल आबादी के लिए गंभीर आर्थिक कठिनाइयां उत्पन्न हुई।

विद्रोह की प्रकृति (ऐतिहासिक व्याख्याएं):

- **"सिपाही विद्रोह":** प्रारंभिक ब्रिटिश लेखों ने इसे एक अलग सैन्य विद्रोह के रूप में खारिज कर दिया।
- **"भारतीय स्वतंत्रता का पहला युद्ध":** वी.डी. सावरकर जैसे राष्ट्रवादी हस्तियों ने विदेशी शासन के खिलाफ एकजुट हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के सिद्धांत पर जोर दिया।
- **सिपाही-किसान संघर्ष:** मार्क्सवादी इतिहासकारों ने इसे सामंती शोषण और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सिपाही-किसानों के प्रतिरोध के रूप में देखा।
- **जन प्रतिरोध:** अधीनस्थ इतिहासकारों ने इसकी जमीनी प्रकृति पर प्रकाश डाला, इसे औपनिवेशिक शासन के खिलाफ व्यापक लोकप्रिय अवज्ञा के रूप में व्याख्यायित किया।

- **सामाजिक-धार्मिक चिंताएं: सती प्रथा का उन्मूलन (1829)** और **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856)** जैसे अधिनियम, आक्रामक ईसाई मिशनरी गतिविधियों के साथ मिलकर, हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के बीच जबरन धर्मांतरण और सांस्कृतिक क्षरण के डर को बढ़ावा दिया।
- **सैन्य शिकायतें:** तात्कालिक कारण के रूप में **एनफील्ड राइफल की चिकनी कारतूसें** थीं, जिनके बारे में अफवाह थी कि उन्हें गाय और सूअर की चर्बी से लेपित किया गया है। इससे हिंदू और मुस्लिम सिपाहियों दोनों की धार्मिक भावनाओं को गहराई से ठेस पहुंची।

परिणाम और विरासत

ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने में अपनी विफलता के बावजूद, 1857 का विद्रोह एक महत्वपूर्ण मोड़ था। यह सीधे तौर पर **ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंत** और **भारत सरकार अधिनियम (1858)** के माध्यम से **ब्रिटिश क्राउन** को सत्ता के सीधे हस्तांतरण का कारण बना।

1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों द्वारा किए गए प्रमुख परिवर्तन

1857 के विद्रोह के कारण भारत में ब्रिटिश नीतियों और शासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

संवैधानिक और प्रशासनिक परिवर्तन

- **ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त** कर दिया गया। 1858 के भारत सरकार अधिनियम के जरिए **ब्रिटिश क्राउन को सत्ता हस्तांतरित** कर दी गई। ब्रिटिश नियंत्रण को मजबूत करने के लिए **भारत के राज्य सचिव और वायसराय के पदों का गठन** किया गया।
- **भारतीय परिषद अधिनियम 1861** ने विधान परिषदों में सीमित भारतीय भागीदारी की अनुमति दी।

सेना का पुनर्गठन

- सेना में **यूरोपीय सैनिकों** के अनुपात में वृद्धि की गई और प्रमुख सैन्य पद यूरोपीय लोगों के लिए आरक्षित किए गए।
- सिखों और गोरखाओं को **"मार्शल रेस"** घोषित करके उनकी भर्ती को प्राथमिकता दी गई।
- विद्रोह में शामिल **अवध** जैसे क्षेत्रों से भर्ती कम कर दी गई।
- राष्ट्रीय एकता को रोकने के लिए रेजीमेंटों के भीतर **"फूट डालो और राज करो"** की नीति लागू की गई।

रियासतों के प्रति नई नीति

- डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स की नीति के अंत और देशी राजकुमारों के अधिकारों का सम्मान करने का वादा किया गया।
- भारतीय राजकुमार ब्रिटिशों के अधीनस्थ सहयोगी बन गए।

सामाजिक और धार्मिक नीति में बदलाव

- ब्रिटिश ने **धार्मिक गैर-हस्तक्षेप** की नीति अपनाई, **राज्य-नेतृत्व वाले सामाजिक सुधारों** को समाप्त कर दिया।

व्यवस्थित आर्थिक शोषण

- भारत कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता और ब्रिटिश वस्तुओं के लिए बाजार बन गया।
- माल के परिवहन के लिए रेलवे का विस्तार किया गया, जिससे विऔद्योगीकरण में मदद मिली।
- ब्रिटिश आर्थिक हित फले-फूले जबकि भारत का औद्योगिक विकास ठप हो गया।

प्रशासनिक और नस्लीय भेदभाव

- ब्रिटिश शासकों और भारतीयों के बीच नस्लीय कड़वाहट बढ़ी।
- "फूट डालो और राज करो" की नीति तेज हुई, जिससे समुदायों के बीच विभाजन को बढ़ावा मिला।

अंत में, 1857 की सबसे स्थायी विरासत थी- सतत राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संघर्ष के लिए गहन प्रेरणा।

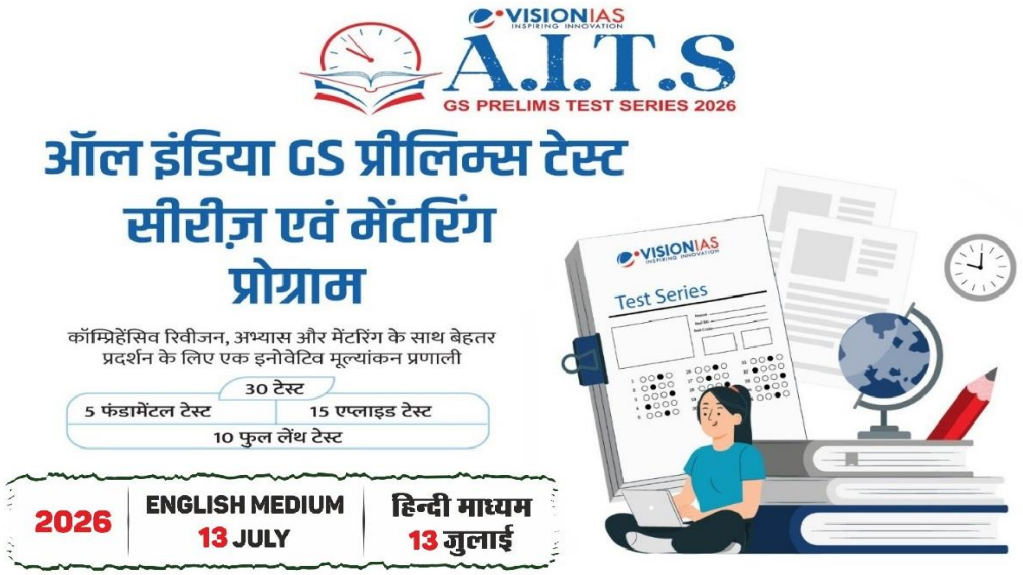

3.2.3. राष्ट्रवाद का उदय (Rise of Nationalism)

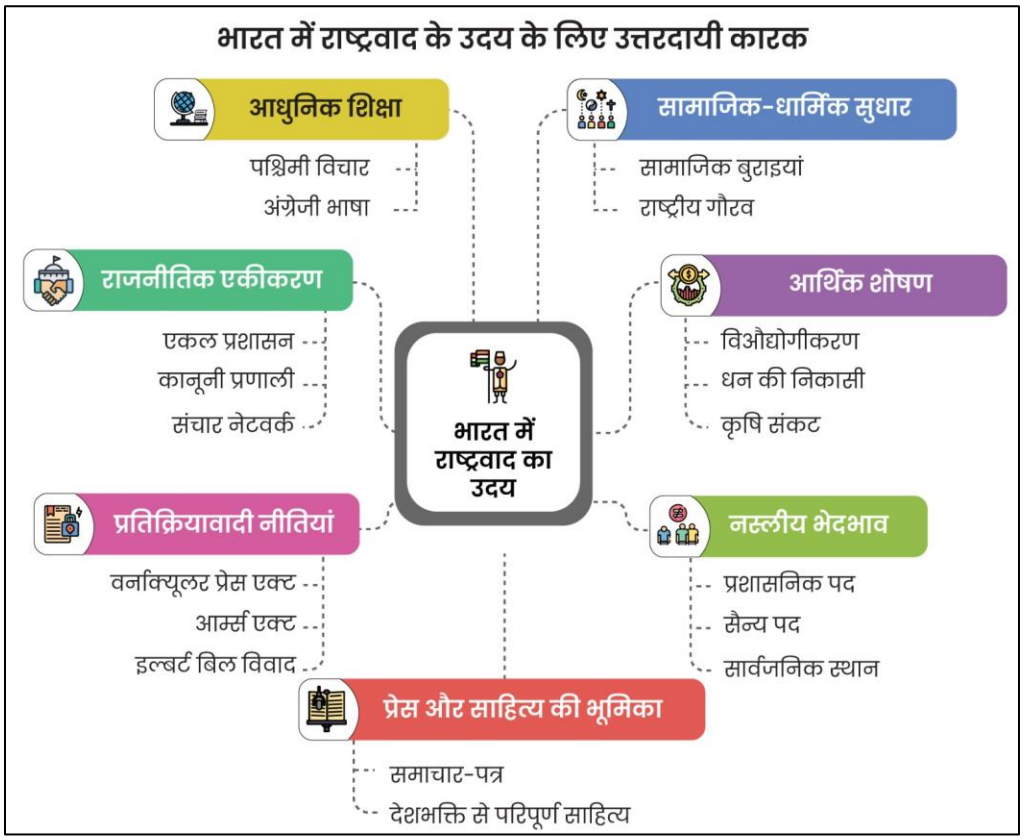

3.2.4. राष्ट्रीय आंदोलन में शिक्षा और प्रेस की भूमिका (Role of Education and Press in National Movement)

राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका

- **ब्रिटिश शिक्षा का मूल उद्देश्य:** प्रारंभ में, ब्रिटिश सरकार ने अंग्रेजी शिक्षा को एक वफादार भारतीय वर्ग बनाने के लिए डिज़ाइन किया था। ताकि "रक्त और रंग में भारतीय, लेकिन स्वाद, विचारों, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेजी" वर्ग का निर्माण किया जा सके। जिनका कार्य सार्वजनिक सेवाओं में अधीनस्थ भूमिका निभाना था। इस प्रकार, वे पश्चिमी श्रेष्ठता को स्थापित करना चाहते थे।
- **आलोचनात्मक विमर्श का उदय:** प्रबुद्धता-पश्चात तर्कवाद और आधुनिक पश्चिमी लोकतांत्रिक विचारों के संपर्क में आने से नागरिकता और मानवाधिकारों जैसी अवधारणाओं को

स्वतंत्रता आंदोलन और समाज पर प्रभाव

- **स्वतंत्रता के दायरे का विस्तार:** स्वतंत्रता आंदोलन ने स्वतंत्रता की अवधारणा को सामाजिक समानता और न्याय को शामिल करने के लिए विस्तारित किया। इसने विशेष रूप से गांधी के प्रभाव और वामपंथ के गरीब-समर्थक विचारों के साथ, धर्मनिरपेक्षता को एक आधारभूत मूल्य के रूप में शामिल किया।
- **बहु-वर्ग, बहु-वैचारिक आंदोलन:** आंदोलन ने विविध सामाजिक वर्गों और विचारधाराओं को एकजुट किया। इससे एक "राष्ट्र-निर्माण" हुआ क्योंकि जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों ने साम्राज्यवाद का विरोध किया।
- **संवैधानिक विरासत:** शिक्षा, प्रेस और सामाजिक सुधारों का प्रभाव भारत के संविधान में निहित है, जो **लोकतंत्र, नागरिक स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और हाशिए पर पड़े समूहों के लिए भेदभाव** के लिए **क्षतिपूरक गारंटी** देता है।

बढ़ावा मिला। इससे भारतीयों को राष्ट्रवाद के एक उपयोगी सिद्धांत को विकसित करने में मदद मिली।

- **राजनीतिक लामबंदी:** प्रिंटिंग प्रेस के उदय से संस्कृति और भारतीय स्वामित्व वाले समाचार पत्रों का प्रसार हुआ इसने अंतर-क्षेत्रीय एकजुटता को प्रोत्साहित किया। **इंडियन एसोसिएशन (1876)** और **पूना सार्वजनिक सभा (1870)** जैसे संगठन, मध्यम वर्ग के पेशेवरों के नेतृत्व में, नागरिक स्वतंत्रता, सेवाओं के भारतीयकरण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग करते थे। इससे राष्ट्रवादी आंदोलनों को बौद्धिक नेतृत्व प्राप्त हुआ।

राष्ट्रवाद की स्थापना में प्रेस की भूमिका

- **राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार:** द हिंदू और केसरी जैसे समाचार-पत्र राष्ट्रवादी विचारों को फैलाने में महत्वपूर्ण थे। ये न केवल शिक्षित शहरी लोगों तक बल्कि दूरदराज के ग्रामीण इलाकों तक भी सार्वजनिक विमर्श को एक राजनीतिक कार्य बना दिया।
- **आर्थिक आलोचना और राजनीतिक मांगें:** दादाभाई नौरोजी जैसे नेताओं ने प्रेस का इस्तेमाल भारत से "धन की निकासी" को उजागर करने के लिए किया, गरीबी को सीधे ब्रिटिश उपनिवेशवाद से जोड़ दिया। इसने स्वराज की मांग को बढ़ावा दिया और ब्रिटिश शासन में विश्वास को कमजोर किया।
- **प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष:** राष्ट्रवादी आंदोलन ने प्रेस की स्वतंत्रता का सक्रिय रूप से बचाव किया। 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस अधिनियम जैसे दमनकारी उपायों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया, जिससे ब्रिटिश निरंकुशता पर प्रकाश डाला गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- 1857 का विद्रोह केवल एक सैन्य विद्रोह नहीं था, बल्कि यह एक बहुआयामी शिकायतों का एक संचयन था। चर्चा कीजिए। (150 शब्द)
- 1857 के विद्रोह की प्रकृति गहन ऐतिहासिक बहस का विषय रही है। इस विद्रोह का 'भारतीय स्वतंत्रता के पहले युद्ध' के रूप में विस्तार पूर्वक विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)
- 1857 के विद्रोह का ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियों पर प्रभाव और उसके बाद के राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संग्राम के लिए इसकी विरासत पर चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

3.3. संगठित आंदोलनों का युग (The Era of Organized Movements)

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक संगठित, अखिल भारतीय राजनीतिक आंदोलन की शुरुआत की। इसके शुरुआती चरण में विचारधारा और कार्यप्रणाली में स्पष्ट विकास देखा गया, जहां संवैधानिक सुधारों की मांग से आगे बढ़ते हुए, स्वशासन की अधिक मुखर और स्पष्ट मांग की दिशा में आंदोलन विकसित हुआ।

3.3.1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: "सुरक्षा वाल्व" का एक मिथक (Indian National Congress : The Myth of "Safety Valve")

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की उत्पत्ति को प्रायः **"सेफ्टी वाल्व"** के सिद्धांत से जोड़ा जाता है, इस सिद्धांत के अनुसार ब्रिटिश सिविल सेवक **ए.ओ. ह्यूम** ने भारतीय राजनीतिक असंतोष को एक सुरक्षित और संवैधानिक दिशा देने के लिए कांग्रेस की स्थापना की थी, ताकि 1857 जैसे एक और बड़े विद्रोह को रोका जा सके।

- हालांकि, आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि यह केवल एक आंशिक दृष्टिकोण है। उनके अनुसार, अखिल भारतीय राजनीतिक मंच की स्थापना भारतीय समाज में दशकों से चल रही राजनीतिक जागरूकता और विभिन्न क्षेत्रीय संगठनों के प्रयासों की स्वाभाविक परिणति थी।
- राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे देखते हुए ह्यूम को **"तड़ित झंझा"** की संज्ञा दी — औपनिवेशिक शासन को बनाए रखने के लिए एक ब्रिटिश व्यक्ति के रूप में उन्होंने आधिकारिक विद्रोह और संदेह को दूर करने के लिए एक ऐसे संगठन की स्थापना की जिसे वे सुचारु रूप से संचालित कर सकें। इस प्रकार, कांग्रेस केवल एक ब्रिटिश सोच नहीं थी, बल्कि यह भारतीय पहल थी, जिसमें ब्रिटिश सहयोग का रणनीतिक रूप से उपयोग किया गया।

3.3.2. उदारवादियों की भूमिका (1885-1905) {The Role of the Moderates (1885-1905)}

कांग्रेस के पहले दो दशकों में उदारवादी नेताओं का वर्चस्व रहा, जिनमें दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता और गोपाल कृष्ण गोखले प्रमुख थे।

- **पद्धति:** उदारवादियों का दृष्टिकोण "संवैधानिक आंदोलन" पर आधारित था। उन्हें ब्रिटिश न्याय में विश्वास था और उनका मानना था कि अगर वे अपनी शिकायतों को तार्किक रूप से प्रस्तुत करेंगे, तो ब्रिटिश सरकार उनके द्वारा सुझाए सुधारों को मंजूरी प्रदान करेंगी।
  - उनके तरीकों में याचिकाएं, प्रार्थनाएं और विरोध शामिल थे - जिन्हें अक्सर "3 P's" (Petitions, Prayers, Protests) के रूप में वर्णित किया जाता है।
- **उपलब्धियाँ:** उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान **औपनिवेशिक शासन की आर्थिक आलोचना** थी।
  - उन्होंने "धन की निकासी" **(Drain of Wealth Theory)** का सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसके माध्यम से ब्रिटिश शासन की शोषणकारी प्रवृत्ति को व्यवस्थित रूप से उजागर किया, जिससे "कल्याणकारी औपनिवेशिक शासन" का मिथक टूट गया।
  - **भारतीय परिषद अधिनियम, 1892** को पारित करवाया—हालांकि यह एक सीमित सुधार था, फिर भी एक राजनीतिक उपलब्धि मानी जाती है।
- **सीमाएँ:** उनके तरीकों की आलोचना "राजनीतिक भिक्षावृत्ति" या भीख माँगने के रूप में की गई थी। उनका सामाजिक आधार बहुत संकीर्ण था, जो मुख्यतः शिक्षित, शहर के उच्च वर्ग के लोगों तक ही सीमित था, और वे ठोस राजनीतिक सुधार हासिल करने में विफल रहे।

3.3.3. उदारवादियों के प्रति प्रतिक्रिया: उग्रवादी चरण (1905-1918) (The Reaction to Moderates: The Extremist Phase (1905-1918))

उदारवादियों की सीमित प्रतिक्रियाओं ने नेताओं के एक नए समूह को जन्म दिया, जिन्हें **गरम दल** के रूप में जाना गया, जिनमें **बाल गंगाधर तिलक,** लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल (जिन्हें अक्सर **"लाल, बाल, पाल"** कहा जाता था) शामिल थे।

- **कारण:** उदारवादियों के तरीकों की विफलता और अंग्रेजों की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने उग्र राष्ट्रवादियों के उदय को बढ़ावा दिया। विशेष रूप से **1905 में लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल के विभाजन** ने एक तात्कालिक उत्प्रेरक के रूप में काम किया।

- **विचारधारा:** उग्रवादियों को ब्रिटिश शासन की उदारता पर कोई भरोसा नहीं था। उनका लक्ष्य स्वराज या स्वशासन था, जिसके बारे में उनका मानना था कि इसे केवल प्रत्यक्ष राजनीतिक कार्रवाई जैसे जन-आंदोलन, ब्रिटिश वस्तुओं और संस्थानों का बहिष्कार और स्वदेशी (स्वदेशी सामान) को बढ़ावा देने के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने भारत के इतिहास और सांस्कृतिक विरासत से प्रेरणा लेकर आत्मसम्मान और राष्ट्रीय गौरव को प्रोत्साहित किया।
- **विभाजन:** दोनों गुटों के बीच गहरे वैचारिक और **रणनीतिक** मतभेद 1907 के सूरत विभाजन में परिणत हुए, जहाँ कांग्रेस पार्टी दो गुटों में विभाजित हो गई। इस विभाजन ने राष्ट्रवादी आंदोलन को लगभग एक दशक तक कमजोर कर दिया।

स्वतंत्रता संग्राम में लोकमान्य तिलक की भूमिका

- **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** के **उग्रवादी** गुट के एक प्रमुख नेता थे, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को एक **जन आंदोलन** में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **स्वराज को लक्ष्य बनाना:** तिलक ने उदारवादियों की याचिका-आधारित राजनीति को अस्वीकार कर दिया, और घोषणा की, कि **"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा!"**, जिससे आंदोलन का ध्यान स्वराज (स्व-शासन) पर केंद्रित हो गया।
- **जन आंदोलन में अग्रणी:** तिलक ने **आम लोगों** से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया, राष्ट्रवादी भावना को बढ़ावा देने के लिए **गणेश चतुर्थी** और **शिवाजी की जयंती** जैसे त्योहारों का उपयोग किया।
- **प्रेस को राजनीतिक हथियार बनाना:** तिलक ने अपने समाचार पत्र **केसरी (मराठी)** और **मराठा (अंग्रेज़ी)** के माध्यम से ब्रिटिश नीतियों की आलोचना की, औपनिवेशिक शोषण को उजागर को भारतीयों को प्रेरित किया।
- **स्वदेशी आंदोलन में नेतृत्व:** तिलक ने बंगाल विभाजन (1905) के बाद स्वदेशी आंदोलन में केंद्रीय भूमिका निभाई और 1907 के सूरत विभाजन में एक प्रमुख व्यक्ति थे।
- **होम रूल लीग और कांग्रेस को एकजुट करना:** जेल से रिहा होने के बाद, तिलक ने **1916 में होम रूल लीग** की स्थापना की, जिसका उद्देश्य स्व-शासन की मांग करना था। उन्होंने **1916 के लखनऊ समझौते** में अहम भूमिका निभाई, जिससे कांग्रेस और मुस्लिम लीग एकजुट हुए और चरमपंथी और उदारवादी गुटों में सामंजस्य स्थापित हुआ।

स्वदेशी आंदोलन

1905 में **स्वदेशी आंदोलन** 20वीं सदी का **पहला बड़ा जन आंदोलन** था, जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य रूप को बदल दिया। इस आंदोलन का मुख्य कारण लॉर्ड कर्जन द्वारा **बंगाल का विभाजन (1905)** था, जिसे राष्ट्रवादी नेतृत्व द्वारा **"फूट डालो और राज करो"** की रणनीति के रूप में देखा गया था।

प्रभाव और महत्व:

- इस आंदोलन ने अभिजात्य वर्ग-आधारित राजनीति से जन-आंदोलन की ओर एक निर्णायक परिवर्तन का संकेत दिया।
- तिलक ने **बहिष्कार** और **निष्क्रिय प्रतिरोध** जैसी रणनीतियों की शुरुआत की, जिन्हें बाद में **महात्मा गांधी** ने भी अपनाया।

- इस आंदोलन से **स्वदेशी उद्योगों** को प्रोत्साहन मिला और **सांस्कृतिक पुनर्जागरण** को बढ़ावा दिया।
- हालांकि **बंगाल का विभाजन 1911** में रद्द कर दिया गया, लेकिन इस आंदोलन ने कांग्रेस में वैचारिक विभाजन पैदा कर दिया, जिसके कारण 1907 में सूरत विभाजन हुआ।

3.3.4. कांग्रेस में वैचारिक विभाजन: स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव (Ideological Splits in Congress: Impact on the Freedom Movement)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभाई, लेकिन आंतरिक विभाजन और विभिन्न रणनीतियों ने इसके विकास को प्रभावित किया। पार्टी के भीतर विचारधारात्मक मतभेदों के कारण श्रमिकों और दलितों जैसे मुद्दों पर असमंजस की स्थिति बनी रही। दो प्रमुख विभाजनों का इस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

1937 के चुनाव और कांग्रेस की सरकार बनाने की दुविधा

भारत शासन अधिनियम, 1935 के बाद, ब्रिटिश भारत में **1937** में प्रांतीय चुनाव हुए। इन चुनावों में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** ने जबरदस्त जीत हासिल की और अधिकांश प्रांतों में बहुमत प्राप्त किया। इस जीत से इस पर एक बड़ी आंतरिक बहस छिड़ गई कि क्या कांग्रेस को प्रांतीय सरकारें बनाकर औपनिवेशिक शासन के साथ सहयोग करना चाहिए। इस दुविधा को **"सरकार बनाने या मंत्रिमंडल स्वीकार करने का प्रश्न"** के रूप में जाना जाता है।

सरकार बनाने या मंत्रिमंडल स्वीकार करने पर बहस

- **विपक्ष में तर्क: जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस** के नेतृत्व में वामपंथियों ने तर्क दिया कि सरकार में शामिल होना या मंत्रिपद स्वीकार करना साम्राज्यवाद के आगे **"आत्मसमर्पण"** होगा। उन्हें सह-विकल्प और गैर-उग्र सुधारवाद का भय था। उन्होंने निरंतर **जन संघर्ष** की वकालत की।
- **पक्ष में तर्क: राजेंद्र प्रसाद** जैसे नेताओं ने मंत्रिमंडल स्वीकरण को उस समय एक **आवश्यक अल्पकालिक रणनीति** के रूप में देखा, जब जन आंदोलन संभव नहीं थे। उनका मानना था कि यह आर्थिक राहत प्रदान कर सकता है, संगठन का निर्माण कर सकता है और जनता को भविष्य के संघर्षों के लिए तैयार कर सकता है।
- निर्णय और प्रभाव: कांग्रेस के अनुमोदन और **गांधीजी** की सतर्क स्वीकृति, साथ ही 1907 के विभाजन की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए **1937 में मंत्रालयों** का गठन हुआ।

वामपंथियों की आपत्तियों के बावजूद, यह निर्णय **राष्ट्रीय चेतना** को बढ़ाने और **भारतीय शासन क्षमता** को प्रदर्शित करने में प्रभावी साबित हुआ। इससे राजनीतिक संघर्ष **स्थायी** बना रहा।

सूरत विभाजन (1907)

- **कारण: नरमपंथियों** द्वारा केवल याचिकाओं पर निर्भर रहने से असंतोष और **कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन (1905)** के बाद उग्रवाद का उदय हुआ। **तिलक** और अन्य नेताओं ने स्वराज (स्वतंत्रता) और प्रत्यक्ष कार्रवाई को बढ़ावा दिया। **1906 के कलकत्ता प्रस्तावों** पर असहमति के कारण **सूरत विभाजन** हुआ।
- **प्रभाव:** इस विभाजन से **राष्ट्रीय आंदोलन** कमजोर पड़ गया, क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने **गरमपंथियों पर दमन** की नीति अपनाई, जिससे **उग्र राजनीतिक गतिविधियां** कम हो गई और **हिंसा का रुख व्यक्तिगत** हो गया। हिंदू धार्मिक प्रतीकों के प्रयोग के कारण **मुस्लिमों में अलगाव** की भावना बढ़ी। इससे **भविष्य** में संकट के समय **एकता** की आवश्यकता परिलक्षित हुई।

"परिवर्तनवादी (प्रो-चेंजर)" बनाम "अपरिवर्तनवादी (नो-चेंजर)" विवाद (1922-1924)

- **कारण: असहयोग आंदोलन** को वापस लेने के बाद, **परिवर्तनवादी या स्वराजवादियों (सी.आर. दास** और **मोतीलाल नेहरू** के नेतृत्व में) का मानना था की ब्रिटिशों को कमजोर करने के लिए

विधान परिषदों में शामिल होना आवश्यक है, जबकि **परिवर्तन विरोधी** (जैसे **वल्लभभाई पटेल**) भविष्य के **सविनय अवज्ञा** के लिए **रचनात्मक कार्य** पर ध्यान केंद्रित करने के पक्ष में थे।

- **प्रस्ताव:** 1923 में एक समझौते के तहत परिवर्तनवादियों को **विधान परिषदों में प्रवेश** की अनुमति दी गई। 1924 में **गांधीजी** के हस्तक्षेप करने के कारण **स्वराज्यवादी पार्टी** को औपचारिक रूप से **कांग्रेस** का हिस्सा मान लिया गया, जिससे विभाजन टल गया।
- **प्रभाव: स्वराजवादियों** ने **राजनीतिक हित** बनाए रखा और **विधायी अवरोध** के माध्यम से **औपनिवेशिक शासन** को उजागर किया। हालांकि, **आंतरिक मतभेदों** के कारण पार्टी कमजोर हो गई।

इन विभाजनों ने **स्वतंत्रता आंदोलन** में कांग्रेस की **भविष्य की रणनीतियों** और **एकता** को आकार दिया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कांग्रेस की रणनीति का विकास

- **राष्ट्रवाद का प्रारंभिक चरण (1885 - प्रारंभिक 1900 का दशक): भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** ने शुरू में **संवैधानिक तरीकों** को अपनाया, जिसमें **नरमपंथी** नेताओं ने याचिकाओं और भाषणों का सहारा लिया। **तिलक** के नेतृत्व में **चरमपंथियों** ने **स्वदेशी** और **स्वराज** पर जोर दिया, जिससे **1907 में सूरत विभाजन** हुआ। यह घटना से कांग्रेस कमजोर अवश्य हुई, लेकिन इसने **राष्ट्रवादी भावना** को प्रज्वलित करने का भी काम किया।
- **गांधीवादी युग और S-T-S रणनीति**: गांधीजी ने **S-T-S** (Struggle-Truce-Struggle) रणनीति अपनाई, जिसमें जन आंदोलन (जैसे **असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन**) के चरणों के साथ-साथ **समझौता/ संवैधानिक** (जैसे **स्वराजवादी काल, कांग्रेस मंत्रिमंडल**) चरणों को भी अपनाया गया। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को चुनौती देना और ब्रिटिश व्यवस्था की खामियों को उजागर करना था।
- **आंतरिक बहस: वामपंथियों** (जैसे, **नेहरू**) ने निरंतर संघर्ष की वकालत करते हुए "युद्ध विराम" चरणों की आलोचना की। फिर भी गांधीजी के नेतृत्व में **राष्ट्रीय एकता** को प्राथमिकता दी गई, जिससे निरंतर जनसक्रियता बनी रही और **स्वतंत्रता** के लिए एक ठोस नींव तैयार हुई।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- जन संघर्ष के विभिन्न चरणों (जैसे NCM, CDM) और विधायी/ सरकारी भागीदारी (स्वराजवादी काल, कांग्रेस मंत्रिमंडल) वाले चरणों के बीच बारी-बारी से कांग्रेस की रणनीति ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की समग्र दिशा को कैसे आकार दिया? (10 अंक, 150 शब्द)
- भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत प्रांतीय कार्यालय की स्वीकृति के पक्ष और विपक्ष में कांग्रेस के भीतर प्रस्तुत प्रमुख तर्कों पर चर्चा कीजिए। 1937 में मंत्रिमंडल बनाने के निर्णय के लिए कौन से कारक जिम्मेदार थे? (15 अंक, 250 शब्द)

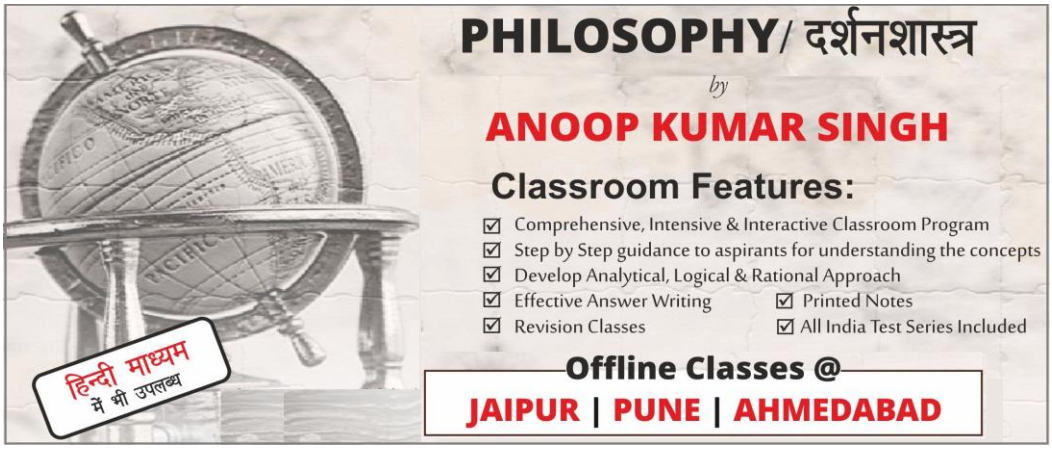

3.3.5. क्रांतिकारी आंदोलनों का योगदान (Contributions of Revolutionary Movements)

भारत में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद एक शक्तिशाली और ऐसी शक्ति के रूप में उभरा, जो गांधीजी जैसे नेताओं द्वारा अपनाए गए अधिक उदार, अहिंसक दृष्टिकोण के विपरीत था। कांग्रेस के नेतृत्व वाले आंदोलन की धीमी प्रगति और अप्रभाविता से निराश होकर, कई युवा क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिंसा और सशस्त्र विद्रोह का मार्ग अपनाया।

क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की वैचारिक नींव:

- **पूर्ण स्वतंत्रता और क्रांति:** क्रांतिकारी राष्ट्रवादी तत्काल और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की, उनका मानना था कि भारत क्रांति के लिए तैयार है।
- **समाजवाद और मार्क्सवाद:** रूसी क्रांति से प्रेरित होकर भगत सिंह जैसे नेताओं ने समाजवाद और मार्क्सवाद को अपनाया। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के 1925 के घोषणापत्र में शोषण के उन्मूलन की मांग की गई थी, जबकि भगत सिंह ने एक नए समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की वकालत की।
- **धर्मनिरपेक्षता:** गदर पार्टी के नेताओं ने धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया, धार्मिक विभाजनों को अस्वीकार किया और स्वतंत्रता के लिए सभी धर्मों के लोगों को एकजुट किया।
- **समानता और लोकतंत्र:** अराजकतावादी और सिंडिकलिस्ट आंदोलनों से प्रभावित होकर, उन्होंने एक समतामूलक और लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की मांग की।

भारतीय क्रांतिकारियों पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव (1920-1930 का दशक)

रूसी क्रांति (1917), आयरिश राष्ट्रवाद और **समाजवादी विचारों** ने 1920 और 1930 के दशक में भारतीय क्रांतिकारियों के उद्देश्यों और तरीकों को गहराई से प्रभावित किया।

उद्देश्यों पर प्रभाव

रूसी क्रांति और **समाजवादी** तथा **मार्क्सवादी विचारों** के प्रसार ने क्रांतिकारियों का ध्यान केवल ब्रिटेन से **राजनीतिक स्वतंत्रता** प्राप्त करने से आगे बढ़ाकर एक ऐसा **समाजवादी राज्य** बनाने की ओर स्थानांतरित किया, जो **न्याय, समानता** और **मजदूरों** तथा **किसानों** के अधिकार सुनिश्चित कर सके। इस बदलाव का स्पष्ट उदाहरण तब देखने को मिला जब **हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)** ने 1928 में **भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद** और **सुखदेव** जैसे नेताओं के नेतृत्व में अपना नाम बदलकर **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)** कर दिया गया।

तरीकों पर प्रभाव

हालांकि **आयरिश राष्ट्रवाद** से प्रेरित सशस्त्र संघर्ष प्रतिरोध का हिस्सा बना रहा, तरीकों में बदलाव आया और **"कर्म द्वारा प्रचार" (propaganda by deed)** की रणनीति अपनाई गई—जिसका उद्देश्य क्रांतिकारी कार्यों के माध्यम से जनता को जागरूक करना था।

उदाहरण के लिए, **भगत सिंह** और **बी.के. दत्त** ने **केंद्रीय विधान सभा** पर बम फेंका, जिसका लक्ष्य किसी की हत्या करना नहीं बल्कि जनता को अपने उद्देश्य के प्रति जागरूक करना था। यह **व्यक्तिगत हिंसा** से लेकर **व्यापक राजनीतिक जन चेतना** की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों द्वारा अपनाए गए तरीके:

- **सशस्त्र कार्रवाई और आतंकवाद:** क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों ने बम विस्फोटों और हत्याओं के माध्यम से हिंसा का रास्ता अपनाया। उदाहरण के लिए, चापेकर बंधुओं द्वारा रैंड की हत्या (1897) और **चिट्टागोंग शस्त्रागार कांड (1930)** जैसी घटनाएँ इसमें शामिल हैं।
- **अपने कार्यों द्वारा प्रचार (Propaganda by Deed):** उनके नाटकीय कार्यों का उद्देश्य जनता को प्रेरित करना और समर्थकों को जुटाना था।

- **जन आंदोलन और राजनीतिक कार्य:** भगत सिंह जैसे नेताओं ने व्यापक जन आंदोलन की ओर रुख किया, और **पंजाब नौजवान भारत सभा** जैसी संस्थाएं बनाई ताकि युवाओं, मजदूरों और किसानों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल किया जा सके।

गांधीवादी दृष्टिकोण से विरोध:

- **अहिंसा बनाम हिंसा:** गांधीजी की **अहिंसा** रणनीति का एक प्रमुख केंद्र था, जबकि क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों ने सशस्त्र संघर्ष का समर्थन किया।
- **रणनीति:** गांधीजी की संघर्ष-विराम-संघर्ष (S-T-S) रणनीति क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों की साम्राज्यवाद के साथ स्थायी टकराव की रणनीति से अलग थी।
- **वर्ग विश्लेषण और सामाजिक परिवर्तन:** क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों ने वर्ग संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया, समाजवादी परिवर्तन की वकालत की, जबकि गांधीजी ने वर्गों में सद्भाव पर जोर दिया।
- **आंदोलन की गतिशीलता:** क्रांतिकारी राष्ट्रवादी तत्काल संघर्ष में विश्वास रखते थे, लेकिन सामान्यत: गांधीजी मानते थे कि उपयुक्त समय के लिए एक लंबी तैयारी की आवश्यकता है।
- **संविधानवाद की भूमिका:** गांधीजी संवैधानिक कार्य को एक अस्थायी रणनीति के रूप में देखते थे, जबकि कुछ क्रांतिकारी राष्ट्रवादी विधानमंडल में गतिरोध पैदा करने का प्रयास करते थे।

सुभाष चंद्र बोस और आज़ाद हिंद फौज (INA)

सुभाष चंद्र बोस और आज़ाद हिंद फौज (INA) की मुख्य भूमिका स्वतंत्रता को सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से प्राप्त करना था। इसके लिए उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान धुरी शक्तियों (Axis Powers) से सहायता मांगी। हालांकि INA का प्रत्यक्ष सैन्य अभियान अंततः असफल रहा, लेकिन युद्ध के बाद इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

- **INA मुकदमा (1945-46):** दिल्ली के लाल किले में पकड़े गए INA अधिकारियों के सार्वजनिक मुकदमे ने राष्ट्रवादी भावना की की एक बड़ी लहर पैदा की। इसने विभिन्न राजनीतिक दलों और आम जनता को सैनिकों के समर्थन में एकजुट किया।
- **सशस्त्र बलों को प्रेरणा:** ब्रिटिश भारतीय सेना और नौसेना में INA के प्रति व्यापक सहानुभूति देखी गई, जिससे उनकी वफादारी ब्रिटिश ताज के प्रति कमज़ोर हुई। इसका चरम उदाहरण 1946 का रॉयल इंडियन नेवी (RIN) विद्रोह था।
- **ब्रिटिश शासन पर अंतिम फैसला:** INA की कहानी और उसके बाद के विद्रोहों ने ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट कर दिया कि वे अब उनके शासन के मुख्य आधार भारतीय सशस्त्र बलों पर भरोसा नहीं कर सकते। यह अहसास भारत छोड़ने के उनके फैसले में निर्णायक साबित हुआ।

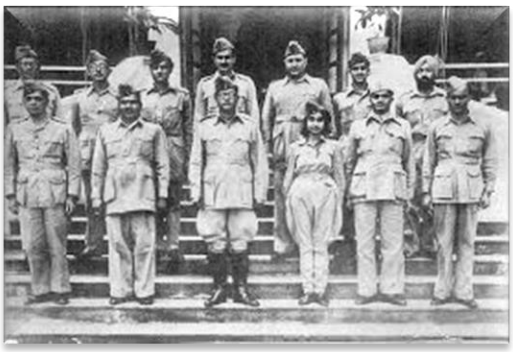

अभ्यास के लिए प्रश्न

- "19वीं शताब्दी के किसान और आदिवासी विद्रोह अक्सर तात्कालिक उत्पीड़न के प्रति स्थानीय प्रतिक्रियाएँ थीं।" इन किसान और आदिवासी विद्रोहों के प्राथमिक कारणों पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द)
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुख्यधारा के गांधीवादी आंदोलन से परे प्रतिरोध की विविध धाराओं को देखा गया। इन आंदोलनों के उद्देश्यों, तरीकों और प्रभावों की तुलना कीजिए और उनमें अंतर स्पष्ट कीजिए। (250 शब्द)
- हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) की कार्रवाइयों ने ब्रिटिशों द्वारा अंततः दमन के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम में किस प्रकार योगदान दिया? (150 शब्द)

3.4. गांधीवादी युग और जन आंदोलन (The Gandhian Era and Mass Movements)

3.4.1. गांधीजी का उदय और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति उनका दृष्टिकोण (Rise of Gandhi and his Approach to Freedom Movement)

मोहनदास करमचंद गांधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश स्वतंत्रता संग्राम में एक **निर्णायक मोड़** साबित हुआ, जिससे यह आंदोलन **अभिजात वर्ग का आंदोलन न रहकर जन-आधारित राष्ट्रीय प्रयास बन गया।** गांधी जी का **सत्याग्रह— सत्य (सत्य)** और **अहिंसा (अहिंसा)** पर आधारित एक दर्शन था। सत्याग्रह ने लाखों आम भारतीयों को संगठित किया, जिससे इस आंदोलन को **एक मजबूत नैतिक आधार** मिला।

गांधीवादी युग के चरण:

- **संघर्ष (जन आंदोलन):**
  - **असहयोग आंदोलन (1920-22):** औपनिवेशिक अन्याय के विरोध में शुरू किए गए इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर केंद्रित था। इसके साथ ही कांग्रेस का पुनर्गठन करके जनसामान्य की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की गई।
  - **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34):** नमक सत्याग्रह और देशव्यापी आंदोलनों का उद्देश्य ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देना, निर्भयता को बढ़ावा देना और जन राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन करना था।
- **विराम/ संवैधानिक चरण:**
  - **स्वराज्यवादी काल (1923-28):** असहयोग आंदोलन के बाद, स्वराजवादियों ने विधान परिषदों में प्रवेश किया ताकि ब्रिटिश शासन की अक्षमता को उजागर किया जा सके।
  - **कांग्रेस मंत्रिमंडल (1937-39):** विरोध के बावजूद, कांग्रेस ने भारत सरकार अधिनियम, 1935 के तहत मंत्रिमंडल का गठन किया, ताकि ब्रिटिश नियंत्रण को कमजोर किया जा सके तथा प्रशासन और नागरिक स्वतंत्रताओं का प्रदर्शन किया जा सके।

असहयोग आंदोलन (1920-1922)

उत्पत्ति (कारण):

- **रॉलेट एक्ट (1919)** और **जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919)** के कारण उपजा **आक्रोश।**
- **ओटोमन खलीफा** के साथ ब्रिटिश व्यवहार को देखते हुए ब्रिटिश के खिलाफ भारतीय मुसलमानों द्वारा चलाया गया **खिलाफत आंदोलन।**
- गांधीजी द्वारा **हिंदू-मुस्लिम एकता** का आह्वान।

आंदोलन की रूपरेखा:

- **बहिष्कार की रणनीति अपनाना:** सरकारी संस्थाओं, **विदेशी कपड़ों,** स्कूलों और अदालतों का **बहिष्कार।**
- **रचनात्मक कार्यक्रम: खादी, चरखा, जामिया मिलिया इस्लामिया** और **काशी विद्यापीठ** जैसी राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थाओं तथा स्थानीय पंचायतों को बढ़ावा देना।
- **हिंदू-मुस्लिम एकता:** किसानों, मजदूरों, छात्रों और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी।
- **चौरी-चौरा कांड (1922)** के बाद आंदोलन की **वापसी।**

प्रभाव और महत्व:

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** को जन-आधारित राजनीतिक दल में बदल दिया।
- **अहिंसक संघर्ष** की शक्ति का प्रदर्शन किया।
- **सत्याग्रह** जैसी **गांधीवादी तकनीकों** को मुख्य कार्यपद्धति के रूप में स्थापित किया।

गांधीजी के तरीके और विधियां:

गांधीजी ने **जनसामान्य की व्यापक भागीदारी, रचनात्मक कार्य, वार्ता** और **संवैधानिक सहभागिता** के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

- **हड़ताल, बंद (अनशन) और सविनय अवज्ञा** के माध्यम से **जन-आंदोलन** ने ब्रिटिश शासन को चुनौती दी, जबकि **रचनात्मक कार्यक्रम** ने **खादी**, राष्ट्रीय शिक्षा और **अस्पृश्यता उन्मूलन** को बढ़ावा दिया गया।
- **संघर्ष विराम** के दौरान गांधीजी ने **गांधी-इरविन समझौते** जैसी वार्ताओं में भाग लिया, जिससे आंदोलन गतिशील बना रहा। **स्वराजवादियों** ने **साम्राज्यवाद-विरोधी प्रचार** के लिए **विधान परिषदों** का इस्तेमाल किया, कानूनी ढांचे के भीतर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी।

इन रणनीतियों ने आंदोलन की निरंतरता और मजबूती सुनिश्चित की। हालांकि, इनमें कुछ मुख्य सीमाएं भी थीं।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-1934)

उत्पत्ति (कारण):

- **साइमन कमीशन (1927)** के विरोध में **बहिष्कार।**
- पूर्ण स्वराज प्रस्ताव (1930) और गांधी के "ग्यारह सूत्रीय मांग" को लॉर्ड इरविन ने अस्वीकार कर दिया।
- ब्रिटिश नमक कानून और अन्य अन्यायपूर्ण नीतियों के खिलाफ असंतोष।

आंदोलन की रूपरेखा:

- **दांडी मार्च (1930):** गांधीजी ने 240 मील की यात्रा कर नमक कानून तोड़ा।
- अन्यायपूर्ण कानूनों, करों, विदेशी वस्त्रों, शराब की दुकानों और वन कानूनों का देशभर में उल्लंघन।
- **खान अब्दुल गफ्फार खान के खुदाई खिदमतगारों ने उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत में भाग लिया।**
- गांधी-इरविन समझौते (1931) के बाद अस्थायी स्थगन, 1932 में आंदोलन फिर से शुरू हुआ।

प्रभाव और महत्व:

- **महिलाओं** और **व्यापारी समुदाय** की भागीदारी में वृद्धि।
- **अहिंसक सविनय अवज्ञा** की शक्ति का वैश्विक प्रदर्शन।
- ब्रिटिश सरकार को कांग्रेस के साथ बातचीत करने के लिए मजबूर किया, जिससे **गोलमेज सम्मेलन** और **भारत सरकार अधिनियम (1935)** पारित हुआ।

गांधीवादी आंदोलनों की मुख्य सीमाएँ

- **"नियंत्रित जन आंदोलन" का विरोधाभास:** जन संघर्षों के दौरान कई बार हिंसा भड़क उठी, जो गांधीजी के अहिंसा के सिद्धांत के विपरीत था।
- **शासनात्मक दुविधाएं:** कांग्रेस के मंत्रिमंडल उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन का हिस्सा थे। इसके बावजूद उन्हें औपनिवेशिक कानूनों के तहत शासन करने में संघर्ष करना पड़ा।
- **वर्ग/जाति मुद्दों को पूरी तरह से संबोधित करने में विफलता: जाति उन्मूलन** के लिए गांधी का क्रमिक दृष्टिकोण अंबेडकर जैसे **कट्टरपंथी नेताओं** को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर सका।
- **सांप्रदायिकता और महिला संबंधी मुद्दे:** बढ़ती सांप्रदायिकता ने गांधीजी के एकता प्रयासों को आंशिक रूप से कमजोर किया, और राष्ट्रवादी लक्ष्यों में **महिलाओं की भागीदारी** गौण बनी रही।

गांधीवादी दर्शन और विचारधारा

- **आधुनिक सभ्यता की आलोचना:** गांधी ने पश्चिमी औद्योगीकरण को खारिज कर दिया और ग्राम-आधारित अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्वशासन की ओर लौटने का प्रस्ताव रखा।
- **सत्याग्रह और अहिंसा:** उनकी रणनीति का केंद्र बिंदु सत्याग्रह (आत्मबल) था, जिसमें अहिंसा के माध्यम से लोगों के हृदय-परिवर्तन का प्रयास किया गया।
- **समावेशिता और बहु-वर्गीय जन-संगठन:** गांधीजी ने विभिन्न सामाजिक समूहों और वर्गों को एकजुट किया, हिंदू-मुस्लिम एकता और **अस्पृश्यों** को राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल करने की वकालत की।

उनके नेतृत्व ने तीन प्रमुख अखिल भारतीय आंदोलनों में केंद्रीय भूमिका निभाई: **असहयोग आंदोलन (1920-22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34),** और **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)।**

3.4.1.1. भारत छोड़ो आंदोलन (1942): अंतिम जन आन्दोलन (The Quit India Movement (1942): The Final Mass Struggle)

1942 का **भारत छोड़ो आंदोलन** ब्रिटिश शासन के खिलाफ निर्णायक अंतिम जन संघर्ष था, जो **द्वितीय विश्व युद्ध** के दौरान **क्रिप्स मिशन** की विफलता से शुरू हुआ। **8 अगस्त, 1942** को बॉम्बे में कांग्रेस के अधिवेशन में महात्मा गांधी ने राष्ट्र को एक शक्तिशाली नारा दिया: **"करो या मरो।"**

इस आंदोलन की सबसे प्रमुख विशेषता ये थी कि यह **स्वतःस्फूर्त** और विकेंद्रीकृत था, जो ब्रिटिश सरकार द्वारा 9 अगस्त को सभी शीर्ष **कांग्रेस नेताओं** की गिरफ्तारी के बाद शुरू हुआ।

- **नेतृत्वविहीन विद्रोह:** नेतृत्व शून्यता के कारण, यह आंदोलन देशभर में स्वतःस्फूर्त रूप से फूट पड़ा, जिसमें छात्र, किसान और श्रमिक अपने स्वयं के मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर रहे थे।
- **आंदोलन के रूप:** संघर्ष ने कई रूप धारण किए—शुरुआती चरण में शहरी हड़तालों और प्रदर्शनों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीग्राफ तारों, रेलवे ट्रैक जैसी **संचार व्यवस्थाओं को नुकसान** पहुंचाया और सरकारी प्रतीकों पर हमला किया।
- **समानांतर सरकारें:** एक महत्वपूर्ण विकास कई क्षेत्रों में **समानांतर सरकारों (जातीय सरकारों)** का गठन था, जिनमें सबसे प्रसिद्ध **सतारा** (महाराष्ट्र) और **तामलुक** (बंगाल) की सरकारें थीं, जो काफी समय तक स्वतंत्र रूप से काम करती रहीं।
- **भूमिगत नेतृत्व: अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी** और जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने **भूमिगत नेटवर्क** के माध्यम से विद्रोह में समन्वय स्थापित किया।

यद्यपि इस आंदोलन को भारी दमन के साथ दबा दिया गया, फिर भी इसने ब्रिटिश सत्ता की नींव को पूरी तरह से हिला दिया। इसने यह स्पष्ट कर दिया कि युद्ध के बाद भारत में ब्रिटिश शासन अब अधिक समय तक नहीं टिक सकेगा, जिससे **सत्ता के अंतिम हस्तांतरण** का मार्ग प्रशस्त हो गया।

3.5. वामपंथ का उदय: 1930 के दशक में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप (The Rise of the Left: Shaping the National Movement in the 1930s)

1930 के दशक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भीतर **समाजवादी और साम्यवादी** विचारधाराओं का शक्तिशाली उदय हुआ। इन वामपंथी धाराओं ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को गहराई से प्रभावित किया—इसके आर्थिक एजेंडे को अधिक उग्र बनाया और मजदूरों तथा किसानों को संगठित कर एक व्यापक सामाजिक आधार तैयार किया।

कांग्रेस के आर्थिक एजेंडे का निर्माण करना

कांग्रेस के भीतर ही **वामपंथी नेताओं** विशेषकर **जवाहरलाल नेहरू** और **सुभाष चंद्र बोस** ने अधिक उग्र आर्थिक दृष्टिकोण को बल प्रदान किया।

- **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP): CSP** का गठन **1934** में जयप्रकाश नारायण और आचार्य नरेंद्र देव जैसे नेताओं द्वारा किया गया, जिसने कांग्रेस के भीतर एक दबाव समूह के रूप में कार्य किया, तथा यह स्वतंत्र भारत के लिए समाजवादी दृष्टिकोण की वकालत करता था।
- **नीतियों पर प्रभाव:** इस वामपंथी प्रभाव की झलक **1931 के कराची प्रस्ताव** में स्पष्ट रूप से दिखाई दी। पहली बार, इस प्रस्ताव ने एक **राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम** की रूपरेखा तैयार की जिसमें **मौलिक अधिकारों,** प्रमुख उद्योगों पर राज्य के स्वामित्व और श्रमिकों के लिए सुरक्षा के प्रावधान शामिल थे। वामपंथी नेताओं ने लगातार कांग्रेस के एजेंडे में **कृषि सुधार** और जमींदारी उन्मूलन जैसी अधिक किसान-समर्थक नीतियों को शामिल करने पर जोर दिया।

मजदूरों और किसानों को संगठित करना

समाजवादी और साम्यवादी अपनी आर्थिक शिकायतों के आधार पर जनता को संगठित करने में सबसे रहे, जिससे वर्ग संघर्ष को उपनिवेश विरोधी संघर्ष से जोड़ा गया।

- **किसान संगठन:** वे पूरे भारत में **किसान सभाओं (किसान संघों)** के गठन में सहायक थे। इन संगठनों ने किराए में कमी और सामंती करों की समाप्ति जैसी वर्ग-आधारित माँगों को एक आवाज़ प्रदान की, जिससे किसानों को राष्ट्रीय आंदोलन के लिए एक ऐसे स्तर पर संगठित किया गया जिसे पहले कभी नहीं देखा गया था।
- **मजदूर संगठन:** वामपंथी नेताओं ने **ट्रेड यूनियन आंदोलन** में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने प्रमुख शहरों में औद्योगिक मजदूरों को संगठित किया, हड़तालों का नेतृत्व किया और श्रमिकों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। जिससे शहरी श्रमिक वर्ग को व्यापक स्वतंत्रता संग्राम में सफलतापूर्वक शामिल कर लिया गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- "रचनात्मक कार्यक्रम केवल सामाजिक कार्य नहीं था, बल्कि गांधीजी की राजनीतिक जन आन्दोलन की रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।" विस्तार से बताइए। (150 शब्द)
- स्वतंत्रता आंदोलन और उसमें दलितों की भूमिका के संदर्भ में महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के बीच वैचारिक मतभेदों पर चर्चा कीजिए। (250 शब्द)
- महात्मा गांधी के नेतृत्व ने स्वतंत्रता संग्राम को एक अभिजात्य वर्ग के प्रयास से जन-आधारित राष्ट्रीय आंदोलन में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)

3.6. डॉ. बी.आर. अम्बेडकर: विचारधारा और विरासत (Dr B.R. Ambedkar: Ideology and Legacy)

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर भारत के **संविधान के प्रमुख निर्माता** और **दलित अधिकारों के अग्रणी समर्थक** थे, साथ ही वे सामाजिक न्याय और समानता की वकालत करते थे।

डॉ. अंबेडकर की विचारधारा

- **हिंदू समाज की आलोचना:** अंबेडकर ने **ब्राह्मणवाद** और **हिंदू धर्म** की आलोचना की, वे इसे **दलितों** और **महिलाओं** को **दास बनाने वाली व्यवस्था** के रूप में देखते थे। उन्होंने हिंदू समाज में **पूरी तरह से बदलाव** की मांग की और अस्पृश्यता के औचित्य के रूप में मानी जाने वाली **मनुस्मृति** को खारिज कर दिया।
- **धर्मनिरपेक्ष और राजनीतिक समाधान:** अंबेडकर का समाधान राजनीतिक और कानूनी था—उनकी मांगों में **शिक्षा के माध्यम से सशक्तीकरण, शिक्षा और रोजगार में आरक्षण**, तथा दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग शामिल थी। उन्होंने **मंदिर प्रवेश** जैसे धार्मिक सुधारों को अस्वीकार किया और **राजनीतिक सशक्तीकरण** पर ज़ोर दिया।
- **पृथक निर्वाचक मंडल:** डॉ. अंबेडकर की मुख्य मांग **दलितों** के लिए **पृथक निर्वाचक मंडल** थी, जिसे उनके **राजनीतिक प्रतिनिधित्व** के लिए आवश्यक माना गया। उनका तर्क था कि इसके बिना दलित हमेशा हाशिए पर ही रहेंगे।
- **दलितों के लिए विशिष्ट पहचान:** अंबेडकर के **अखिल भारतीय अनुसूचित जाति महासंघ** (1942) ने दलितों को हिंदुओं से **अलग और एक पृथक समुदाय** के रूप में व्यक्त किया, उन्होंने इस समुदाय की उनकी अपनी राजनीतिक पहचान की वकालत की।
- **बौद्ध धर्म में धर्मांतरण:** 1956 में, अंबेडकर ने **बौद्ध धर्म अपना लिया** जो कि हिंदू धर्म को अस्वीकार करने का प्रतीक था, उनका मानना था कि हिन्दू धर्म की विचारधाराएं अपरिवर्तनीय

दलित राजनीति में अंबेडकर की भूमिका

- **नामकरण और पहचान:** अंबेडकर ने "दलित" शब्द को लोकप्रिय बनाया, जो अछूतों पर होने वाले सामाजिक-आर्थिक शोषण का प्रतीक था। यह शब्द उन्हें औपनिवेशिक या गांधीवादी शब्दावली से अलग करता था।
- **संगठित आंदोलन:** अंबेडकर ने महाड़ सत्याग्रह (1927) जैसे महत्वपूर्ण आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिसमें दलितों के सार्वजनिक जल स्रोतों के अधिकार के लिए संघर्ष किया गया। साथ ही, उन्होंने कई राजनीतिक संगठनों की स्थापना की:
  - **अखिल भारतीय डिप्रेस्ड क्लासेज़ कांग्रेस (1930)**
  - **इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (1936)**
  - **अखिल भारतीय अनुसूचित जाति महासंघ (1942)**
- **सरकारी संरक्षण और प्रतिनिधित्व:** अंबेडकर को औपनिवेशिक राज्य से संरक्षण मिला, जिसने सुरक्षात्मक भेदभाव नीतियों का इस्तेमाल किया। उन्होंने एक तरफ दलितों का सीधा संबंध सरकार से स्थापित किया, लेकिन वहीं दूसरी तरफ उन्हें कांग्रेस से दूर कर दिया।
- **कांग्रेस से अलगाव:** अंबेडकर ने कांग्रेस के ब्राह्मणवादी वर्चस्व और जातिगत मुद्दों की उपेक्षा करते हुए तीखी आलोचना की। समय के साथ यह अलगाव गहराता गया, क्योंकि कांग्रेस ने जाति आधारित प्रश्नों को गंभीरता से नहीं लिया।

है। उन्होंने बौद्ध धर्म को एक क्रांतिकारी **सामाजिक विचारधारा** के रूप में पुनर्परिभाषित किया, जो **दलितों** को **वैश्विक स्तर** पर **एक वैकल्पिक दृष्टिकोण** और पहचान दे सकता था।

स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका

- **दलित अधिकारों पर केंद्रित:** कांग्रेस जहाँ औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती थी, वहीं अंबेडकर का मुख्य फोकस स्वतंत्र भारत में दलितों के अधिकारों और न्यायसंगत स्थिति को सुनिश्चित करने पर था। उनका मानना था कि दलितों का उत्पीड़न औपनिवेशिकवाद की तुलना में स्वतंत्रता ना मिलने का सबसे अधिक मौलिक रूप है।
- **स्वराज के लिए सशर्त समर्थन देना:** अंबेडकर स्वराज के लिए संघर्ष का समर्थन करने के लिए तैयार थे, लेकिन वे इसके लिए केवल तभी समर्थन देते जब उन्हें दलितों के लिए राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय का आश्वासन दिया जाता। इन गारंटियों के अभाव में, उन्होंने खुद को कांग्रेस से दूर कर लिया।
- **औपनिवेशिक संस्थाओं से संबंध:** जब कांग्रेस बहिष्कार की नीति का समर्थन कर रही थी, उस समय अंबेडकर ने साइमन कमीशन (1928) के सामने दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग रखते हुए बातचीत की, इसके बाद वे 1942 में वायसराय की कार्यकारी परिषद में भी शामिल हुए, ताकि मौजूदा औपनिवेशिक ढांचे के भीतर दलित अधिकारों की वकालत कर सकें।
- **जन आंदोलनों से दूरी:** अंबेडकर ने भारत छोड़ो आंदोलन (1942) से दूरी बनाए रखी, क्योंकि उन्होंने सत्ता के हस्तांतरण पर अपना ध्यान केंद्रित करने के बजाय हाशिए पर स्थित समूहों के लिए नागरिकता की शर्तों पर जोर दिया। उनके पास कांग्रेस के समान व्यापक जनसमर्थन और संसाधन का अभाव था, जिससे वे कांग्रेस के समान एक बड़ा जन आंदोलन खड़ा नहीं कर सके।

गांधीजी बनाम अंबेडकर

गांधी और **अंबेडकर** के बीच वैचारिक विभाजन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जटिल तनावों को दर्शाता है।

गांधी का **अस्पृश्यता** के प्रति दृष्टिकोण **नैतिक और धार्मिक** था, जिसका उद्देश्य हिंदू धर्म के भीतर सामाजिक शुद्धिकरण था, अंबेडकर स्वयं **जाति व्यवस्था** को ही समस्या की जड़ मानते थे, जिसके लिए उन्होंने **राजनीतिक** और **कानूनी सुधारों** की आवश्यकता पर बल दिया।

पूना पैक्ट (1932), जिसे गांधी ने दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों को रोकने के लिए आमरण अनशन के माध्यम से हासिल किया, उनके दृष्टिकोणों के बीच तनाव का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है।

गांधी जी जहां एकता को राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे, वहीं अंबेडकर का मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता के लिए **जाति के प्रश्न** को सीधे संबोधित करना आवश्यक है, जिस वजह से उनका अक्सर कांग्रेस से **अलगाव** रहता था, और **स्वतंत्र भारत** के लिए उनके लक्ष्यों में मतभेद होता था।

डॉ. अंबेडकर की विरासत

- **सामाजिक समानता और न्याय:** अंबेडकर ने दलितों के खिलाफ **सामाजिक-आर्थिक असमानताओं** को समाप्त करने पर जोर दिया। उनका मानना था कि स्वतंत्र भारत न केवल राजनीतिक रूप से मुक्त हो, बल्कि सामाजिक रूप से भी न्यायसंगत और एक समान हो।

- **नागरिकता और अधिकार:** उन्होंने **"वास्तविक नागरिकता"** (substantive citizenship) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है। इसके लिए हाशिए पर स्थित समुदायों को स्वतंत्र राष्ट्र में **समान अधिकार** और **प्रतिनिधित्व** मिलना चाहिए।
- **संविधान-निर्माण में योगदान:** अंबेडकर का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव **भारतीय संविधान** पर पड़ा, जहाँ उनके नेतृत्व ने सुनिश्चित किया कि **अस्पृश्यता** को समाप्त किया जाए और **अनुसूचित जातियों** के उत्थान के लिए **सकारात्मक कार्रवाई** को संस्थागत बनाया जाए।

3.7. स्वतंत्रता और विभाजन की ओर (Towards Independence and Partition)

3.7.1. सांप्रदायिकता का उदय और विभाजन की प्रक्रिया (The Rise of Communalism and the Process of Partition)

भारत में सांप्रदायिकता ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत एक ऐसी घटना के रूप में उभरी जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम की दिशा को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। यह इस विश्वास पर आधारित था कि धार्मिक समुदायों के **अलग-अलग धर्मनिरपेक्ष हित** होते हैं।

सांप्रदायिकता ने भारतीय समाज में गहरे विभाजन को जन्म दिया, जिसे **ब्रिटिश नीतियों** ने और अधिक बढ़ावा दिया, अंततः इसके परिणामस्वरूप **एक अलग मुस्लिम राष्ट्र** की मांग हुई और 1947 में **भारत का दुखद विभाजन** हुआ।

ब्रिटिश नीतियां और "फूट डालो और राज करो" की रणनीति

- **1857 के विद्रोह** के बाद, ब्रिटिश नीतियों का उद्देश्य भारतीय समाज को **विभाजित** करना था ताकि राष्ट्रवादी आंदोलन को कमजोर किया जा सके।
- **मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909)** ने मुसलमानों के लिए **पृथक निर्वाचन मंडल (separate electorates)** की शुरुआत की, जिससे दोनों समुदायों के लिए **अलग-अलग राजनीतिक पहचान** स्थापित हुई और आपसी मतभेदों की भावना को बढ़ावा मिला।
- **सरकारी नौकरियों** और **राजनीतिक नामांकन** में भेदभावपूर्ण **प्रशासनिक प्रथाओं** ने सांप्रदायिक विभाजन को और गहरा कर दिया।

मुस्लिम और हिंदू सांप्रदायिकता का विकास

- 1906 में स्थापित **ऑल इंडिया मुस्लिम लीग** ने शुरू में मुस्लिम अभिजात वर्ग के हितों की रक्षा की वकालत की थी, लेकिन 1940 के दशक में **मोहम्मद अली जिन्ना** के नेतृत्व में इसने **द्विराष्ट्र सिद्धांत (Two-Nation Theory)** का समर्थन किया, जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों के लिए अलग-अलग राष्ट्रों की मांग की गई।
- यह सिद्धांत इसलिए भी लोकप्रिय हुआ क्योंकि कई मुसलमानों को यह डर था कि स्वतंत्रता के बाद एक संयुक्त भारत में **हिंदू वर्चस्व** स्थापित हो जाएगा।
- इसी बीच, **हिंदू महासभा** और **RSS** जैसे **हिंदू राष्ट्रवादी संगठनों** ने भारत को **हिंदू राष्ट्र** के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे मुसलमानों के बीच अलगाव की भावना और सांप्रदायिक तनाव और भी बढ़ गया।

विभाजन का अंतिम चरण

1942 से 1946 के बीच हुई प्रमुख वार्ता विफल रहीं क्योंकि **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** और **मुस्लिम लीग** की परस्पर विरोधी मांगों को सुलझाया नहीं जा सका, और ब्रिटिश सरकार इस संबंध में कोई समाधान लागू करने में असमर्थ या अनिच्छुक रही।

- **क्रिप्स मिशन (1942):** इसमें युद्ध के बाद **डोमिनियन स्टेटस** (गणराज्य) का दर्जा देने का प्रस्ताव किया गया। **कांग्रेस** ने इसे तत्काल और **पूर्ण स्वतंत्रता** न मिलने के कारण ठुकरा दिया। **मुस्लिम लीग** ने इसे इसलिए अस्वीकार कर दिया क्योंकि इसमें **पाकिस्तान** के लिए कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं था।
- **वेवेल योजना एवं शिमला सम्मेलन (1945):** इस योजना के तहत प्रतिनिधित्व को लेकर गतिरोध के कारण अंतरिम सरकार बनाने का यह प्रयास विफल रहा। मुस्लिम लीग के नेता **एम.ए. जिन्ना** ने इस पर जोर देते हुए दावा किया कि केवल लीग ही मुस्लिम सदस्यों को नामित कर सकती है, जिसे कांग्रेस स्वीकार नहीं कर सकी।
- **कैबिनेट मिशन योजना (1946):** यह एकीकृत भारत के लिए अंतिम गंभीर प्रयास था, जिसमें एक जटिल त्रिस्तरीय संघीय ढांचे का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। हालांकि, शुरू में दोनों पक्षों ने इसे स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्होंने इसकी अलग-अलग व्याख्या की। अंततः यह योजना विफल हो गयी, जिसके परिणामस्वरूप लीग ने पाकिस्तान को एक अलग राष्ट्र बनाने के लिए **"प्रत्यक्ष कार्रवाई (Direct Action)"** का आह्वान किया।

3.7.1.1. भारत का विभाजन: स्वीकृति के कारण और इसकी विरासत (Partition of India: Reasons for Acceptance and its Legacy)

1947 में विभाजन के लिए माउंटबेटन योजना को स्वीकार कर लिया गया, जो कई कारकों का दुखद परिणाम था, जिसने एक जटिल और दर्दनाक विरासत को जन्म दिया।

- **योजना की स्वीकृति के लिए जिम्मेदार कारक:**
  - **सांप्रदायिक दंगे**: "डायरेक्ट एक्शन डे" (1946) के बाद हुई भयावह और व्यापक हिंसा ने कांग्रेस सहित कई नेताओं को यह विश्वास दिला दिया कि विभाजन एक ऐसी कड़वी दवा है, जिसे एक बड़े पैमाने पर गृहयुद्ध से बचने के लिए अपनाना आवश्यक था।
  - **विकल्पों की विफलता:** कैबिनेट मिशन योजना के विफल हो जाने के बाद एक संयुक्त भारत के लिए कोई ऐसा व्यावहारिक रास्ता नहीं बचा था जो कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों के लिए स्वीकार्य हो।
  - **ब्रिटिश की जल्दबाजी:** प्रधानमंत्री एटली के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार सत्ता का हस्तांतरण जल्दी से करना चाहती थी, जिससे लॉर्ड माउंटबेटन को दिए गए कम समय में एक जटिल, बातचीत से समझौता करना लगभग असंभव हो गया।
- **विभाजन की विरासत:**
  - **मानवीय आपदा:** इसके परिणामस्वरूप मानव इतिहास में सबसे बड़ा और सबसे हिंसक सामूहिक पलायन हुआ, जिसके साथ भारी रक्तपात और पीड़ा भी हुई।
  - **स्थायी राजनीतिक संघर्ष:** इसने भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय तक चलने वाली राजनीतिक और सैन्य प्रतिद्वंद्विता को जन्म दिया, जिसमें कश्मीर का मुद्दा विवाद का मुख्य केंद्र बना रहा।

- **गहरी जड़े जमा चुकी घटना:** विभाजन ने सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत को एक गहरा आघात पहुँचाया, जिससे आपसी समुदायों के बीच विभाजन हुआ और वर्तमान में भी इसका प्रभाव उपमहाद्वीप की पहचान और राजनीति पर बना हुआ है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- यह समझाइए कि ब्रिटिश की "फूट डालो और राज करो" की नीति ने भारत में सांप्रदायिक राजनीति के विकास को किस प्रकार बढ़ावा दिया। (150 शब्द)
- "भारत का विभाजन कई कारकों का परिणाम था, जिसमें ब्रिटिश नीतियां तथा हिंदू और मुस्लिम सांप्रदायिकता का उदय शामिल था।" आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)

आधुनिक भारतीय इतिहास: अभ्यास प्रश्न

1. अपने सैन्य परिणाम से परे, **पानीपत के तीसरे युद्ध (1761)** ने उत्तरी भारत के **राजनीतिक परिदृश्य** को कैसे नया आकार दिया और **इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी** के उदय को कैसे सुगम बनाया?
2. **बंगाल में द्वैध शासन (1765-1772) न्यूनतम जिम्मेदारी के साथ अधिकतम राजस्व निष्कर्षण** के लिए डिज़ाइन की गई एक प्रणाली थी। स्पष्ट कीजिए।
3. परीक्षण कीजिए कि **भारतीय रेलवे** के विकास ने, जिसे आधुनिकीकरण के एक उपकरण के रूप में प्रचारित किया गया था, मुख्य रूप से **ब्रिटिश औपनिवेशिक राज्य के रणनीतिक और आर्थिक हितों** की कैसे सेवा की।
4. चर्चा कीजिए कि **ब्रिटिश वन नीति ने आदिवासी समुदायों के उनके पर्यावरण के साथ पारंपरिक संबंध** को कैसे बदल दिया और **व्यापक प्रतिरोध** को जन्म दिया।
5. **18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी** की शुरुआत के **लोकप्रिय विद्रोह,** हालांकि अक्सर **स्थानीय एवं खंडित** थे, औपनिवेशिक घुसपैठ के खिलाफ **प्रतिरोध की एक सतत परंपरा** का प्रतिनिधित्व करते थे। चर्चा कीजिए।
6. विश्लेषण कीजिए कि **स्वदेशी आंदोलन,** एक पहले जन-आधारित अभियान के रूप में अपनी महत्ता के बावजूद, **मुस्लिम किसानों को संगठित करने में विफल** क्यों रहा और अंततः प्रारंभिक राष्ट्रवाद के **आंतरिक विरोधाभासों** को उजागर किया।
7. **गांधीजी की प्रतिभा अभिजात वर्ग की राजनीतिक आकांक्षाओं को किसान शिकायतों** के साथ जोड़कर एक **सच्चा राष्ट्रीय जन आंदोलन** बनाने की उनकी क्षमता में निहित थी। उनके प्रमुख अभियानों की उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।
8. **असहयोग आंदोलन (1920-22) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)** अपनी **कार्यप्रणाली** एवं जनभागीदारी की सीमा में काफी भिन्न थे। तुलना कीजिए और अंतर स्पष्ट कीजिए।
9. **गोलमेज सम्मेलनों (1930-32)** का उद्देश्य भारत के संवैधानिक भविष्य पर वार्ता करना था, लेकिन **सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और ब्रिटिश शासन द्वारा विभाजन को प्रबंधित करने की रणनीति** पर असंगत मतभेदों के कारण अंततः **विफल** रहे। चर्चा कीजिए।
10. **1930 के दशक में समाजवादी और कम्युनिस्ट धाराओं की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आर्थिक एजेंडे** को आकार देने तथा **श्रमिकों एवं किसानों को संगठित** करने में भूमिका पर चर्चा कीजिए।
11. **1942 का भारत छोड़ो आंदोलन एक नियंत्रित गांधीवादी सत्याग्रह से कम** और एक **सहज व बहुआयामी लोकप्रिय विद्रोह** अधिक था। स्पष्ट कीजिए।
12. प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रवाद की **दो प्रमुख धाराओं** के प्रतिनिधियों के रूप में **लोकमान्य तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले** के राजनीतिक उद्देश्यों और तरीकों की **तुलना कीजिए एवं अंतर स्पष्ट** कीजिए।
13. **लॉर्ड कर्जन** को अक्सर ऐसे वायसराय के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसने अपनी प्रशासनिक दक्षता और **प्रतिक्रियावादी नीतियों** के माध्यम से, विरोधाभासी रूप से **उग्रवादी राष्ट्रवाद** के विकास को **गति** दी। इस मूल्यांकन का परीक्षण कीजिए।

14. **गांधीवादी राष्ट्रीय आंदोलन** के प्रमुख आख्यानों को चुनौती देने और राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए एक पूर्व शर्त के रूप में **सामाजिक न्याय** की वकालत करने में **डॉ. बी.आर. अंबेडकर** की भूमिका का आकलन कीजिए।
15. **महात्मा गांधी और सुभाष चंद्र बोस के बीच रणनीतिक एवं वैचारिक मतभेदों** का मूल्यांकन कीजिए, विशेष रूप से **द्वितीय विश्व युद्ध** तथा स्वतंत्रता के मार्ग के संदर्भ में।
16. **1937 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों** का गठन, यद्यपि एक महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि थी, अनजाने में इसने **कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच खाई** को गहरा कर दिया। टिप्पणी कीजिए।
17. **1946 की कैबिनेट मिशन योजना** एक संयुक्त भारत के लिए **अंतिम व्यवहार्य अवसर** का प्रतिनिधित्व करती थी। इसकी **विफलता** के कारणों का विश्लेषण कीजिए और इसमें शामिल प्रमुख राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी का आकलन कीजिए।
18. **राष्ट्रवादी भावना को जागृत करने और ब्रिटिश वापसी की प्रक्रिया में तेजी लाने में आज़ाद हिंद फौज या आईएनए मुकदमा** की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
19. चर्चा कीजिए कि **1946 का रॉयल इंडियन नेवी (आरआईएन) विद्रोह** ब्रिटिश शासन के **ताबूत में अंतिम कील** कैसे साबित हुआ।

उत्तर के लिए संकेत

1. **पानीपत का तीसरा युद्ध: मराठों** के कमजोर पड़ने का उल्लेख कीजिए, जो भारत की प्रमुख शक्ति थे। तर्क दीजिए कि इसने उत्तरी भारत में एक **सत्ता शून्यता** उत्पन्न की, जिसका अंग्रेजों ने बाद में फायदा उठाया।
2. **द्वैध शासन:** बताएं कि अंग्रेजों ने **राजस्व (दीवानी)** को कैसे नियंत्रित किया, जबकि नवाब को बिना संसाधनों के **प्रशासनिक जिम्मेदारी (निज़ामत)** के साथ छोड़ दिया गया, जिससे शोषण हुआ।
3. **रेलवे:** दोहरे उद्देश्य पर चर्चा कीजिए: **कच्चे माल के निर्यात और सैनिकों की आवाजाही** को सुविधाजनक बनाना। तर्क दीजिए कि इसने भारतीय विकास से ज़्यादा ब्रिटिश औद्योगिक और साम्राज्यवादी हितों की सेवा की।
4. **वन नीतियां:** समझाएं कि नए कानूनों ने **आदिवासियों की आजीविका (स्थानांतरण खेती, चराई आदि)** के लिए वनों तक पहुंच को कैसे प्रतिबंधित कर दिया। उल्लेख कीजिए कि इससे पारंपरिक अधिकारों का नुकसान हुआ और कई आदिवासी विद्रोह हुए।
5. **लोकप्रिय विद्रोह: नागरिक, किसान और आदिवासी विद्रोहों** के उदाहरण दीजिए। तर्क दीजिए कि वे विशिष्ट औपनिवेशिक नीतियों के प्रति एक व्यापक लेकिन **स्थानीयकृत** प्रतिक्रिया थे, जो लगातार विरोध को दर्शाते हैं।
6. **स्वदेशी की सीमाएं: हिंदू पुनरुत्थानवादी** प्रतीकों के उपयोग का उल्लेख कीजिए, जिसने मुसलमानों को अलग-थलग कर दिया। **किसानों की शिकायतों** को दूर करने में इसकी विफलता पर चर्चा कीजिए, जिससे इसका जन-आधार सीमित हो गया।
7. **गांधी की विधि:** कांग्रेस के राजनीतिक लक्ष्यों को किसानों के मुद्दों जैसे **भू-राजस्व और नमक कर** से जोड़िए। **असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों** से उदाहरणों का उपयोग कीजिए।
8. **असहयोग आंदोलन बनाम सविनय अवज्ञा आंदोलन:** असहयोग आंदोलन के **असहयोग के लक्ष्य** की सविनय अवज्ञा आंदोलन के **कानून तोड़ने** के लक्ष्य से तुलना कीजिए। सविनय अवज्ञा आंदोलन में **महिलाओं और व्यावसायिक वर्गों की बढ़ी हुई भागीदारी** पर ध्यान दीजिए।
9. **गोलमेज सम्मेलन:** अल्पसंख्यकों के लिए अलग **निर्वाचक मंडल** पर गतिरोध समझाइये। **कांग्रेस** के संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करने के दावे के खिलाफ इन हितों को खेलने की ब्रिटिश नीति का उल्लेख कीजिए।
10. **वामपंथ की भूमिका: कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP)** के गठन का उल्लेख कीजिए। **कराची संकल्प (1931) और कृषि सुधार कार्यक्रमों** पर उसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

11. **भारत छोड़ो आंदोलन:** 9 अगस्त को **नेताओं की गिरफ्तारी** पर प्रकाश डालिए। **समानांतर सरकारों** और भूमिगत गतिविधियों के साथ, इसके परिणामस्वरूप **विकेन्द्रीकृत प्रकृति** पर चर्चा करें।
12. **तिलक बनाम गोखले:** तिलक की **उग्रपंथी विधियों (जन लामबंदी, स्वराज)** की तुलना गोखले के **उदारवादी दृष्टिकोण (संवैधानिक आंदोलन, ब्रिटिश न्याय में विश्वास)** से कीजिए।
13. **लॉर्ड कर्जन:** उसकी कुशल लेकिन निरंकुश नीतियों जैसे **विश्वविद्यालय अधिनियम** पर चर्चा कीजिए। तर्क दीजिए कि बंगाल का विभाजन (1905) उग्रपंथी राष्ट्रवाद के लिए अंतिम उत्प्रेरक था।
14. **अम्बेडकर की भूमिका:** दलित वर्गों के लिए अलग **निर्वाचक मंडल** की उनकी मांग पर ध्यान दीजिए। **पूना पैक्ट** और केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक **सामाजिक समानता** के लिए उनके लगातार तर्क पर चर्चा कीजिए।
15. **गांधी बनाम बोस:** गांधीजी के **अहिंसक सत्याग्रह** की तुलना **बोस की धुरी शक्तियों से विदेशी मदद मांगने और सशस्त्र संघर्ष (आईएनए) का उपयोग** करने की रणनीति से कीजिए।
16. **कांग्रेस मंत्रालय और लीग:** तर्क दीजिए कि **1937** के चुनावों के बाद मुस्लिम लीग के साथ **गठबंधन सरकारें** बनाने में कांग्रेस की **विफलता** ने लीग को अलग-थलग कर दिया और उसके दावों को मजबूत किया।
17. **कैबिनेट मिशन की विफलता:** प्रांतों के लिए **"समूहीकरण"** खंड पर गतिरोध तथा कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा **परस्पर विरोधी व्याख्याओं** को समझाएं।
18. **आईएनए (INA) मुकदमा:** आईएनए कैदियों के समर्थन में बड़े पैमाने पर **सार्वजनिक प्रदर्शनों** पर ध्यान केंद्रित कीजिए। समझाएं कि इसने भारतीयों को कैसे एकजुट किया और ब्रिटिश भारतीय सेना की वफादारी को कैसे तोड़ दिया।
19. **आरआईएन (RIN) विद्रोह:** समझाइए कि यह विद्रोह कैसे दर्शाता है कि अंग्रेज अब सशस्त्र बलों पर भरोसा नहीं कर सकते थे - जो उनके शासन की नींव थी, जिससे उनका **प्रस्थान आसन्न हो गया।**

4. आजादी के बाद का भारत (Post-Independence India)

4.1. राष्ट्र निर्माण की परियोजना (The Project of Nation-Building)

4.1.1. रियासतों का एकीकरण (Integration of Princely States)

स्वतंत्रता के समय, देश में **560 से अधिक रियासतें** थीं, जो विभिन्न राजाओं द्वारा शासित थीं और ये औपचारिक रूप से ब्रिटिश भारत का हिस्सा नहीं थीं। इन रियासतों का भारतीय संघ में विलय कूटनीति और निर्णायक कार्रवाई का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जो राष्ट्र की क्षेत्रीय एकता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था।

- **त्रि-स्तरीय रणनीति:**
  - रियासतों के एकीकरण का नेतृत्व देश के प्रथम गृह मंत्री **सरदार वल्लभभाई पटेल** ने किया। इस कार्य में उनके सचिव वी.पी. मेनन ने उनकी सहायता की।
  - उनकी रणनीति मुख्य रूप से अनुनय- विनय पर आधारित थी और देशी राजाओं में देशभक्ति की भावना को जगाने पर आधारित थी, ताकि वे **भारतीय संविधान सभा** में शामिल हो जाएं।
  - अधिकतर शासकों ने **विलय के दस्तावेज (Instrument of Accession)** पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत **रक्षा, विदेशी मामले और संचार** पर नियंत्रण भारत संघ को सौंप दिया गया, जबकि शुरू में आंतरिक स्वायत्तता बरकरार रखी गई।
- **विवादास्पद विलय:** जहां अधिकतर रियासतें शांतिपूर्वक भारत में शामिल हो गईं, लेकिन कुछ रियासतों ने गंभीर चुनौती पेश की। ये निम्नलिखित हैं:
  - **जूनागढ़:** यह एक ऐसी रियासत थी जहाँ कि बहुसंख्यक आबादी हिंदू थी, लेकिन वहां के मुस्लिम नवाब पाकिस्तान में शामिल होना चाहते थे। इस पर **जनमत संग्रह** कराया गया। इसमें भारी बहुमत से लोगों ने भारत में शामिल होने के पक्ष में वोट दिया।

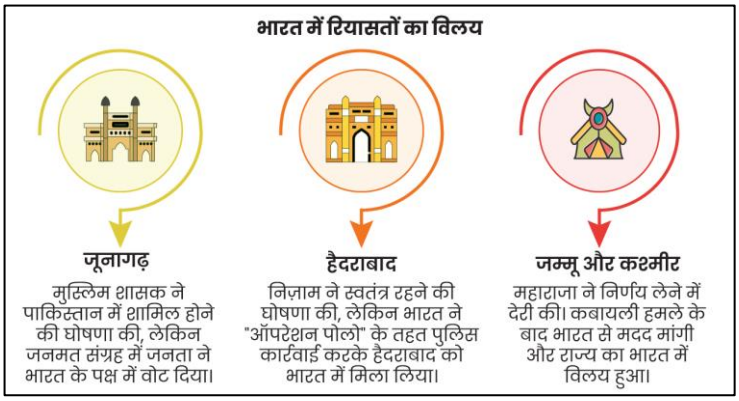

  - **हैदराबाद:** यहां के निजाम भारत में शामिल होने की बजाय स्वतंत्र रहना चाहते थे। इस दौरान, **रजाकार** नामक एक सशस्त्र और कट्टरपंथी समूह के उदय के कारण यहाँ की आंतरिक स्थिति बिगड़ गई। सितंबर 1948 में भारत ने **"ऑपरेशन पोलो"** नाम से एक पुलिस कार्रवाई

शुरू की, जिसके बाद निज़ाम की सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया और हैदराबाद का भारत में विलय हो गया।

- **जम्मू और कश्मीर:** यहां के शासक **महाराजा हरि सिंह** हिंदू थे, जबकि राज्य की आबादी मुस्लिम बहुल थी। शुरुआत में उन्होंने स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया।
  - **अक्टूबर 1947** में पाकिस्तान सेना द्वारा समर्थित कबायली हमलावरों ने कश्मीर पर हमला कर दिया। इससे महाराजा हरि सिंह को भारत से मदद मांगनी पड़ी।
  - उन्होंने **26 अक्टूबर, 1947** को **'विलय पत्र'** पर हस्ताक्षर किए। इसके बाद **भारत और पाकिस्तान** के बीच **पहला युद्ध (1947-48)** हुआ। भारत ने इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में उठाया, जिसके बाद युद्ध विराम हुआ और **'लाइन ऑफ कंट्रोल' (LoC)** की स्थापना हुई।

चुनौतियों के बावजूद, सिर्फ दो वर्षों में 560 से अधिक **रियासतों का भारत में विलय** एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। सैकड़ों **रियासतों** को एक **लोकतांत्रिक गणराज्य** की **प्रशासनिक इकाइयों** में बदल दिया गया। यह **एकीकरण प्रक्रिया भारतीय संघ की एकता और स्थिरता** के लिए बहुत जरूरी थी। इसने 1947 में भारत के **बाल्कनीकरण (टुकड़ों में बंटने)** के खतरे को टाल दिया

अभ्यास प्रश्न

- रियासतों के भारतीय संघ में विलय के दौरान सामने आए मुख्य प्रशासनिक मुद्दों और सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याओं का मूल्यांकन कीजिये। (150 शब्द)
- "जो कार्य ब्रिटिश अधिकारी दो सौ वर्षों की लगातार कोशिशों के बाद नहीं कर सके, उसे सरदार वल्लभभाई पटेल ने रियासतों की भावनाओं को स्पर्श करने वाले अपने प्रेरक अनुनय से पूरा कर दिया।" — इस कथन का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द)
- रियासतों का एकीकरण एक जटिल प्रक्रिया थी जिसमें कूटनीति, अनुनय-विनय और दबाव — तीनों का मिश्रण शामिल था। चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

4.1.2. कश्मीर: भारत के साथ एकीकरण (Kashmir: Integration with India)

The Hindustan Times

KASHMIR ACCEDES TO INDIA

PLEBISCITE SOON ON RULER'S DECISION

SHEIKH ABDULLA TO FORM INTERIM GOVT.

1947 में **जम्मू और कश्मीर का भारत में विलय** इस क्षेत्र के इतिहास में एक अहम मोड़ था। राज्य के **हिंदू शासक** महाराजा हरि सिंह शुरुआत में इस क्षेत्र को **एक स्वतंत्र देश** बनाना चाहते थे, लेकिन **पाकिस्तान समर्थित कबायली हमलावरों** के हमले के बाद उन्हें भारत से मदद मांगनी पड़ी। इसके बाद उन्होंने **भारत के साथ 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर** किए। इस घटना ने **भारत-पाकिस्तान के बीच पहला युद्ध** शुरू कर दिया, जिसका नतीजा **'लाइन ऑफ कंट्रोल' (LoC)** के रूप में सामने आया और तभी से यह क्षेत्रीय विवाद आज तक जारी है।

मुख्य बिंदु

- **महाराजा की दुविधा:** विलय का निर्णय बाहरी आक्रमण के दबाव में लिया गया। इससे इस क्षेत्र की रणनीतिक महत्ता उजागर हुई।
- **पहला भारत-पाकिस्तान युद्ध (1947-48):** इस युद्ध के बाद **LoC** के आधार पर कश्मीर का दो हिस्सों में विभाजन हुआ। इसके अलावा भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेदों के कारण संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रस्तावित **जनमत संग्रह** विफल हो गया।

- **अनुच्छेद 370:** कश्मीर को विशेष स्वायत्तता देने के लिए अनुच्छेद 370 लागू किया गया। लेकिन इसने कश्मीर की विशेष राजनीतिक स्थिति को और मजबूत कर दिया, जिससे इसे पूरी तरह भारत में मिलाना और जटिल हो गया।
- **आतंकवाद और पलायन:** 1980 के दशक में उग्रवाद बढ़ा और कश्मीरी पंडितों का बड़े पैमाने पर पलायन हुआ, जिससे क्षेत्र में अस्थिरता और बढ़ गई।
- **भू-राजनीतिक संकट क्षेत्र:** कश्मीर **भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का मुख्य कारण** बना रहा है — चाहे वह **कारगिल युद्ध** हो या **लाहौर शिखर सम्मेलन** जैसे कूटनीतिक प्रयास।

वर्ष 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने से जम्मू और कश्मीर की स्थिति में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। इस क्षेत्र को दी गई विशेष स्वायत्तता को समाप्त कर, भारत ने **जम्मू और कश्मीर को राष्ट्रीय ढांचे में और मजबूती से जोड़ा**। इस कदम से **अलगाववादी भावनाओं और उग्रवाद को कम करने में** मदद मिली, जो लंबे समय से भारत के साथ इस क्षेत्र की एकता को चुनौती दे रहे थे।

इसने जम्मू-कश्मीर पर देश की संप्रभुता को फिर से मजबूत किया, जिससे बाहरी हस्तक्षेप की संभावना कम हो गई। यह संदेश साफ हो गया कि आतंकवाद और विद्रोह के जरिए कश्मीर को भारत से अलग नहीं किया जा सकता।

अभ्यास प्रश्न
जम्मू और कश्मीर के विलय की परिस्थितियों और उसकी प्रकृति ने अन्य रियासतों की विलय की प्रक्रिया की तुलना में, राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया के लिए किस प्रकार विशिष्ट चुनौतियां प्रस्तुत की? (10 अंक, 150 शब्द)

4.1.3. राज्यों का भाषाई आधार पर पुनर्गठन (The Linguistic Reorganization of States)

स्वतंत्रता के पहले दो दशकों में भारत की आंतरिक सीमाओं को भाषाई आधार पर फिर से तय करने की मांग सबसे प्रभावशाली राजनीतिक आंदोलनों में से एक थी। **भाषा के आधार पर राज्यों का गठन करने का सिद्धांत** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का एक पुराना वादा था। पहली बार **1917** में ही **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** ने भाषाई प्रांतों के निर्माण के विचार को अपनाया था, जिसे **महात्मा गांधी** ने भी पूरी तरह समर्थन दिया था।

- **शुरुआती झिझक और प्रारंभिक आयोग:**
  - नेहरू सहित राष्ट्रीय नेतृत्व, शुरू में इस बात को लेकर चिंतित था कि भाषाई आधार पर राज्य बनाने से अलगाववाद को बढ़ावा मिलेगा और राष्ट्रीय एकता कमजोर हो सकती है।
  - **धर आयोग (1948)** और **जे.वी.पी. समिति** (1948) (इसमें नेहरू, पटेल और पट्टाभि सीतारमैया शामिल थे) ने भाषाई आधार पर राज्यों के गठन के खिलाफ सुझाव दिया और प्रशासनिक सुविधा को प्राथमिकता दी।

- **निर्णायक मोड़: आंध्र आंदोलन:**
  - मद्रास प्रेसीडेंसी से तेलुगु भाषी लोगों के लिए एक अलग आंध्र राज्य की मांग को लेकर एक बड़ा जन आंदोलन शुरू हुआ।

- **1952** में **पोट्टि श्रीरामुलु** की 58 दिन की भूख हड़ताल के बाद मृत्यु हो गई। इससे बड़े पैमाने पर दंगे भड़क उठे और सरकार को मजबूरन भाषाई आधार पर राज्यों के गठन की दिशा में कदम उठाना पड़ा।

- **राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Commission: SRC):**
  - आंध्र राज्य के गठन ने देशभर में भाषाई आधार पर राज्यों के गठन की मांगों को बढ़ावा दिया।
  - सरकार ने 1953 में **राज्य पुनर्गठन आयोग** की नियुक्ति की,, जिसके सदस्य **फजल अली, के.एम. पणिक्कर और एच.एन. कुंजरू** थे।
  - आयोग की 1955 की रिपोर्ट के आधार पर **राज्यों का पुनर्गठन अधिनियम, 1956** पारित किया गया। इसने भाषाई आधार पर मुख्य रूप से **14 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों** के गठन की सिफारिश की, साथ ही राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक दक्षता को भी ध्यान में रखा गया।
  - द्विभाषी **बॉम्बे राज्य** को **1960** में **महाराष्ट्र** और **गुजरात** में विभाजित कर दिया गया था।
  - **1966** में **पंजाब** राज्य को तीन भागों में बाँटा गया — **पंजाब** (पंजाबी भाषियों के लिए), **हरियाणा** (हिंदी भाषियों के लिए), और **हिमाचल प्रदेश**।

अंततः **भाषाई आधार** पर राज्यों का पुनर्गठन भारत की एकता के लिए एक आवश्यक कदम साबित हुआ। इसने क्षेत्रीय आकांक्षाओं को सम्मान दिया और साथ ही भारत की **संघीय संरचना** को भी मजबूत किया। यह दिखाया गया कि एक देश अपनी **विविधता** को अपनाकर भी एकजुट रह सकता है।

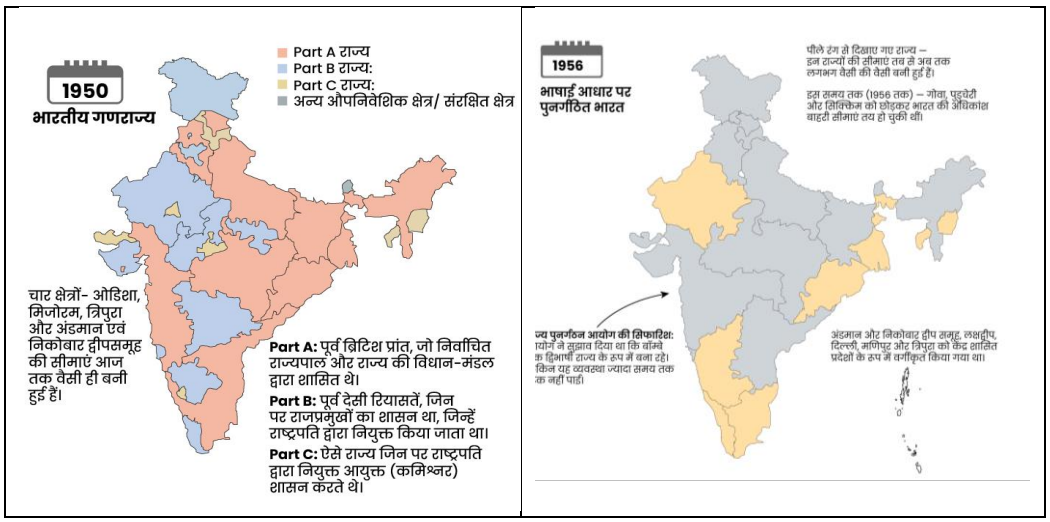

4.1.4. भारत की जनजातीय (आदिवासी) समुदायों का एकीकरण (Consolidation of India's Tribal Communities)

विविध जनजातीय आबादी (आदिवासियों) को राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल करना तथा उनकी विशिष्ट संस्कृतियों को संरक्षित करना एक नाजुक संतुलन का कार्य था।

- **नेहरूवादी नीति:** जवाहरलाल नेहरू ने आदिवासियों को एक ही संस्कृति के तहत "समाहित करने" (assimilation) की बजाय "एकीकरण" (integration) की नीति को बढ़ावा दिया। उन्होंने जनजातियों को संग्रहालय की वस्तु की तरह अलग-थलग रखने और उन्हें जबरन बहुसंख्यक संस्कृति में मिलाने की बजाय, इन दोनों के बीच एक मध्यम मार्ग अपनाने की वकालत की।
- इस दृष्टिकोण को उन्होंने **"जनजातियों के लिए पंचशील"** के माध्यम से स्पष्ट किया, जिसमें निम्नलिखित मुख्य सिद्धांत शामिल थे:
  - उनके स्वभाव और विशेषताओं के अनुरूप विकास होना चाहिए।

    - भूमि और जंगलों पर उनके अधिकारों का सम्मान किया जाए।
    - जनजातीय लोगों को प्रशासन और विकास कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया जाए।
    - अत्यधिक शासन और जटिल योजनाओं से बचा जाए।
    - परिणामों का मूल्यांकन आंकड़ों से नहीं, बल्कि विकसित हुए मानवीय चरित्र की गुणवत्ता से किया जाए।
- **संवैधानिक सुरक्षा उपाय:**
    - संविधान जनजातीय समुदायों को विशेष संरक्षण प्रदान करता है।
    - **पांचवीं अनुसूची** अधिकतर राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों पर लागू होती है और राज्यपाल को आदिवासी भूमि और हितों की रक्षा के लिए विशेष शक्तियाँ प्रदान करती है।
    - **छठी अनुसूची असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम** के जनजातीय क्षेत्रों में स्वायत्त जिला परिषदों (ADCs) के गठन का प्रावधान करती है। यह उन्हें स्वशासन की महत्वपूर्ण शक्तियां प्रदान करती है।
- **विकास और पहचान से जुड़ी चुनौतियां:**
    - संवैधानिक सुरक्षा उपायों के बावजूद, जनजातीय समुदायों को निम्नलिखित कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा:
        - बाँध और खनन जैसी बड़ी विकास परियोजनाओं के कारण उनका **विस्थापन** हुआ।
        - साहूकारों द्वारा **शोषण** और जंगलों पर पारंपरिक अधिकारों का हनन।
        - देश के कुछ क्षेत्रों में विशेष रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्रों में उपेक्षा और अलगाव की भावना के कारण उग्रवाद और **अलगाववादी** आंदोलनों ने जन्म लिया।

अभ्यास प्रश्न:

- स्वतंत्र भारत के नेता, जिन्होंने शुरुआत में भाषाई प्रांतों के विचार का समर्थन किया था, 1947 के तुरंत बाद इसे लागू करने में क्यों हिचकिचाने लगे? (150 शब्द)
- "भाषाई राज्यों के निर्माण ने भारत को कमजोर करने की बजाय उसे और मजबूत बनाया है।" आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए (250 शब्द)
- पोट्टि श्रीरामुलु की मृत्यु के बाद आंध्र प्रदेश का गठन राज्यों के भाषाई पुनर्गठन में एक निर्णायक मोड़ था। भारत के आंतरिक मानचित्र को पुनः निर्धारित करने की प्रक्रिया पर आंध्र आंदोलन के प्रभाव को विस्तार से समझाइए। (250 शब्दों में)

4.2. लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं और राजनीतिक परिस्थितियां (Democratic Processes and Political Dynamics)

4.2.1. नेहरू युग (1947–1964): सहमति और चुनौतियां (The Nehruvian Era (1947-1964): Consensus and Challenges)

यह अवधि, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, भारत की लोकतांत्रिक परंपराओं और विकास पथ को स्थापित करने में आधारभूत रही। इस समय को अक्सर मुख्य मुद्दों पर व्यापक राजनीतिक सहमति की विशेषता के रूप में देखा जाता है।

- **"कांग्रेस प्रणाली":** राजनीतिक-विज्ञानी **रजनी कोठारी** ने कांग्रेस की एकदलीय प्रधानता को सत्तावादी नहीं, बल्कि एक "अंब्रेला" पार्टी के रूप में वर्णित किया, जो आंतरिक गुटों को प्रबंधित करती थी और विपक्षी आवाज़ों को अपने में समाहित कर लेती थी।
    - कांग्रेस ने पहले तीन आम चुनावों **(1952, 1957, 1962)** में स्पष्ट बहुमत हासिल किया, जिससे देश में राजनीतिक स्थिरता बनी रही।

- **मुख्य नीतियां और उपलब्धियाँ:**
  - **सामाजिक-आर्थिक सुधार:** भारी विरोध के बावजूद हिंदू कोड बिलों को पारित करना (जिसमें हिंदुओं के लिए विवाह, तलाक, उत्तराधिकार आदि से जुड़े कानूनों को संहिताबद्ध किया गया) लैंगिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
  - **विकासात्मक दृष्टि:** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) और **भाखड़ा-नांगल बांध** जैसी प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं के माध्यम से बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण पर जोर दिया गया। नेहरू ने इन्हें **"आधुनिक भारत का मंदिर"** कहा था।
- **मुख्य चुनौतियां:**
  - **चीन-भारत युद्ध (1962):** चीन के साथ संक्षिप्त लेकिन क्रूर सीमा युद्ध भारत के लिए एक बड़ा सैन्य और मनोवैज्ञानिक झटका था। इसने नेहरू के एशियाई एकजुटता के दृष्टिकोण को चकनाचूर कर दिया और भारत की सैन्य तैयारियों की कमी को उजागर किया।
  - **गरीबी और असमानता:** योजनाओं के बावजूद देश में गरीबी और अशिक्षा जैसी समस्याएं बड़े स्तर पर बनी रहीं।

4.2.2. विपक्षी पार्टियों का उदय (The Rise of Opposition Parties)

कांग्रेस का वर्चस्व जारी रहा, लेकिन आजादी के बाद का दौर विपक्ष से खाली नहीं रहा। अलग-अलग विचारधाराओं वाली कई पार्टियां उभरकर सामने आईं, जिन्होंने जनता की आवाज उठाने और सत्ताधारी पार्टी पर नियंत्रण रखने में अहम भूमिका निभाई।

- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI): पहली लोकसभा (1952) में **CPI मुख्य विपक्षी पार्टी** थी। केरल, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश में इसकी पकड़ मजबूत थी।
  - **1957** में, CPI ने केरल में **ई.एम.एस. नंबूदरीपाद** के नेतृत्व में **दुनिया की पहली लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई कम्युनिस्ट सरकार** का गठन किया।
- **समाजवादी पार्टियाँ:** इनकी जड़ें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में ही निहित थीं। **जयप्रकाश नारायण (जे.पी.), राम मनोहर लोहिया** और **आचार्य नरेंद्र देव** जैसे नेताओं ने विभिन्न समाजवादी संगठनों का गठन किया।
  - वे वैचारिक रूप से विखंडित और संगठनात्मक रूप से कमजोर थे, जिससे वे कांग्रेस को एकजुट रूप से चुनौती देने में असमर्थ थे। लोहिया नेहरू के कटु आलोचक और कांग्रेस की नीतियों के कट्टर विरोधी थे।
- **भारतीय जनसंघ (BJS):** श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में 1951 में स्थापित BJS, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की राजनीतिक शाखा थी।
  - इसकी विचारधारा हिंदू राष्ट्रवाद और एकात्मक राज्य प्रणाली पर आधारित थी।
  - यह संगठन अनुच्छेद 370 को हटाने, समान नागरिक संहिता लागू करने और गौहत्या पर प्रतिबंध लगाने की वकालत करता था। यह **वर्तमान भारतीय जनता पार्टी (BJP)** का पूर्ववर्ती संगठन था।

4.2.3. आपातकाल (1975-1977): भारतीय लोकतंत्र के लिए परीक्षा की घड़ी (The Emergency (1975-1977): A Test for Indian Democracy)

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा घोषित 21 महीनों की आपातकाल की अवधि को भारत के लोकतांत्रिक इतिहास का सबसे काला अध्याय माना जाता है। यह देश के संवैधानिक ढांचे पर एक गंभीर चोट थी।

संदर्भ और उद्घोषणा:

- उस समय देश में महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार के कारण जनता में भारी असंतोष था। इसी कारण बिहार और गुजरात से शुरू हुआ छात्र आंदोलन, **जयप्रकाश नारायण** के नेतृत्व में "संपूर्ण क्रांति" के रूप में एक देशव्यापी आंदोलन बन गया।
- **12 जून, 1975** को **इलाहाबाद हाई कोर्ट** का एक फैसला आया, जिसमें इंदिरा गांधी को चुनावी गड़बड़ी का दोषी पाया गया और कोर्ट ने उनके चुनाव को रद्द कर दिया। यही घटना आपातकाल की तात्कालिक वजह बनी।
- **25 जून, 1975** को, भारत के राष्ट्रपति ने **"आंतरिक सुरक्षा"** को खतरा का हवाला देते हुए संविधान के **अनुच्छेद 352** के तहत देश में आपातकाल की घोषणा कर दी।

लोकतंत्र और नागरिक स्वतंत्रता पर प्रभाव:

- **मौलिक अधिकारों का निलंबन:** इस दौरान नागरिक स्वतंत्रताएं छीन ली गईं और प्रेस की स्वतंत्रता को सेंसरशिप के माध्यम से गंभीर रूप से प्रतिबंधित किया गया।
- **विपक्षी नेताओं की गिरफ्तारी:** जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे हजारों राजनीतिक विरोधियों को **मीसा (Maintenance of Internal Security Act)** जैसे कानूनों के तहत हिरासत में ले लिया गया।
- **तानाशाही प्रवृत्तियाँ:** इस समय एक विवादास्पद **20-सूत्रीय कार्यक्रम** और संजय गांधी के नेतृत्व में जबरन **नसबंदी अभियान** चलाए गए।
    - **42वें संविधान संशोधन अधिनियम (1976)** पारित किया गया, जिसने संविधान में बड़े बदलाव किए, जैसे- कार्यपालिका को अधिक शक्ति दी और न्यायिक समीक्षा की शक्तियों को कम किया।

एक चौंकाने वाले कदम के रूप में, इंदिरा गांधी ने मार्च 1977 में आम चुनाव कराने की घोषणा की। विपक्षी दलों ने एकजुट होकर **जनता पार्टी** का गठन किया, जिसने "लोकतंत्र की बहाली" के नारे पर चुनाव लड़ा। जनता पार्टी को भारी जीत मिली और यह **पहली बार था जब केंद्र में किसी गैर-कांग्रेस सरकार** ने सत्ता संभाली।

आपातकाल से क्या सीख मिली?

आपातकाल ने यह सिखाया कि **लोकतंत्र एक नाज़ुक व्यवस्था** है, जिसे **स्वतंत्र प्रेस** और **स्वतंत्र न्यायपालिका** की मदद से सुरक्षित रखना जरूरी है।

- इसने सरकार के अतिक्रमण के विरुद्ध **संविधान की रक्षा** करने में **नागरिकों और चुनावों की अंतिम शक्ति** को सिद्ध कर दिया।
- इस घटना ने यह उजागर किया कि **मौलिक अधिकार** कितने महत्वपूर्ण हैं, और उनके निलंबन से कितना बड़ा खतरा पैदा हो सकता है।
- अंततः, यह घटना एक महत्वपूर्ण सबक देती है कि **सत्ता का केंद्रीकरण** कितना खतरनाक हो सकता है और लोकतंत्र में **सत्ता के संतुलन** को बनाए रखना कितना जरूरी है।

4.2.4. क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय पार्टियों का उदय (Regionalism and The Rise of Regional Parties)

1960 के दशक से शुरू होकर और उसके बाद तेजी से बढ़ते हुए, अलग-अलग **क्षेत्रीय पहचान** की भावना ने शक्तिशाली **क्षेत्रीय राजनीतिक पार्टियों** को जन्म दिया। इससे भारत की **संघीय व्यवस्था (फेडरलिज्म)** की प्रकृति में बड़ा बदलाव आया।

क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने वाले कारक

- **भाषाई पहचान:** जैसे कि भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन में देखा गया, भाषा वास्तव में क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने वाला एक प्रमुख कारण रही है।
- **आर्थिक असमानता:** उपेक्षा और असमान विकास की भावना ने अधिक **क्षेत्रीय स्वायत्तता** और संसाधनों पर नियंत्रण की मांग को जन्म दिया।
- **सांस्कृतिक विशिष्टता:** खासकर **पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत** में, विशिष्ट **सांस्कृतिक और नृजातीय पहचान** को लेकर क्षेत्रीयता की भावना और मजबूत हुई है।

मुख्य क्षेत्रीय पार्टियां और आंदोलन:

- **द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK) – तमिलनाडु:** 1960 के दशक में हिंदी विरोधी आंदोलन के चलते DMK ने 1967 में सत्ता हासिल की। यह भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव था। इस पार्टी ने द्रविड़ पहचान और राज्य को अधिक स्वायत्तता देने की वकालत की।
- **शिरोमणि अकाली दल – पंजाब:** यह पार्टी सिख समुदाय की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती थी। इसकी मांग पर 1966 में पंजाबी भाषा-आधारित राज्य (पंजाबी सूबा) का गठन हुआ। बाद में, **आनंदपुर साहिब संकल्प (1973)** में राज्य के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग की गई, जो बाद में 1980 के दशक के पंजाब संकट का एक बड़ा कारण बना।
- **तेलुगु देशम पार्टी (TDP) – आंध्र प्रदेश:** इस पार्टी की स्थापना **एन.टी. रामाराव** ने **तेलुगु स्वाभिमान (गौरव)** के नारे के साथ की थी। TDP ने 1983 में राज्य में कांग्रेस के एकाधिकार को तोड़ते हुए सत्ता में आई।

भारतीय राजनीति पर प्रभाव:

क्षेत्रीय पार्टियों के उदय ने **राष्ट्रीय पार्टियों का वर्चस्व कमजोर** कर दिया और **1989 से केंद्र में गठबंधन सरकारों** का दौर शुरू हुआ। इससे भारत की **संघीय प्रणाली (फेडरल सिस्टम)** अधिक **परामर्श आधारित** और **समझौते पर आधारित** हो गई है।

4.2.5. दलित राजनीति: सामाजिक आंदोलन से राजनीतिक सत्ता तक (Dalit Politics: From Social Movement to Political Power)

दलितों की मुक्ति के लिए संघर्ष, आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह संघर्ष शोषणकारी जाति व्यवस्था के खिलाफ शुरू हुआ था। समय के साथ, दलित राजनीति एक सामाजिक सुधार आंदोलन से आगे बढ़कर एक मजबूत राजनीतिक ताकत बन गई, जिसने देश के चुनावी माहौल को बदलकर रख दिया।

आंबेडकरवादी विरासत और प्रारंभिक दौर:

आधुनिक दलित राजनीति की नींव **डॉ. भीमराव अंबेडकर** ने रखी थी। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि सामाजिक मुक्ति तब तक अधूरी है, जब तक दलितों को **राजनीतिक शक्ति** नहीं मिलती।

- **अंबेडकर का विजन:** उन्होंने **"शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित हो"** का मंत्र दिया। उन्होंने संविधान में **अनुसूचित जातियों (SCs)** के लिए **राजनीतिक आरक्षण** सुनिश्चित कराया, जिससे दलितों को प्रतिनिधित्व का रास्ता मिला।
- **रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI):** अंबेडकर की मृत्यु के बाद, उनके अनुयायी **रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI)** के अंतर्गत एकजुट हो गए। हालांकि इस पार्टी का प्रभाव कुछ ही क्षेत्रों में था, खासकर महाराष्ट्र में, लेकिन लेकिन यह पार्टी विभाजित रही और राष्ट्रीय स्तर की एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति नहीं बन पाई।

कट्टरपंथी जागृति: दलित पैंथर्स

1970 के दशक में एक बड़ा बदलाव आया, जब अधिक मुखर और कट्टरपंथी दलित चेतना का उदय हुआ।

- **गठन और विचारधारा: 1972** में **महाराष्ट्र** के कुछ शिक्षित और युवा दलितों ने **दलित पैंथर्स** का गठन किया। यह आंदोलन अमेरिका के **ब्लैक पैंथर पार्टी** से प्रेरित था। इन युवाओं ने पुरानी पीढ़ी की गिड़गिड़ाने वाली राजनीति को ठुकरा दिया।
- **आत्म-सम्मान पर जोर:** इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था रोजमर्रा के अत्याचारों और भेदभाव के खिलाफ **आत्म-सम्मान (अस्मिता)** और **गरिमा** की लड़ाई लड़ना। उन्होंने अपने विद्रोह के संदेश को फैलाने के लिए शक्तिशाली भाषणों, कविताओं और साहित्य का इस्तेमाल किया। **दलित पैंथर्स** ने निर्भरता की राजनीति से एक मनोवैज्ञानिक दूरी बना ली, जो दलित आंदोलन में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

सत्ता पर कब्जा: कांशीराम और बहुजन समाज पार्टी (BSP)

1980 के दशक में दलित राजनीति में सबसे महत्वपूर्ण विकास हुआ: राज्य सत्ता पर आसीन होने के लिए चुनाव का मार्ग

- **आंदोलन के सूत्रधार:** इस आंदोलन के प्रमुख नेता **कांशीराम** थे। उन्होंने सबसे पहले शिक्षित और सरकारी नौकरी करने वाले दलितों व पिछड़ी जातियों को **BAMCEF** (ऑल इंडिया बैकवर्ड एंड माइनॉरिटी कम्युनिटीज़ एम्प्लॉईज फेडरेशन) के तहत संगठित किया।
- **सामाजिक से राजनीतिक बदलाव:** कांशीराम का मानना था कि राजनीतिक शक्ति के बिना सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं है। इसी सोच के तहत उन्होंने **1984** में **बहुजन समाज पार्टी (BSP)** की शुरुआत की।
- **"बहुजन" विचारधारा:** BSP की मुख्य विचारधारा थी **"बहुजन" (बहुसंख्यक)** को एकजुट करना, जिसमें **SC, ST, OBC और धार्मिक अल्पसंख्यक** शामिल थे। इसका उद्देश्य उन **उच्च जातियों** के वर्चस्व को चुनौती देना था जो राजनीति पर हावी थीं। इनका शक्तिशाली नारा था: **"वोट हमारा, राज तुम्हारा"**।
- **मायावती का उदय:** बहुजन समाज पार्टी (BSP) को उसकी सबसे बड़ी राजनीतिक सफलता भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य **उत्तर प्रदेश** में मिली। कांशीराम की शिष्या **मायावती** चार बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं। उनका उदय दलित राजनीतिक सशक्तिकरण की चरम सफलता का प्रतीक बना — जहाँ दलित समाज **सिर्फ वोट बैंक** भर नहीं रहा, बल्कि उसने राज्य की सर्वोच्च कार्यकारी सत्ता तक पहुँच बना ली।

4.2.6. स्वतंत्रता के बाद भारत में अलगाववादी आंदोलन (Separatist Movements in Post-Independence India)

भारत के एक राष्ट्र के रूप में सफर में सबसे बड़ी चुनौती उसकी अत्यधिक विविधता को साथ लेकर चलने की रही है। हालाँकि अधिकांश समुदायों ने भारतीय पहचान को अपनाया, लेकिन कुछ ऐसे आंदोलन भी उभरे जो भारतीय संघ से अलग होने की मांग करने लगे।

इन आंदोलनों के पीछे कई कारण थे, जैसे:

- विशेष **नृजातीय (एथनिक) पहचान**,
- **आर्थिक उपेक्षा** की भावना,
- **ऐतिहासिक भेदभाव ,**और कई बार,
- पड़ोसी देशों से मिला **बाहरी समर्थन**।

पूर्वोत्तर भारत में नृजातीय संघर्ष और अलगाववाद: कारण और प्रतिक्रियाएँ

स्वतंत्रता के बाद पूर्वोत्तर भारत भारत में अपनाई गई नीतियाँ अक्सर वहाँ की **जटिलताओं और विविधताओं** को ठीक से समझने में विफल रहीं। इसी कारणवश वहाँ कई बार **नृजातीय संघर्ष** और **अलगाववादी आंदोलन** देखने को मिले।

संघर्ष के मुख्य कारण:

- **मनमाने तरीके से राज्य का गठन: असम** से अलग करके **नागालैंड** और **मिजोरम** जैसे राज्यों का गठन किया गया। इससे संसाधनों और राजनीतिक शक्ति पर नियंत्रण को लेकर **अलग-अलग नृजातियों के बीच प्रतिस्पर्धा** को जन्म दिया।
- **असम में जनसांख्यिकीय असुरक्षा: बांग्लादेश** से बड़े पैमाने पर **अवैध प्रवास** के कारण **असम आंदोलन** शुरू हुआ। असम के लोग अपनी **सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक अधिकारों** को लेकर डरे हुए थे।
- **केंद्रीकृत नीतियां: एक समान प्रशासनिक व्यवस्था** थोपना और **AFSPA {सशस्त्र बल (विशेष शक्तियां) अधिनियम}** जैसे कानूनों को लागू करने से स्थानीय आबादी अलग-थलग पड़ गई और राज्य द्वारा उत्पीड़न की धारणा को बढ़ावा मिला।
- असम में **ULFA**, नागा विद्रोह और मिज़ो नेशनल फ्रंट जैसे आंदोलन इन्हीं **असंतोषों** के प्रत्यक्ष परिणाम थे।

सरकार की प्रतिक्रिया:

इन आंदोलनों के जवाब में भारत ने **बहुआयामी रणनीति** अपनाई —

- एक ओर **सेना द्वारा नियंत्रण**, दूसरी ओर **राजनीतिक समझौता**, जैसे कि – **असम समझौता (1985), मिजोरम समझौता (1986)**।
- इसके साथ ही, **छठी अनुसूची** के तहत **क्षेत्रीय स्वायत्तता** भी प्रदान की गई।

4.2.6.1. पंजाब और खालिस्तान आंदोलन (Punjab and the Khalistan Movement)

"खालिस्तान" नामक एक अलग सिख राष्ट्र की मांग ने 1980 के दशक में पंजाब को हिंसा और अशांति के एक लंबे दौर में धकेल दिया।

- **उद्भव:** यह आंदोलन **आनंदपुर साहिब संकल्प** में व्यक्त की गई शिकायतों से उभरा, जिसमें पंजाब के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग की गई थी। लेकिन बाद में **उग्रवादी नेता जरनैल सिंह भिंडरावाले** ने इसे एक धार्मिक राष्ट्र (थियोक्रेटिक स्टेट) की मांग में बदलते हुए हिंसक रूप दे दिया।
- **तनाव और प्रमुख घटनाएं:**
  - भिंडरावाले और उनके उनके हथियारबंद अनुयायियों ने **अमृतसर के स्वर्ण मंदिर** परिसर को अपना गढ़ बना लिया था।

- **ऑपरेशन ब्लू स्टार (जून 1984):** तत्कालीन प्रधानमंत्री **इंदिरा गांधी** ने भारतीय सेना को स्वर्ण मंदिर से उग्रवादियों को बाहर निकालने का आदेश दिया। यह ऑपरेशन सफल रहा, लेकिन इसमें भारी क्षति हुई और सिखों की धार्मिक भावनाएं आहत हुईं।

- **इंदिरा गांधी की हत्या (अक्टूबर 1984):** ऑपरेशन ब्लू स्टार का बदला लेने के लिए उनके दो सिख अंगरक्षकों ने उनकी हत्या कर दी।
- **सिख विरोधी दंगे:** हत्या के बाद दिल्ली और देश के अन्य हिस्सों में सिख विरोधी भीषण दंगे हुए।

- **खालिस्तान आंदोलन का पतन:** यह आंदोलन अंततः 1980 के दशक के अंत और 1990 के शुरुआती वर्षों में सख्त पुलिस कार्रवाई और सिख समाज के बीच जनसमर्थन की कमी के कारण खत्म हो गया।

अभ्यास प्रश्न

- खालिस्तान आंदोलन की शुरुआत और उन मुद्दों पर प्रकाश डालिए जिन्होंने एक अलग सिख राज्य की मांग को बढ़ावा दिया। (150 शब्द)
- खालिस्तान आंदोलन की प्रकृति को बदलने में जरनैल सिंह भिंडरावाले की भूमिका और 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार को जन्म देने वाली परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए। (250 शब्द)
- स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक पुनर्गठन और प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण की नीतियों ने पूर्वोत्तर भारत में नृजातीय और अलगाववादी संघर्षों को बढ़ाने में किस प्रकार योगदान दिया, इसका परीक्षण कीजिए। (250 शब्द)

4.3. विदेश नीति और बाहरी संबंध (Foreign Policy and External Relations)

4.3.1. गुटनिरपेक्षता और नेहरू की विदेश नीति (Non-Alignment and Nehruvian Policy on Foreign Relations)

जब पूरी दुनिया दो महाशक्तियों — संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) और सोवियत संघ (USSR) के बीच बंटी हुई थी, तब नेहरू के नेतृत्व में भारत ने एक स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई, जिसे **गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment)** कहा गया।

- **मुख्य सिद्धांत:**
  - **गुटनिरपेक्षता** का मतलब था कि भारत किसी भी सैन्य गुट (जैसे NATO या वारसॉ संधि) में शामिल नहीं होगा और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर स्वतंत्र रुख बनाए रखेगा।
  - यह नीति **निष्क्रियता या अलग-थलग रहने** की नहीं थी, बल्कि **सक्रिय भागीदारी** की नीति थी।
  - यह नीति **पंचशील** (शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों) पर आधारित थी, जिसे पहली बार **भारत-चीन समझौते (1954)** में प्रतिपादित किया गया था। इन सिद्धांतों में शामिल थे– एक-दूसरे की संप्रभुता का सम्मान; गैर-आक्रामकता, और एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना आदि।

- **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM):**
    - भारत ने **1961 में बेलग्रेड सम्मेलन** में **युगोस्लाविया के टीटो** और **मिस्र के नासिर** जैसे नेताओं के साथ मिलकर गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
    - गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) ने नव स्वतंत्र एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों को एक साथ लाने का काम किया, जो विश्व शांति, निरस्त्रीकरण, और उपनिवेशवाद का विरोध करने के लिए एक साझा मंच प्रदान करता था।
- **सुपर पावर देशों के साथ भारत के संबंध:**
    - **अमेरिका (USA)**: भारत और अमेरिका के संबंध अक्सर तनावपूर्ण रहे क्योंकि अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ सैन्य गठबंधन किया था और भारत की गुटनिरपेक्ष और समाजवादी नीतियों को संदेह की निगाह से देखता था।
    - **सोवियत संघ (USSR)**: भारत और सोवियत संघ के संबंध आमतौर पर अच्छे रहे, खासकर 1950 के दशक के बाद। सोवियत संघ ने भारत को महत्त्वपूर्ण कूटनीतिक समर्थन (जैसे कि कश्मीर पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों को वीटो करना) और सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। यह संबंध 1971 में **"भारत-सोवियत मैत्री और सहयोग संधि"** के माध्यम से औपचारिक रूप से मजबूत हुआ।

4.3.2. भारत-पाकिस्तान संबंध (India-Pakistan Relation)

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध शुरू से ही **तनावपूर्ण** रहे हैं, और इसके दो मुख्य कारण हैं- **धर्म के आधार पर बंटवारा** और **कश्मीर का विवाद**। इस कारण दोनों देशों के बीच चार बड़े युद्ध हुए:

- **1947-48**: कश्मीर के भारत में विलय को लेकर पहला युद्ध हुआ।
- **1965**: पाकिस्तान ने युद्ध शुरू किया, जो बिना किसी नतीजे के खत्म हुआ। ताशकंद समझौते के तहत पूर्व की स्थिति बहाल की गई।
- **1971**: पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के संकट को लेकर दोनों देशों के मध्य युद्ध हुआ। परिणामस्वरूप बांग्लादेश का निर्माण हुआ।
- **1999**: **कारगिल युद्ध** हुआ, जब पाकिस्तानी सैनिकों ने कश्मीर में नियंत्रण रेखा (LoC) पार कर घुसपैठ की। यह एक सीमित युद्ध था।

स्वतंत्रता के बाद भी जारी विवाद के अन्य मुद्दों में सीमा-पार आतंकवाद, सियाचिन ग्लेशियर विवाद और जल बंटवारा शामिल हैं।

सिंधु जल संधि (Indus Waters Treaty - IWT)

19 सितंबर, 1960 को भारत और पाकिस्तान के बीच **सिंधु जल संधि** पर हस्ताक्षर हुए थे। इस संधि ने **1947** के भारत-पाकिस्तान बंटवारे के बाद **सिंधु नदी तंत्र** के जल को लेकर हुए विवादों को सुलझाया।

संधि के मुख्य प्रावधान:

- **भारत** को **पूर्वी नदियों** (सतलुज, ब्यास, रावी) पर नियंत्रण प्राप्त है।
- **पाकिस्तान** को **पश्चिमी नदियों** (सिंधु, झेलम, चिनाब) पर नियंत्रण प्राप्त है।
- भारत को पश्चिमी नदियों पर कुछ शर्तों के साथ **गैर-खपत वाले उपयोग** (जैसे घरेलू, कृषि, और रन-ऑफ-द-रिवर जलविद्युत परियोजनाएँ)) की अनुमति है।

इतिहास और हाल की घटनाएं

भारत-पाकिस्तान के बीच 1965, 1971 और 1999 में हुए युद्धों के बावजूद सिंधु जल संधि लागू रही है। विवादों के समाधान के लिए **स्थायी सिंधु आयोग (Permanent Indus Commission - PIC)** जैसे तंत्र काम करते रहे हैं। हालांकि, **अप्रैल 2025** में **पहलगाम आतंकी हमले** के बाद, भारत ने **इस संधि को निलंबित** कर दिया और **राष्ट्रीय सुरक्षा को अपने पुराने कूटनीतिक वादों से ऊपर** रखा।

भारत ने **जम्मू-कश्मीर** में **जलविद्युत परियोजनाओं** को तेज़ी से आगे बढ़ाया और पाकिस्तान के साथ **जल से जुड़े हुए डेटा साझा करना बंद** कर दिया। यह भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ते रुख को दिखाता है। एक समय पर सहयोग का प्रतीक रही **सिंधु जल संधि (IWT)** अब क्षेत्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय समझौतों के बीच संतुलन बनाने को लेकर भारत के बदलते नजरिए को दर्शाती है।

4.3.3. भारत-पाक युद्ध (1971) और बांग्लादेश मुक्ति युद्ध (The 1971 Indo-Pak War and the Liberation of Bangladesh)

1971 का युद्ध भारत के लिए एक निर्णायक सैन्य विजय थी जिसने दक्षिण एशिया के मानचित्र को फिर से बदल दिया और इस क्षेत्र में भारत का सैन्य प्रभुत्व स्थापित किया।

पूर्वी पाकिस्तान संकट: यह संकट 1970 के पाकिस्तानी आम चुनाव के बाद शुरू हुआ, जिसमें **शेख मुजीबुर रहमान** के नेतृत्व में **अवामी लीग** ने पूर्वी पाकिस्तान में क्षेत्रीय स्वायत्तता के मुद्दे पर भारी जीत हासिल की।

- लेकिन पश्चिमी पाकिस्तान की सैन्य नेतृत्व ने सत्ता सौंपने से इनकार कर दिया और **मार्च 1971** में पूर्वी पाकिस्तान में एक क्रूर सैन्य कार्रवाई शुरू की, जिसे **"ऑपरेशन सर्चलाइट"** कहा गया।
- इससे पूर्वी पाकिस्तान में एक पूर्ण गृह युद्ध शुरू हो गया और गंभीर मानवीय संकट पैदा हो गया। इससे लगभग **10 मिलियन शरणार्थी** भागकर भारत आ गए।

भारत की भूमिका: भारत ने **बंगाली राष्ट्रवादी गुरिल्ला सेना "मुक्ति बाहिनी"** को राजनयिक, आर्थिक और सैन्य सहायता प्रदान की।

शिमला समझौता: आधुनिक संघर्षों से जूझती एक विरासत

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद **2 जुलाई, 1972** को तत्कालीन **भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी** और **पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो** के बीच **शिमला समझौता** हुआ था। इसका उद्देश्य भारत और पाकिस्तान के बीच **स्थायी शांति** स्थापित करना था। लेकिन इस समझौते के सिद्धांतों को आज भी जारी संघर्षों से बार-बार चुनौती मिलती है, जैसा कि हाल ही के **पहलगाम आतंकी हमले** से देखा जा सकता है।

शिमला समझौते के मुख्य सिद्धांत:

- **द्विपक्षीय समाधान**: दोनों देशों ने यह वादा किया कि वे आपसी विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से, किसी तीसरे पक्ष की दखल के बिना सुलझाएंगे।
- **नियंत्रण रेखा (LoC) का सम्मान**: दोनों देशों को LoC का सम्मान करना था।
- **बल प्रयोग का त्याग**: दोनों देशों ने बल प्रयोग या उसकी धमकी से बचने का संकल्प लिया।
- **संबंधों का सामान्यीकरण**: इसमें आपसी संचार, यात्रा, व्यापार को बहाल करने और युद्धबंदियों को लौटाने की बात कही गई।

हाल का पहलगाम आतंकवादी हमला, जिसमें आम नागरिकों को निशाना बनाया गया, जो "बल प्रयोग के त्याग" के सिद्धांत का उल्लंघन है। यह **पाकिस्तान समर्थित सीमा पार आतंकवाद** के उदाहरण को दर्शाता है, जिससे **LoC की गरिमा** को ठेस पहुंचती है और यह **शिमला समझौते की शांतिपूर्ण समाधान की मंशा** के विपरीत है।

आज के दौर में शिमला समझौते की विरासत

भारत का रुख – द्विपक्षीय समाधान पर ज़ोर: भारत सभी मुद्दों, खासकर आतंकवाद जैसे मामलों को, **द्विपक्षीय रूप से सुलझाने** पर ज़ोर देता है। यह शिमला समझौते के **तीसरे पक्ष की दखलंदाजी न करने** के सिद्धांत को दर्शाता है।

पाकिस्तान का रवैया: पाकिस्तान **कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने** की कोशिश करता है, जो शिमला समझौते की **द्विपक्षीय भावना का उल्लंघन** है।

- प्रधानमंत्री **इंदिरा गांधी** ने अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिए एक प्रभावी **राजनयिक अभियान** चलाया और **अगस्त 1971** में **भारत-सोवियत संधि** पर हस्ताक्षर किए, ताकि अमेरिका-चीन के दबाव का मुकाबला किया जा सके।
- जब **पाकिस्तान ने 3 दिसंबर, 1971** को भारत पर पहले हवाई हमले किए, तब भारत ने औपचारिक रूप से युद्ध में प्रवेश किया।

सैन्य विजय और परिणाम:

- भारतीय सेना ने मात्र **13 दिनों के अभियान** में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना को हरा दिया। **16 दिसंबर, 1971** को ढाका में पाकिस्तानी सेना ने **आत्मसमर्पण पत्र** पर हस्ताक्षर किए।
- इस युद्ध के परिणामस्वरूप **बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र** के रूप में अस्तित्व में आया।
- **1972 में शिमला समझौता** इंदिरा गांधी और ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो के बीच हुआ, जिसके तहत **93,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों** को वापस लौटाया गया और **कश्मीर की युद्धविराम रेखा** को औपचारिक रूप से **नियंत्रण रेखा (LoC)** में बदल दिया गया।

4.3.4. शीत युद्ध के बाद भारतीय विदेश नीति में बदलाव (Shifts in Indian Foreign Policy (Post-Cold War))

1991 में सोवियत संघ के विघटन और भारत में आर्थिक सुधारों की शुरुआत के बाद, भारत को अपनी विदेश नीति को मूल रूप से नए सिरे से तैयार करना पड़ा।

- **गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता का अंत:**
  - शीत युद्ध के समाप्त होने के साथ ही दो विरोधी गुटों से दूरी बनाए रखने वाली गुटनिरपेक्ष नीति का मूल कारण समाप्त हो गया। हालांकि भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का सदस्य बना हुआ है, लेकिन इसकी विदेश नीति अधिक व्यावहारिक और मुद्दा-आधारित हो गई है।
- **व्यावहारिकता और बहुपक्षीय जुड़ाव (Multi-Alignment):**
  - अब भारत की विदेश नीति किसी विचारधारा पर फोकस करने की बजाय **राष्ट्रीय हित**, विशेषकर **आर्थिक** विकास और सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करने लगी है।
  - इस नई नीति को **"बहुपक्षीय जुड़ाव" या "रणनीतिक स्वतंत्रता"** कहा जाता है, जिसमें भारत सभी प्रमुख वैश्विक शक्तियों (जैसे अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान) के साथ संतुलित संबंध रखता है ताकि अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सके।
- **मुख्य नीतिगत बदलाव:**
  - **अमेरिका के साथ बेहतर संबंध:** भारत और अमेरिका के संबंध "अलग-थलग पड़े लोकतंत्रों" से बढ़कर अब "रणनीतिक साझेदारों" तक पहुंच चुके हैं। इस संबंध को 2008 के **भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते** ने और मजबूत किया।
  - **"लुक ईस्ट" से "एक्ट ईस्ट" नीति:** 1990 के दशक की शुरुआत में शुरू की गई "लुक ईस्ट" नीति को मोदी सरकार ने "एक्ट ईस्ट" नीति में बदल दिया। इसका उद्देश्य **दक्षिण-पूर्व एशिया**

(ASEAN) और **पूर्वी एशिया** के देशों के साथ **आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत** करना है।

- **आर्थिक कूटनीति पर जोर:** अब भारत की विदेश नीति का बड़ा हिस्सा विदेशी निवेश आकर्षित करने, ऊर्जा संसाधनों की सुरक्षा, और व्यापार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
- **मजबूत क्षेत्रीय भूमिका:** भारत अब खुद को हिंद महासागर क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति और सुरक्षा प्रदान करने वाला देश (net security provider) के रूप में देखने लगा है।

अभ्यास प्रश्न

1. राज्यों के भाषाई पुनर्गठन की प्रक्रिया की आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। राष्ट्रीय नेतृत्व शुरू में इसके बारे में क्यों आशंकित था, और इसने अंततः भारतीय संघ को कैसे मजबूत किया?
2. हरित क्रांति (ग्रीन रिवोल्यूशन) भारत को खाद्यान्न-सुरक्षित बनाने में एक ऐतिहासिक सफलता रही, लेकिन इसके नकारात्मक पक्ष में गहरे सामाजिक और पारिस्थितिक असंतुलन शामिल थे। चर्चा कीजिए।
3. "आपातकाल (1975-77) कोई अचानक हुई घटना नहीं थी, बल्कि 1970 के दशक की शुरुआत से ही चल रहे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संकटों की परिणति थी।" टिप्पणी कीजिए।
4. 1970 के दशक से भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदय का विश्लेषण कीजिए। इस परिघटना ने कैसे केंद्र-राज्य संबंधों की प्रकृति को बदला है और गठबंधन राजनीति के युग की शुरुआत की?
5. वामपंथी उग्रवाद (नक्सलवाद) को सिर्फ विधि-व्यवस्था की समस्या मानने की बजाय, इसे 'शासन के अभाव' और विकास की कमी से जुड़ी एक जटिल समस्या के रूप में चर्चा कीजिए।
6. मंडल आयोग की सिफारिशों को 1990 में लागू किया जाना एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है, जिसने भारतीय राजनीति को स्थायी रूप से जातिगत पहचान के इर्द-गिर्द पुनः संरचित कर दिया। स्पष्ट करें।
7. 1972 के शिमला समझौते ने द्विपक्षीयता के सिद्धांत को भारत-पाकिस्तान संबंधों की आधारशिला के रूप में स्थापित किया। बाद के दशकों में, विशेष रूप से कश्मीर मुद्दे के संदर्भ में, इस सिद्धांत को किस हद तक बरकरार रखा गया है?
8. 500 से अधिक रियासतों का भारतीय संघ में विलय एक उल्लेखनीय सफलता थी, लेकिन यह प्रक्रिया हर जगह एक समान रूप से सहज नहीं थी। हैदराबाद और जम्मू-कश्मीर द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों के विशेष संदर्भ में चर्चा कीजिये।

प्रश्नों के उत्तर देने के लिए सुझाव:

1. शुरुआत में यह बताइये कि आजादी के बाद देश के नेताओं को डर था कि राज्यों को भाषा के आधार पर बांटने से देश टूट सकता है। इस संदर्भ में "धर समिति" और "जे.पी.वी. समिति" की रिपोर्ट्स का उल्लेख कीजिए। निष्कर्ष में समझाएं कि कैसे भाषा के आधार पर राज्य पुनर्गठन से देश की एकता और लोकतंत्र को मजबूती मिली।
2. सबसे पहले, HYV बीजों, उत्पादन में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा का उल्लेख करके हरित क्रांति की सफलताओं की व्याख्या कीजिए। फिर, क्षेत्रीय असमानता, किसानों के बीच बढ़ती असमानता और पर्यावरणीय मुद्दों जैसे- मृदा की गुणवत्ता में गिरावट, जलस्तर में कमी, और रसायनों का अधिक उपयोग आदि के नकारात्मक प्रभावों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के तात्कालिक कारणों से उत्तर की शुरुआत कीजिए। जेपी आंदोलन, आर्थिक संकट, उच्च मुद्रास्फीति और इंदिरा गांधी के अधीन सत्ता के केंद्रीकरण सहित व्यापक संदर्भ पर चर्चा कीजिए।
4. क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के उदय के कारणों को समझाइए, जैसे कि भाषाई/सांस्कृतिक पहचान की

अभिव्यक्ति और आर्थिक उपेक्षा की भावना। फिर उनके प्रभाव पर चर्चा कीजिए, विशेष रूप से इस बात पर ध्यान देते हुए कि किस प्रकार यह एक-दलीय प्रभुत्व वाली प्रणाली से अधिक संघीय और समझौतावादी राजनीतिक संस्कृति की ओर बदलाव का कारण बना।

5. सुरक्षा खतरे को स्वीकार करते हुए, आपके उत्तर का मुख्य फोकस सामाजिक-आर्थिक जड़ों पर होना चाहिए। आदिवासियों का अलगाव, वन अधिकार, खनन के कारण विस्थापन और बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में सरकार की विफलता जैसे मुद्दों को रेखांकित कीजिए।
6. OBC के लिए 27% आरक्षण और इससे उत्पन्न तत्काल हिंसक प्रतिक्रिया को समझाइए। लेकिन आपके उत्तर का मुख्य फोकस इस पर होना चाहिए कि इसने दीर्घकाल में क्या प्रभाव डाला — जैसे OBC वर्ग का एक मजबूत राजनीतिक समूह (ब्लॉक) के रूप में उभरना और जाति आधारित शक्तिशाली क्षेत्रीय दलों का उदय।
7. द्विपक्षवाद के सिद्धांत को स्पष्ट रूप से परिभाषित कीजिए। यह तर्क प्रस्तुत कीजिए कि भले ही भारत ने हमेशा इस सिद्धांत का पालन किया है, लेकिन इसका उल्लंघन अक्सर सीमा-पार आतंकवाद और पाकिस्तान द्वारा कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने के प्रयासों से हुआ है।
8. सरदार पटेल की सामान्य नीति — अनुनय-विनय और विलय पत्र का संक्षिप्त रूप से उल्लेख कीजिए। लेकिन उत्तर का मुख्य भाग इस पर केंद्रित होना चाहिए कि हैदराबाद में की गई पुलिस कार्रवाई और कश्मीर के विलय की जटिल परिस्थितियों और तरीकों में क्या अंतर था, विशेष रूप से कश्मीर में हमले के विशेष संदर्भ में।

5. विश्व इतिहास (World History)

5.1. आधुनिक विश्व की नींव - क्रांतियां और उनका प्रभाव (Foundations of the Modern World - Revolutions and their Impact)

लगभग 1776 से 1870 तक का समय गहन और अक्सर हिंसक परिवर्तन का युग था। यूरोप और अमेरिका में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्रांतियों की एक श्रृंखला ने निरंकुश राजतंत्र, सामंती विशेषाधिकार और कृषि-संबंधी अर्थशास्त्र की पुरानी प्रणालियों को समाप्त कर दिया।

इन घटनाओं ने विश्व को **राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, व्यक्तिगत अधिकार और औद्योगिक पूंजीवाद** जैसे शक्तिशाली नए विचारों से परिचित कराया, जो आज भी हमारे विश्व को परिभाषित करते हैं।

5.1.1. अमेरिकी क्रांति (1776): आधुनिक लोकतंत्र की शुरुआत (The American Revolution (1776): The Birth of a Modern Democracy)

यह क्रांति उत्तरी अमेरिका में 13 ब्रिटिश उपनिवेशों द्वारा स्वतंत्रता के लिए एक सफल संघर्ष था, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका का निर्माण हुआ। यह आधुनिक लोकतांत्रिक शासन के सिद्धांतों पर आधारित पहला प्रमुख उपनिवेश-विरोधी आंदोलन था।

- **कारण:**
  - **ज्ञानोदय के विचार:** उपनिवेशवासी **जॉन लॉक और मोंटेस्क्यू** जैसे यूरोपीय विचारकों के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। **जॉन लॉक प्राकृतिक अधिकारों** (जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकारों) के पक्ष में तर्क देते थे तथा **मोंटेस्क्यू सरकार में शक्तियों के पृथक्करण** की वकालत करते थे।
  - **आर्थिक शिकायतें:** ब्रिटेन की **व्यापारिक नीति** ने उपनिवेशों को कच्चे माल के स्रोत और दासों के बाजार के रूप में माना। उपनिवेशवासी दूर की संसद द्वारा लगाए गए करों और व्यापार प्रतिबंधों से नाराज़ थे, जिसमें उनका कोई प्रतिनिधि नहीं था। इसके कारण प्रसिद्ध नारा **"प्रतिनिधित्व के बिना कोई कराधान नहीं"** लगाया गया।
  - **बढ़ती राजनीतिक पहचान:** समय के साथ, उपनिवेशवासियों ने एक अलग अमेरिकी पहचान विकसित कर ली थी और वे अब किसी विदेशी शक्ति द्वारा शासित होने के लिए तैयार नहीं थे।
- **परिणाम और प्रभाव:**
  - क्रांति के परिणामस्वरूप **संयुक्त राज्य अमेरिका** का निर्माण हुआ, जो पहला आधुनिक **संवैधानिक गणराज्य** बना।

अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांति का भारत पर प्रभाव

- **स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा:** पहले प्रमुख **उपनिवेश-विरोधी** युद्ध के रूप में अमेरिकी क्रांति की सफलता ने भारतीय राष्ट्रवादियों को साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ विद्रोह का एक शक्तिशाली उदाहरण दिया, जिससे **स्वशासन** की मांग को बढ़ावा मिला।
- **संवैधानिक आदर्श:** फ्रांसीसी क्रांति का **"स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व"** का स्पष्ट आह्वान आधुनिक भारत की दृष्टि में सीधे अंतर्निहित था और यह **भारतीय संविधान की प्रस्तावना** का केंद्र बिंदु भी बना। इसी तरह, अमेरिकी **अधिकार विधेयक** ने भारत के **मौलिक अधिकारों** के ढांचे को बहुत प्रभावित किया।
- **सामाजिक सुधार के लिए उत्प्रेरक:** सभी नागरिकों की समानता के क्रांतिकारी विचार ने **भारतीय समाज सुधारकों** को जाति व्यवस्था जैसे जड़ जमा चुके सामाजिक अनुक्रम के खिलाफ लड़ाई में बौद्धिक शक्ति प्रदान की।

- इसने एक **लिखित संविधान** तैयार किया, जिसमें **शक्तियों का पृथक्करण, सरकार की शाखाओं के बीच नियंत्रण एवं संतुलन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देने वाले बिल ऑफ राइट्स** जैसे क्रांतिकारी सिद्धांतों को शामिल किया गया।
- इसने अन्य आंदोलनों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा के रूप में कार्य किया, जिससे यह साबित हुआ कि एक उपनिवेश अपने साम्राज्यवादी शासक से मुक्त हो सकता है।
- इसकी सफलता ने सीधे तौर पर **फ्रांसीसी क्रांति** को प्रभावित किया।

5.1.2. फ्रांसीसी क्रांति (1789): स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (The French Revolution (1789): Liberty, Equality, Fraternity)

यह फ्रांस में एक क्रांतिकारी सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल थी, जिसने ***एंसीन रेजीम*** को नष्ट कर दिया। यह **निरंकुश राजशाही और सामंती विशेषाधिकार** की पुरानी व्यवस्था थी। इसके विचार एवं परिणाम पूरे यूरोप और दुनिया भर में फैल गए थे।

- **कारण:**
  - **गहरी सामाजिक असमानता:** फ्रांसीसी समाज तीन **"एस्टेट्स"** में विभाजित था। **प्रथम एस्टेट (पादरी)** और **द्वितीय एस्टेट (कुलीन वर्ग)** के पास अपार धन था तथा वे अधिकांश करों से मुक्त थे। **तृतीय एस्टेट** में किसानों से लेकर **नवीन मध्यम वर्ग (पूंजीपति वर्ग)** तक भी शामिल था। यह एस्टेट सभी तरह के कर चुकाता था।
  - **राजनीतिक अक्षमता: सम्राट लुई सोलहवें** के अधीन **निरंकुश राजतंत्र** दिवालिया, अकुशल और लोगों की जरूरतों के प्रति अनुत्तरदायी था।
  - **ज्ञानोदय दर्शन: रूसो (लोकप्रिय संप्रभुता) और वोल्टेयर (स्वतंत्रता एवं तर्क)** जैसे विचारकों के विचारों ने **राजशाही व चर्च की वैधता को चुनौती** दी, तथा क्रांति के लिए एक बौद्धिक ढांचा प्रदान किया।
- **परिणाम और प्रभाव:**
  - इसने फ्रांस में **सामंतवाद, कुलीन विशेषाधिकार और पूर्ण राजशाही** को समाप्त कर दिया।
  - **मानव और नागरिक अधिकारों की घोषणा** एक ऐतिहासिक दस्तावेज था, जिसने **स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व** के सार्वभौमिक सिद्धांतों की घोषणा की।
  - इसने **राष्ट्रवाद** की शक्तिशाली विचारधारा को निर्मुक्त कर दिया, क्योंकि फ्रांसीसी लोग स्वयं को राजा की प्रजा की बजाय एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में देखने लगे।
  - हालांकि यह क्रांति **"आतंक के शासन"** में बदल गई और अंततः **नेपोलियन बोनापार्ट** के उदय का कारण बनी। उसकी सेनाओं ने पूरे यूरोप में **क्रांतिकारी आदर्शों और कानूनी सुधारों (नेपोलियन संहिता)** को फैलाया।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के प्रसार में योगदान देने वाले प्राथमिक वित्तीय, सामाजिक और वैचारिक कारकों पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द)
- राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के उदय के विशेष संदर्भ के साथ, फ्रांस एवं यूरोप की राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं पर फ्रांसीसी क्रांति के दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए। (250 शब्द)

5.2. विश्व युद्ध: वैश्विक व्यवस्था को नया आकार देना (The World Wars: Reshaping the Global Order)

5.2.1. प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) (The First World War (1914-1918))

1914 में युद्ध का प्रारम्भ किसी एक कारण से नहीं हुआ था, बल्कि **दीर्घकालिक तनावों और अल्पकालिक कारणों के संयोजन** से हुआ था।

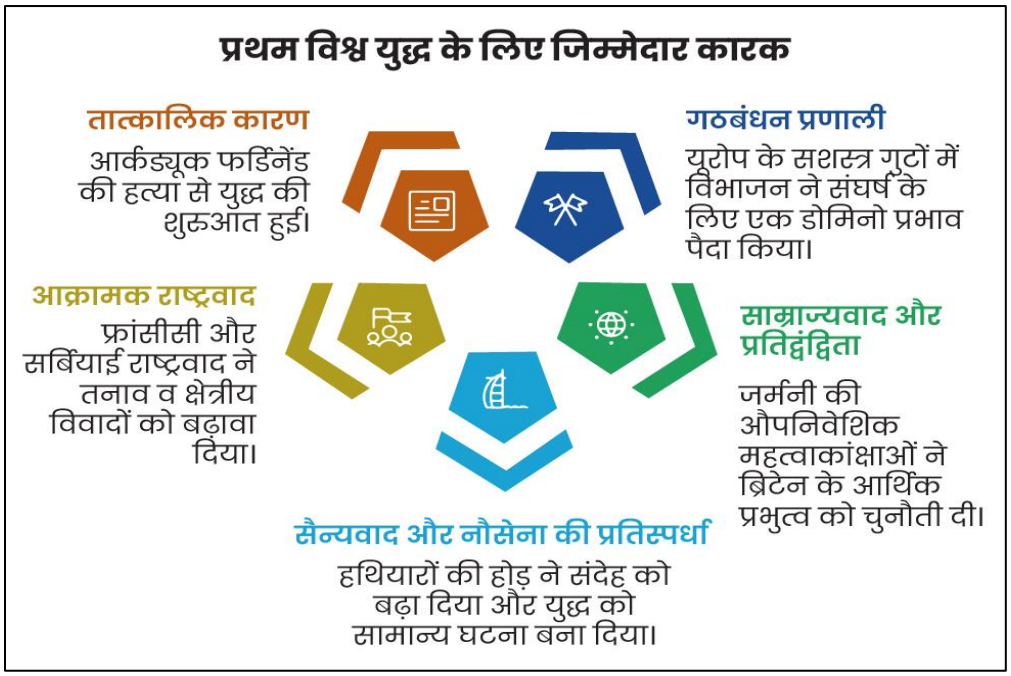

परिणाम और वैश्विक प्रभाव: 1918 में युद्ध की समाप्ति ने नाटकीय रूप से दुनिया को बदल दिया।

- **मानवीय और आर्थिक लागत:** युद्ध के परिणामस्वरूप **अभूतपूर्व संख्या में मौतें** हुईं और विजयी ब्रिटेन एवं फ्रांस सहित यूरोप की अर्थव्यवस्थाएं बिखर गईं।
- **साम्राज्यों का पतन:** चार प्रमुख यूरोपीय राजवंश और उनके साम्राज्य नष्ट हो गए: जर्मनी का **होहेनज़ोलर्न**, ऑस्ट्रिया-हंगरी का **हैब्सबर्ग**, रूस का **रोमानोव** और तुर्की की **ओटोमन सल्तनत।**

प्रथम विश्व युद्ध का भारत पर प्रभाव और इसकी समकालीन प्रासंगिकता

भारत और प्रथम विश्व युद्ध

- **ब्रिटिश साम्राज्य** के एक प्रमुख भाग के रूप में, भारत ने **प्रथम विश्व युद्ध** में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, जिसमें **सैनिकों** और **सामग्रियों** दोनों की आपूर्ति की गई थी।
- इस भागीदारी ने भारतीयों की **राजनीतिक चेतना** को बढ़ाया और **स्वशासन** की मांग को तीव्र किया।
- यूरोप में लड़ रहे भारतीय सैनिक **स्वतंत्रता और लोकतंत्र** के विचारों से अवगत हुए, जिसे उन्होंने भारत में लागू करने की कोशिश की, तथा ब्रिटिश शासन को चुनौती दी।

समकालीन प्रासंगिकता

प्रथम विश्व युद्ध के दीर्घकालिक प्रभाव आज भी स्पष्ट हैं।

- **ओटोमन साम्राज्य के पतन** के बाद मध्य पूर्व में **सीमाओं के मनमाने ढंग से पुनर्निर्धारण** ने कई वर्तमान संघर्षों में योगदान दिया है। उदाहरण के लिए: **अरब-इजरायल संघर्ष।**
- यह युद्ध **कठोर सैन्य गठबंधनों (जैसे कि नाटो विस्तार पर चल रही बहस) और आक्रामक राष्ट्रवाद के खतरों तथा मनमानी सीमाओं के स्थायी परिणामों** की एक गंभीर स्मृति है, जो आज अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए: यूक्रेन-रूस संघर्ष।

- **सीमाओं का पुनर्निर्धारण और दोषपूर्ण शांति: वर्साय की संधि** ने जर्मनी पर कठोर शर्तें लगाई, जिनमें कुख्यात **'युद्ध अपराध'** खंड और **अतार्किक क्षतिपूर्ति** शामिल थी। इन शर्तों ने गहरी नाराजगी और बदला लेने की इच्छा को बढ़ावा दिया।
    - पूर्वी यूरोप में नए राष्ट्र बनाए गए, लेकिन अक्सर असंतुष्ट नृजातीय अल्पसंख्यक अपनी सीमाओं के भीतर फंस गए, जिससे संघर्ष के नए स्रोत पैदा हुए।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका का उदय:** युद्ध ने दुनिया के आर्थिक केंद्र के रूप में यूरोप को हटाकर **संयुक्त राज्य अमेरिका** की स्थापना की पुष्टि की।
- **लीग ऑफ नेशंस:** युद्ध के कारण सामूहिक सुरक्षा में पहला बड़ा प्रयोग हुआ, हालांकि लीग ऑफ नेशंस शुरू से ही घातक रूप से कमजोर हो गया था, विशेष रूप से अमेरिका के इसमें शामिल होने से इनकार करने के कारण।

5.2.2. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) [The Second World War (1939-1945)]

द्वितीय विश्व युद्ध को पहले विश्व युद्ध के अनसुलझे संघर्षों की निरंतरता के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है। यह **आक्रामक व अधिनायकवादी विचारधाराओं** के उदय से और भी बढ़ गया।

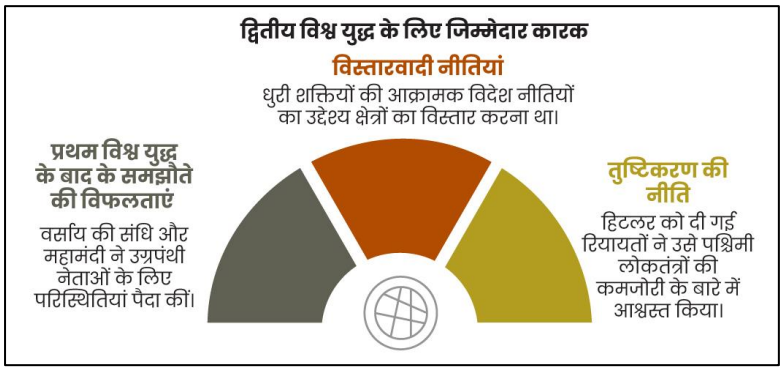

1930 के दशक में इस चुनौती का सामना करने में लोकतांत्रिक देशों की विफलता ने दूसरे तथा और भी अधिक विनाशकारी, वैश्विक संघर्ष को लगभग अपरिहार्य बना दिया।

परिणाम और वैश्विक प्रभाव: इस युद्ध का प्रभाव प्रथम विश्व युद्ध से भी अधिक गहरा था।

- **द होलोकॉस्ट:** इसमें नाजी शासन द्वारा लगभग छह मिलियन यहूदियों का व्यवस्थित **नरसंहार** देखा गया। यह एक ऐसी भयावह घटना थी जिसने मानव विवेक को गहराई से प्रभावित किया।
- **द्विध्रुवीय विश्व और शीत युद्ध:** युद्ध ने जर्मनी और जापान को नष्ट कर दिया तथा ब्रिटेन एवं फ्रांस को थका दिया। वास्तविक शक्ति **संयुक्त राज्य अमेरिका** और **सोवियत संघ (USSR)** के पास चली

द्वितीय विश्व युद्ध और इसका निरंतर वैश्विक प्रभाव

द्वितीय विश्व युद्ध का भारत पर प्रभाव

- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान शुरू किया गया था, जिसमें **भारतीय राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश शासन को तत्काल समाप्त करने** की मांग की थी।
- युद्ध की समाप्ति ने **भारत की स्वतंत्रता** को अपरिहार्य बना दिया, क्योंकि युद्ध ने औपनिवेशिक शक्तियों को सैन्य व आर्थिक रूप से बहुत कमजोर बना दिया था।
- युद्ध के बाद **द्विध्रुवीय विश्व** के उदय ने भारत को **गुटनिरपेक्षता की नीति** अपनाने के लिए मजबूर किया, ताकि दोनों महाशक्तियों में से किसी के साथ गठबंधन से बचा जा सके।

समकालीन प्रासंगिकता

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की संरचना, जिसमें पांच स्थायी सदस्य (द्वितीय विश्व युद्ध के विजेता) हैं, युद्ध की प्रत्यक्ष विरासत है। इस संरचना को अब भारत सहित कई देश पुराना मानते हैं और वर्तमान वैश्विक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए इसमें सुधार की आवश्यकता पर बल देते हैं।

परमाणु हथियारों की अपार विनाशकारी शक्ति आज भी **अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और विनाशकारी हथियार अप्रसार प्रयासों** में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनी हुई है।

गई, जो दो विरोधी विचारधाराओं **(पूंजीवाद बनाम साम्यवाद)** वाली महाशक्तियां थीं। ये महाशक्तियां अगले **45 वर्षों तक वैश्विक मामलों** पर हावी रहीं।

- **परमाणु युग:** हिरोशिमा और नागासाकी पर **परमाणु बम** के इस्तेमाल ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में एक नई और भयावह वास्तविकता को जन्म दिया, जिससे परमाणु विनाश का लगातार खतरा बना रहा।
- **उपनिवेशवाद का अंत:** युद्ध ने यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों को अंतिम झटका दिया। ब्रिटेन और फ्रांस जैसी शक्तियों के पास शक्तिशाली राष्ट्रवादी आंदोलनों का दमन करके अपने उपनिवेशों को बनाए रखने के लिए धन और इच्छाशक्ति की कमी हो गई थी।
- **संयुक्त राष्ट्र:** अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने में लीग ऑफ नेशंस से अधिक प्रभावी होने के उद्देश्य से एक नया अंतर्राष्ट्रीय निकाय बनाया गया।

5.2.3. लीग ऑफ नेशंस (The League of Nations)

लीग ऑफ नेशंस एक अंतर्राष्ट्रीय बहुराष्ट्रीय संगठन था, जिसकी स्थापना प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति स्थापित करने तथा एक और विश्व युद्ध को रोकने के लिए की गई थी। यह अंततः बुनियादी संरचनात्मक और राजनीतिक कमजोरियों के कारण बड़े संघर्षों को रोकने में विफल रहा था, **जो नीचे सूचीबद्ध हैं:**

लीग ऑफ नेशंस की विफलता के कारण

- **सार्वभौमिक सदस्यता और प्रवर्तन शक्ति का अभाव: संयुक्त राज्य अमेरिका** जैसी प्रमुख शक्तियों की अनुपस्थिति और **जर्मनी, जापान व इटली** जैसे देशों के इससे अलग होने से लीग की विश्वसनीयता कम हो गई थी। सार्वभौमिक सदस्यता और प्रवर्तन के बिना, लीग को सामूहिक इच्छा को राष्ट्रीय हितों के साथ संरेखित करने में संघर्ष करना पड़ा।
- **सर्वसम्मति का सिद्धांत:** परिषद के सदस्यों के बीच सर्वसम्मति से निर्णय लेने की आवश्यकता ने कार्रवाई को पंगु बना दिया। यह **मंचूरिया (1931) पर जापानी आक्रमण और इथियोपिया (1935) पर इतालवी आक्रमण** जैसे संकटों के दौरान स्पष्ट था, जहां आंतरिक असहमति ने प्रभावी प्रतिक्रियाओं को रोक दिया।

- **आक्रामकता को संबोधित करने में असमर्थता:** आक्रामकता के प्रति लीग की प्रतिक्रियाएं **नैतिक निंदा और अप्रभावी आर्थिक प्रतिबंधों** तक सीमित थीं, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने में योगदान दिया।

हालांकि, अपनी कमियों के बावजूद भी, लीग ने **संयुक्त राष्ट्र** के लिए आधार तैयार किया।

विरासत और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में प्रतिबिंब

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) की वर्तमान कमजोरियां लीग ऑफ नेशंस की कमियों को ही दर्शाती हैं। इससे पता चलता है कि इतिहास से पूरी तरह से सबक नहीं सीखा गया है:

- **वीटो पावर और प्रतिनिधित्व की कमी: UNSC के P5 (पांच स्थायी) सदस्यों के पास वीटो पावर** है, जो अक्सर प्रस्तावों को अवरुद्ध करती है। यह ठीक वैसे ही है, जब लीग को सर्वसम्मति की आवश्यकता होती थी तथा कोई सदस्य वीटो से इसे बाधित कर देता था। यह विशेषाधिकार राष्ट्रीय हितों के टकराव के समय **निर्णायक कार्रवाई** को सीमित करता है।
- **निर्णायक रूप से कार्य करने में असमर्थता:** UNSC ने **सीरिया** और **यूक्रेन** जैसे संकटों में प्रभावी रूप से हस्तक्षेप करने के लिए संघर्ष किया है, जो कि **मंचूरिया** और **इथियोपिया** जैसे मामलों से निपटने में लीग की विफलता के समान है।
- **कोई सैन्य बल नहीं:** लीग की तरह, **UNSC** के पास अपने स्वयं के प्रवर्तन तंत्र का अभाव है। यह शांति रक्षक सेना के लिए सदस्य देशों पर निर्भर है, जिसके कारण **यमन** और **दक्षिण सूडान** जैसे संघर्षों में मिशन अप्रभावी रहे हैं।
- **कमजोर प्रतिबंध और कूटनीति:** लीग के अप्रभावी प्रतिबंधों को UNSC की प्रतिबंधों पर निर्भरता द्वारा प्रतिबिंबित किया जा सकता है। इन प्रतिबंधों को अक्सर शक्तिशाली देशों द्वारा दरकिनार कर दिया जाता है, जैसा कि **उत्तर कोरिया और ईरान** में देखा गया है।

शांति स्थापना और संघर्ष समाधान में संयुक्त राष्ट्र की सफलताएं

- **स्वेज संकट (1956):** जब **ब्रिटेन** और **फ्रांस** ने एक प्रस्ताव को वीटो कर दिया था, तो संयुक्त राष्ट्र ने हस्तक्षेप किया था और हमलावर बलों की वापसी की निगरानी के लिए 5,000 शांति सैनिकों को तैनात किया था।
- **कोरियाई युद्ध (1950-53):** संयुक्त राष्ट्र ने **उत्तर कोरिया के आक्रमण** की निंदा की थी और **दक्षिण कोरिया को सहायता** भेजी थी। यह सुरक्षा परिषद के सोवियत बहिष्कार के कारण एक अनूठी कार्रवाई थी।
- **प्रथम खाड़ी युद्ध (1991):** संयुक्त राष्ट्र ने **कुवैत** पर आक्रमण के बाद **इराक** को वहां से निकालने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सेना को अधिकृत किया था।
- **ईरान-इराक युद्ध (1980-88):** संयुक्त राष्ट्र ने 1988 में **ईरान** और **इराक** के बीच लंबे युद्ध को समाप्त करने के लिए सफलतापूर्वक **युद्ध विराम की मध्यस्थता** की थी।

ये उदाहरण संघर्षों के प्रबंधन और वैश्विक स्तर पर शांति बनाए रखने में **संयुक्त राष्ट्र की प्रभावशीलता** को उजागर करते हैं।

संक्षेप में, यद्यपि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना लीग ऑफ नेशंस की विफलताओं को दूर करने के लिए की गई थी, लेकिन इसकी संरचना और निर्णय लेने की प्रक्रिया ने उन्हीं मुद्दों को दोहराया है। इससे वैश्विक सुरक्षा एवं न्याय प्राप्त करने में चुनौतियों की निरंतरता स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

5.3. विचारधाराएं (Ideologies)

5.3.1. रूस में साम्यवाद (Communism in Russia)

कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों से उत्पन्न, साम्यवाद ने पूंजीवादी विश्व व्यवस्था को सबसे क्रांतिकारी चुनौती दी थी। रूस में **1917 की बोल्शेविक क्रांति** साम्यवादी राज्य बनाने का पहला सफल प्रयास था। इसने दुनिया भर में हलचल मचा दी थी, क्रांतिकारी आंदोलनों को प्रेरित किया था और पूंजीवादी सरकारों को भयभीत कर दिया था।

रूस में उत्थान के कारण:

- **जार के शासन की विफलताएं:** सदियों के निरंकुश शासन, राजनीतिक उत्पीड़न और आधुनिकीकरण में विफलता ने रूसी साम्राज्य को बहुत अस्थिर बना दिया।

- **प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव:** युद्ध ने जार शासन की अक्षमता को उजागर किया, जिसके कारण सैन्य हार, खाद्यान्न की कमी और बड़ी संख्या में लोगों को कष्ट का सामना करना पड़ा। इसने क्रांति को अपरिहार्य बना दिया।
- **बोल्शेविकों की अपील:** जार के बाद की अनंतिम सरकार युद्ध को समाप्त करने या भूमि मुद्दे को हल करने में विफल रही। **लेनिन और बोल्शेविकों** ने एक सरल व शक्तिशाली नारे- **"शांति, भूमि और रोटी"** के साथ बड़े पैमाने पर समर्थन प्राप्त किया।

प्रकृति और प्रभाव:

- **एकल-पार्टी तानाशाही:** यद्यपि यह मजदूर वर्ग ("सर्वहारा") के नाम पर स्थापित की गई थी, लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के तहत सोवियत संघ में तानाशाही स्थापित हो गई थी। स्टालिन के अधीन यह तानाशाही अत्यधिक मजबूत हो गई।

रूसी क्रांति और भारत पर इसका प्रभाव

- **वामपंथी राजनीति का उदय:** क्रांति ने सीधे तौर पर **भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI)** के गठन को जन्म दिया और **ट्रेड यूनियन आंदोलनों को मजबूत** किया।
- इसने **जवाहरलाल नेहरू** जैसे नेताओं की एक पीढ़ी को भी काफी प्रभावित किया। इससे कांग्रेस के भीतर एक मजबूत समाजवादी विंग, **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी** का निर्माण हुआ।
- **आर्थिक नीति को आकार देना:** सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव स्वतंत्रता के बाद के आर्थिक विचारों पर पड़ा। **केंद्रीकृत नियोजन** के सोवियत मॉडल को तेजी से औद्योगिकीकरण के लिए एक उपकरण के रूप में देखा गया।

इसने सीधे तौर पर भारत को **पंचवर्षीय योजनाओं और एक मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल** को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जहां एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्रक का उद्देश्य **"अर्थव्यवस्था की ऊंचाइयों"** को नियंत्रित करना था।

- **केंद्रीय रूप से नियोजित अर्थव्यवस्था:** राज्य ने सभी उद्योगों और कृषि पर नियंत्रण कर लिया। स्टालिन की **पंचवर्षीय योजनाओं** ने सोवियत संघ को अभूतपूर्व गति से औद्योगिकीकृत किया, लेकिन कृषि के सामूहिकीकरण की उसकी नीति को अत्यधिक क्रूरता के साथ लागू किया गया था। इसके कारण प्रतिरोध, बड़े पैमाने पर अकाल और लाखों लोगों की मृत्यु हुई थी।
- **वैश्विक वैचारिक संघर्ष:** सोवियत संघ के अस्तित्व और विश्व क्रांति फैलाने के उसके मिशन ने सीधे तौर पर **शीत युद्ध** को जन्म दिया था। यह पूंजीवादी पश्चिम के खिलाफ 45 साल का वैश्विक संघर्ष था।

5.3.2. चीनी साम्यवाद (Chinese Communism)

चीनी साम्यवाद, जिसे चीनी विशेषताओं वाला समाजवाद भी कहा जाता है, **माओत्से तुंग** के अधीन विकसित हुआ था। यह **मार्क्सवादी-लेनिनवादी "क्रांति"** के सिद्धांत में निहित था, लेकिन चीन की अनूठी परिस्थितियों के अनुकूल था। इस कारण यह सोवियत मॉडल से काफी अलग था।

1. **किसानों में क्रांतिकारी आधार:** पारंपरिक मार्क्सवाद के विपरीत, जो शहरी सर्वहारा वर्ग पर केंद्रित था, माओ ने शहरों को घेरने के लिए ग्रामीण गुरिल्ला युद्ध का उपयोग किया तथा किसानों के समर्थन पर अपनी क्रांति का निर्माण किया।
2. **कृषि और विकेंद्रीकरण पर आर्थिक फोकस:** शुरू में भारी उद्योग के सोवियत मॉडल का अनुसरण करते हुए, माओ के **ग्रेट लीप फॉरवर्ड (1958)** ने ग्रामीण समुदायों पर जोर दिया। इसमें कृषि को लघु पैमाने के उद्योगों के साथ जोड़ा गया, जो सोवियत केंद्रीकृत व शहर-केंद्रित पंचवर्षीय योजनाओं के विपरीत था।
3. **निरंतर क्रांति पर जोर:** माओ को भय था कि कम्युनिस्ट पार्टी एक नई कुलीन नौकरशाही बन जाएगी, जैसा कि सोवियत संघ में हुआ था। इसे रोकने के लिए, उन्होंने **"निरंतर क्रांति"** को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप **सांस्कृतिक क्रांति (1966-76)** हुई। इससे पार्टी से "बुर्जुआ" तत्वों को बाहर निकाला गया और क्रांतिकारी भावना को फिर से जगाया गया। जन-नेतृत्व वाली उथल-पुथल पर यह फोकस **माओवाद** के लिए अद्वितीय था।

देंग शियाओपिंग के सुधार: 'चार आधुनिकीकरण'

वर्ष **1978** में शुरू किए गए देंग शियाओपिंग के सुधारों ने माओवादी उग्र सुधारवाद से दूर एक परिवर्तनकारी और व्यावहारिक बदलाव को चिह्नित किया। प्राथमिक उद्देश्य **कृषि, उद्योग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा रक्षा** के मुख्य क्षेत्रों में **'चार आधुनिकीकरण'** को प्राप्त करना था, जो चीन की अर्थव्यवस्था को मौलिक रूप से पुनर्गठित करता है। सुधारों की विशेषता कठोर विचारधारा की बजाय व्यावहारिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना था:

- **कृषि का गैर-सामूहीकरण:** माओ-युग के **कम्यूनों को खत्म** कर दिया गया और उनकी जगह **हाउसहोल्ड रिस्पॉन्सिबिलिटी सिस्टम** को लाया गया। इसने किसान परिवारों को अपनी ज़मीन के भूखंडों का प्रबंधन करने और अधिशेष उपज को खुले बाजार में बेचने की अनुमति दी, जिससे खाद्य उत्पादन में नाटकीय वृद्धि हुई।
- **दुनिया के लिए खुलना:** चीन ने आत्मनिर्भरता की अपनी नीति को त्याग दिया। इसने पश्चिम से विदेशी निवेश, प्रौद्योगिकी और प्रबंधकीय विशेषज्ञता को आकर्षित करने के लिए **शेन्ज़ेन** जैसे तटीय क्षेत्रों में **विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)** स्थापित किए।
- **औद्योगिक और बाजार सुधार:** राज्य-नियंत्रित भारी उद्योगों से ध्यान हटाकर **लघु उद्योगों एवं उपभोक्ता वस्तुओं** पर ध्यान केंद्रित किया गया। सुधारों ने **निजी व्यवसायों (टाउनशिप और ग्रामीण उद्यमों)** के उद्भव को सक्षम बनाया तथा कीमतों और उत्पादन को निर्धारित करने के लिए बाजार तंत्र की शुरुआत की।
- **शिक्षा और विशेषज्ञता पर जोर:** वैचारिक शुद्धता पर माओवादी फोकस की बजाय ज्ञान एवं तकनीकी कौशल के लिए सम्मान प्राप्त होने लगा। **विश्वविद्यालयों को फिर से खोला** गया और आधुनिक वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान हासिल करने के लिए हजारों छात्रों को विदेशों, खासकर पश्चिम में भेजा गया।

साम्यवाद के भीतर एक व्यावहारिक बदलाव:

देंग के सुधारों ने एक गहन व्यावहारिक बदलाव का प्रतिनिधित्व किया, न कि कम्युनिस्ट पार्टी के शासन को त्यागने का। इस दृष्टिकोण को उनके प्रसिद्ध कथन द्वारा संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है: ***"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बिल्ली काली है या सफेद, जब तक वह चूहों को पकड़ती रहती है।"***

- यह दर्शाता है कि पूंजीवादी तरीकों का उपयोग एक **मजबूत समाजवादी राष्ट्र** बनाने के लिए किया जा सकता है।
- जबकि **चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC)** ने अपना पूर्ण राजनीतिक एकाधिकार बनाए रखा, इसने बाजार की ताकतों को आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाया।
- यह माओ के इस विश्वास से एक क्रांतिकारी बदलाव था कि **वैचारिक शुद्धता सर्वोपरि** है।

राजनीतिक क्षेत्र (जो पार्टी के सख्त नियंत्रण में रहा) को आर्थिक क्षेत्र (जो बाजार की ताकतों के लिए खुला था) से अलग करके, **देंग ने राज्य के नेतृत्व वाले पूंजीवाद का एक अनूठा मॉडल** बनाया, जिसे अक्सर **"चीनी विशेषताओं वाला समाजवाद"** कहा जाता है।

5.4. विऔपनिवेशीकरण और उसकी विरासत (Decolonization and its Legacy)

उपनिवेशवाद के उन्मूलन की प्रक्रिया ने एशिया और अफ्रीका में दर्जनों नए व स्वतंत्र राष्ट्रों को जन्म दिया, जिसने वैश्विक राजनीतिक मानचित्र को मौलिक रूप से नया आकार दिया। हालांकि, स्वतंत्रता का मार्ग अक्सर हिंसक था, और औपनिवेशिक शासन की विरासत ने इन नए देशों को कई गंभीर राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों के साथ छोड़ दिया जो आज भी विद्यमान हैं।

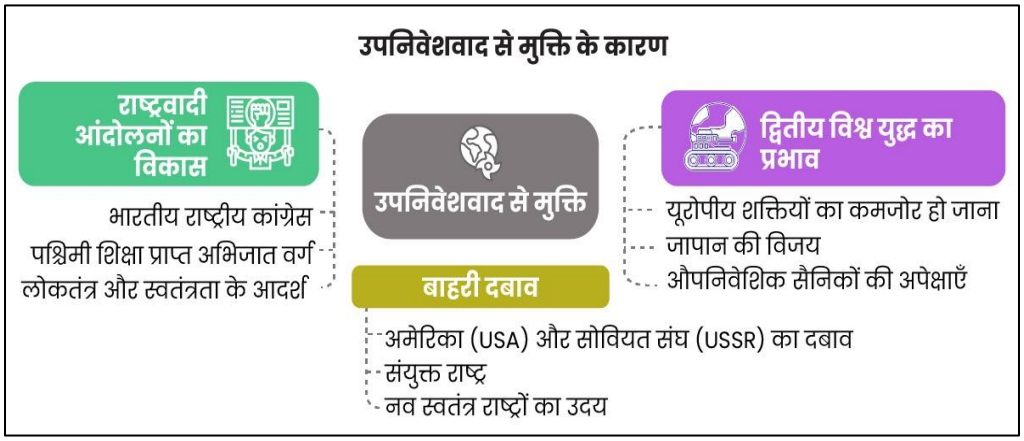

5.4.1. मध्य पूर्व में उपनिवेशवाद का उन्मूलन और संघर्षों का उदय (Decolonization in the Middle East and the Emergence of Conflicts)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों, मुख्य रूप से ब्रिटेन और फ्रांस की वापसी से मध्य पूर्व में उपनिवेशवाद का उन्मूलन हुआ। हालांकि, यह परिवर्तन **भू-राजनीतिक जटिलताओं, मनमाने सीमा संबंधी निर्णयों और प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवादी आकांक्षाओं** से भरा हुआ था। इन कारकों ने संचयी रूप से क्षेत्र में स्थायी संघर्षों के बीज बोए।

उपनिवेशवाद के उन्मूलन ने संघर्षों में कैसे योगदान दिया:

- **मनमानी सीमाएं और कृत्रिम राज्य:**
  - **साइक्स-पिकोट समझौता (1916):** औपनिवेशिक शक्तियों ने नृजातीय, धार्मिक और जनजातीय रेखाओं की अनदेखी करते हुए मनमानी सीमाएं निर्धारित की, जिसके कारण **इराक और सीरिया में कुर्द अलगाववाद** जैसे संघर्ष हुए।
  - **कृत्रिम राज्यों का निर्माण: इराक, सीरिया और लेबनान** का निर्माण बिना किसी सुसंगत राष्ट्रीय पहचान के किया गया, जिससे आंतरिक सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा मिला।

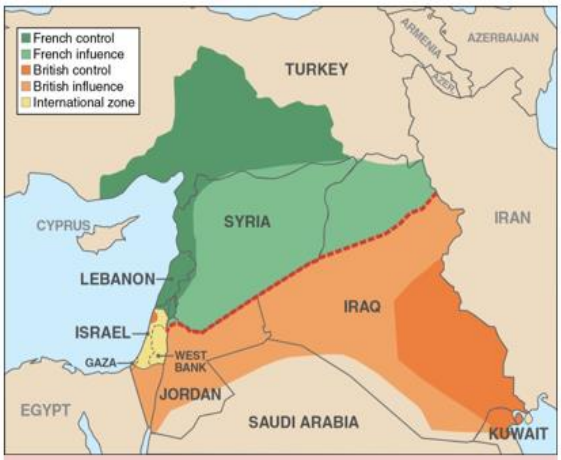

साइक्स-पिकोट बॉर्डर

- **औपनिवेशिक आर्थिक नीतियां:**
  - तेल संसाधनों पर यूरोपीय एकाधिकार ने असमान आर्थिक संरचनाओं और संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया। इससे क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता (जैसे, इराक-कुवैत संघर्ष) को बढ़ावा मिला।
- **प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवाद:**
  - अखिल-अरबवाद, ज़ायोनिज़्म और कुर्द राष्ट्रवाद जैसी विचारधाराओं के उदय ने देशों के भीतर एवं देशों के बीच संघर्षों को तीव्र कर दिया।

संघर्षों के उदाहरण:

- **लेबनानी गृह युद्ध (1975-1990):** फ्रांसीसी शासन के तहत हुए सांप्रदायिक विभाजन ने लंबे समय तक आंतरिक हिंसा को जन्म दिया।

- **ईरान-इराक युद्ध (1980-1988):** सीमा संबंधी अस्पष्टताएं और औपनिवेशिक युग की परस्पर विरोधी संधियां एक विनाशकारी क्षेत्रीय संघर्ष में बदल गई।
- **खाड़ी युद्ध (1990-1991):** अनसुलझे औपनिवेशिक सीमा संबंधी मुद्दों और आर्थिक विवादों के कारण इराक ने कुवैत पर आक्रमण किया।

अरब-इजरायल संघर्ष पर फोकस:

अरब-इजरायल संघर्ष इस तथ्य का प्रतीक है कि औपनिवेशिक विरासत ने दीर्घकालिक अस्थिरता को कैसे उत्प्रेरित किया।

- **ब्रिटिश शासनादेश और बाल्फोर घोषणा (1917):** ब्रिटेन ने अरबों द्वारा पहले से ही बसे हुए देश में "यहूदी लोगों के लिए राष्ट्रीय मातृभूमि" हेतु समर्थन का वादा किया। इसने विरोधाभासी दायित्वों को जन्म दिया।
- **संयुक्त राष्ट्र विभाजन योजना (1947):** अरब आबादी ने यहूदी और अरब देशों में विभाजन को अस्वीकार कर दिया, जिससे अरब-इजरायल युद्ध (1948) शुरू हो गया।
- **लगातार युद्ध और अधिपत्य:** अरब-इजरायल युद्धों (1956, 1967 व 1973) ने फिलिस्तीनियों के विस्थापन एवं चल रहे क्षेत्रीय विवादों (गाजा, वेस्ट बैंक और गोलन हाइट्स) को जन्म दिया।

मध्य पूर्व में शांति के प्रयास: चुनौतियां और निरंतर संघर्ष

हालांकि **कैंप डेविड अकॉर्ड्स (1978), ओस्लो अकॉर्ड्स (1993) और अब्राहम अकॉर्ड्स (2020)** जैसी शांति पहलों ने कुछ प्रगति की है, लेकिन एक स्थायी समाधान का अभी भी अभाव बना हुआ है।

- **अब्राहम अकॉर्ड्स** ने इजरायल और कुछ अरब देशों के बीच संबंधों को सामान्य कर दिया, लेकिन फिलिस्तीनी आकांक्षाओं को दरकिनार कर दिया। इससे व्यापक अरब सहमति कमजोर हो गई।
- यद्यपि **टू-स्टेट समाधान** को व्यापक समर्थन प्राप्त है, लेकिन इसे निरंतर शत्रुता, गहरे अविश्वास तथा फिलिस्तीनी राज्य और यरुशलम की स्थिति जैसे मुख्य मुद्दों के समाधान में विफलता के कारण चुनौती दी जा रही है।
- **वेस्ट बैंक पर इजरायली बस्तियों** के निरंतर विस्तार और हमास की आतंकवादी कार्रवाइयों के कारण चल रहे संघर्ष ने शांति के किसी भी प्रयास को और जटिल बना दिया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

- फिलिस्तीन में ब्रिटिश शासनादेश प्रणाली ने लंबे समय से चल रहे अरब-इजरायल संघर्ष की नींव कैसे रखी। (150 शब्द)

5.5. शीत युद्ध का दौर (The Cold War Era)

शीत युद्ध **विचारधाराओं** के बीच एक वैश्विक युद्ध था, जिसमें **संयुक्त राज्य अमेरिका के पूंजीवादी लोकतंत्र को सोवियत संघ के अधिनायकवादी साम्यवाद** के विरुद्ध खड़ा किया गया था।

आपसी विनाश के भय से, दोनों महाशक्तियों ने कभी भी प्रत्यक्ष युद्ध नहीं लड़ा, बल्कि तनावपूर्ण **परमाणु हथियारों की दौड़** के माध्यम से और दुनिया भर में विनाशकारी **प्रॉक्सी युद्धों** में विरोधी पक्षों का समर्थन करके प्रभाव के लिए संघर्ष किया।

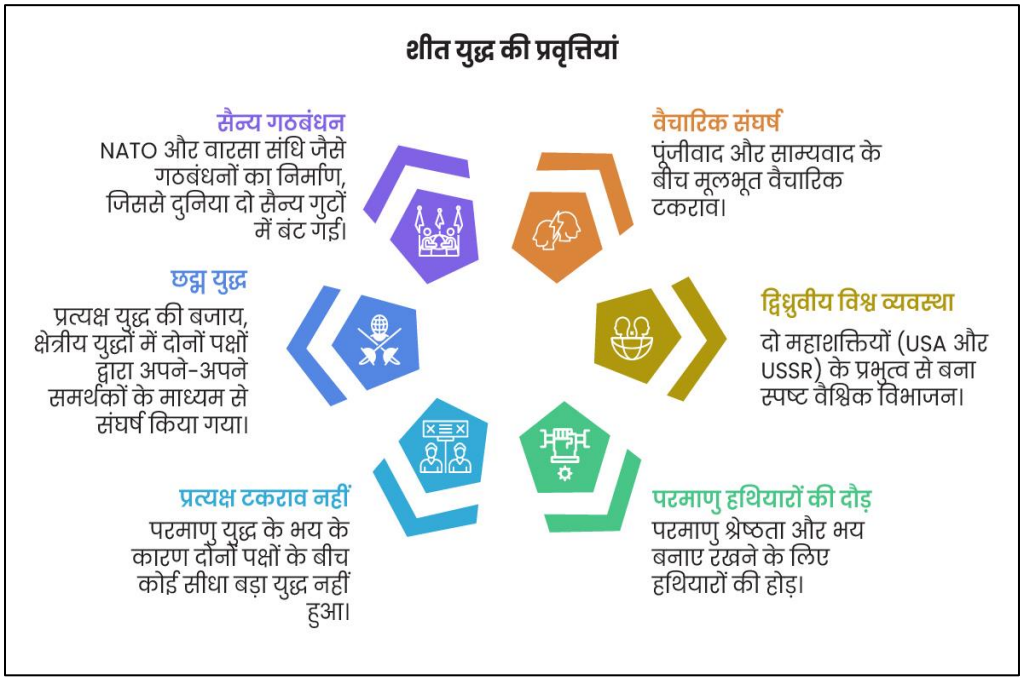

5.5.1. प्रॉक्सी युद्ध: विचारधारा और प्रभाव के लिए एक वैश्विक लड़ाई (Proxy Wars: A Global Battle for Ideology and Influence)

शीत युद्ध के दौरान, प्रॉक्सी युद्ध **संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ** के लिए प्रमुख रणनीति बन गए। प्रत्यक्ष सैन्य टकराव की बजाय, दोनों महाशक्तियों ने क्षेत्रीय संघर्षों में विरोधी पक्षों का समर्थन किया तथा अपनी विचारधाराओं **(पूंजीवाद और साम्यवाद)** को आगे बढ़ाने के लिए स्थानीय ताकतों का उपयोग किया।

प्रॉक्सी युद्धों का महत्त्व

- **प्रत्यक्ष संघर्ष से बचना:** प्रॉक्सी युद्धों ने महाशक्तियों को परमाणु हमले का जोखिम उठाए बिना युद्ध में संलग्न होने की सुविधा प्रदान की।
- **वैचारिक लड़ाई:** इन युद्धों ने स्थानीय विवादों को **संयुक्त राज्य अमेरिका** और **सोवियत संघ** के बीच वैश्विक वैचारिक प्रतियोगिता में बदल दिया।
- **भू-राजनीतिक प्रभाव:** इन युद्धों में सहयोगियों का समर्थन करके, दोनों महाशक्तियों ने अपने प्रभाव का विस्तार करने और रणनीतिक व सामरिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश की।
- **सैन्य-औद्योगिक विकास:** प्रॉक्सी युद्धों ने हथियार उद्योग को भी बढ़ावा दिया, दोनों शक्तियों ने अपने सहयोगियों को हथियारों की आपूर्ति की।

प्रॉक्सी संघर्षों के वैश्विक युद्ध क्षेत्र

- **कोरियाई युद्ध (1950-1953):**
  - **पक्षकार:** उत्तर कोरिया (**सोवियत संघ और चीन द्वारा समर्थित**) बनाम दक्षिण कोरिया (**संयुक्त राज्य अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र बलों द्वारा समर्थित**)।
  - **परिणाम:** युद्धविराम के कारण **कोरियाई प्रायद्वीप विभाजित** हो गया, जिसने शीत युद्ध के टकरावों के लिए एक मिसाल कायम की।
- **वियतनाम युद्ध (1955-1975):**
  - **पक्षकार:** साम्यवादी उत्तर वियतनाम (**सोवियत संघ और चीन द्वारा समर्थित**) बनाम दक्षिण वियतनाम (**संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा समर्थित**)।
  - **परिणाम:** अमेरिका की वापसी और **वियतनाम का साम्यवादी नियंत्रण में एकीकरण;** अमेरिकी विदेश नीति पर महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक प्रभाव।
- **अफगान युद्ध (1979-1989):**
  - **पक्षकार: सोवियत समर्थित अफगान सरकार** बनाम अमेरिका, सऊदी अरब और पाकिस्तान द्वारा समर्थित **मुजाहिदीन प्रतिरोध।**
  - **परिणाम:** सोवियत पराजय और वापसी, सोवियत संघ के अंतिम विघटन में महत्वपूर्ण कारक तथा अफगानिस्तान को अस्थिर किया।
- **मध्य पूर्वी संघर्ष:**
  - **अरब-इजरायल संघर्ष: अमेरिका ने इजरायल** का समर्थन किया; **सोवियत संघ ने अरब देशों** का समर्थन किया, जिससे शीत युद्ध की प्रतिद्वंद्विता तीव्र हो गई।
  - **ईरान-इराक युद्ध (1980-1988):** महाशक्तियों की मिश्रित भागीदारी ने चल रही क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा दिया।
- **अफ्रीका में संघर्ष:**
  - **अंगोला में गृह युद्ध (1975-2002):** MPLA सरकार (**सोवियत संघ और क्यूबा द्वारा समर्थित**) बनाम UNITA विद्रोही (**अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका द्वारा समर्थित**)।
  - **ओगाडेन युद्ध (1977-1978): इथियोपिया** (सोवियत संघ समर्थित) बनाम **सोमालिया** (शुरू में सोवियत समर्थित, बाद में अमेरिका समर्थित)।
- **लैटिन अमेरिका में संघर्ष:**
  - **निकारागुआ (1979-1990): सैंडिनिस्टा सरकार** (सोवियत समर्थित) को अमेरिका समर्थित **कॉन्ट्रा विद्रोहियों** का सामना करना पड़ा।
  - **क्यूबा (1959-1962):** कास्त्रो की साम्यवादी सरकार ने सोवियत संघ के साथ गठबंधन किया; अमेरिका ने शासन परिवर्तन का प्रयास किया **(बे ऑफ पिग्स)** और प्रत्यक्ष खतरे का सामना किया **(क्यूबा मिसाइल संकट)।**

शीत युद्ध के प्रॉक्सी युद्धों ने वैश्विक राजनीति पर स्थायी प्रभाव छोड़ा, जिसने आधुनिक भू-राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया।

5.5.2. सोवियत संघ का विघटन (Disintegration of USSR)

शीत युद्ध समाप्त हो गया, क्योंकि **सोवियत संघ,** जो गंभीर आर्थिक पतन और आंतरिक दबाव का सामना कर रहा था, अब **हथियारों की दौड़** को बनाए नहीं रख सकता था।

इस कमजोरी और इसके नेता **मिखाइल गोर्बाचेव** के नेतृत्व में सुधारों से उत्पन्न स्थिति से सोवियत संघ ने **पूर्वी यूरोप पर अपना नियंत्रण** खो दिया और **1991 में सोवियत संघ का अंतिम विघटन** हो गया।

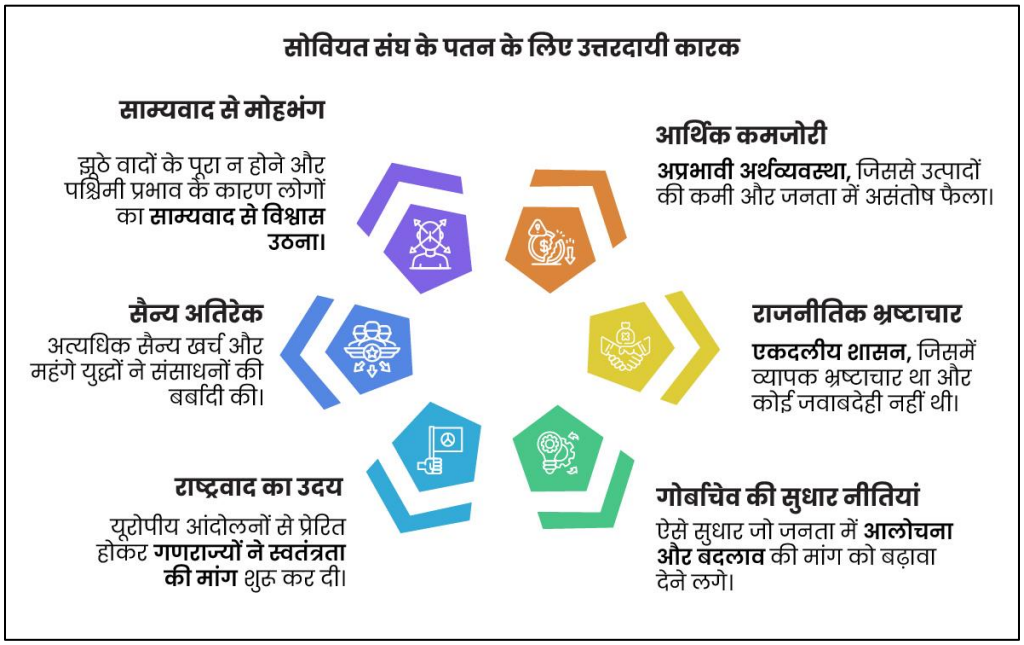

5.5.3. रूस-यूक्रेन संघर्ष: शीत युद्ध की विरासत (The Russia-Ukraine Conflict: A Legacy of the Cold War)

रूस-यूक्रेन संघर्ष, जो 2022 में पूर्ण पैमाने पर आक्रमण में बदल गया, इसकी जड़ें शीत युद्ध के तनाव और 1991 के बाद यूरोप की अनसुलझी भू-राजनीतिक संरचना में गहराई से निहित हैं।

सोवियत विरासत और "बफर ज़ोन"

शीत युद्ध के दौरान, **पूर्वी यूरोप** सोवियत संघ के लिए पश्चिमी देशों के खिलाफ एक **बफर जोन** के रूप में महत्वपूर्ण था। यूक्रेन, जो एक प्रमुख सोवियत गणराज्य था रूस के लिए सामरिक महत्त्व रखता है। 1991 में सोवियत संघ के पतन को पश्चिम ने लोकतंत्र की जीत के रूप में देखा, लेकिन रूस ने इसे भू-राजनीतिक विनाश के रूप में देखा, क्योंकि इसने पश्चिमी विश्व को रूस के निकट ला खड़ा किया। इससे **रूसी असुरक्षा और अपने "निकट के देश"** पर प्रभाव बनाए रखने की रूस की इच्छा बढ़ गई।

नाटो (NATO) का विस्तार: सुरक्षा या अतिक्रमण?

नाटो की स्थापना **1949** में सोवियत संघ को नियंत्रित करने के लिए की गई थी। शीत युद्ध के बाद नाटो का पूर्व सोवियत राज्यों और **पोलैंड, हंगरी व बाल्टिक राज्यों** जैसे पूर्वी ब्लॉक देशों में विस्तार, पश्चिम द्वारा संप्रभु राष्ट्रों के सुरक्षा गारंटी प्राप्त करने के वैध अधिकार के रूप में देखा गया था।

- हालांकि, **रूस ने नाटो के विस्तार को विश्वासघात के रूप में और इसे अपने ऐतिहासिक प्रभाव क्षेत्र में एक आक्रामक अतिक्रमण** के रूप में देखा। यूक्रेन के नाटो में शामिल होने की संभावना को एक अस्तित्वगत खतरे के रूप में देखा गया, जिससे इसके **सुरक्षा बफर** के खत्म होने की संभावना बढ़ गई।

पहचान, संप्रभुता और महाशक्ति प्रतिस्पर्धा

शीत युद्ध के बाद यूक्रेन की पहचान में बदलाव ने यूरोप के साथ एकीकरण चाहने वाले पश्चिम समर्थक गुटों और मास्को के साथ संबंधों के पक्षधर रूस समर्थक गुटों के बीच आंतरिक विभाजन को जन्म दिया। **ऑरेंज रिवोल्यूशन** (2004) और **मैडन रिवोल्यूशन** (2014) जैसी घटनाओं को पश्चिम ने लोकतांत्रिक

जीत के रूप में देखा, जबकि रूस ने इन्हें यूक्रेन को प्रतिद्वंद्वी खेमे में खींचने के लिए **पश्चिम समर्थित सत्ता परिवर्तन** के रूप में देखा।

वर्तमान **रूस-यूक्रेन युद्ध** शीत युद्ध की विरासत और शीत युद्ध के बाद ऐसी यूरोपीय सुरक्षा प्रणाली बनाने में विफलता का दुखद परिणाम है, जो दोनों पक्षों के हितों का सम्मान करती हो। यह **नाटो की संप्रभुता के प्रति प्रतिबद्धता और रूस की सुरक्षा बफर की आवश्यकता** के बीच टकराव को दर्शाता है, जो शीत युद्ध की गहरी आशंकाओं और भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा से प्रेरित है।

5.6. राष्ट्रीय सीमाओं का पुनर्निर्धारण: कारण और परिणाम (Redrawing of National Boundaries: Causes and Consequences)

आधुनिक विश्व मानचित्र गहन भू-राजनीतिक परिवर्तनों का परिणाम है, जिसे मुख्य रूप से **राष्ट्रवाद** की प्रभावशाली शक्ति ने आकार दिया है। यह प्रक्रिया 19वीं शताब्दी में खंडित क्षेत्रों के एकीकरण के साथ शुरू हुई। इस सदी को राष्ट्रवाद के शक्तिशाली व केंद्रीकृत करने वाले बल द्वारा परिभाषित किया गया था, जिसके कारण **आधुनिक यूरोप के दो सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्र-राज्यों** का निर्माण हुआ।

- **इतालवी एकीकरण:** सदियों से इतालवी प्रायद्वीप **छोटे राज्यों और डचीज़ एवं पोप के राज्यों** का एक समूह था, जो अक्सर **ऑस्ट्रिया** जैसी विदेशी शक्तियों के प्रभाव में था।
    - राष्ट्रवाद और उदारवाद के आदर्शों से प्रेरित, **ज्यूसेपे मेत्सिनी (विचारक), काउंट कावूर (राजनयिक) और ग्यूसेप गैरीबाल्डी (सैनिक)** जैसे नेताओं ने कूटनीति, लोकप्रिय विद्रोह एवं रणनीतिक युद्धों के संयोजन के माध्यम से इस प्रायद्वीप का एकीकरण किया, जिसकी परिणति **1871 में इटली के साम्राज्य** निर्माण में हुई।

अफ्रीका के लिए संघर्ष: एक महाद्वीप के टुकड़े करना

"अफ्रीका के लिए संघर्ष" 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (लगभग 1881-1914) के दौरान **यूरोपीय शक्तियों** द्वारा अफ्रीकी क्षेत्र पर तीव्र और प्रतिस्पर्धी आक्रमण, उपनिवेशीकरण एवं अधिकार था।

मुख्य चालक

- **आर्थिक उद्देश्य:** प्राथमिक चालक यूरोप में औद्योगिक क्रांति थी। इसने **रबड़, तांबा और कपास जैसे सस्ते कच्चे माल** की भारी मांग पैदा की और निर्मित वस्तुओं को बेचने के लिए नए बाजारों की आवश्यकता उत्पन्न की।
- **राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और प्रतिद्वंद्विता:** तीव्र राष्ट्रवाद के युग में, एक विशाल औपनिवेशिक साम्राज्य का स्वामित्व राष्ट्रीय शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक था। **ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और बेल्जियम** जैसे देशों के बीच प्रतिस्पर्धा ने प्रतिद्वंद्वियों से पहले क्षेत्र पर अधिकार करने की होड़ को बढ़ावा दिया।
- **बर्लिन सम्मेलन (1884-85):** इस बैठक ने इस प्रक्रिया को औपचारिक रूप दिया। यूरोपीय शक्तियों ने क्षेत्र पर दावा करने के लिए नियम बनाए, सबसे उल्लेखनीय था **"प्रभावी आधिपत्य"** का सिद्धांत। इसने जमीन पर नियंत्रण स्थापित करने और महाद्वीप के टुकड़े करने की होड़ को तेज कर दिया।

स्थायी प्रभाव: इस संघर्ष की सबसे हानिकारक और स्थायी विरासत **कृत्रिम सीमाओं** का निर्माण थी। ये सीमाएं यूरोपीय राजधानियों में बनाई गई थीं, जिसमें जमीनी स्तर पर मौजूद **नृजातीय, भाषाई या जनजातीय वास्तविकताओं की कोई परवाह नहीं** की गई थी। इस प्रक्रिया ने प्रतिद्वंद्वी समूहों को एक साथ जोड़ दिया और विभिन्न उपनिवेशों में एकजुट समुदायों को विभाजित कर दिया। इससे कई **राजनीतिक संघर्षों, गृहयुद्धों और अलगाववादी आंदोलनों की नींव पड़ी।**

- **जर्मनी का एकीकरण:** नेपोलियन के युद्धों के बाद, **"जर्मनी" 30 से अधिक राज्यों** का एक समूह था।
    - एकीकरण का नेतृत्व शक्तिशाली राज्य **प्रशिया** ने अपने चतुर और क्रूर चांसलर, **ओटो वॉन बिस्मार्क** के नेतृत्व में किया था।
    - **"ब्लड एंड आयरन"** की उसकी नीति में **डेनमार्क (1864), ऑस्ट्रिया (1866) और फ्रांस (1870-71)** के खिलाफ कई सुनियोजित युद्ध शामिल थे।
    - **फ्रांस** के खिलाफ अंतिम जीत के परिणामस्वरूप **1871 में जर्मन साम्राज्य** की घोषणा हुई। यह एक ऐसा घटनाक्रम था, जिसने यूरोप में **शक्ति संतुलन** को नाटकीय रूप से बदल दिया और **ऐल्सैस-लोरेन** के नुकसान पर **फ्रांस में गहरी नाराजगी** पैदा कर दी।

20वीं सदी में भू-राजनीतिक स्तर पर बहुत सारे बदलाव हुए, जिनके दौरान कई कारणों से राष्ट्रीय सीमाओं का काफी हद तक **फिर से निर्धारण** किया गया। इन बदलावों में शामिल हैं:

- प्रथम विश्व युद्ध के बाद साम्राज्यों का पतन;
- उपनिवेशवाद का अंत, और
- शीत युद्ध के कारण वैचारिक विभाजन।

1. **साम्राज्य के विघटन के बाद की स्थिति: साम्राज्यों का खंडित होना:** प्रथम विश्व युद्ध के बाद, साम्राज्यों के खंडित होने से नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। सीमाओं का यह नया स्वरूप **पेरिस शांति सम्मेलन (1919-20) और राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के सिद्धांत** से प्रेरित था, लेकिन यह ब्रिटेन और फ्रांस के रणनीतिक हितों से भी प्रभावित था।

मुख्य उदाहरण और परिणाम:

- **ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य:** इस विघटन के कारण **चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया** का निर्माण हुआ। हालांकि, इन राष्ट्रों को गंभीर नृजातीय तनाव का सामना करना पड़ा था, जैसे कि **चेकोस्लोवाकिया में सुडेटेनलैंड के नृजातीय जर्मनों के मतभेद,** जिसका बाद में **हिटलर** ने फायदा उठाया।
- **ओटोमन साम्राज्य: ब्रिटेन** और **फ्रांस** द्वारा विभाजित **इराक, सीरिया, लेबनान और फिलिस्तीन** जैसे नए राष्ट्रों का निर्माण। इस दौरान नृजातीय और सांप्रदायिक वास्तविकताओं को नजरअंदाज किया गया था। इससे मध्य पूर्व में दीर्घकालिक अस्थिरता पैदा हो गई।
- **रूसी साम्राज्य:** 1917 में इसके पतन के कारण **फिनलैंड, एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया** का उदय हुआ, जो रूसी नियंत्रण से अलग हो गए।

2. **विऔपनिवेशीकरण और विभाजन:** विऔपनिवेशीकरण के दौरान, कई क्षेत्रों को आंतरिक विभाजन (धार्मिक/ नृजातीय) का सामना करना पड़ा, जिसके कारण औपनिवेशिक शक्तियों ने समाधान के रूप में विभाजन का विकल्प चुना।

मुख्य उदाहरण और परिणाम:

- **भारत का विभाजन (1947):** ब्रिटेन ने भारत और पाकिस्तान को धार्मिक आधार पर विभाजित किया, जिससे बड़े पैमाने पर पलायन, सांप्रदायिक हिंसा और स्थायी कश्मीर संघर्ष हुआ।
- **फिलिस्तीन का विभाजन (1948):** ब्रिटेन के विरोधाभासी वादों के कारण अरबों और यहूदियों के बीच संघर्ष हुआ, जिसके परिणामस्वरूप इजरायल का निर्माण हुआ और फिलिस्तीनी शरणार्थी संकट पैदा हुआ।

3. **वैचारिक सीमाएं: शीत युद्ध जनित विभाजन:** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, **संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध की विचारधाराओं ने साम्यवाद बनाम पूंजीवाद** के आधार पर नई सीमाएं बनाईं।

मुख्य उदाहरण और परिणाम:

- **जर्मनी का विभाजन:** जर्मनी **पूर्व (साम्यवाद समर्थित) और पश्चिम (पूंजीवाद समर्थित)** में विभाजित हो गया, जिसका प्रतीक **बर्लिन की दीवार** थी, जो 1990 तक बनी रही।
- **कोरिया का विभाजन:** कोरियाई युद्ध (1950-53) ने **कोरिया को उत्तर (साम्यवादी) और दक्षिण (पूंजीवादी)** में स्थायी रूप से विभाजित कर दिया, एक ऐसा विभाजन जो आज भी कायम है।
- **वियतनाम का विभाजन:** वियतनाम युद्ध (1955-75) के परिणामस्वरूप वियतनाम विभाजित हो गया, जिसमें **उत्तर साम्यवादी नियंत्रण में था और दक्षिण अमेरिका** द्वारा समर्थित था।

पुनः निर्धारित सीमाओं की विरासत आधुनिक संघर्षों को बढ़ावा देती रही है। **कश्मीर विवाद, इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष, तथा सीरिया और इराक में गृह युद्ध** बाहरी शक्तियों द्वारा स्थानीय वास्तविकताओं पर विचार किए बिना निर्धारित की गई सीमाओं के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। इसके कारण **निरंतर कष्ट, अविभाज्यता, राष्ट्रवाद से संबंधित समस्याएं और सांप्रदायिक हिंसा** होती है जो, आज भी जारी है। ये ऐतिहासिक निर्णय दर्शाते हैं कि **स्थानीय सहमति की बजाय रणनीतिक लाभ** के लिए खींची गई सीमाओं ने किस तरह **स्थायी अस्थिरता** पैदा की है।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स 2026

प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली

15 जुलाई, 2 PM

अवधि – 12 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधि: 12 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधि: 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोट: अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन/ मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन

अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित

विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन

इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन/ ईमेल/ लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़

प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें

प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी

अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ऑल इंडिया इंटरएक्टिव टेस्ट सीरीज 2025

इतिहास

वैकल्पिक विषय

प्रारंभ 22 जून 2025

8 टेस्ट | 4 सेक्शन वाइज + 4 फुल लेंथ

SCAN TO KNOW MORE

हिंदी माध्यम में 30+ चयन CSE 2024 में

137 AIR Ankita Kanti
182 AIR Ravi Raaz
438 AIR Mamata
448 AIR Sukh Ram
509 AIR Amit Kumar Yadav

HEAD OFFICE
33, Pusa Road,
Near Karol Bagh Metro Station,
Opposite Pillar No. 113,
Delhi - 110005
DELHI

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor,
Mukherjee Nagar, Opposite Punjab
& Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office,
above Gate No. 2, GTB Nagar
Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

enquiry@visionias.in /@visionias hindi /visionias.upsc /vision_ias_hindi/ /hindi_visionias

अहमदाबाद बेंगलूरु भोपाल चंडीगढ दिल्ली गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे रांची